556 हदीसों और 476 मसाईल का मुस्तनद ज़खीरा

अनवारुल हदीस

मुसन्निफ़:

मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी

मकतबा फ़क़ीहे मिल्लत

दिल्ली
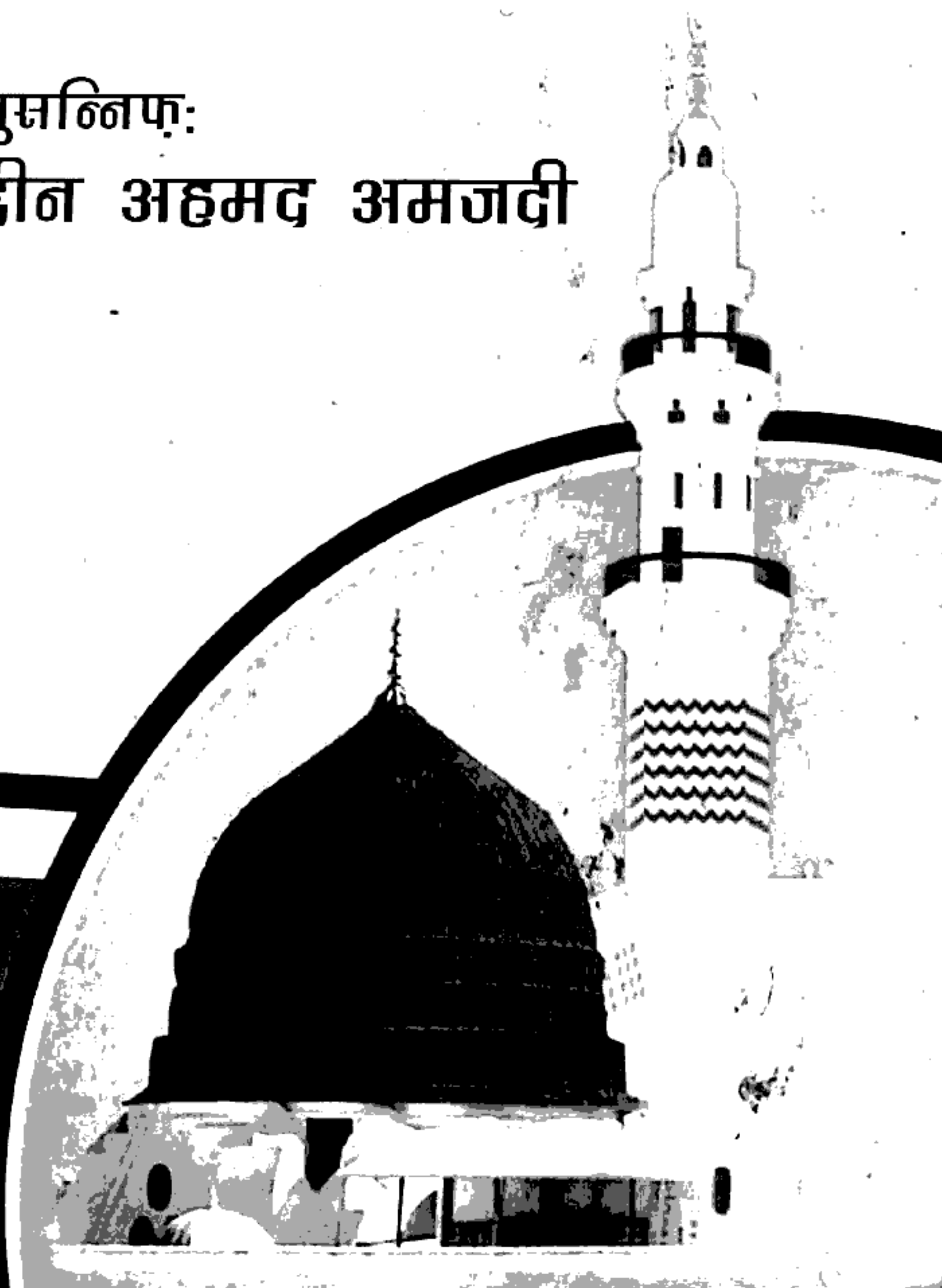
556 हदीसों और 476 मसलों
का मजमूआ

अनवारुल हदीस

लेखक :
फकीहे मिल्लत अल्लामा
मुफ्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी
बानी— मदरसा अमजदिया अरशदुल ऊलूम, ओझा गंज
जि० बस्ती

हिन्दी कर्ता
मौलाना मु० अलाउद्दीन साबिर
ओझा गंज—बस्ती

कुतुब खाना अमजदिया
टाउन क्लब, पक्का बाज़ार, गांधी नगर, बस्ती
फोन नं०: 9415162692

नाम पुस्तक—अनवारुल हदीस

लेखक—फ़क़ीहे मिल्लत अल्लामा
मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी

हिन्दी कर्ता—मौलाना मु० अलाउद्दीन साबिर

पहला एडीशन—1407 हिजरी 1987 ईसवी

पब्लिशर—अबरार अहमद—अजहार अहमद अमजदी
मन्जिल ओझा गंज जि० बस्ती

शर्फ़े इन्तिसाब

उन मुहद्दिसीने किराम और
अइम्मए इस्साम के नाम
जिन के कलमदान की रोशनाई
कियामत के दिन शहीदों
के लुहू के साथ वजन की
जायेगी

जलालुद्दीन अहमद अमजदी

अनवारुल हदीस निम्न लिखित पुस्तकों से बनाई गई है

(1) कुर्आने मजीद (2) तफसीरे कबीर (3) तफसीरे बैजावी (4) तफसीरे खाजिन (5) तफसीरे जलालैन (6) तफसीरे सावी (7) तफसीरे अहमदिया (8) तफसीरे अजीजी (9) तफसीरे खजाइनुल इरफान (10) बुखारी (11) मुस्लिम (12) तिरमिजी (13) अबू दाऊद (14) नसई (15) इब्ने माजा (16) मुअत्ता इमामे मालिक (17) दारमी (18) दारकुत्नी (19) मिशकात (20) बैहकी (21) मुस्नदे अहमद (22) शरहुस्सुन्ना (23) मुअत्ता इमामे मुहम्मद (24) तहावी (25) तबरानी (26) ऐनी शरह बुखारी (27) नौवी शरह मुस्लिम (28) मिरकात शरह मिशकात (29) अशिअतुल्लम्आत (30) फिक्हे अकबर (31) शरह फिक्हे अकबर (32) अकाइदे नसफी (33) शरह अकाइदे नसफी (34) रद्दुलमुहतार (35) दुर्रे मुख्तार (36) तनवीरुल अबसार (37) बदाइउस्सनाए (38) बहरुर्राइक (39) कनजुद्दकाइक (40) फतहुलकदीर (41) हिदाया (42) इनाया (43) किफाया (44) शरहे नुकाया (45) शरहे वकाया (46) सिआया (47) उमदतुर्रिआया (48) हदीकए नदीया (49) तहतावी (50) मराकिल फलाह (51) नूरुलईजाह (52) हुज्जतुल्लाहिल्बालिगह (53) फतावा काजी खाँ (54) फतावा आलमगीरी (55) फतावागज्जी (56) फतावा अजीजिया (57) फतावा रजवीया (58) फतावा अफरीका (59) बहारे शरीअत (60) अहकामे शरीअत (61) अलअमनो वलऊला (62) लम्अतुज्जुहा (63) सफाइहुल्लुजैन (64) मशअलतुल्इरशाद (65) आजबुलइम्दाद (66) मनजरुल फतावा (67) अल्अशबाह वन्नजाइर (68) शिफा (69) नसीमुर्रियाज (70) शरहुश्शिफा मुल्ला अली कारी (71) जरकानी (72) इहयाउलऊलूम (73) सुलूके अकरबुस्सुबुल (74) अत्तारीफात (75) सहीफए जमाल

विषय सूची

विषय	पृष्ठ
पहली नजर	1
पेशे लफ्ज—अल्लामा अरशदुल कादिरी साहब किब्ला	3
नीयत का बयान	23
ईमान का बयान	25
जन्नती व जहन्नमी फिरका	31
बद मजहब	39
सुन्नत और बिदअत	40
इल्म व आलिम का बयान	43
तकदीर का बयान	49
कब्र का अजाब	52
कियामत की निशानियाँ	57
हौजे कौसर व शफाअत	62
जन्नत का बयान	69
जहन्नम का बयान	71
वुजू का बयान	74
वुजू तोड़ने वाली चीजें	80
इस्तिनजा का बयान	82
नहाने का बयान	84
अजान व इकामत का बयान	86
नमाज का बयान	88
तरावीह का बयान	91
इमाम के पीछे कुर्आन पढ़ना	95
आमीन आहिस्ता कहने का बयान	97
रफ ए यदैन	98
दुरुद शरीफ का बयान	100
दुरुद गंजे आशिकाँ	102
जमाअत का बयान	102
मस्जिद का बयान	104
जुमा का बयान	106

विषय	पृष्ठ
खुत्बा की अजान कहाँ दी जाएं	108
ईद व बकर ईद का बयान	109
बीमारी का बयान	111
बीमार को देखने जाना	113
दवा का बयान	114
दुआ और तावीज	115
मौत का बयान	116
मैयित को नहलाना और कफन पहनाना	118
जनाजा का बयान	120
मुर्दा दफ्न करने का बयान	122
मुर्दा पर रोने का बयान	124
शहीद का बयान	127
कब्रों की जियारत	128
सवाब बख्शने का बयान	130
जकात का बयान	132
सदकए फित्र का बयान	135
सखी और कनजूस	139
भीक माँगना कैसा है ?	142
रोजा का बयान	145
चाँद देखने का बयान	151
शबे कद्र का बयान	156
इतिकाफ का बयान	158
कुर्आन मजीद पढ़ने का बयान	159
हज्ज का बयान	164
मदींना शरीफ़ की हाजिरी	169
नबी जिंदा हैं	170
हलाल रोजी	173
अच्छा ब्यापारी	175
सूद का बयान	176
रहन व बै ए सलम का बयान	178
कर्जदार को मोहलत देना	180

विषय	पृष्ठ
जमीन पर नाजाइज कब्जा	181
निकाह का बयान	181
महर का बयान	183
दावते वलीमा का बयान	185
मियाँ बीवी के आपसी बरताव	186
पर्दा की बातें	187
देखना जाइज नहीं	188
अजनबी औरत के साथ तनहाई	189
जिना और लवातत	190
तलाक का बयान	192
इद्दत का बयान	194
हलाल व हराम जानवर	195
शिकार व जबह का बयान	197
कुर्बानी का बयान	200
अकीका का बयान	203
अच्छे बुरे नाम	204
खाने का बयान	206
पीने का बयान	207
कपड़ा पहनने का बयान	208
जूता पहनने का बयान	210
अँगूठी का बयान	211
हजामत का बयान	212
दाढ़ी और मोंछ का बयान	213
खिजाब का बयान	215
सोने और लेटने का बयान	215
सप्ना देखने का बयान	216
फाल का बयान	217
छींक और जमाही का बयान	218
इजाजत लेने का बयान	219
सलाम का बयान	220
मुसाफहा का बयान	221

विषय-	पृष्ठ
माँ बाप के हक का बयान	223
औलाद के हक का बयान	225
भाई वगैरा के हक	227
चोरी करना और शराब पीना	228
झूट का बयान	229
चुगली और गीबत का बयान	230
हिफाजते जुबान व तनहाई	232
दुश्मनी और जलन का बयान	233
खुदा ही के लिए महब्बत व खुदा ही के लिए दुश्मनी	234
गुस्सा और घमंड का बयान	236
जुल्म का बयान	237
माल वगैरा की लालच	238
दुनिया की महब्बत	239
उम्र व माल की ज्यादती कब नेमत है ?	240
दिखावे के लिए काम करना	241
तस्वीर का बयान	242
जल्द बाजी करने न करने का बयान	243
नेकी के हुक्म देने व बुराई से रोकने का बयान	244
तवक्कुल—अल्लाह पर भरोसा करना	247
नरमी, हया और अच्छी आदत का बयान	248
हँसना व मुस्कराना	249
हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की फजीलतें	250
हुजूर की तरह कोई नहीं	254
मेराज का बयान	256
मोजिजों का बयान	262
करामत का बयान	267
इल्मे गैब का बयान	270
लेखक के हालात	277

Scanned by CamScanner

पहली नजर

कुर्आन मजीद 'हदीस शरीफ और इस्लाम धर्म की सब पुस्तकें पहले अरबी ज़ुबान में रहीं। फिर जब यह धर्म अरब से फैलकर दूसरे देशों में भी गया तो उसकी पुस्तकों का वहाँ की ज़ुबानों में तरजम हुआ और भारत के अंदर जब मुगलिया जमाने में फारसी ज़ुबान फैल गई तो इस्लाम धर्म की पुस्तकें उसमें लिखी गईं। फिर जब उर्दू पैदा हुई और यह ज़ुबान हर जगह बोली और समझी जाने लगी तो हर तरह की पुस्तकें उसमें तैयार की गईं जिनसे लोग फाइदा उठाते रहे।

और अब जबकि इस देश में हिन्दी बहुत ज्यादा रवाज पा गई और उर्दू जानने वाले दिन प्रतिदिन कम होते जा रहे हैं। तो इस बात की सख्त ज़ुरुरत हुई कि इस्लाम धर्म की किताबें हिंदी में भी लिखी जायें। दूसरे लोगों ने बहुत पहले अपनी किताबें हिन्दी में छपवाकर पूरे देश में फैला दीं जिससे सुन्नियत को बड़ा नुक्सान पहुँचा कि उनकी किताबों को पढ़कर लोग गुमराह हो गये और दिन प्रतिदिन गुमराह होते जा रहे हैं।

ख़ुदा का शुक्र है कि अहले सुन्नत व जमाअत में सबसे पहले इसकी तरफ फकीहे मिल्लत हजरत अल्लामा मुफ्ती जलालुद्दीन अहमद साहब किब्ला अमजदी मद्द जिल्लुहुलआली ने तवज्जुह फरमाई (ध्यान दिया) उनके हुक्म से हमने उनकी लिखी हुई उर्दू अनवारे शरीअत को हिन्दी में तैयार किया जो हिन्दी जानने वाले अहले सुन्नत व जमाअत में बहुत ज्यादा पसंद की गई। फिर हमारे दूसरे भाईयों ने भी इस तरफ ध्यान दिया और किताबों को हिन्दी में छपवाया जिससे सुन्नी लोग फाइदा उठा रहे हैं।

अनवारे शरीअत के बाद फकीहेमिल्लत की दूसरी किताब मुहक्किकाना फैसला को भी हमने हिन्दी में तैयार किया वह भी

बहुत पसंद की गई और अब हम ने उनकी सबसे बड़ी पुस्तक अनवारुल हदीस को उनके हुक्म से हिन्दी में लिखी। दुआ है कि खुदायतआला हमारी मेहनत को क़बूल फरमाए। सब भाईयों और बहनों को इस पुस्तक से फाइदा पहुँचाये और कियामत के दिन इसे हमारी बख्शिश का ज़रिया बनाए। आमीन

मुहम्मद अलाउद्दीन साबिर
ओझागंज—जिला बस्ती
27 जुमादल उखरा 1407 हि०
27 फरवरी 1987 ई०

पेशे लफ्ज

अज़——हजरत अल्लामा अरशदुल कादिरी साहब किबला

तरजमा—मौलाना अनवार अहमद कादिरी फाजिले फैजुर्रसूल

सब खूबियां अल्लाह के लिए हैं जो सारे जहान वालों का मालिक है और दुरुद व सलाम हो उसके प्यारे रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु त आला अलैहि व सल्लम पर और उनकी आल व अस्हाब पर सब पर।

अम्मा बाद। बहुत दिनों से इस बात की जुरुरत थी कि आम मुसलमानों की बोली में हदीस शरीफ की एक ऐसी किताब तैयार की जाये जो भरोसा के लाइक हो। लेकिन किसी भी जुबान के मतलब को दूसरी जुबान में ढालना जितना मुश्किल काम है वह पढ़े लिखे लोगों से छुपा नहीं है। खास कर हदीसों का तरजमा तो इस लिहाज से और भी ज्यादा मुश्किल है कि ईमान व इस्लाम की तमाम बातें और शरीअत के सारे हुक्मों की वह जड़ भी है। इस-लिए मतलब के अदा करने में अल्फाज और बयान की जरा भी गलती हो गई तो न सिर्फ यह कि हुजूर-सल्लल्लाहु त आला अलैहि वसल्लम का मकसद अदा होने से रह जाएगा बल्कि इस्लामी दस्तूर की उस रुह पर असर पड़ जाएगा जो अमली जिन्दगी के अनगिन्त हिस्सों में पाई जाती है। इसलिए हदीसों के तरजमा के सिलसिले में सिर्फ दोनों जुबान का जानना काफी नहीं है बल्कि मतलब के सहीह बयान करने पर कुदरत होने के साथ-साथ हदीस की समझ, फिक्ह में सूझबूझ, शरह और तावील की ज्यादा जानकारी, बुजुर्गों का दीनी मिजाज और हुजूर सल्लल्लाहु त आला अलैहि वसल्लम के साथ बेइन्तिहा इश्क व महब्बत और ज्यादा जज्बा व इहतिराम का तअल्लुक भी निहायत जुरुरी है।

खुदा का शुक्र है कि फाजिले जलील हजरत-अल्लामा मुफ्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी (जीद मजदुहुम) इस बड़े काम के लिए

तैयार हो गये और कई साल की मेहनत के बाद उन्होंने मोतबर हदीसों की एक किताब तैयार करके कौम के सामने रखा जो इस वक्त हमारे समाने है।

मैं अपने इल्म व यकीन की हद तक कह सकता हूं कि मौलाना मौसूफ अपने इल्म व परहेजगारी, सूझ-बूझ, दिमाग की तेजी और इश्क व महब्बत की लताफतों, तहारतों और सआदतों के लिहाज से बेशक इस काम के लाइक हैं और बिला शुब्हा उनकी यह खिदमत इज्जत व इहतिराम की नजर से देखे जाने के काबिल है।

मैं दुआ करता हूँ कि अल्लाह तआला अहले हक की तरफ से उन्हें इस बड़ी खिदमत पर अज्रे जलील व जजाए जलील बे मसील अता फरमाये और सहीह हदीसों की यह किताब हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाह में सनदे कबूल की इज्जत से सरफराज करे।

रस्म के मुताबिक अजीजे मौसूफ ने अपनी इस किताब पर पेशे लफ्ज लिखने के लिए मुझ जैसे ना सजावार को इतनी बार मजबूर किया कि अब उज्र करने की भी गुनजाइश बाकी न रही। वैसे यह हकीकत है कि मैं इस बड़े काम के लाइक नहीं हूँ लेकिन सिर्फ इस लालच में कलम उठा रहा हूँ कि शायद मैदाने महशर में यही चन्द सतरें मेरे नाम ए आमाल की अच्छाईयों का पेशे लफ्ज बन जायें।

हदीसों के शाए करने और फैलाने का काम बजा तौर पर दोनों जहान की बहुत बड़ी इज्जत है लेकिन जिन्दगी के थोड़े वक्त को इसमें खर्च करना भी कुछ कम काबिले फख्र नहीं कि हक के दुश्मनों की तरफ से हदीस शरीफ की इज्जत पर किये गये हमलों को रोक कर दिलों के अंधेरे में हकीकत व यकीन का उजाला फैलाया जाये।

इसी जजबे से मैंने अपने पेशे लफ्ज में हदीस की दीनी हैसियत हदीसों के जमा करने कि इल्मी व तारीखी इनफिरादियत (इतिहासिक अनुपम्ता) और हदीस के न मानने का फितना और उसके

सबब पर बेलाग बहस करके बहुत सी हकीकतों को खोलकर रख दिया है। जिन पर अब तक पर्दा पड़ा हुआ है।

खुदा करे मेरे कलम की यह कोशिश इल्म वालों की बारगाहों से वकअत व इतिबार की सनद हासिल करें और सब मुसलमान दुश्मनाने हक की उन साजिशों से खबरदार हो जायें जो हदीस न मानने के जज्बे के पीछे काम कर रही हैं।

हदीस की तारीफ और उसकी किस्में

हदीस कहते हैं हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बात को वह खुल्लम-खुल्ला हो या हुक्मन और उनके काम और उनकी तकरीर को तकरीर का मतलब यह कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि-वसल्लम के सामने कोई काम किया गया और हुजूर ने उसे मना नहीं फरमाया, या सहाबा रजियल्लाहु तआला अनहुम में से किसी ने कोई बात कही और हुजूर ने उससे रोका नहीं बल्कि चुप रहे और अमलन उसे साबित फरमा दिया।

इसी तरह हदीस का लफ्ज (शब्द) बोला जाता है सहाबा रजियल्लाहु तआला अनहुम की बात उनके काम और उनकी तकरीर पर भी और सहाबी उनको कहते हैं कि जिनको ईमान की हालत में हुजूर सल्लल्लाहु त आला अलैहि वसल्लम की सुहबत नसीब हुई और ईमान पर ही खातिमा हुआ।

और इसी तरह हदीस का लफ्ज बोला जाता है, ताबिईन की बात, उनके काम और उनकी तकरीर पर भी, ताबिई उनको कहते हैं कि जिहोंने ईमान की हालत में किसी सहाबी से मुलाकात की और ईमान पर उनका खातिमा हुआ (अन्नुख्बतुन्नबहानिया)

इस लिहाज से हदीस की तीन किस्में हो गईं जिसको हजरत शैख अब्दुलहक्क मुहद्दिस देहलवी बुखारी रहमतुल्लाहितआला अलैहि ने युँ बयान फरमाया है कि जिस हदीस की रिवायत का सिलसिला हुजूर सल्लल्लाहुत आला अलैहिवसल्लम तक पहुँचता है

उसे हदीसे मरफूअ कहते हैं और जिस हदीस की रिवायत का सिल-सिला किसी सहाबी तक पहुँचता है उसे हदीसे मौकूफ कहते हैं और जिस हदीस की रिवायत का सिलसिला किसी ताबिई तक पहुँचता है उसे हदीसे मकतूअ कहते हैं।

हदीस की हैसियत

यह बात बिल्कुल जाहिर है कि शरीअत की तमाम बातों का पहला सरचश्मा कुर्आन मजीद है कि वह खुदा की किताब है और कुर्आन ही के हुक्म के मुताबिक हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्म की फरमाँ बरदारी और पैरवी भी हर मुसलमान के लिए जुरुरी है कि बगैर उसके खुदा के हुक्म की तफसील नहीं जान सकते और न कुर्आन की आयत का मतलब समझ सकते हैं। इसलिए अब जुरुरी तौर पर हदीस भी इस लिहाज से शरीअत के हुक्म की जड़ करार पा गई कि वह हुजूर के हुक्म, उनके काम और कुर्आन की आयतों का मतलब जानने का जरिआ है।

अब आप कुर्आन मजीद की उन आयतों का तरजमा पढ़ें जिनमें बिल्कुल खुल्लम-खुल्ला बार-बार हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की फरमाँबरदारी और पैरवी का हुक्म दिया गया है।

(1) ऐ ईमान वालो ! अल्लाह और उसके रसूल की फरमाँ-बरदारी करो और रसूल से मुंह न फेरो। (पारा 9 रुकूअ 17)

(2) अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म पर अमल करो और आपस में मत झगड़ो कि बिखर कर कमजोर हो जाओगे।

(पारा 10 रुकूअ 2)

(3) और हमने कोई रसूल नहीं भेजा मगर इसलिए ताकि अल्लाह के हुक्म से उसकी फरमाँबरदार की जाये।

(पारा 5 रुकूअ 6)

(4) ऐ रसूल ! आप लोगों से कह दीजिए कि अगर तुम खुदा से दोस्ती का दम भरते हो तो मेरी पैरवी करो खुदा तुम्हें अपना दोस्त बनाएगा। (पारा 3 रुकूअ 12)

(5) आपके रब की कसम वह हरगिज मुसलमान नहीं हो सकते जब तक कि अपने उन मुआमलों में आपको अपना हाकिम न मान लें जिनमें उनके आपस का झगड़ा है। (पारा 5 रुकू अ 6)

(6) अल्लाह और रसूल की फरमाँ बरदारी करो और उनके हुक्म पर अमल करो जो तुम में हुकूमत वाले हैं। फिर अगर तुम में किसी बात का झगड़ा उठे तो अल्लाह और रसूल की जानिब ले जाओ। (पारा 5 रुकू अ 5)

(7) ऐ ईमान वालो ! अल्लाह की फरमाँ बरदारी करो और रसूल का हुक्म मानो और अपने अमल को बेकार न करो। (पारा 26 रुकू अ 8)

(8) जिसने रसूल की फरमाँ बरदारी की तो बेशक उसने अल्लाह की फरमाँ बरदारी की। (पारा 5 रुकू अ 8)

(9) ऐ रसूल ! तुम कह दो कि अल्लाह और रसूल की फरमाँ बरदारी करो। फिर अगर वह मुँह फेरें तो अल्लाह काफिरों को पसंद नहीं करता। (पारा 3 रुकू अ 12)

(10) जो कुछ रसूल तुम्हें दें उसे ले लो और जिससे मना करें उससे रुक जाओ और अल्लाह से डरो। बेशक अल्लाह का अजाब सख्त है। (पारा 28 रुकू अ 4)

(11) बेशक तुम्हें रसूलुल्लाह की पैरवी बेहतर है। (पारा 21 रुकू अ 19)

क़ुर्आन मजीद की इन आयतों से खुल्लम-खुल्ला साबित हो गया कि मुसलमानों के लिए हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की फरमाँ बरदारी जुरुरी है। लिहाजा इस लिहाज से हुजूर के हर हुक्म पर हमें इस तरह अमल करना जुरुरी है जिस तरह क़ुर्आन के ज़रिए हम तक पहुँचने वाले खुदा के किसी हुक्म पर अमल करना जुरुरी है इसलिए कि रसूल का हुक्म भी एक वास्ता से खुदा ही का हुक्म है।

एक सुवाल

यह बात अच्छी तरह समझ लेने के बाद एक सुवाल पर गौर कीजिए और वह यह है कि कुर्आन की आयतों में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के हुक्म पर अमल करने और उनकी पैरवी करने का जो बार-बार हुक्म दिया गया है तो क्या यह हुक्म हुज़ूर की सिर्फ जाहिरी जिन्दगी तक है या कियामत तक के लिए ?

अगर मआज अल्लाह खुदा के इस हुक्म को हुज़ूर की जाहिरी जिन्दगी के साथ खास कर दिया जाये तो दूसरे शब्दों में उसका साफ और खुल्लम-खुल्ला मतलब यह होगा कि कुर्आन और इस्लाम पर अमल करने का जमाना भी हुज़ूर की जाहिरी जिन्दगी ही तक है इसलिए कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के हुक्म पर पर अमल और उनके कामों की पैरवी लाजिम ही इसलिए थी कि बगैर उसके कुर्आन व इस्लाम की सारी बातों को नहीं समझ सकते थे और उन पर अमल ही कर सकते थे लेकिन जब कुर्आन और इस्लाम पर अमल करने का हुक्म कियामत तक के लिए है तो साबित हुआ कि हुज़ूर की फरमाँबरदारी और उनकी पैरवी का भी कियामत तक के लिए है।

हदीस शरीफ का हुज्जत (वाक्कलह) होना

जब यह बात तै हो गई कि कुर्आन और इस्लाम पर अमल करने का हुक्म कियामत तक के लिए है और यह भी तै हो गया कि कुर्आन व इस्लाम की सारी बातों का जानना और उन पर अमल करना हुज़ूर की फरमाँबरदारी के बगैर नहीं हो सकता तो एक दूसरा सुवाल यह है कि डेकरानरी 'आम बोल चाल' अक्ल और शरीअत की रु से फरमाँबरदारी हमेशा हुक्म की होती है तो आज हुज़ूर के वह हुक्म कहाँ हैं जिन पर अमल करने के लिए कुर्आन हम

बार-बार कहता है इसलिए कि हुक्म के बगैर अमल करने के लिए कहना बिल्कुल अक्ल और शरीअत के खिलाफ है। तो जब आज भी कुर्आन हम से हुज़ूर के हुक्म पर अमल करने के लिए कहता है तो मानना पड़ेगा कि आज हमारे सामने हुज़ूर के हुक्म का होना भी ज़ुरुरी है और जाहिर है कि हुज़ूर के हुक्म का मतलब वह हुक्म नहीं है जो खुदा की तरफ से कुर्आन में है। इसलिए कि खुदा का हुक्म होने की हैसियत से उन पर अमल का ज़ुरुरी होना हमारे लिए बहुत काफी है। इसलिए मानना पड़ेगा कि रसूल के जिन हुक्मों पर अमल करने का हम को हुक्म दिया गया है वह कुर्आन मजीद के हुक्म के इलावा हैं।

इतना समझ लेने के बाद अब यह बताने की ज़ुरुरत नहीं रही कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहुतआला अलैहिवसल्लम के हुक्म और कुर्आन व इस्लाम की तफसील का नाम हदीस है। यहीं से हदीस की ज़ुरुरत और उसकी इस्लामी हैसियत अच्छी तरह जाहिर हो गई। हदीस की ज़ुरुरत से वही शख्स इनकार कर सकता है जिसे रसूल की फरमाँबरदारी से बिल्कुल इनकार हो।

रिवायत की ज़ुरुरत

सहाब ए किराम जिनको हुज़ूर सल्लल्लाहुतआला अलैहि व सल्लम के अमल को अपनी आँखों से देखने और उनके हुक्म को अपने कानों से सुनने का मौका मिला था उन्हें शरीअत की बातों को जानने के लिए रिवायत के वास्तों की बिल्कुल ज़ुरुरत नहीं थी लेकिन बाद के लोगों को अपने रसूल के अमल और उनकी बात से आगाह होने का जरिया सिवाय रिवायत के और क्या था ?—यहीं से यह बात भी हल हो गई कि हुज़ूर के अमल उनकी बात और उनकी हालतों से आने वाली उम्मत को आगाह करने के लिए रिवायत की ज़ुरुरत क्यूँ हुई ?

तो इस उम्मत के जिन लोगों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को खुद अपनी आंखों से देखा और अपने कानों से सुना वह लोग "सहाबा" के नाम से याद किये जाते हैं और हुज़ूर के

विसाल फरमाने के बाद सहाब ए किराम ने जिन लोगों तक हुजूर के अमल और उनकी बातों को पहुँचाया वह "ताबिइन" कहे जाते हैं और ताविईन ने हुजूर की बातों को जिन लोगों तक पहुँचाया उनको तवअ ताबिईन के लकब से याद किया जाता है। फिर उन लोगों ने अपने जमाने के लोगों को पहुँचाया फिर सीना दर सीना, नस्ल दर नस्ल और गिरोह दर गिरोह रिवायतों का यह सिलसिला आगे बढ़ता रहा यहाँ तक हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहिवसल्लम के अमल, उनकी बातें, उनकी हालतें और उनकी तकरीरें हदीस की बड़ी-बड़ी किताबों में जमा होकर हम चौदा सौ वर्ष बाद पैदा होने वाले तक पहुँचीं।

तो रहमत व नूर की मूसलाधार बारिश हो हदीस की रिवायत करने वाले उस मुकद्दस गिरोह पर जिसके खुलूस व इहसान, मेहनत व जफा कशी, बराबर सफर, लगातार कुर्बानी और मुसलसल कोशिश के जरिए आकाए दो आलम सल्लल्लाहुतआला अलैहिव-सल्लम की मुबारक जिन्दगी का एक शफ्फाफ आईना हमें हासिल हुआ। इतना शफ्फाफ कि अकीदत की आँख खोलते ही उस मुबारक जमाना में पहुँच जाइए जहाँ कदम-कदम पर जिबरील की आवाज सुनाई देती है। दोपहर के सूर्य की बात क्या कहिए रात को भी जलवों का सवेरा है। हर तरफ मलकूतियों का डेरा है 'आसमानों के पट खुले और बंद हुए नूरानी काफिले उतरे और चले गये 'अर्श से फर्श तक नूर व तजल्ली का ताँता बँधा हुआ है 'जलवों की बारिश से तैबा की जमीन इतनी नम हो गई है कि निचोड़िए तो कौसर का धारा फूट पड़े 'मुल्के रिसालत के सुलताने आजम कभी मस्जिद के आँगन में कभी हजरते आइशा रजियल्लाहुतआला अनहा के हुजरा में 'कभी अपने दिवानों का काफिला लिए हुए जंगलों, पहाड़ों और रेतीले मैदानों से गुजर रहे हैं। और कभी मुनाजात से उम्मत की तकदीर संवार रहे हैं कभी इन्तिहाई गम से आँखें भीग गईं और कभी मुस्कराहट से गुन्चे खिला दिए बागीचों की तरफ निकल गए तो आप की खुशबू से रासते महक उठे और अब रहमत के कमरा में तशरीफ रखे हैं, तो हर तरफ चेहरए-

अनवर का उजाला है। अभी आशिकों की महफिल में हकीकत व मारिफत के मोती लुटा रहे हैं और अब देखिए तो मैदाने जंग में वफादारों को हमेशा सुख चैन से रहने की खुश खबरी दे रहे हैं।

गरज हदीस की किताबों का जो पन्ना उलटिए अक्षरों के शीशे में हुजूर सल्लल्लाहुतआला अलैहिवसल्लम की जिन्दगी का एक-एक हिस्सा नजर आता है। जिन लोगों के दिल हुजूर की महब्बत से खाली हैं वह जलवए महबूब के उस जमाल व कमाल के शीशे को तोड़ भी दें.तो उन्हें उसका कलक ही क्या? कि उनके पास महब्बत वाला दिल ही नहीं है। लेकिन आशिकों से पूछिए जो मदीना शरीफ की मिट्टी को सिर्फ इसलिए अपनी आँखों से लगा लेते हैं कि शायद हुजूर के पैर मुबारक से यह छू गई हो तो हदीस की किताबों में उनकी आँखों की ठंडक और दिल की तसकीन के क्या-क्या सामान हैं।

शौक की कहानी की शुरुआत (आरंभ)

रिवायते हदीस का यह सिलसिला जिन पर खत्म होता है यह साहाबा रजियल्लाहु तआला अनहुमं हैं। इसलिए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहिवसल्लम की मुबारक जिंदगी को हकीकत में देखने वाले और दिन-रात के हाजिर रहने वाले वही लोग हैं। अगर उन बुजुर्गों ने हुजूर की हदीसों को दूसरों तक न पहुंचाया होता तो हदीस के रिवायत करने की बुनयाद ही न पड़ती और शरीअत का सोता जहां से फूटा था वहीं जाम होके रह जाता। आखिर एक जमाना की बात दूसरे जमाना में कैसे पहुंची? अगर सुनने देखने वालों ने पहुंचाने का बंदवबस्त नहीं किया था। इस राह में सहाबए किराम का जज्बा मालूत करने के बाद मामूली समझ का आदमी भी इस नतीजे पर पहुंचे बगैर नहीं रह सकता कि वह इस काम को दीन का बहुत बड़ा काम समझते थे जैसा कि देखने वालों का बयान है कि जब तक इस दुनिया को हुजूर की जाहिरी जिंदगी की बरकतें हासिल रहीं

सहाबा का मजमा हर वक्त कान लगाये रहता कि कब हुजूर कुछ फरमायें और हम सुनलें। और इतना ही नहीं बल्कि हाजिर रहने वालों से इस का इकरार लिया जाता कि वह गैर हाजिर रहने वालों तक हुजूर की सारी बातें पहुंचा दिया करें। जैसा कि हजरत अल्लामा हाफिज नैशापूरी रजियल्लाहु तआला अनहु हजरते बरा इब्ने आजिब रजियल्लाहु तआला अनहु से इस सिलसिले में एक हदीस रिवायस करते हैं कि उन्होंने फरमाया हम सब हदीसों को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से नहीं सुन पाते थे। हम ऊँटों की देख भाल में लगे रहते थे और सहाबए क़िराम हुजूर से जो हदीस नहीं सुन पाते थे वह अपने जमाना के ज्यादा याद रखने वालों से सुन लिया करते थे।

सहाबा के जमाने में हदीसों के रिवायत करने के मौके

दीन की सारी बातों को मुसलमानों तक पहुंचाने के लिए सहाबए किराम के दरमियान हदीसों को रिवायत का दिन-रात यह तरीका तो था ही। इसके इलावा भी बहुत से मौके इस तरह के सामने आते थे जब कि किसी खास मसले में कुर्आन का कोई हुक्म खुल्लम खुल्ला नहीं मिलता तो सहाबा के मजमा से पूछा जाता कि इस मसला के बारे में हुजूर की कोई हदीस किसी को मालूम हो तो वह बयात करे। जैसा कि यही हाफिज नैशापुरी हजरते कुबैसा इब्ने जुवैब रजियल्लाहु तआला अनहु से एक हदीस रिवायत करते हैं उन्होंने बयान किया कि हजरते अबूबकर सिद्दीक रजियल्लाहु तआला अनहु की खिलाफय के जमाना में एक दादी उनकी खिदमत में हाजिर हुई वह चाहती थी कि उसे पोते की मीरास में से कुछ हिस्सा दिया जाये। हजरते अबूबकर सिद्दीक रजियल्लाहु तआला अनहु ने फ़रमाया कि कुर्आन मजीद में तेरा कोई हिस्सा मैं नहीं पाता हूं औरमुझे यह भी मालूम नहीं है कि हुजूर ने तेरे बारे में कुछ फरमाया है। जब उसने बार-बार कहा

तो फरमाया ठहर, मैं शाम को लोगों से उस के बारे में पूछूँगा। जुहर की नमाज पढ़ने के बाद लोगों से उसके बारे में पूछा। उस पर हजरते मुगीरा इब्ने शोबा रजियल्लाहु तआला अनहु खड़े हुए और फरमाया कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से मैंने सुना है कि वह दादी को छटा हिस्सा देते थे। (मारिफते उलूमिल हदीस)

वाकिआ की तहकीक

बात इतनी ही पर नहीं खत्म हो गई बल्कि मुगीरा इब्ने शोबा हदीस बयान करके जब बैठ गये तो हजरते अबू बकर सिद्दीक रजियल्लाहु तआला अनहु दो बारा खड़े हुए और फरमाया क्या यह बात आप के साथ किसी और ने भी सुनी है? इस सवाल पर हजरते मुहम्मद इब्ने मुस्लिमा खड़े हुए और उन्होंने बयान किया कि मैं ने भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि-वसल्लम से सुना है कि वह दादी को छटा हिस्सा देते थे।

अल्लाहु अकबर! जानते हैं? हजरते अबू बकर का यह सुवाल कि आप के साथ यह बात किसी और ने भी सुनी है? किस से है? यह हजरते मुगीरा इब्ने शोबा रजियल्लाहु तआला अनहु हैं जो बड़े सहाबा में से हैं जिन की ईमानदारी व परहेजगारी और अमानत व सच्चाई की कसम खाई जा सकती है। लेकिन यहीं से यह बात खुल्लम खुल्ला जाहिर हो जाती है कि हुजूर की हदीस दीन के लिए दलील न होती तो हदीस की तस्दीक इस तरह न की जाती। और यहीं से यह बात भी जाहिर हो गई कि बयान करने वाले एक से दो हो जायें तो बात और ज्यादा साबित हो जाती है।

किसी वाकिआ की खबर एक ही आदमी की जुबानी सुनी जाये और वही खबर कई आदमियों के जरिये मालूम हो तो दोनों में जो यकीन का फर्क है वह जाहिर है। हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की हदीस शरीफ के बारे में अपने यकीन को इन्तिहा

पर पहुंचाने के लिए सहाबए किराम के यहाँ इस तरह का बन्दो बस्त हमें कदम 2 पर मिलता है।

एक ईमान अफरोज वाकिआ

हजरते अल्लामा हाफिज नैशापुरी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने मशहूर सहाबी हजरते अबू अय्यूब अंसारी रजियल्लाहु तआला अनहु का एक वाकिआ बयान किया है। फरमाते हैं कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से एक हदीस उन्हों ने सुनी थी और इत्तिफाक की बात यह है कि उस हदीस के सुनने वालों में मशहूर सहाबी हजरते उकबा इब्ने आमिर रजियल्लाहु तआला अनहु भी थे। हुजूर के विसाल फरमाने के बाद जब मिस्र व शाम और रुम व ईरान पर इस्लामी झंडा लहराने लगा तो बहुत से सहाबा हिजाज से दूसरे मुल्कों में चले गये। उन्हीं लोगों में हजरते उकबा इब्ने आमिर भी थे जो मिस्र गये और फिर वहीं रह गये।

हजरते अबू अय्यूब अंसारी को किसी तरह यह मालूम हो गया कि जो हदीस मैं ने हुजूर से सुनी हैं उसके सुनने वालों में हजरते उकबा इब्ने आमिर भी हैं तो सिर्फ इस बात का जज्बा उन्हें मदीना शरीफ से मिस्र ले गया कि हजरते उकबा इब्ने आमिर से इस बात को पूछने के बाद यह कह सकें कि इस हदीस के रिवायत करने वाले दो हैं एक मैं हूं दूसरे उकबा इब्ने आमिर हैं।

उन के इस सफर का हाल भी बड़ा ही रुह परवर (प्राणवर्धक) है। फरमाते हैं कि जज्बए शौक में पहाड़ों, जंगलों और नदियों को पार करते हुए वह मिस्र पहुंचे। बुढ़ापे की उम्र, कठिन रास्ता लेकिन शौक में न बुढ़ापे का असर मालूम हुआ और न रास्ते की कठिनाईयाँ रुकावट बनीं। दिन रात चलते रहे। महीनों का रास्ता तै करके जब मिस्र पहुंचे तो सीधे मिस्र के गवर्नर हजरते मुस्लिमा इब्ने मुखल्लद अंसारी की कोठी पर उतरे। गवर्नर ने पूछा अबू अय्यूब! आप का आना किस लिए हुआ? आपने फरमाया हुजूर

सल्लल्लाहु तआला अलैहि-वसल्लम से मैं ने एक हदीस सुनी है और इत्तिफाक की बात यह है कि उस हदीस के सुनने वालों में मेरे और उकवा इब्ने आमिर के इलावा अब कोई इस दुनिया में बाकी नहीं रहा। लिहाजा मेरे साथ एक ऐसा आदमी लगा दो जो मुझे उन के घर तक पहुंचा दे। मतलब यह है कि मैं तुम्हारे पास इस लिए नहीं आया हूं कि तुम से मिलूँ वल्कि सिर्फ इस लिए आया हुं कि तुम हजरते उकबा इब्ने आमिर के घर तक पहुंचा देने का प्रबंध कर दो।

एक इश्क वाले की जरा शाने बेनियाजी (अनीहा) देखिए कि गवर्नर के दरवाजे पर गये हैं मगर एक शब्द भी उसके बारे में नहीं कहते। वाकिआ रिवायत करने वाले का बयान है कि मिस्र के गवर्नर ने एक जानकार आदमी साथ कर दिया जो उन्हें हजरते उकवा इब्ने आमिर के घर तक ले गया। गले मिलने के बाद उन्हों ने भी पहला सुवाल यही किया अबू अय्यूब! आपका आना किस लिए हुआ? आपने फरमाया कि एक हदीस मैं ने हुजूर से सुनी है और उस का सुनने वाला मेरे और आप के इलावा अब दुनिया में कोई बाकी नहीं रहा। और वह हदीस मुसलमान की बुराई पर पर्दा डालने के बारे में है हजरते उकबा ने कहा कि हाँ हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलेहि वसल्लम से मैं ने यह हदीस सुनी है कि जो मुसलमान की किसी बुराई को छुपाता है कल कियामत के दिन अल्लाह तआला उसकी बुराई को छुपायेगा। हजरते अबू अय्यूब ने फरमाया आप ने सच कहा यही मैंने भी सुना है।

इसके बाद बयान करने हैं कि हजरते अबू अय्यूब इतना सुनकर अपनी सवारी के पास आए और सवार होकर मदीना की तरफ वापस लौट गये। गोया (मानौ) मिस्र के लंबा सफर का मतलब इसके सिवा कुछ और नहीं था कि अपने कान से सुनी हुई बात दूसरे की जुबानी सुन लें। महबूब की बात के सुनने का यही वह जज्बा था जिसने मजहबे इस्लाम को मजहबेइश्क बना दिया।

हजरते अल्लामा हाफिज नैशापुरी इस वाकिआ के आखिर में लिखते हैं कि यह हजरते अबू-अय्यूब अंसारी हैं जो हुजूर सल्लल्लाहु

तआला अलैहि वसल्लम के साथ बहुत ज्यादा रहने वाले और बहुत ज्यादा हदीस रिवायत करने वाले हैं इसके बावजूद सिर्फ एक हदीस के लिए इतना लंबा सफर किया (मारिफते उलूमिल हदीस)

एक और वाकिआ

इस तरह का एक और वाकिया हजरते जाबिर इब्ने अब्दुल्लाह रजियल्लाहु तआला अनहु के बारे में इमाम नैशपुरी ने लिखा है। बात यहाँ से चली है कि अपने वक्त के बहुत बड़े मुहद्दिस हजरते अम्र इब्ने अबूसलमा इमामुलहदीस हजरते इमाम औजाई रजि-यल्लाहु तआला अनहु के यहाँ चार साल रहे इतने लंबे जमाने में उन्होंने सिर्फ तीस हदीसें उन से सुनीं एक दिन वह हजरते इमामे औजाई से बड़े अफसोस के साथ कहने लगे कि आप के पास रहते हुये मुझे चार वर्ष हो गये लेकिन इतने लंबे जमाने में सिर्फ तीस हदीसें मैंने आप से सुनीं। इमामे औजाई ने फरमाया कि चार वर्ष के जमाने में तीस हदीसें तुम कम समझरहे हो हालाँकि हजरते जाबिर इब्ने अब्दुल्लाह ने सिर्फ एक हदीस के लिए मिस्र का सफर किया, सवारी खरीदी और उस पर सवार होकर मिस्र गये और हजरते उकबा इब्ने आमिर से भेंट करके मदीना वापस लौट गये। (मारिफते उलूमिल हदीस सफा 9 मतलब यह है कि चार वर्ष के जमाने में तीस हदीसों के सुनने को गनीमत समझो कि एक बड़ी नेमत कम से कम वक्त में तुम को मिल गई वरना सहाबा के जमाने में तो सिर्फ एक हदीस के लिए लोग दूर-2 के मुल्कों का सफर किया करते थे तो एक हदीस पर दो महीने का भी वक्त खर्च हुआ तो आप हिसाब लगालो तीस हदीस के लिए कितना वक्त चाहिए था।

बल्कि हाफिज नैशापुरी के लिखने के अनुसार सहाबा के जमाने में सफर इतना जुरुरी था कि हजरते इब्ने उमर रजियल्लाहु तआका अनहुमा कहा करते थे कि हदीस सीखने वाले को चाहिए कि वह अपने लिए लोहे के जूते तैयार कराये ताकि वह हदीस सीखने के लिए बराबर सफर करता रहे। (मारिफा सफा 9)

रिवायत के सिलसिले की तकवियत (शक्ति)

सहाबा के जमाने में रिवायत के सिलसिले की तकवियत (शक्ति) के लिए जहाँ रिवायत करने वालों के ज्यादा होने को बढ़ावा दिया जाता था वहां रिवायत के सहीह होने को जांचने और उसे यकीन की हद में पहुंचाने के लिए और भी तरीके रहे। मिसाल के तौर पर हजरते अली रजि यल्लाहु तआला अनहु के बारे में है कि जब वह किसी हदीस को हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से न सुन पाते तो किसी दूसरे रिवायत करने वाले से सुनते लेकिन उससे कसम लिया करते थे (मारिफा सफा 9)

यह बयान करने के बाद अल्लामा हाफिज नैशापुरी लिखते हैं कि यही हाल सहाबा, ताबिईन, तबए ताबिईन और बड़े-बड़े आलिमों का था कि वह हदीस के बारे में बहस व कुरेद किया करते थे यहां तक कि उन को हदीस के सहीह होने का यकीन हो जाता (मरिफा पेज 15)

हदीस के रिवायत करने का फन (शिल्प) जो अपनी अच्छाईयों के सबब सारी दुनिया में बे मिसाल है वह यह है कि किसी वाकिआ को रिवायत करने के लिए सिर्फ इतना ही काफी नहीं है कि वाकिआ बयान कर दिया जाये बल्कि वाकिया बयान करने से पहले बयान करने वाले के लिए यह बताना जुरुरी है कि इस वाकिआ की जानकारी उसे कैसे हुई ? और कितने वास्तों से यह बात उस तक पहुंची है ? और वह कौन लोग हैं ? उन के नाम और पते उनकी उम्र क्या है ? और ईमानदारी, परहेजगारीं, सच्चाई, झूट बोलने से नफरत, अक्ल और समझ वगैरा के लिहाज से उनकी हालतें क्या हैं ? इसी को हदीस की बोली में इस्नाद कहते हैं। यही वजह है कि हदीस रिवायत करने वालों के यहाँ इस्नाद इतनी जुरुरी चीज है कि उसके बगैर उनके यहाँ कोई बात भरोसा के काबिल नहीं। यहाँ तक कि हजरते अल्लामा हाफिज नैशापुरी ने

हजरते अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक रजियल्लाहु तआला अनहु की यह बात लिखी है कि इस्नाद दीन का हिस्सा है। अगर इस्नाद न होती तो जिसके दिल में जो आता कहता।

इस सिलसिले में अल्लामा नैशापुरी नें यह वाकिआ लिखा है कि एक मरतबा अबूफरवा नाम के एक शख्स ने हजरते इमाम जुहरी रजियल्लाहु तआला अनहु से बगैर किसी इस्नाद के हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की एक हदीस बयान की तो इमामे जुहरी ने फरमाया ऐ अबूफरवा ! तुझको अल्लाह तबाह करे तुझ को किस चीज ने अल्लाह पर इतना ढीट बना दिया है कि तेरी हदीस की कोई सनद नहीं है तू हमसे ऐसी हदीसें बयान करता है कि जिन के लिए न नकेल हैं न लगाम ।

हदीस परखने का काइदा

इस सिलसिले में अल्लामा नैशापुरी ने हदीसों को परखने के लिए जो काइदा लिखा है वह पढ़ने के काबिल है उससे अच्छी तरह मालूम हो जाएगा कि हदीसों को गलत बातों की मिलावट से बचाने के लिए कैसी-कैसी तदबीरें अमल में लाई गई हैं।

फरमाते हैं हमारे जमाने में हदीस हासिल करने वालों के लिए जुरुरी है कि पहले वह हदीस बयान करने वालों की हालतों की जानकारी करे कि शरीअत के अनुसार वह खुदा को एक मानता है या नहीं ? और नबियों की फरमाँ बरदारी अपने लिए जुरुरी समझता है कि नहां ? फिर उसकी हालत पर गौर करे कि वह बुरे मजहब वाला तो नहीं हैं कि लोगों को अपने बुरे मजहब की तरफ बुला रहा हो इसलिए कि बुरे मजहब की तरफ बुलाने वालों से कोई हदीस नहीं ली जाएगी। फिर हदीस बयान करने वाले की उम्र मालूम करे ताकि पता चल सके कि जिन से यह हदीस बयान करता है उससे मिलने के लाईक उसकी उम्र है या नही ? फिर उसके तौर तरीका पर गौर करें (मारिफ़ा सफा 16)

हदीस इकट्ठा करने की हिस्ट्री

हदीस के फन (शिल्प) की अच्छाईयों पर कुछ लिखने से पहले यह बता देना ज़रूरी है कि सहाबा के जमाने से लेकर आज तक हदीसों के इकट्ठा करने का काम कैसे हुआ—? तो मालूम होना चाहिए कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का जमाना जो कुर्आन के उतरने का जमाना है उस में चूँकी कुर्आन मजीद की आयातों की हिफाजत का काम सब से बड़ा था इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने सहाबा से जोर देकर फरमाया कि सिर्फ कुर्आन की आयतों को लिखा करें हदीसों को न लिखें ताकि कुर्आन की आयतों के साथ किसी तरह का घालमेल न हो अल्बत्ता जुबानी तौर पर हदीसों के बयान करने की रुकावट नहीं थी। जैसा कि मुस्लिम शरीफ में हजरते अबू सईद खुदरी रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है। उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया। कोई आदमी मेरी हदीस न लिखे और जिसने कुर्आन के इलावा कुछ लिखा हो तो उसको मिटा दे और मेरी हदीसें जुबानी याद करे कोई हरज नहीं और जिसने मेरी तरफ से कोई झूट बात कही तो उसको चाहिए कि अपना ठिकाना जहन्नम बनाए।

लेकिन उसी के साथ कुछ वह सहाबा जिन्हें पूरा भरोसा था कि वह कुर्आन की आयतों के साथ हदीसों को घाल मेल नहीं होने देंगे वह अपने तौर पर कुछ हदीसों को भी लिख लिया करते थे जैसाकि हजरते इमाम बुखारी रजियल्लाहु तआला अनहु हजरते अबू हुरैरा रेजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत करते हैं। उन्हों ने फरमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सहाबा में कोई मुझ से ज्यादा हदीस बयान करने वाला नहीं था मगर अब्दुल्लाह इब्नेअम्र। इसलिए कि वह लिखते थे और मैं नहीं लिखता था (बुखारी शरीफ)

जब कागज के टुकड़े, हिरन की झिल्लियां खुजूर के पत्तों और दिलों की तख्तियों में बिखरी हुई कुर्आन मजीद की आयतें हजरते

उमर रजियल्लाहु तआला अनहु की खिलाफत के जमाना से लेकर हजरते उस्मान गनी रजियल्लाहु तआला अनहु के जमाना तक किताब की शक्ल में इकट्ठा करदी गई और सारी दुनिया में उस की नक्ल फैला दी गई और हदीसों के साथ कुर्आन की आयतों के घाल मेल होने का कोई डर नहीं रह गया तो हजरते उमर इब्ने अब्दुल अजीज रजियल्लाहु तआला अनहु की खिलाफत के जमाना में उनके हुक्म पर हदीसों की किताबें लिखने और उन के इकट्ठा करने का काम बाकाइदा शुरु हुआ जैसा कि हजरते अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि तआला अलैहि की किताब अलफिया की शरह में पेशे लफ्ज लिखने वाले ने लिखा है कि सन 99 हिजरी में जब हजरते उमर इब्ने अब्दुल अजीज रजियल्लाहु तआला अनहु ने खिलाफत की जिम्मे दारियां संभालीं तो अबू बकर इब्ने हजम जो मुअम्मर, लैस, औजाई, मालिक, इब्ने इस्हाक और इब्ने अबूजीब के उस्ताद थे और मदीना शरीफ में खलीफा के नाइब थे उनको हजरते उमर इब्ने अब्दुल अजीज ने हुक्म दिया कि हुजूर की जो हदीस भी मिले उसे लिख लो इसलिए कि मुझको हदीस शरीफ के मिट जाने का डर है। (पेशे लफ्ज शरहे अल्फिया सफा 5)

इतना ही नहीं बल्कि हजरते उमर इब्ने अब्दुल अजीज रजियल्लाहु तआला अनहु के बारे में यह भी लिखा है कि उन्हों ने दूर व नजदीक के लोगों को लिखा कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की कोई हदीस पाओ तो उसे इकट्ठा कर लो (तारीखे अस्फहान अबू नुऐम)

हजरते उमर इब्ने अब्दुल अजीज रजियल्लाहु तआला अनहु के हुक्म पर हदीस की सबसे पहली किताब अल्लामा इब्ने हजम ने लिखी उसके बाद हदीस की किताबों के लिखने और उनके इकट्ठा करने का सिलसिला शुरु हो गया। कई शहरों में कई बुजुर्गों ने हदीस की बहुत सी किताबें लिखीं। शरहे अल्फिया के लेखक ने जगह के साथ उन बुजुर्गों का नाम इस तरह लिखा है कि इब्ने जुरैह मक्का में, इब्ने इस्हाक और मालिक मदीना में, रबीअ

इब्ने सबीह, सईद इब्ने उरवा और हम्माद इब्ने सलमा बसरा में, सुफयान सौरी कूफा में, औजाई शाम में, हिशाम वासित में, मुअम्मर यमन में, जरीर इब्ने अब्दुल्लाह रैं में, और इब्ने मुबारक खुरासान में थे। रजियल्लाहु तआला अनहुय (पेशे लफ्ज शरहे अल्फिया)

उसके बाद लिखते हैं कि यह सब के सब एक ही जमाना में एक की तबका (वर्ग) के थे और उनमें के बहुत से हजरते अबू बकर इब्ने हजम और इब्ने शिहाब जुहरी के शागिर्द (शिशु) थे।

उसके बाद पुस्तकों और पढ़ाईयों के जरिए हदीसों की पब्लिशिटी का सिलसिला आगे बढ़ता गया। रिवायतों के मानने न मानने के काइदे, रिवायत करने बालों की शरतें और इस फन के जाबिते और दस्तूर की तश्कील अमल में आई। और उसूले हदीस के नाम से दुनिया में एक नया फन शुरु हुआ। सख्त से सख्त शर्तों के साथ हदीस की नई-नई किताबें लिखी गईं। यहां तक कि आज हदीस की तमाम किताबों में सहीह बुखारी, सहीह मुस्लिम, तिरमिजी, अबू दाऊद, इब्ने माजा और नसई बहुत मशहूर हैं।

हमारे इस मजमून में हदीस की जुरुरत, उस की सकाहत (श्रेष्ठता) और उसकी तारीखी इन्फिरादियत (इतिहासी अनुपम्ता) पर काफी रौशनी पड़ चुकी है। जिन मुसलमानों को इस्लाम और कुर्आन प्यारा है और जो अपने आप को उसी उम्मत का एक आदमी समझते हैं। जो चौदह सौ वर्ष से अपनी तहजीब (सभ्यता) के साथ जिन्दा है तो उन्हें हदीस पर भरोसा करने के लिए किसी दलील की बिल्कुल जुरुरत नहीं है। अलबत्ता जो लोग अज राहे निफाक (बैमनस्यता से) हदीस को नहीं मानते और अपनी बद बख्ती को छुपाने के लिए कुर्आन का नाम लेते हैं अगर मेरे पास समय होता तो मैं दोपहर के सूर्य की तरह यह साबित कर दिखाता कि उनके यहाँ हदीस का न मानना कुर्आन पर अमल करने के लिए नहीं है बल्कि कुर्आन पर अमल करने से बचने के लिए है।

हदीस के इनकार से उन का अस्ली मकसद यह है कि खुदा के कलाम का मतलब हदीस से हट कर उन की सतझ पर छोड़ दिया जाये ताकि कुर्आन की आयतों का मतलब बदल कर भी वह कुर्आन पर अमल करने का दावा कर सकें ।

दुआ है कि खुदाय तआला हदीस के इनकार करने के फितने से मुसलमानों को बचाये रखे और उन्हें तौफीक (शक्ति) दे कि वह हदीस का उजाला फैला कर दुनिया का अंधेरा दूर करें। व सल्लल्लाहु तआला अला खैरि खलकि ही सैइदिना मुहम्मदिन व आलिही व सहबि ही व हिजबि ही अजमाईन ।

अरशदुल कादिरी
मुहतमिम मदरसा फैजुल उलूम
जमशेदपुर (बिहार)
15 रमजानुल मुबारक सन् 1391 हि०

लकल हम्दु या अल्लाह !
वस्सलातु वस्सलामु अलैक
या रसूल्लाह !

नीयत का बयान

(1) हजरते उमर इब्ने खत्ताब रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कामों का सवाब सिर्फ नीयतों से है और हर आदमी के लिए वही है जो वह नीयत करे।

(बुखारी-मुस्लिम-मिशकात सफा 11)

(2) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कियामत के दिन जिस रियाकार का सबसे पहले फैसला होगा वह शहीद है। उसे लाया जाएगा तो अल्लाह तआला फरमाएगा यह-यह चीजें हमने तुझे दी थीं ? वह कहेगा हां। फिर अल्लाह तआला फरमाएगा उनके शुक्रिया में तुमने क्या काम किया ? वह कहेगा मैंने तेरी राह में लड़ाई की यहाँ तक कि शहीद कर दिया गया। फरमाए गा तू झूटा है तूने तो लड़ाई इसलिए की थी कि लोग तुझे बहादुर कहें, तो लोगों ने तुझे बहादुर कहा और तुझे तेरा इनआम मिल गया। फिर अल्लाह तआला का हुक्म होगा और उसे मुँह के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा।

और एक आदमी वह होगा जिसने इल्म सीखा सिखाया और कुर्आन पढ़ा उसे लाया जाएगा और अल्लाह तआला कहेगा यह-यह

चीजें हमने तुमको दी थीं ? कहेगा हाँ। फरमाए गा तुम ने उनके शुक्रिया में क्या अमल किया ? वह कहेगा कि मैंने इल्म हासिल किया और दूसरों को सिखाया और तेरे लिए कुर्आन पढ़ा। अल्लाह तआला फरमाए गा तू झूटा है तूने इसलिए इल्म सीखा कि तुझे आलिम कहा जाए और कुर्आन इसलिए पढ़ा कि तुझे कारी कहा जाए तो वह कह लिया गया। फिर अल्लाह तआला का हुक्म होगा और उसे मुँह के बल खींच कर आग में झोंक दिया जाए गा।

और एक आदमी वह होगा कि जिसकी रोजी अल्लाह ने बढ़ाई और उसे हर तरह का माल दिया, वह लाया जाएगा अल्लाह तआला उस से अपनी नेमतों के बारे में पूछेगा वह इकरार करेगा। फरमाएगा तूने उनके शुक्रिया में क्या काम किया ? वह कहेगा मैंने हर उस राह में माल खर्च किया जिसमें खर्च करना तू पसंद करता है। अल्लाह तआला फरमाए गा तू झूटा है। तूने इसलिए खर्च किया था कि तुझे सखी और देनदाता कहा जाए तो वह कह लिया गया फिर हुक्म होगा। तो उसे औंधे मुँह घसीट कर जहन्नम में फेंक दिया जाएगा। (मुस्लिम-मिशकात सफा 33)

जुरुरी मसले

नीयत दिल के इरादा को कहते हैं। उसके लिए जुबान से शब्द बोलना जुरुरी नहीं। नमाज वगैरा कोई भी नेक काम अगर अल्लाह के लिए न करे बल्कि दिखावे के लिए या और किसी दुनिया के मतलब से करे तो उस काम पर सवाब नहीं पाएगा और अगर अल्लाह के लिए करने के साथ कोई दुनिया का मतलब भी शामिल हो तो सवाब कम हो जाएगा। जैसे कि अगर कोई मुसलमान हज्ज के लिए जाए और उसके साथ व्यापार की भी नीयत करे तो हज्ज हो जाएगा मगर व्यापार की जितनी नीयत होगी उसी लिहाज से सवाब कम हो जाएगा।

ईमान का बयान

(1) हजरत उमर फारूक रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि एक रोज हम रसूलेखुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर थे कि अचानक एक आदमी आया जिसके कपड़े बहुत उजले थे और बाल बहुत ही काले न उस आदमी पर सफर का कोई असर था और न हममें से कोई उसे पहचानता था यहाँ तक कि वह हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सामने बैठ गया और दो जानो होकर अपने घुटने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घुटने से मिला दिए और अपने दोनों हाथ अपनी रानों पर रख लिए और कहा ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मुझको इस्लाम की (हकीकत) के बारे में बताइए हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया इस्लाम यह है कि तू गवाही दे इस बात की कि खुदाय तआला के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं और मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) खुदाय तआला के रसूल हैं और तू नमाज अदा करे जकात दे रमजान के रोजे रखे और काबा शरीफ का हज करे अगर तू उसकी ताकत रखता हो उस आदमी ने (यह सुनकर) कहा आपने सच फरमाया (रावी कहते हैं कि) हम लोगों को तअज्जुब हुआ कि यह आदमी पूछता भी है और (खुद ही) यह भी कहता है कि आपने सच कहा— फिर उसने पूछा ईमान की हकीकत बयान फरमाइए आपने फरमाया ईमान यह है कि तू खुदाय तआला, उसके फरिश्तों, उसकी किताबों, उसके रसूलों और कियामत के दिन पर यकीन रखे और तकदीर की भलाई व बुराई को दिल से माने (मुस्लिम शरीफ)

हदीस की शरह

हजरत शाह अब्दुलहक मुहद्दिस देहलवी बुखारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि अलइस्लामु अन तश हद अल्लाइलाह इल्लल्लाहु व अनन मुहम्मदर्रसूलुल्लाहि की शरह में लिखते हैं कि इस्लाम जाहिरी कामों जैसे नमाज पढ़ने, रोजा रखने, जकात देने वगैरा का

नाम है और ईमान नाम है अकीदों का यानी अल्लाह तआला और उसके प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को दिल से मानने का नाम ईमान है और इस्लाम व ईमान के मजमुआ का नाम दीन है और वह जो अकीदे की किताबों में लिखा है कि इस्लाम व ईमान दोनों एक हैं तो उसका मतलब यह है कि हर मोमिन मुसलमान है और हर मुसलमान मोमिन है और इन दोनों में से किसी एक का इनकार मुसलमानों से नहीं कर सकते और हकीकत में इस्लाम ईमान का नतीजा है आलिमों ने इसके बारे में बहुत तरह की बातें लिखी हैं लेकिन तहकीक यही है जो बयान किया गया।

(अशिअतुल्लम्आत जिल्द 1 सफा 38)

फिर हजरत शैष मुहक्किक ने 'अन तू मिन बिल्लाहि' की शरह में लिखा है कि ईमान की हकीकत यह है कि तू खुदाय तआला की जात और उसकी खूबियों को दिल से माने और तमाम ऐबों से उसको पाक यकीन करे। (अशिअतुल्लम्आत जिल्द 1 सफा 40)

'और व रुसुलिहि' की शरह में लिखते हैं कि सब नबी पर ईमान लाना जुरुरी है इस तरह पर कि किसी के दरमियान अस्ल नुबूवत में फर्क न करे और इज्जत करना और ऐब से सब नबियों को पाक समझना और नुबूवत से पहले और नुबूवत के बाद छोटे बड़े सब गुनाहों से उन्हें मासूम जानना जुरूरी है यही कौल मुख्तार है और जो कुर्आन मजीद में हजरते आदम अलैहिस्सलाम की तरफ इस्यान यानी गुनाह की निसबत की गई और एताब फरमाया गया तो वह उनकी शान की बड़ाई की वजह से है और मालिक को हक पहुँचता है कि औला व अफजल के छोड़ने पर अगरचे वह गुनाह की हद तक न पहुँचे हों उन पर अपने बंदा को जो चाहे कहे और इताब फरमाये दूसरे की मजाल नहीं कि कुछ कह सके और इस जगह पर एक अदब है जिसकी रिआयत जुरुरी है और वह यह है कि अगर खुदाय तआला की तरफ से किसी नबी पर जो कि खुदाय तआला के नजदीकी हैं कोई इताब या खिताब उतरे या उन लोगों की तरफ से जो कि खुदाय तआला के खास बंदे हैं कोई आजिजी जाहिर हो जिससे ऐब का वहम होता हो तो हमको जाइज नहीं कि उसमें

दखल दें और उन बातों को उनके हक में बोलें और हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के बारे में मुख्तसर अकीदा यह है कि खुदा के मरतबा और उसकी खास खूबियों के इलावा जो कुछ है हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के लिए साबित है और हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इनसान की सारी खूबियाँ अपने अन्दर रखते है और सब में कामिल हैं।

(अशिअतुल्लम्आत जिल्द 1 सफा 40)

(2) हजरत उबादह रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि मैंने रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम को फरमाते हुए सुना कि जो शख्स इस बात की गवाही दे कि खुदाय तआला के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम खुदाय तआला के रसूल हैं तो अल्लाह तआला उस पर दोजख की आग हराम फरमा देता है। (मुस्लिम शरीफ)

जानना चाहिए कि खुदा के एक होने और रसूल के बरहक होने की गवाही देने के साथ अगर आदमी से कोई ऐसी बात या काम पाया गया जो कुफ्र की पहचान हो तो वह काफिर हो जाएगा अशिअतुल्लम्आत पहली जिल्द किताबुल ईमान के शुरू में है कि खुदा को एक और रसूल को बरहक मानने के साथ अगर कोई ऐसा काम करे जिसको हुजूर अलैहिस्सलाम ने कुफ्र की निशानी और पहचान ठहराई हो जैसे मूर्ति को सजदा करना और जनेव बांधना वगैरा तो ऐसे कामों का करने वाला भी शरीअत के हुक्म से काफिर है चाहे जाहिर में खुदा के एक होने ओर रसूल के बरहक होने का इकरार करता हो।

(3) हजरत अनस रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि कोई शख्स उस वक्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसके माँ बाप बेटे और तमाम लोगों से ज्यादा महबूब न हो जाऊँ।

(बुखारी, मुस्लिम)

हदीस की शरह

हजरत शेख अब्दुलहक मुहद्दिस देहलवी बुखारी रहमतुल्लाहि अलैहि इस हदीस की शरह में लिखते हैं कि कामिल मोमिन यानी अच्छे मोमिन के ईमान की पहचान यह है कि मोमिन के नजदीक रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम सब चीजों और सब लोगों से ज्यादा महबूब और ताजीम के काबिल हों—इस हदीस में हुजुर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के ज्यादा महबूब होने का मतलब यह है कि हकों के अदा करने में हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को ऊँचा माने इस तरह कि हुजूर के लाये हुए दीन को माने हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की सुन्नतों पर अमल करे। हुजूर का अदब बजा लाये और हर शख्स और हर चीज यानी अपनी जात, अपनी औलाद, अपने माँ बाप, अपने दोस्तों रिश्तेदारों और अपने माल व असबाब पर हुजूर की खुशी को आगे रखे जिसका मतलब यह है कि अपनी हर पियारी चीज यहाँ तक कि अपनी जान के चले जाने पर भी राजी रहे लेकिन हुजूर के हक को दबने न दे। (अशिअतुल्लम्आत जिल्द 1 सफा 47)

और हजरत मुल्ला अली कारी रहमतुल्लाहि अलैहि इस हदीस की शरह में लिखते हैं कि इस हदीस में हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से जो महब्बत रखने का हुक्म है उससे मुराद तबीअत की महब्बत नहीं इसलिए कि वह इख्तियार से बाहर है और इनसान को ऐसी चीज का हुक्म नहीं दिया जाता जो उसके इख्तियार से बाहर हो जैसा कि सूरह बकरह की आखिरी आयत में है बल्कि उससे अक्ल वाली महब्बत मुराद है जो उस बात को जुरुरी करार देती है जिसका अक्ल तकाजा करे और जिसके इख्तियार कर लेने को अक्ल चाहे अगरचे वह बात तबीअत के खिलाफ ही क्यों न हो जैसे बीमार आदमी का कड़वी दवा से महब्बत रखना यह अक्ल वाली मुहब्बत है कि वह दवा को पसंद करके उसको लेना चाहता है और उसको अक्ल के चाहने पर पीता है इसलिए कि वह

यकीन रखता है या अंदाजा करता है कि मेरी तन्दुरुस्ती इस दवा के पीने में है अगरचे उस दवा से उसकी तबीयत नफरत करती हो जैसे अगर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी को हुक्म दें कि अपने काफिर माँ बाप और काफिर लड़कों को मार डाल या यह हुक्म दे दें कि काफिरों से लड़ाई करे और लड़ते हुए शहीद हो जाये तो वह उसके कर गुजरने का जुरुर फिदाई रहे क्योंकि अक्ल से वह इतना बहर हाल जानता है कि आपकी फरमाँ बरदारी ही में भलाई है।

या इस हदीस में महब्बत से मुराद ईमान वाली महब्बत है जो आपकी बड़ाई और आपके एहसान व मेहरबानी के सबब मोमिन के दिल में पैदा होती है ईमान वाली महब्बत की पहचान यह है कि महब्बत करने वाला अपने महबूब की तमाम ख्वाहिशों को दूसरे लोगों यहाँ तक कि अपने अजीज और खुद अपनी जात की ख्वाहिशों पर बेहतर समझे और चूँकि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम महब्बत किये जाने की सारी अच्छाईयाँ अपने अंदर रखते हैं और आपके सिवा कोई दूसरा नहीं रखता इसलिए आप हर मोमिन के नजदीक उसकी जान से भी ज्यादा महबूब होने के हकदार हैं तो मोमिन के नजदीक उसके इलावा से बदरजए औला आप महबूब होंगे खास कर इस सूरत में कि आप उस महबूबे हकीकी यानी खुदाय तआला की तरफ से रसूल हैं और खुदा तक पहुँचाने वाले और उस तक पहुँचने का रास्ता बताने वाले और उसके नजदीक इज्जत वाले हैं। (मिरकात शरह मिश्कात जिल्द 1 सफा 64)

कुछ जुरुरी मसले

(1) खुदाय तआला जगह और जमाना से पाक है उसके लिए जगह और जमाना साबित करना कुफ्र है।

(2) खुदाय तआला को अल्लाह पाक या अल्लाह तआला कहना चाहिए। अल्लाह मियाँ नहीं कहना चाहिए।

(3) अगर किसी ने खुदाय तआला के बारे में बुढ़ऊ यानी बुड्ढे का शब्द बोला तो वह काफिर हो जायेगा।

(4) कोई शख्स बीमार नहीं होता या बहुत बुड्ढा है मरता नहीं उसके लिए यह न कहा जाए कि अल्लाह उसे भूल गये हैं।

(5) जो मजाक और हंसी में कुफ्र करेगा वह भी काफिर व मुरतद हो जायेगा अगरचे कहता हो कि मैं ऐसा अकीदा नहीं रखता ऐसा ही दुर्रे मुख्तार बाबुल मुरतद और शामि जिल्द 1 सफा 293 पर बहरुर्राइक से है।

(6) किसी नबी की शान में बे अदबी करना या उनमें कोई ऐब निकालना कुफ्र है।

(7) कुर्आन मजीद की किसी आयत को ऐब लगाना या उसकी बे इज्जती करना या उसके साथ मजाक उड़ाना कुफ्र है जैसे अक्सर दाढ़ी मुन्डे सूरह तकासुर की आयत का मतलब यह बयान करते हैं कि "कल्ला साफ करो" यह कुर्आन मजीद को बदलना है और उह के साथ मजाक दिल लगी भी और यह दोनों बातें कुफ्र हैं। (बहारे शरीअत जिल्द 9)

(8) किसी ने नमाज पढ़ने को कहा उसने जवाब दिया तुमने नमाज पढ़ी क्या फाइदा हुआ या कहा बहुत पढ़ली अब दिल घबरा गया या कहा पढ़ना न पढ़ना दोनों बराबर है बहरहाल इस तरह की बात करना कि जिससे नमाज के फर्ज होने का इनकार समझा जाता हो या नमाज की बे इज्जती होती हो यह सब कुफ्र है (बहारे शरीअत)

(9) किसी से रोजा रखने को कहा उसने जवाब दिया रोजा वह रखे जिसे खाना न मिले या यह कहा कि जब खुदा ने खाने को दिया है तो भूके क्यों मरें ए इसी तरह की और बातें कहना जिनसे रोजा की बे इज्जती हो कुफ्र है। (बहारे शरीअत)

(10) रमजान के महीना में खुल्लम खुल्ला दिन में खाने से मना करने पर यह बात कहना कि जब अल्लाह का डर नहीं है तो लोगों का क्या डर कुफ्र है।

(11) इल्मेदीन और आलिमों की बे इज्जती करना वगैर

सबब के यानी सिर्फ इस वजह से कि वह इल्मेदीन का आलिम है कुफ्र है (बहारे शरीअत)

(12) जिन बातों का पेश करना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से बिला शुबहा साबित हो उनमें से किसी एक बात का इनकार करना शरा की बोली में कुफ्र है जुन्नार यानी जनेव के पहनने को इसलिए कुफ्र कहा गया है कि यह बात हुजूर अलैहिस्सलाम को झुटलाने की पहचान है क्योंकि जाहिर यही है कि जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को मानेगा वह ऐसी चीज के पहनने की जुरअत नहीं कर सकता (बैजावी सफा 23)

(13) अल्लाह तआला के साथ किसी दूसरे को वाजिबुल वजूद मानना जैसा कि आग के पुजारियों का अदीका है या अल्लाह के इलावा दूसरे को इबादत के लाइक समझना जैसा कि मूरती पूजने वालों का अदीका है यह शिर्क है (शरह अकाइद नसफी सुफा 61) और हजरत शैष अब्दुल हक्क मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फरमाते हैं कि शिर्क तीन तरह पर होता है एक तो यह कि अल्लाह तआला के सिवा किसी और को भी वाजिबुल वजूद ठहराये, दूसरे यह कि खुदाय तआला के सिवा किसी और को खालिक यानी पैदा करने वाला जाने तीसरे यह कि खुदाय तआला के सिवा किसी और की इबादत करे या उसे इबादत के लाइक समझे (अशिअतुल्लम्आत जिल्द 1 सफा 72)

जन्नती और जहन्नमी फिरका

(1) हजरत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अनहुमा से रिवायत है कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि मेरी उम्मत पर एक वक्त जुरूर ऐसा आयेगा जैसा कि बनी इस्राईल पर आया था बिल्कुल हू बहू एक दूसरे के के मुताबिक यहां तक कि बनी इस्राईल में से अगर किसी ने अपनी माँ से खुल्लम खुल्ला बुरा काम किया होगा तो मेरी उम्मत में

जुरूर कोई होगा जो ऐसा करेगा और बनी इस्राईल बहत्तर मजहबों में बंट गये थे और मेरी उम्मत तिहत्तर मजहबों में बट जायेगी उनमें एक मजहब वालों के सिवा बाकी सब मजहब वाले जहन्नमी होंगे। सहाबए किराम रजियल्लाहु अनहुम ने अर्ज किया या रसूलल्लाह! सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम वह एक मजहब वाले कौन है ? यानी उनकी पहचान क्या है हुजूर सल्ल-ल्लाहु तआला अलैहि वसल्म ने फरमाया वह लोग उसी मजहब पर काइम रहें गेजिस पर मैं हूँ और मेरे सहाबा हैं (तिरमिजी)

(2) हजरत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि सरकारे अकदस सल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हमें समझाने के लिए एक (सीधी) लकीर खींची फिर फरमाया यह अल्लाह का रास्ता है फिर उसी सीधी लकीर के दायें बायें और चंद लकीरें खींच कर फकमाया कि यह भी रास्ते हैं इन में से हर एक रास्ता पर शैतान बैठा हुआ है जो अपनी तरफ बुलाता है। फिर हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पारा 8 रुकू 6 की आयत पढ़ी जिस का मतलब यह है कि यह मेरा सीधा रास्ता है तो उसी पर चलो और दूसरी राहों पर न चलो कि वह तुम्हें इस सीधी राह से अलग कर देंगी (मिशकात शरीफ)

हदीस की शरह

हजरत शेष अब्दुल हक्क मुहद्दिस देहलवी बुखारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि इस हदीस की शरह में लिखते हैं कि नजात पाने वाला फिरका अहले सुन्नत व जमाअत का है अगर कोई कहे कि कैसे मालूम होता है कि नजात पानें वाला फिरका अहले सुन्नत व जमाअत है और यही सीधी राह और खुदाय तआला तक पहुंचाने वाली राह है और दूसरे सब रास्ते जहन्नम के रास्ते हैं और हर फिरका दावा करता है कि वह सीधे रास्ते पर है और उस का मजहब हक है तो इसका जवाब यह है की यह ऐसी बात नहीं है जो सिर्फ दावा से साबित हो जाये बल्कि इसके लिए ठोस दलील चाहिए और अहले सुन्नत व जमाअत के

हक होने की दलील यह है कि यह दीने इस्लाम सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से नक्ल होकर हम लोगों तक पहुंचा है इस्लाम के अकीदों को मालूम करने के लिए सिर्फ अक्ल काफी नहीं है मुतावातिर खबरों से मालूम हुआ और सहाबा की बातें व हदीसों की तलाश और छान बीन से यकीन हासिल हुआ कि सहाबा वताबिईन रिजवानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन और उनके बाद के तमाम बुजुरगाने दीन इसी अकीदा और इसी तरीका पर रहे हैं मजहब में बिदअत और नफसानियत पहले जमाना के बाद पैदा हुई है। सहाबए किराम और ताबिईन तबए ताबिईन और मुजतहिदीन में कोई इस मजहब पर नहीं था वह लोग इस नये मजहब से नाराज थे बल्कि इसके पैदा हो जाने के बाद महब्बत और उठने बैठने का जो लगाव इस कौम के साथ था तोड़ दिया और जुबान व कलम से रद फरमाया सिहाह सित्ता और भरोसा के काबिल किताबें कि जिन पर इस्लाम की बातों का दार व मदार हुआ हंबली के बड़े-बड़े इमाम और उनके इलावा दूसरे आलिम जो उन के वक्त में थे सब इसी मजहबे अहले सुन्नत व जमाअत पर थे—और अशाइरा व मातुरिदिया जो उसूले कलाम के इमाम हैं उन्हों ने सल्फ के मजहबे अहले सुन्नत व जमाअत की ताईद व हिमायत फरमाई और अक्ली दलीलों से उस को साबित फरमाया—और जिन बातों पर रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम की सुन्नत और सहाबा वगैरा का इजमा जारी रहा उन को ठोस करार दिया है इसी लिए अशाइरा और मातुरिदिया का नाम अहले सुन्नत व जमाअत पड़ा—अगर चे यह नाम नया है—लेकिन मजहब और अकीदा उन का पुराना है—उन का तरीका हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की हदीसों की पैरवी और सहाबा के रास्ते पर चलना है—और पहले जमाने के और उस वक्त के बड़े-बड़े बुजुर्ग जो तरीकत के उस्ताद, आबिद व जाहिद, रियाजत करने वाले, परहेजगार खुदा से डरने वाले, हकतआला की जानिब मुतवज्जेह रहने वाले और नफ्स की हुकूमत से अलग रहने वाले सब इसी मजहबे अहले सुन्नत व जमाअत पर थे जैसा कि उन

बुजुर्गों की काबिले भरोसा किताबों से जाहिर है—और सूफियों की निहायत ही भरोसा के काबिल किताब तअर्रुफ है जिस के बारे में हजरत शैख शहाबुद्दीन सुहरवरदी रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया है कि अगर तअर्रुफ किताब न होती तो हम लोग तसव्वुफ की बातों को न जानते—उस किताब में सूफियों के जो अकीदे बयान किये गये हैं वह सब के सब बगैर किसी कमी बेशी के अहले सुन्नत ही के अकीदे हैं—हमारे इस बयान की सच्चाई यह है कि हदीस, तफसीर, कलाम, फिकह, तसव्वुफ, सियर और तारीखों की मोतबर किताबें जो कि पूरी दुनिया में मशहूर हैं इकट्ठा की जायें और उन की छान बीन की जाये और दूसरे मजहब वाले भी किताबों को लावें ताकि जाहिर हो जाये कि हकीकते हाल क्या है ? खुलासा यह कि दीने इस्लाम में बड़ा गिरोह मजहबे अहले सुन्नत व जमाअत है (अशिअतुल्लम्आत जिल्द 1 सफा 140)

(3) हजरत अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि आखिरी जमाना में एक गिरोह फरेब देने वालों और झूट बोलने वालों का होगा वह तुम्हारे सामने ऐसी बातें लायेंगे जिन को न तुम ने कभी सुना होगा न तुम्हारे बाप दादा ने तो ऐसे लोगों से बचो और उन्हें अपने करीब न आने दो ताकि वह तुम्हें गुमराह न करें और न फितना में डालें (मुस्लिम, मिश्कात)

हजरत शैख अब्दुल हक्क मुहद्दिस देहलवी बुखारी रहमतुल्लाहि अलैहि इस हदीस के तरजमा में लिखते हैं कि एक ऐसी जमाअत पैदा होगी जो धोखा और फरेब से आलिम, बुजुर्ग और नेक बन कर अपने को मुसलमानों की भलाई चाहने वाली और इस्लाह करने वाली जाहिर करेगी ताकि अपनी झूटी बातें फैलाये और लोगों को अपने गलत अकीदों और बुरे ख्यालों की तरफ ले जाये (अशिअ-तुल्लम्आत जिल्द 1 सफा 133)

कुछ जुरुरी मसले

(1) सच्ची खबर देने वाले हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने जिन दज्जालों और झूटों के आखिरी जमाना में पैदा होने की खबर दी थी इस जमाना में उन के कई गिरोह पाये जाते हैं जो मुसलमानों के सामने ऐसी बातें वयान करते हैं कि उन के बाप दादा ने कभी नहीं सुना है। उन में का एक गिरोह वह है जो अपने आप को अहले कुर्आन कहता है। वह हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को सिर्फ ऐलची समझता है और बस— खुल्लम खुल्ला सब हदीसों का इनकार करता है बल्कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की फरमाँ बरदारी का भी इनकार करता है।

यह वह बातें हैं जिन को हमारे बाप दादा ने कभी नहीं सुना था बल्कि उन्हें तो खुदाय तआला ने यह हुक्म दिया है कि ऐ ईमान वालो ! खुदाय तआला की फरमाँ बरदरी करो और (उस के) रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की पैरवी करो (पारा 5 रुकू 5)

उन में का एक गिरोह मिरजा गुलाम अहमद कादियानी का है। यह गिरोह मिरजा को महदी, मुजद्दिद, नबी और रसूल मानता है, हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के बाद दूसरे नबी का पैदा होना जाइज ठहराता है।

यह वह बातें हैं जिन को हमारे बाप दादा ने कभी नहीं सुना था बल्कि हुजूर अलैहिस्सलातु वसल्लाम ने उन्हें बताया था कि मैं नबियों में आखिरी हूं। मेरे बाद कोई (नया) नबी नहीं होगा। (मिशकात शरीफ सफा 465) और कुर्आने करीम ने उन्हें बताया था कि मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तुम मरदों में से किसी के बाप नहीं और लेकिन खुदाय तआला के रसूल और खातमुन्न बीईन हैं। यानी हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैला वसल्लम की जात पर नबियों का पैदा होना खत्म है। आप ने

नुबूवत के दरवाजा पर मुहर लगा दी अब आप के बाद कोई नबी हरगिज नहीं पैदा होगा (पारा 22 रुकू 2)

और उन में का एक गिरोह वह है जिसे वहाबी देव बंदी कहा जाता है। इस गिरोह का अकीदा यह है, कि जैसा इल्म हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को हासिल है ऐसा इल्म तो बच्चों, पागलों और जानवरों को भी हासिल है। जैसा कि देव बंदीयों के पेशवा मौलवी अशरफ अली थानवी ने अपनी किताब "हिफजु लईमान सफा 8 पर हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के लिए कुल इल्मे गैब का इनकार करते हुए सिर्फ कुछ इल्मे गैब को साबित किया फिर कुछ इल्मे गैब के बारे में यु लिखा कि "इस में हुजूर की क्या तखसीस है ऐसा इल्म तो जैद व अमर बल्कि हर सबी व मजनून बल्कि जमीए हैवानात व बहाइम के लिए भी हासिल है" (मआजल्लाहि रब्बिल आलमीन)

इस गिरोह का एक अदीका यह भी है कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम आखिरी नबी नहीं हैं। आप के बाद दूसरा नबी हो सकता है जैसा कि मौलवी कासिम नानोतवी बानिए दारुल उलूम देव बंद ने अपनी किताब तहजीरुन्नास सफा 3 पर लिखा है कि "अवान के ख्याल में तो रसूलुल्लाह का खातिम होना बईं माना है कि आप का जमाना अंबियाए साबिक के जमाने के बाद और आप सब में आखिरी नबी हैं। मगर अहले फह्म पर रौशन होगा कि तकद्दुम या तअख्खुर जमाना में बिज्जात कुछ फजीलत नहीं"—इस इबारत का निचोड़ वह है कि खातमुन्नबीईन का यह मतलब समझना कि आप सब में आखिरी नबी हैं। यह ना समझ और गवाँरों का ख्याल है—फिर उसी किताब के सफा 28 पर लिखा है कि "अगर बिलफर्ज बाद जमानये नबवी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम कोई नबी पैदा हो तो फिर भी खातमीयते मुहम्मदी में कुज फर्क न आये गा"—इस इबारत का खुलासा यह है कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के बाद दूसरा नबी पैदा हो सकता है। (अल अयाजु बिल्लाहि तआला)

इस गिरोह का अकीदा यह भी है कि शैतान और मौत के फरिश्ता के इल्म से हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का इल्म कम है। जो शख्स शैतान और मौत के फरिश्ता के लिए बहुत इल्म माने वह मोमिन मुसलमान है लेकिन हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इल्म को बहुत मानने वाला मुशरिक बे ईमान है। जैसा कि इस गिरोह के पेशवा मौलवी खलील अहमद अंबेठी ने अपनी किताब बराहीने कातिआ सफा 51 पर लिखा है कि "शैतान व मलकुल मौत को यह उसअत नस्स से साबित हुई फखरे आलम की उसअते इल्म की कौन सी नस्से कतई है जिस से तमाम नुसूस को रद कर के एक शिर्क साबित करता है" (मआ जल्लाहि रब्बिल आलमीन)

इस गिरोह का एक अदीका यह भी है कि खुदाय तआला झूट बोल सकता है (रिसाला यक रोजी सफा 145 लेखक मौलवी इस्माईल देहलवी)

एक अदीका यह भी है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मर कर मिट्टी में मिल गये (तकवियतुल ईमान सफा 69)

इन सब अकीदों के इलावा और भी इस गिरोह के बहुत से कुफ्र वाले अदीके हैं इसलिए मक्का मुअज्जमा, मदीना तय्यिबा, हिंद, सिंध, बंगाल, पंजाब, बर्मा, मदरास, गुजरात, कठियावाड़ बिलोचिस्तान, सरहद और दकन व कोकन के सैकड़ों बड़े-बड़े आलिमों और मुफ्तियों ने इन लोगों के काफिर व मुरतद होने का फतवा दिया है तफसील के लिए फतावा 'हुसामुल हरमैन" और अस्सवारिमुल हिंदीया को पढ़ें।

(2) मुसलमान को मुसलमान और काफिर को काफिर जानना दीन की जुरुरी बातों में से है अगर चे किसी खास शख्स के बारे में यकीन के साथ नहीं कहा जा सकता कि इस का खातिमा ईमान पर हुआ या मआजल्लाहि तआला कुफ्र पर, तावक्ते कि उस के खातिमा का हाल शरा की दलील से साबित न हो मगर इस से यह

नहीं हो सकता कि जिस ने कतअन कुफ्र किया हो उसके कुफ्र में शक किया जाये कि कतई काफिर के कुफ्र में शक करना भी आदमी को काफिर बना देता है (बहारे शरीअत)

(3) बाज ना समझ कहते हैं कि किब्ला वालों को काफिर नहीं कहना चाहिए ख्वाह वह कैसा ही अकीदा रखे और कुछ भी करे, यह ख्याल लगता है। सहीह यह है कि जब किब्ला वालों में कुफ्र की कोई पहचान और निशानीं पाई जाये या उसमें कोई बात कुफ्र को साबित करने वाली देखी जाये तो उसे काफिर कहा जायेगा। हजरत मुल्ला अली कारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि लिखते हैं कि अहले सुन्नत के नजदीक किब्ला वालों में से किसी को काफिर न कहने का मतलब यह है कि उसे काफिर न कहेंगे। जब तक कि उस में कुफ्र की कोई पहचान और निशानी न पाई जाये और कोई बात कुफ्र को साबित करने वाली न देखी जाये (शरह फिकहे अकबर सफा 189)

और हजरत अल्लामा इब्ने आबिदीन शामी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फरमाते हैं कि इस्लाम की जुरुरी बातों में से किसी चीज के इनकार करने वाले के काफिर होने पर सब लोगों का इत्तिफाक है अगर चे किब्ला वाला हो और जिन्दगी भर फरमाँ वरदारी में बसर करे। जैसा कि शरह तहरीर इमाम इब्ने हुमाम में है (शमी जिल्द 1सफा 392)

और हजरत इमाम अबू यूसुफ रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने किताबुल खिराज में फरमाया कि जो शख्स मुसलमान किब्ला वाला होकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआखा अलैहि वसल्लम को बुरा भला कहे या हुजूर को झूटा ठहराये या हुजूर को किसी तरह का ऐब लगाये या किसी वजह से हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शान घटाये वह बिला शुब्हा काफिर खुदा का इनकार करने वाला हो गया उस की बीवी उस के निकाह से निकल गई (शामी जिल्द 3 सफा 300)

बदमजहब

(1) हजरत इबराहीम इब्ने मैसरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाला कि जिस ने किसी बद मजहब की इज्जत की तो उसने इस्लाम के ढाने पर मदद दी (मिशकात)

हजरत शैष अब्दुल हक्क मुहद्दिस देहलवी बुखारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि इस हदीस शरीफ की शरह में लिखते हैं कि बद मजहब की इज्जत करने में सुन्न की बे इज्जती है और सुन्नत की बे इज्जती इस्लाम की बुनयाद ढाने तक पहुंचा देती है (अशि अतुल्लम्आत जिल्द 1 सफा 146)

(2) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है उन्हों ने कहा कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब तुम किसी बद मजहब को देखो तो उस के साथ सख्ती से पेश आओ। इस लिए की खुदाय तआला हर बद मजहब को दुश्मन रखता है (इब्ने असाकिर)

(3) हजरत अबू उमामा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि बद मजहब, दोजख वालों के कुत्ते हैं (दार कुतनी)

(4) हजरते हुजैफा रजिल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है उन्हों ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि खुदाय तआला किसी बद मजहब का न रोजा कबूल करता है न नमाज न जकात न हज्ज न उमरा न जिहाद न नफल न फर्ज बद मजहब दीने इस्लाम से ऐसा निकल जाता है जैसा कि गूंधे हुए आटे से बाल निकल जाता है (इब्ने माजा

(5) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि वद मजहब अगर बीमार पड़े तो उन को देखने न जाओ। अगर मर जाये तो उन के जनाजा में शरीक न हो उनसे भेंट

हो तो उन्हें सलाम न करो। उन के पास न बैठो, उन के साथ पानी न पियो, उन के साथ खाना न खाओ उन के साथ शादी बिवाह न करो, उन के जनाजा की नमाज न पढ़ो, और न उन के साथ नमाज पढ़ो। (मुस्लिम शरीफ) इस हदीस को अबू दाऊद ने हजरते इब्ने उमर से और इब्ने माजा ने हजरते जाबिर से और अकील व इब्ने हब्बान ने हजरते अनस से रिवायत किया। रजियल्लाहु तआला अनहुम

सुन्नत और बिदअत

हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जो शख्स मेरी उम्मत में अमल या अकीदे की खराबी पैदा होने के वक्त मेरी सुन्नत पर अमल करेगा उस को सौ शहीदों का सवाब मिलेगा (मिशकात)

(2) हजरत बिलाल इब्ने हारिस मजनी रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है उन्हों ने कहा कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिस ने मेरी किसी ऐसी सुन्नत को (लोगों) में रवाज दिया जिस का चलन खत्म हो गया हो तो जितने लोग उस पर अमल करेंगे उन सब के बराबर रवाज देने वाले को सवाब मिलेगा और अमल करने वालों के सवाब में कुछ कमी न होगी। और जिस ने कोई ऐसी बात निकाली जो बुरी है जिसे अल्लाह व रसूल (जल्ल जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) पसंद नहीं फरमाते तो जितने लोग उस पर अमल करेंगे उन सब के बराबर निकालने वाले पर गुनाह होगा और अमल करने वालों के गुनाहों में कुछ कमी न होगी (तिरमिजी-मिशकात)

(3) हजरते जरीर रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि जो इस्लाम में किसी अच्छे तरीका को रवाज देगा तो उस को अपने रवाज

ने का भी सवाब मिलेगा और उन लोगों के अमल करने का जो उस के बाद उस तरीका पर अमल करते रहेंगे और अमल करने वालों के सवाब में कोई कमी भी न होगी और जो मजहबे इस्लाम में किसी बुरे तरीका को रवाज देगा तो उस शख्स पर उस के रवाज देने का भी गुनाह होगा और उन लोगों के अमल करने का भी गुनाह होगा जो उसके बाद उस तरीका पर अमल करते रहेंगे और अमल करने वालों के गुनाह में कोई कमी न होगी। (मुस्लिम शरीफ)

(4) हजरते जाबिर रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने (गालिबन एक खुतबा में) फरमाया कि अल्लाह की हम्द के बाद मालूम होना चाहिए कि सब से बेहतरीन बात अल्लाह की किताब है और बेहतरीन रास्ता मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) का रास्ता है और सब से बुरी चीजों में वह है जिसे नया निकाला गया और हर बिदअत गुमराही है। (मुस्लिम शरीफ)

हदीस की शरह

हजरत मुल्ला अलीकारी रहमतुल्लाहि अलैहि इस हदीस की शरह में लिखते हैं कि इमाम नौवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने फरमाया कि ऐसा काम जिसकी मिसाल पहले जमाना में न हो लुगत (डेक्शनरी) में उसको बिदअत कहते हैं और शरा में बिदअत यह है कि किसी ऐसी नई चीज का पैदा करना जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के जाहिरी जमाना में न थी और हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का कौल "कुल्लु बिद अतिन जलालतुन" आम मखसूस है (यानी बिदअत का मतलब बुरी बिदअत है) हजरत शैष इज्जुद्दीन इब्न अब्दुस्सलाम ने किताबुल कवाइद के आखिर में फरमाया कि बिदअत या तो वाजिब है जैसे अल्लाह और उसके रसूल की बातों को समझने के लिए नह्व सीखना और जैसे उसूले फिकह और अस्माउर्रिजाल के फन को तरतीब देना

और बिदअत [illegible] हराम है जैसे जबरिया, कदरिया, मुरजिआ, मुजस्सिमा [illegible] मज्हब और उन बद मज्हबों का रद करना बिदअते वाजिबा में है इस लिए कि उनके गलत अकीदों से शरीअत को बचाना [illegible]या है—और बिदअत या तो मुस्तहब है जैसे मुसा-फिर[illegible] मदरसे बनाना और हर वह नेक काम जिस का रवाज शुरु ज़माना में नहीं था और जमाअत के साथ तरावीह और सूफियायेकिराम की बारीक बातों में बातचीत करना—और बिदअत या तो मकरूह है जैसे शाफिई लोगों के नजदीक मस्जिदों का नक्श व निगार और यह हनफीया के नजदीक बिला कराहत जाइज है।

और बिदअत या तो मुबाह है जैसे कि सुबह और अस्र की नमाज के बाद मुसाफहा करना और लजीज खाने खाना और अच्छे-अच्छे मकानों में रहना और कुरते की आसतीनों को लम्बी रखना। इमाम शाफिई रहमतुल्लाहि अलैहि ने फरमाया कि ऐसी नई चीज का पैदा करना जो कुर्आन मजीद, हदीस शरीफ, सहाबा के तरीके या इजमा के खिलाफ हो तो वह गुमराही है और ऐसी अच्छी बात का पैदा करना जो उन में से किसी के खिलाफ न हो तो वह बुरी नहीं है।

(मिरकात शरह मिश्कात जिल्द 1 सफा 179)

और हजरत शैख अब्दुलहक्क मुहद्दिस देहलवी बुखारी रहमतुल्लाहि अलैहि इस हदीस की शरह में लिखते हैं कि वह चीज जो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के जाहिरी जमाना के बाद हुई बिदअत है लेकिन उनमें से जो कुछ हुजूर की सुन्नत के काइदे और कानून के मुवाफिक है और उसी पर कियास किया गया है। उसको अच्छी बिदअत कहते हैं और उनमें जो चीज सुन्नत के खिलाफ हो उसे बिदअते गुमराही कहते हैं और "कुल्लु बिद अतिन ज़लालतुन" में जो हर बिदअत को गुमराही कहा गया है उस का मतलब यही गुमराही वाली बिदअत है यानी हर बिदअत से मुराद सिर्फ वही बिदअत है जो सुन्नत के खिलाफ हो—और कुछ बिदअतें वाजिब यानी जुरुरी हैं जैसे कि इल्मे सर्फ व नह्व का सीखना सिखाना कि उससे आयतों और हदीसों के मतलब समझ में आते हैं। और कुर्आन व हदीस की अनोखी बातों को याद करना और दूसरी

चीजें कि मजहब की हिफाजत का उन पर दारवमदार है—और बाज बिदअतें मुस्तहसन व मुस्तहब हैं जैसे सराय और मदरसे बनाना और कुछ बिदअतें मकरुह हैं जैसे कि कुछ लोगों के नजदीक कुर्आन मजीद और मस्जिदों में नक्श व निगार करना और कुछ बिदअतें मुबाह हैं जैसे कि बेहतरीन कपड़ों और अच्छे खानों की ज्यादती जब कि हलाल हों और घमंढ का सबब न हों। और दूसरी मुबाह चीजें जो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के जाहिरी जमाना में न थीं जैसे छलनी वगैरा और कुछ बिदअतें हराम हैं जैसे कि अहलेसुन्नत व जमाअत के खिलाफ नये अकीदे वालों के मजहब और जो बातें हजरत अबू बकर सिद्दीक, हजरत उमर, हजरत उस्मान गनी, और हजरते अली रजियल्लाहु अनुहम ने की हैं अगरचे इस लिहाज से कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहिवल्लम के जमाना में नहीं थीं बिदअत हैं लेकिन अच्छी विदअतों में से हैं बल्कि हकीकत में सुन्नत हैं (अशिअतुल्लम्आत जिल्द 1 सफा 128)

और शामी जिल्द 1 सफा 393 में है कि बिदअत कभी वाजिब होती है जैसे गुमराह फिरके वालों पर रद की दलीलें काइम करना और इल्मे नहव का सीखना जो कुर्आन व हदीस समझने में मददगार होता है। और बिदअत कभी मुस्तहब होती है जैसे मदरसों और मुसाफिर खानों को बनाना और हर वह नेक काम करना जो शुरू जमाना में नहीं था। और बिदअत कभी मकरुह होती है जैसे मस्जिदों को सजाना व संवारना और बिदअत कभी मुबाह होती है जैसे खाने पीने और कपड़े में ज्यादती इख्तियार करना जैसा की मुनावी की शरह जामए सगीर में तहजीबुन्नौवी से है औ उसी के मिस्ल बरकिली की किताब तरीकये मुहम्मदीया में है।

इल्म और आलिम का बयान

(1) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि इल्म का हासिल करना हर मुसलमान मर्द व (औरत) पर फर्ज है और

नालाइक को इल्म सिखाने वाला ऐसा है जैसे सूअर के गले में कीमती पत्थर-मोती और सोने का हार पहना दिया हो। (मिशकात शरीफ)

हजरत मुल्ला अलीकारी रहमतुल्लाहि अलैहि इस हदीस की शरह में लिखते हैं कि हदीस का मतलब बयान करने वालों ने लिखा है कि इल्म से मतलब वह मजहबी इल्म है जिसका हासिल करना बंदों के लिए जुरुरी है जैसे खुदाय तआला को पहचानना, उसके एक होने और उसके रसूल की नुबूवत की पहचान और (जुरुरी मसाइल के साथ) नमाज पढ़ने के तरीके को जानना इसलिए कि इन चीजों का इल्म फर्जे ऐन है और फतवा के दरजा को पहुँचना फर्जे किफाया है (मिरकात शरह मिशकात जिल्द 1 सफा 233)

और हजरत शैख अब्दुल हक्क मुहद्दिस देहलवी बुखारी रहमतुल्लाहि अलैहि इस हदीस की शरह में लिखते हैं कि इल्म से मतबल इस हदीस में वह इल्म है कि जो मुसलमानों को वक्त पर जुरुरी है जैसे कि जब इस्लाम में दाखिल हुआ तो उस पर खुदाय-तआला की जात और उसकी खूबियों को पहचानना और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की नुबूवत को जानना जुरुरी हो गया और हर उस चीज का इल्म जुरुरी हो गया कि जिस के बगैर ईमान सहीह नहीं और जब नमाज का वक्त आ गया तो उस पर नमाज के मसलों का जानना जुरुरी हो गया और जब रमजान का महीना आ गया तो रोजा के मसलों का सीखना जुरुरी हो गया और जब निसाब का मालिक हो गया तो जकात के मसलों का जानना जरुरी हो गया और अगर निसाब का मालिक होने से पहले मर गया और जकात के मसलों को न सीखा तो गुनहगार न हुआ। और जब औरत से निकाह किया तो माहवारी वगैरा जितनी बातों का मियाँ बीवी से तअल्लुक है जानना जुरुरी हो जाता है और इसी पर दूसरी बात को सोचना चाहिए। (अशिअतुललम्आत जिल्द 1 सफा161)

(2) हजरत मुहम्मद इब्ने सीरीं रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है उन्होंने फरमाया कि यह इल्म (यानी कुर्आन व हदीस

को जानना) दीन है लिहाजा तुम देख लो कि अपना दीन किस से हासिल कर रहे हो (मुस्लिम शरीफ)

(3) हजरते अबू उमामा बाहिली रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है उन्होंने फरमाया कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम के सामने दो आदमियों का चरचा किया गया। एक उनमें से इबादत करने वाला था दूसरा आलिम—तो सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि इबादत करने वाले पर आलिम की बड़ाई ऐसी है जैसे कि मेरी बड़ाई तुम्हारे मामूली आदमी पर—फिर हुजूर ने फरमाया कि लोगों को भलाई सिखाने वाले पर खुदाय तआला रहमत नाजिल फरमाता है। और उसके फरिश्ते और जमीन व आसमान के रहने वाले यहाँ तक कि चियुँटियाँ अपनी बिलों में और मछलियाँ (पानी में) उस के लिए भलाई की दुआ करती हैं (तिरमिजी शरीफ)

(4) हजरत कसीर इब्ने कैस रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि मैं हजरत अबूदरदा रजियल्लाहु तआला अनहु के साथ दमिश्क की मस्जिद में बैठा था तो एक आदमी ने आकर कहा कि अबूररदा बेशक मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के शहर मदीना तय्यिबा से यह सुन कर आया हूँ कि आप के पास कोई हदीस है जिसे आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं और मैं किसी दूसरे काम के लिए नहीं आया हूँ—हजरत अबूदरदा ने कहा कि मैंने रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम को फरमाते हुए सुना है कि जो शख्स इल्म (दीन) हासिल करने के लिए सफर करता है तो खुदाय तआला उसे जन्नत के रास्तों में से एक रास्ता पर चलाता है तालिबे इल्म की खुशी हासिल करने के लिए फरिश्ते अपने परों को बिछा देते हैं और हर वह चीज जो आसमान व जमीन में है यहाँ तक कि मछलियाँ पानी के अंदर आलिम के लिए बख्शिश की दुआ करती हैं। और आलिम की बड़ाई इबादत करने वाले पर ऐसी है जैसी चौदहवीं रात के चाँद कों बड़ाई तारों पर—और आलिम नबियों के वारिस हैं—नबिबों की वरासत माल व दौलत नहीं हैं। उन्होंने

वरासत में सिर्फ इल्म छोड़ा है तो जिस ने उसे हासिल किया उसने पूरा हिस्सा पाया (तिरमिजी शरीफ)

(5) हजरत मुआविया रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि खुदाय तआला जिस शख्स के साथ भलाई चाहता है तो उसे दीन की समझ अताफरमाता है और खुदा देता है और मैं तकसीम करता हूं। (बुखारी, मुस्लिम)

(6) हजरत इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुमा से रिवायत है उन्होंने फरमाया कि रात में एक घड़ी दीन की बातें सीखना-सिखाना रात भर की इबादत से बेहतर है। (मिशकात शरीफ)

(7) हजरत इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि एक फकीह यानी एक दीन का आलिम शैतान पर हजारों इबादत करने वालों से ज्यादा भारी है (तिरमिजी शरीफ)

(8) हजरते अबू दरदा रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है उन्होंने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम से पूछा गया कि उस इल्म की हद क्या है कि जिसे आदमी हासिल करले तो फकीह यानी दीन का आलिम हो जाये तो सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जो शख्स मेरी उम्मत तक पहुचाने के लिए मेरी 40 हदीसें याद करेगा तो खुदाय तआला उसे कियामत के रोज दीन के आलिम की हैसियत से उठायेगा और कियामत के दिन मैं उसकी शफाअत करूँगा और उसके हक में गवाह रहूंगा। (मिशकात शरीफ)

(9) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है उन्हों ने कहा कि रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से जो बातें मैंने मालूम की हैं उनमें से एक यह है कि हर सदी के खत्म होने पर इस उम्मत के लिए अल्लाह तआला एक ऐसे शख्स

को भेजेगा जो उसके लिए उस के दीन को निखारता रहेगा। (अबू दाऊद)

नोट—अरब और अजम के आलिमों का इस बात पर इत्तिफाक है कि चौदहवीं सदी के मुजद्दिद आलाहज़रत इमाम अहमद रज़ा बरेलवी रहतुल्लाहि तआला अलैहि हैं।

(10) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिसने ऐसे इल्म को सीखा जिस के जरिए खुदाय तआला की खुशी चाही जाती है मगर उसने सिर्फ इसलिए सीखा कि उस इल्म से दुनिया हासिल करे तो कियामत के दिन उस को जन्नत की खुशबू तक मयस्सर न होगी (अबू दाऊद)

(11) हजरते सुफयान रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि हजरते उमर इब्ने खत्ताब रजियल्लाहु तआला अनहु ने हजरते काब रजियल्लाहु तआला अनहु से दरयाफ्त फरमाया कि इल्म वाले कौन लोग हैं ? उन्हों ने जवाब दिया कि जो अपने इल्म के मुवाफिक अमल करें फिर आप ने पूछा कि आलिमों के दिलों से कौन सी चीज इल्म की बरकतों को निकाल लेती है ? तो उन्हों ने जवाब दिया कि लालच (मिशकात शरीफ)

(12) हजरते अहवस इब्ने हकीम अपने बाप से रिवायत करते हैं उन्हों ने कहा कि रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि खबरदार होकर सुन लो कि बुरों में सब से खराब बुरे आलिम हैं—और अच्छों में सब से अच्छे-अच्छे आलिम हैं। (मिशकात शरीफ)

(13) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिसे बगैर इल्म के कोई फतवा दिया गया तो उस का गुनाह फतवा देने वाले पर होगा और जिसने जान बूझ कर अपने भाई को गलत राय दी तो उसने उस के साथ खियानत की (अबू दाऊद-मिशकात)

जुरुरी मसले

(9) हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अक्सर रात भर इबादत फरमाते यहाँ तक कि आप के पाँव मुबारक सूज जाते और पै दर पै रोजा रखते रात में इफतार न फरमाते, और जो माल मिलता सब राहे खुदा में खर्च कर डालते—चटाईयों पर आराम फरमाते जौ की रोटी खाते कभी एक दो महीना तक सिर्फ खुजूर खा के और पानी पी के रह जाते, कभी पेट पर पत्थर बाँधते मगर इन बातों को अपनी कमजोर उम्मत पर मेहरबानी फरमाते हुए लाजिम नहीं फरमाया यानी हुजूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इन बातों का किसी मुसलमान से मुतालबा नहीं फरमाया चाहे वह जाहिल हो या आलिम मगर आज कल कुछ जाहिल जिन्हें मजहब से दूर का भी वास्ता नहीं इन बातों का आलिमों से मुतालबा करते हैं और ऐसा न करने वालों को ना फरमान समझते हैं और शर्म नहीं करते कि जिन बातों को हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने लाजिम नहीं फरमाया तो उन बे अमल जाहिलों को मुतालबा करने का हक कहाँ से पहुँच गया—खुदाय तआला उन्हें समझ तआ फरमाये—

(2) चटाईयों पर सोने और पेट पर पत्थर बाँधने का मुतालबा करने वाले इस्लाम और मुसलमान दोनों को नुकसान पहुँचाना चाहते हैं—इस्लाम को इस तरह कि एक ऐसा काफिर जो मुसलमान होना चाहता है जब उस को मालूम होगा कि इस्लाम में चटाई पर सोना और पेट पर पत्थर बाँधना लाजिम है और ऐसा न करने वाला गुनहगार और हुजूर पैगम्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का ना फरमान ठहराया जाता है तो वह इस्लाम की तरफ हरगिज नहीं आ सकता—और आलिमों को ना फरमान व गुनहगार ठहराने वाला यह गिरोह मुसलमानों को इस तरह नुकसान पहुँचाना चाहता है कि जब मुसलमानों के दिलों में यह बात जम जायेगी कि आलिम लोग खुद ना फरमान हैं तो फिर वह

आलिमों की नसीहत हरगिज नहीं मानेंगे—नमाज और रोजा वगैरा के करीब न आवेंगे और बुराईयों में फंस कर जहन्नमी बनेंगे—

तकदीर का बयान

(1) हजरत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि सब से पहले जो चीज खुदा ने पैदा की वह कलम है। खुदाय तआला ने उस से फरमाया लिख कलम ने अर्ज किया, क्या लिखूं ? फरमाया तकदीर तो कलम ने लिखा जो कुछ था और जो होने वाला था (तिरमिजी)

हजरत मुल्ला अली कारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि इस हदीस की शरह में मिरकात शरह मिशकात जिल्द 1 सफा 139 पर लिखते हैं कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का नूर सब से पहले पैदा किया गया। और कलम का पहले होना इजाफी है यानी दूसरी चीजों के लिहाज से कहा गया है कि उसे पहले पैदा किया गया—

(3) हजरते मत्र इब्ने उकामिस रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूल अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि जब खुदाय तआला किसी शख्स की मौत किसी जमीन पर मुकद्दर कर देता है तो उस ज़मीन की तरफ उस की हाजत पैदा कर देता है (तरमिजी)

(4) हजरते अबू खजामा रजियल्लाहु तआला अनुह अपने बाप से रिवायत करते हैं उन्हों ने कहा कि मैंने अर्ज किया या रसूलल्लाह ! क्या फरमाते हैं आप मन्त्र के बारे में जिसे हम पढ़ते हैं और दवा के बारे में जिसे हम काम में लाते हैं और बचाव के बारे में जिसे हम जंग वगैरा में इख्तियार करते हैं क्या यह चीजें तकदीर को बदल देती है ? फरमाया कि यह चीजें भी तकदीर से हैं (तिरमिजी)

(5) हजरत अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि हम लोग तकदीर के बारे में बहस कर रहे थे कि रसूले खुदा

सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तशरीफ ले आये तो बे इन्तिहा गुस्सा से आप का चेहरा लाल हो गया ऐसा मालूम होता था कि अनार के दाने आप के चेहरा पर निचोड़ दिए गये हों--फिर फरमाया क्या तुम को इसी का हुक्म दिया गया है ? क्या मैं तुम्हारी तरफ इसी चीज के साथ भेजा गया हूँ—तुम से पहले कौमें हिलाक नहीं हुई मगर जब कि तकदीर के बारे में उन्हों ने आपस में बहस किया—मैं तुम्हें कसम देता हूँ कि फिर कभी तकदीर के बारे में बहस न करना (तिरमिजी मिशकात)

कुछ जुरुरी मसले

(1) तकदीर हक्क है उस से इनकार करने वाला गुमराह और बदमजहब है—अहले सुन्नत व जमाअत से नहीं है ।

(2) खुदाय तआला नें हर भलाई बुराई अपने इल्म के मुवाफिक मुकद्दर फरमादी है— जैसा होने वाला था और जो जैसा करने वाला था अपने इल्म से लिख लिया । इस का यह मतलब नहीं कि जैसा उस ने लिख दिया वैसा हम को करना पड़ता है बल्कि जैसा कि हम करने वाले थे वैसा उसने लिख दिया—जैद के जिम्मा बुराई लिखी इसलिए कि जैद बुराई करने वाला था । अगर जैद भलाई करने वाला होता तो खुदाय तआला भलाई लिखता—खुलासा यह कि खुदाय तआला के इल्म या उसके लिख देने ने किसी शख्स को किसी काम के करने पर मजबूर नहीं कर दिया—बहारे शरीअत—और मुल्ला अली कारी की शरह फिकह अकबर सफा 49 में इसी तरह है—

(3) कजा की तीन किस्में—कजाये मुबरम हकीकी, कजाये मुअल्लक महज, कजाये मुअल्लक शबीह ब मुबरम—कजाये मुबरम हकीकी वह कजा है कि अल्लाह के इल्म में भी किसी चीज पर मुल्लक नहीं । यह कजा बदल नहीं सकती है । औलिया अल्लाह की इस कजा तक पहुँच नहीं बल्कि नबी और बड़े-बड़े रसूल भी अगर इत्तिफाकन उस के बारे से कुछ कहना चाहें तो उन्हें उस

ख्याल से रोक दिया जाता है जैसे कि हजरते इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने हजरत लूत अलैहिस्सलाम की कौम पर अजाब रोकने के लिए बहुत कोशिश फरमाई यहाँ तक कि अपने रब से झगड़ने लगे जैसा कि खुदाय तआला ने पारा 12 रुकू 7 में फरमाया कि इब्राहीम लूत की कौम के बारे में हम से झगड़ने लगे—लेकिन चूँ कि लूत की कौम पर अजाब होना कजाये मुबरम हकीकी था इसलिए हुक्म हुआ कि—ऐ इब्राहीम इस ख्याल में न पड़ो बेशक तेरे रब का हुक्म आचुका और बेशक उन पर अजाब आयेगा—फेरा न जासेगा। (पारा 12 रुकू 7)

कजाये मुअल्लक महज वह कजा है कि फरिशतों के रजिस्ट्रों में किसी चीज जैसे सद्का या दवा वगैरा पर मुअल्लक होना जाहिर कर दिया गया हो। इस कजा तक बहुत से औलिया अल्लाह की पहुँच होती है उन की दुआ और तवज्जुह से यह कजा टल जाती है—

कजाये मुअल्लक शबीह बमुबरम वह कजा है कि अल्लाह के इल्म में वह किसी चीज पर मुअल्लक है लेकिन फरिशतों के रजिस्ट्रों में उस के मुअल्लक होने को जाहिर नहीं किया गया—इस कजा तक बड़े-बड़े औलिया अल्लाह की पहुँच होती है। हजरत सय्यिदिना गौसे आजम रजियल्लाहु तआला अनहु इसी के बारे में फरमाते हैं कि मैं कजाये मुबरम को रद कर देता हूँ और इसी कजा के बारे में हदीस शरीफ में है कि—बेशक दुआ कजाये मुबरम को टाल देती हैं—

(4) कजा व कद्र के मसले आम लोग नहीं समझ सकते उस में ज्यादा गौर व फिक्र करना दीन और ईमान के तबाह होने का सबब है—

हजरत अबू बकर सिद्दीक व उमर फारूके आजम रजियल्लाहु तआला अनहुमा जैसे बड़े-बड़े सहाबा भी इस मसले में बहस करने से मना फरमाए गये हैं तो फिर हम लोग किस गिनती में हैं। इतना समझ लेना चाहिए कि अल्लाह तआला ने आदमी को पत्थर और

मिट्टी वगैरा की तरह नहीं पैदा किया कि हिल नहीं सकता बल्कि उसको एक किस्म का इख्तियार दिया है कि एक काम चाहे करे या न करे और उस के साथ अक्ल भी दी है कि भले बुरे नफा नुकसान को पहचान सके और हर किस्म के सामान और सबब इकट्ठा कर दिए कि जब आदमी कोई काम करना चाहता है तो उसी किस्म के सामान इकट्ठा हो जाते हैं और इसी वजह से उस पर पकड़ है। अपने को बिल्कुल मजबूर या बिल्कुल इख्तियार वाला समझना दोनों गुमराही हैं (बहारे शरीअत)

कब्र का अजाब हक है

(1) हजरत बरा इब्ने आजिब रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि मुरदे के पास दो फरिशते आते हैं तो उस को बिठा कर पूछतें हैं कि तेरा रब कौन है ? तो मुरदा कहता है कि मेरा रब अल्लाह है। तो फरिशते कहते हैं तेरा दीन क्या है ? वह कहता है मेरा दीन इस्लाम है—फिर फरिशते पूछते हैं कौन हैं यह जो तुम में भेजे गये थे ? तो मुरदा कहता है कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्वाहु तआला अलैहि वसल्लम हैं—फिर फरिशते पूछते हैं कि तुम्हें किसने बताया कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हैं तो मुरदा कहता है मैंने खुदाय तआला की किताब पढ़ी तो उन पर ईमान लाया और उन के सच होने का इकरार किया—हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया तो आयते करीमा (पारा 13 रुकू 16) का यही मतलब है। (यानी मोमिन खुदाय तआला की मेहरबानी से फरिशतों को जवाब देने में साबित रहता है) हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया फिर एक पुकारने वाल आसमान से पुकार कर कहता है कि मेरे बंदे ने सच कहा तो उसके लिए जन्नत का बिछौना बिछाओ और उसको जन्नत का कपड़ा पहनाओ और उसके लिए जन्नत की तरफ एक दरवाजा खोल दो तो दरवाजा खोल दिया जाता है—हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि

वसल्लम ने फरमाया तो उसके पास जन्नत की हवा और महक आती है। और जितनी दूर तक वह देखता है वहां तक उस की कब्र चौड़ी कर दी जाती है (यह हाल तो मोमिन का है) और अब रह गया काफिर तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस के मरने का चरचा किया और फरमाया कि उसकी रूह उस के जिस्म (बदन) में वापस की जाती है और उसके पास दो फरिश्ते आते हैं तो उसे बिठा कर पूछते हैं कि तेरा रब कौन है? तो काफिर मुरदा कहता है हाह हाह मैं नहीं जानता। फिर फरिशते पूछते हैं तेरा दीन क्या है? वह कहता है हाह हाह मैं नहीं जानता फिर फरिशते पूछते हैं कौन हैं जो तुम में भेजे गये थे तो वह कहता है हाह हाह मैं नहीं जानता—तो आसमान से एक पुकारने वाला पुकार कर कहता है कि वह झूटा है उस के लिए आग का बिछौना बिछाओ—और आग का कपड़ा पहनाओ और उस के लिए जहन्नम की तरफ से एक दरवाजा खोल दो—हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया तो उस के पास जहन्नम की गरमी और लपट आती है और काफिर की कब्र उस पर सिकोड़ी जाती है यहाँ तक कि उसकी पसलियाँ इधर की उधर हो जाती हैं फिर उस पर एक अंधा और बहरा फरिशता मुकर्रर किया जाता है जिसके पास लोहे का एक गुर्ज होता है कि अगर उस को पहाड़ पर मारा जाये तो वह मिट्टी हो जाये—फरिशता उस गुर्ज से काफिर को ऐसा मारता है कि उस की आवाज पूरी दुनिया में इनसान और जिन्न के इलावा सब सुनते हैं तो वह मिट्टी हो जाता है फिर उस के अंदर रूह लौटाई जाती है (अबू दाऊद)

हज़रत शैख अब्दुल हक्क मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि लिखते हैं कि "हाजा" यानी "यह" के साथ हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लाम को इशारा करना या तो इस वजह से है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की जात मशहूर है और हुज़ूर का तसव्वुर हमारे दिलों में मौजूद है अगरचे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हमारे सामने नहीं और या तो इस वजह से कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की जात

खुल्लम खुल्ला पेश की जाती है इस तरह से कि कब्र में हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मुबारक शक्ल लाई जाती है ताकि जान डाल देने वाली उन की खूबसूरती से उन मुश्किलों की गिरहें कि जवाब देने में पैदा हों खुल जायें और जुदाई का अंधेरा उन की भेंट की चमक से जगमगा जाये (अशिअतुल्लम्आत जिल्द 1 सफा 115)

(2) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि कब्र में मुरदा को रख दिया जाता है तो उस के पास दो काले फरिशते नीली आँखों वाले आते हैं जिन में से एक का नाम मुनकर है और दूसरे का नकीर—दोनों फरिशते उस मुरदा से पूछते हैं कि तू इस जात के बारे में क्या कहता था तो मुरदा कहता है कि वह खुदाय तआला के बंदे और उस के रसूल हैं मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह तआला के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं और गवाही देता हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम खुदाय तआला के बंदे और उस के रसूल हैं (यह सुन कर) वह दोनों फरिशते कहते हैं कि हम पहले से जानते थे कि तू यही कहेगा— फिर उस की कब्र 70 गज लंबी और 70 गज चौड़ी कर दी जाती है उस के बाद कब्र में उजाला किया जाता है फिर उस से कहा जाता है "सो जा" तो मुरदा कहता है कि मैं अपने घर वालों में जाकर यह हाल उन को बता दूँ—तो फरिशते कहते हैं "सो जैसे दूल्हा सोता है" जिस को सिर्फ वही शख्स जगा सकता कि जो उस के घर वालों में सब से ज्यादा महबूब हो (तो वह सो जाता है) यहाँ तक कि खुदाय तआला उसे (कियामत के दिन) उस की कब्र से उठायेगा (यह हाल तो मोमिन का है) और अगर मुरदा मुनाफिक होता है तो फरिशतों के जवाब में कहता है कि मैं ने लोगों को जो कहते हुए सुना था उसी तरह मैं भी कहता था—खुद मैं कुछ जानता नहीं था तो फरिशते कहते हैं हम लोग जानते थे कि तू ऐसा ही कहेगा—फिर जमीन को हुक्म दिया जायेगा कि इस को दबा तो वह दबाएगी यहाँ तक कि उस की पसलियाँ इधर की उधर हो

जायेंगी तो इसी तरह वह हमेशा अजाब में रहेगा—यहाँ तक कि खुदाय तआला उस को उस ग गाह से उठाये (तिरमिजी)

(3) हजरत अबू सईद रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि काफिर पर उस की कब्र में निन्नानवे अजदहे मुकर्रर किये जाते हैं जो उस को कियामत तक काटते और डसते रहेंगे उन अजदहों में का कोई एक अगर जमीन पर फुनकार दे तो जमीन कभी हरयाली न उगाये (मिशकात)

हजरत शैख अब्दुलहक्क मुहद्दिस नेहलवी बुखारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि लिखते हैं कि फरिशतों और साँपों और बिच्छुओं का मुरदों को तकलीफ पहुँचाना जैसा कि हदीसों में बयान किया गया है सब हकीकत में मौजूद हैं सिर्फ मिसाल व ख्याल नहीं और हमारे न देखने और मालूम न कर पाने से उन के पाये जाने में कोई फर्क नहीं पड़ता इसलिए कि आलमे मलकूत को सर की आँखों से नहीं देख सकते उस के लिए एक दूसरी आँख चाहिए (अशिअतु-ल्लम्आत जिल्द 1 सफा 114)

और हजरत मुल्ला अली कारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि लिखते हैं कि—अगर कहा जाये कि हम लोग मुरदा को उसके हाल पर देखते हैं फिर कैसे बिठा कर उस से पूछा जाता है और मारा जाता है हालाँकि कोई बात नजर नहीं आती—तो जवाब यह है कि ऐसा हो सकता है कि मुरदा के साथ सब कारवाइयाँ हों और हमें नजर न आयें और इस की मिसाल दुनिया में मौजूद है कि सोने वाला आदमी नींद में आराम व तकलीफ की चीजों को देखता है तो उस पर उन का असर होता है और हम उस के पास रह कर नहीं मालूम कर पाते कि सोने वाले पर क्या बीत रही है और इसी तरह जागने वाला आदमी अच्छी या बुरी खबर सुन कर और सोच कर मजा या तकलीफ पाता है और पास बैठे हुए आदमी को कुछ पता नहीं चलता और इसी तरह हजरते जिबरईल अलैहिस्सलातु वस्सलाम कुर्आन मजीद की वही लेकर हुजूर सल्लल्लाहु तआला

अलैहि वसल्लम के पास हाजिर होते थे (खुद हुजूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तो हजरते जिबरईल अलैहिस्सलाम वस्सलाम को देखते थे) मगर सहाब ए किराम उन को नहीं देख पाते थे (मिरकात शरहमिश्कात जिल्द 1 सफा 163)

कुछ जुरुरी मसले

(1) मरने के बाद मुसलमानों की रूहें अपने-अपने दर्जे के लिहाज से कई मकामों में रहती है कुछ लोगों की रूहें कब्र पर 'कुछ लोगों की जमजम के कुँयें में' कुछ लोगों की आसमान व जमीन के बीच में कुछ लोगों की पहले, दूसरे, सातवें आसमान तक और कुछ लोगों की आसमानों से भी ऊपर और कुछ लोगों की रूहें अर्श के नीचे किनदीलों मे और कुछ लोगों की आला इल्लीईन में और काफिरों की खबीस रूहें कुछ की उन के मरघट या कब्र पर, कुछ की चाहे बरहूत में कि यमन में एक नाला है, कुछ की पहली, दूसरी, सातवीं जमीन तक और कुछ की उस के नीचे सिज्जीन में मगर कहीं भी हों अपने बदन से उन का लगाव बाकी रहता है।

(बहारे शरीअत)

(2) कब्र में मुनकर नकीर का सुवाल हक है—उस का इनकार करने वाला गुमराह बद मजहब है—हजरत इमामे आजम अबू हनीफा रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फिक हे अकबर में फरमाते हैं कि कब्र में मुनकर नकीर का सुवाल हक है।

(3) मुरदा अगर कब्र में दफ्न न किया जाये तो जहाँ कहीं होगा वहीं सुवालात होंगे और वहीं सवाब या अजाब पायेगा यहाँ तक कि अगर किसी जानवर ने खा लिया तो उस के पेट में सुवाल होंगे और वहीं सवाब या अजाब पायेगा—हजरत मुल्ला अली कारी रहमतुल्लाहि अलैहि लिखते हैं कि सुवाल सब मुरदों से किया जायेगा—यहाँ तक कि मरने के बाद जानवर खा लें तो भी सुवाल किया जायेगा (मिरकात जिल्द 1 सफा 168)

(4) कब्र का अजाब हक है उस का इनकार करने वाला गुमराह है—अहले सुन्नत व जमाअत से नहीं है हजरत मुल्ला अली कारी रहमतुल्लाहि अलैहि शरह फिकहे अकबर सफा 122 में लिखते हैं कि कब्र का अजाब हक है जो सब काफिरों और कुछ गुनहगार मुसलमानों पर होगा और ऐसे ही कब्र की नेमत कुछ मुसलमानों के लिए हक है।

(5) बदन अगरचे गल जाये जल जाये या मिट्टी हो जाये मगर उसके अस्ली अजजा कियामत तक बाकी रहेंगे और उन्हीं पर अजाब व सवाब होंगे—वह अजजा रीढ़ की हड्डी में होते हैं कि न किसी चीज से नजर आते हैं, न आग उन्हें जलाती है और न जमीन उन्हें गला सकती है—यही जिस्म के बीज हैं खुदाय तआला कियामत के दिन मुरदा के बिखरे हुए हिस्सों को पहली हालत पर लाकर उन्हीं अस्ली अजजा पर कि महफूज हैं तरकीब देगा और हर रूह को उसी पहले जिस्म में भेजेगा (बहारे शरीअत)

(6) नबी, वली, आलिम, शहीद, कुर्आन के हाफिज जो कुर्आन मजीद पर अमल करते हों और जो महब्बत के दरजा पर पहुँचे हुए हैं और वह जिस्म जिसने कभी गुनाह न किया हो और वह लोग कि हर वक्त दुरूद शरीफ पढ़ते रहते हैं उन के बदन को मिट्टी नहीं खा सकती—जो शख्स नबियों के बारे में यह बुरी बात कहे कि "मर के मिट्टी में मिल गये" तो वह गुमराह, बद्दीन, खबीस और बेइज्जती करने वाला है (बहारे शरीअत जिल्द 1 सफा 29)

कियामत की निशानियाँ

(1) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि मैंने रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम को फरमाते हुए सुना है कि कियामत की निशानियाँ यह हैं कि इल्म उठा लिया जाएगा जहालत ज्यादा होगी जिना करना और शराब पीना बहुत होगा। मर्द कम होंगे औरतें ज्यादा हो जायेंगी यहाँ तक कि एक मर्द की देख भाल में पचास औरतें होंगी। (बुखारी मुस्लिम)

(2) हज़रते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब माले गनीमत सिर्फ मालदारों की दौलत ठहराई जाये, अमानत को माले गनीमत और ज़कात को जुरमाना समझा जाए, जब कि इल्म को दीन के लिए न पढ़ा जाए, मर्द अपनी औरत की फरमां बरदारी और मां की ना फरमानी करेगा, जबकि आदमी अपने दोस्त से करीब होगा और अपने बाप को दूर करेगा, जब मस्जिदों में शोर मचाया जायेगा, कौम का सरदार उनमें का बेअमल होगा, और जब कौम का लीडर उन में का कमीना आदमी होगा, और आदमी की इज्ज़त उन की बुराईयों से बचने के लिए की जाएगी। जब गाने वाली औरतें और तरह-तरह के बाजे जाहिर होंगे खुल्लम खुल्ला शराब पी जाएगी, और जब उम्मत के पिछले लोग अगिलों को बुरा कहेंगे तो उस वक्त तुम इन चीजों का इन्तिजार करना लाल आंधी, भूचाल, जमीन में धंसना, सूरतें बिगड़ना, पत्थरों का बरसना और कियामत की बड़ी-बड़ी निशानियों का लगातार जाहिर होना जैसे कि वह मोतियों की टूटी हुई लड़ी है जिससे लगातार मोती गिर रहे हैं। (तिरमिजी)

(3) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि कियामत नहीं आयेगी जब तक कि जमाना एक दूसरे के करीब न होगा यानी जमाने के हिस्से जल्द-जल्द गुजरने लगेंगे साल महीना के बराबर हो जाएगा, महीना हफ्ता के बराबर, हफ्ता एक दिन के बराबर और उस वक्त एक दिन एक घंटा के बराबर होगा और घंटा आग की एक लपट उठ कर खत्म हो जाने के बराबर होगा। (तिरमिजी)

(4) हजरते हुजैफा इब्न असीद गिफारी रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि हम लोगों की बातचीत को जब हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने सुना तो फरमाया तुम लोग क्या बात कर रहे हो—लोगों ने कहा कि हम कियामत का चरचा कर रहे हैं—हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब

वक्त तक कियामत नहीं आएगी जब तक कि तुम इन निशानियों को न देख लोगे—फिर उन निशानियों को बताया और फरमाया धुवाँ, दज्जाल, दाब्बतुल अर्ज, पच्छिम से सूर्य का निकलना, ईसा इब्न मरयम का उतरना, याजूज व माजूज, तीन जगहों पर जमीन का धंसना एक पूर्व में दूसरे पच्छिम में और तीसरे जजीरए अरब में और उन का दसवां वह आग है जो यमन से निकलेगी और लोगों को घेर कर महशर यानी मुल्के शाम की तरफ ले जाएगी—और एक रिवायत में है कि वह आग अदन के इलाका से निकलेगी और लोगों को घेर कर महशर की तरफ ले जाएगी और एक रिवायत में दसवीं निशानी एक हवा बयान की गई है जो लोगों को दरिया (नदी) में फेंक देगी—(मुस्लिम)

(5) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि दज्जाल बायें आँख का काना होगा बहुत ज्यादा बाल वाला होगा उसके साथ जन्नत और दोजख होगी। उसकी जहन्नम हकीकत में जन्नत होगी और जन्नत हकीकत में जहन्नम होगी। (मुस्लिम)

(6) हजरते अबू सईद खुदरी रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआल अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि महदी मेरी औलाद में से है। जो बड़ा चमकदार माथा और ऊँची नाक वाला वह जमीन को इस तरह इनसाफ से भरदेगा जिस तरह पहले जुल्म से भरी थी और सात वर्ष तक जमीन का मालिक रहेगा। (अबू दाऊद)

(7) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि कियामत उस वक्त आएगी जब जमीन पर कोई अल्लाह अल्लाह कहने वाला नहीं रह जाएगा। (अबू दाऊद)

कुछ ज़ुरुर मसले

(1) कियामत की कुछ निशानियाँ जो पहले हदीसों में बयान की गई हैं उन में से कुछ जाहिर हो चुकीं और जो बाकी हैं वह भी ज़ुरुर जाहिर होंगी। दज्जाल का फितना बहुत सख़्त होगा, वह खुदाई का दावा करेगा जो उस पर ईमान लायेगा उसे अपनी जन्नत में जो हकीकत में दोजख होगी डालेगा और जो ईमान नहीं लायेगा उसे दोजख़ा में जो हकीकत में जन्नत होगी डालेगा। मुरदे जिलायेगा जमीन से हरयाली उगायेगा और आसमान से पानी बरसाएगा इसी किस्म के बहुत खेल निखाएगा जो हकीकत में जादू के करिशमें होंगे। उस के माथे पर क फ र लिखा होगा यानी काफिर जिस को हर मुसलमान पढ़ेगा मगर काफिर को दिखाई नहीं देगा। (बहारे शरीअत)

(2) हजरत इमाम महदी रजियल्लाहु तआला अनहु के जाहिर होने का थोड़ा किस्सा यह है कि रमजान शरीफ का महीना होगा बड़े-बड़े बुजुर्ग काबा का तवाफ कर रहे होंगे और हजरत इमान महदी भी वहाँ होंगे, औलिया अल्लाह उन्हें पहचानें गे उन से बैअत होना चाहेंगे वह इनकार करेंगे तो गैब आवाज आयेगी कि यह अल्लाह का खलीफा महदी है इसकी बात सुनो और इस का हुक्म मानो। सब लोग उनके हाथ पर बैअत करेंगे। फिर वहाँ से सब को अपने साथ लेकर आप मुल्के शाम चले जायेंगे।

(बहारे शरीअत)

(3) हजरत ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम जामे मस्जिद दमिश्क के पूर्वी मिनारा पर आसमान से उतरेंगे, फज्र की नमाज का वक्त होगा हजरत इमाम महदी रजियल्लाहु तआला अनहु वहाँ मौजूद होंगे। हजरत ईसा अलैहिस्सलात वस्सलाम उन्हें इमामत का हुक्म देंगे और उनके पीछे नमाज पढ़ेंगे। उस वक्त दज्जाल लईन मुल्के शाम में होगा। हजरत ईसा अलैहिस्सातु वस्सलाम की साँस की महक से पिघलना शुरू होगा वह भागेगा

आप उस का पीछा करेंगे और उसकी पीठ से भाला मार कर जहन्नम में पहुंचा देंगे फिर अल्लाह के हुक्म से सब मुसबमानों को लेकर तूर पहाड़ पर चले जायेंगे। (बहारे शरिअत)

(4) जब हजरत ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम मुसलमानों के साथ पहाड़ पर होंगे तो याजूज व माजूज निकलेंगे। यह दुनिया भर में फसाद और लूट मार करेंगे फिर आसमान की तरफ तीर फेंकेंगे। खुदाय तआला की कुदरत से उनके तीर ऊपर से खून लगे हुए गिरेंगे वह खुश होंगे। वह लोग अपनी इन्ही हरकतों में लगे होंगे कि हजरत ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम उन की बरबादी के लिए दुआ करेंगे। खुदाय तआल उन की गरदनों में एक किस्म के कीड़े पैदा कर देगा एक दम में वह सब के सब मर जायेंगें। अब हजरत ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम सब मुसलमानों के साथ पहाड़ से उतरेंगे। दुनिया भर में उस वक्त सिर्फ एक दीन दीने इस्लाम और एक मजहव मजहबे अहले सुन्दत व जमाअत होएा। चालीस बर्ष तक आप दुनिया में रहेंगे। निकाह करेंगे बच्चे होंगे और बाद वफात सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के रौजए अनवर में दफ्न होंगे। (बहारे शरीअत)

(5) दाब्बतुल अर्ज एक जानवर होगा जिसके हाथ में हजरते मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम की लाठी और हजरते सुलैमान अलैहिस्सलातु वस्सलाम की अँगूठी होगी लाठी से हर मुसलमान के माथे पर एक चमकदार ठप्पा लगायेगा और अँगूठी से हर काफिर के माथे पर एक काला दाग लगायेगा जो कभी न मिटेगा। जो काफिर है हरगिज ईमान न लाएगा और जो मुसलमान है जिंदगी भर अपने ईमान पर काइम रहेगा। (बहारे शरीअत)

(6) हजरत ईसा अलैहिस्सातु वस्सलाम की वफात के एक जमाना बाद जब कियामत को सिर्फ चालीस वर्ष रह जायेंगे तो एक अच्छी महक वाली ठंडी हवा चलेगी जोलोगों की बगलों के नीचे से गुजरेगी जिसका असर यह होगा कि मुसलमानों की रूह निकल जायेगी अल्लाह कहने वाला कोई न बचेगा। काफिर ही काफिर दुनिया

में रह जायेंगे चालीस वर्ष तक उन के यहाँ कोई बच्चा पैदा न होगा यानी चालीस वर्ष से कम उम्र का कोई न होगा अब उन्हीं पर कियामत आयेगी। हजरत इस्राफील अलैहिस्सलाम सूर फूकेंगे। सब मर जायेंगे। आसमान, पहाड़, जमीन यहाँ तक कि सूर और इस्राफील और सब फरिशते खत्म हो जायेंगे सिवाय खुदा के कोई न होगा। वह फरमायेगा आज किसकी बादशाहत है? मगर है कौन जो जवाब दे फिर खुद ही कहेगा सिर्फ अल्लाहु वहिदे कहहार की सलतनत है। फिर जब अल्लाह तआला चाहेगा। इस्राफील को जिंदा फरमायेगा और सूर को पैदा करके दोबारा फूंकने का हुक्म देगा। सूर फूंकते ही तमाम अगले पिछले फरिशते इनसान और जिन्नात वगैरा सब मौजूद हो जायेंगे। सबसे पहले हुजूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम कब्रे अनवर से युं बाहर तशरीफ लायेंगे कि उनके दाहिने हाथ मुबारक में हजरत सिद्दीके अकबर का हाथ होगा और बायें हाथ मुबारक में हजरत फारूके आजम का हाथ होगा (रजियल्लाहु तआला अनहुमा) फिर मक्का शरीफ और मदीना शरीफ के कब्रिस्तानों में जितने मुसलाम दफ्न हैं सब को अपने साथ लेकर मैदाने हश्र में तशरीफ ले जायेंगे।

हौजे कौसर और शफाअत

(1) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि (मेराज की रात में) जब मैं जन्नत की सैर कर रहा था तो मेरा गुजर एक नहर पर हुआ जिसके दोनों तरफ खोलदार मोती के गुंबद थे। मैंने पूछा जिबरईल यह क्या है? उन्हों ने कहा यह वह कौसर है जो आप के परवरदिगार ने आप को दिया है। मैंने देखा कि उस की मिट्टी निहायत खुशबुदार खालिस मुश्म की है। (बुखारी शरीफ)

(2) हजरत अब्दुल्लाह इब्ने अम्र रजियल्लाहु तआला अनहुमा

ने कहा कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मेरे हौजे कौसर की बड़ाई एक महीना (का रास्ता) है उस के चारों कोने बराबर हैं। उसका पानी दूध से ज्यादा सफेद और मुश्क से ज्यादा महकने वाला है। उस के कूजे चमक और ज्यादती में आसमान के तारों की तरह हैं जो शख्स उस में से पियेगा फिर कभी प्यासा न होगा (बुखारी मुस्लिम)

(3) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि मैं ने हुजूरे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से दरख्वास्त की कि हुजूर कियामत के दिन मेरी सिफारिश फरमाई जाए। सरकार ने फरमाया मैं करूँगा। मैं ने कहा या रसूल्लल्लाह ! मैं हुजूर को कहाँ खोजूंगा सरकार ने फरमाया पहले मुझको पुल सिरात पर खोजना मैं ने कहा अगर हुजूर पुल सिरात पर न मिलें फरमाया तो मीजान पर। मैं ने कहा अगर हुजूर मीकान पर भी न मिलें। फरमाया तो फिर हौजे कौसर पर। मैं इन तीन जगहों को नहीं छोड़ूंगा। यानी इन जगहों में से किसी एक जगह जुरुर मिलूंगा। (तिरमिजी)

(4) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवातत है कि नबीए करीम अलैस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि मेरी शफाअत साबित है मेरी उम्मत के बड़े गुनाह करने वालों के लिए (तिरीमिजी)

(5) हजरत औफ इब्ने मालिक रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि मेरे पास खुदाय तआला की तरफ से एक फरिशता आया तो उसने मुझें इख्तियार दिया कि या तो मेरी आधी उम्मत जन्नत में जाए या मैं शफाअत को इख्तियार करूँ तो मैंने शफाअत को मनजूर किया मेरी शफाअत हर उस शख्स के लिए होगी कि जो इस हाल में मरे कि उसने किसी को खुदाय तआला का शरीक न माना हो। (तिरमिजी)

(6) हजरत इमरान इब्ने हुसैन रजियल्लाहु तआला अनहु ने

कहा कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मेरी उम्मत की एक जमाअत मेरी शफअत की बदौलत जहन्नम की आग से निकाली जाएगी जिस का नाम जहन्नमी पड़ा हुआ था—(बुखारी शरीफ)

(7) हजरत उस्मान इब्ने अफ्फान रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि कियामत के दिन तीन किस्म के लोग शफाअत करेंगे—पहले नबी, फिर आलिम फिर शहीद (मिशकात)

हजरत शैख अब्दुल हक्क महद्दिस देहलवी बुखारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि इस हदीस की शरह में लिखते हैं कि इन तीन गिरोह के साथ शफाअत को खास करना इन की बुजुर्गी की ज्यादती के सबब हैं वरना हर अहलेखैर मुसलमान जैसे सच्चा हाजी बा अमल हाफिज के लिए भी शफाअत का हक साबित है—(अशिअतुल्लम्आत जिल्द 4 सफा 408)

(8) हजरत अबूसईद रजियल्लाहु तलालाअनहु से रिवायत है कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि मेरी उम्मत में से कुछ लोग कई जमाअत की शफाअत करेंगे और कुछ लोग कई कबीला की—और कुछ लोग दस से चालीस की शफाअत करेंगे और कुछ लोग सिर्फ एक आदमी की—यहाँ तक कि मेरी कुल उम्मत जन्नत में दाखिल हो जायेगी (तिरमिजी)

(9) हजरत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तसलीम ने फरमाया कि लोग जहन्नम की आग को (पुल सिरात से गुजर कर) पार करेंगे फिर अपने अच्छे-अच्छे अमल के मुवाफिक जहन्नम की लपट वगैरा से छुटकारा पायेंगे तो उन में से जो सबसे अच्छे होंगे वह बिजली चमकने की तरह पुल सिरात से गुजर जायेंगे फिर हवा की तरह फिर दौड़ने वाले घोड़े की तरह फिर ऊँट सवार की तरह फिर दौड़ने वाले आदमी की तरह फिर पैदल चलने के मिस्ल (तिरमिजी)

कुछ जुरुरी मसले

(1) कियामत का होना हक है उसका न मानने वाला काफिर है। (वहारे शरीअत)

(2) कियामत के दिन लोग अपनी-अपनी कब्रों से नंगे बदन बगैर खतना किए हुए उठेंगे 'कोई पैदल होगा कोई सवार और काफिर मुंह के बल चलते हुए मैदान हश्र को जायेंगे किसी को फरिशते घसीट कर ले जायेंगे—मैदाने हश्र मुल्के शाम की जमीन पर होगा—उस दिन जमीन ताँबे की होगी—सूर्य सिर्फ एक मील के फासिला पर होगा—अभी चार हजार वर्ष की राह के फासिला पर है और उस की पीठ दुनिया की तरफ है—कियामत के दिन उस का मुंह इस तरफ होगा—गरमी से भेजे खौलते होंगे पसीना इतना ज्यादा निकलेगा कि ऊपर चढ़ेगा किसी के टखनों तक होगा किसी के घुटनों तक किसी के कमर किसी के सीना किसी के गले तक और काफिर के तो मुंह तक चढ़ कर लगाम की तरह जकड़ जाएगा जिस में वह डुबकियाँ खाएगा और गरमी की हालत से पियास की जो हालत होगी वह जाहिर है—जुबानें सूख कर काँटा हो जायेंगी और कुछ लोगों की जुबानें मुंह से बाहर निकल आयेंगी—इन मुसीबतों के बावजूद कोई किसी का हाल न पूछेगा भाई से भाई भागेगा माँ बाप औलाद से पीछा छुड़ायेंगे हर एक अपनी-अपनी मुसीबत में पड़ा होगा कोई किसी की मदद न करेगा कियामत का दिन जो कि पचास हजार वर्ष का होगा इस परेशानी की हालत में करीब आधे के गुजर जाएगा अब महशर वाले राय करेंगे कि अपना कोई सिफारशी ढूंडना चाहिए जो हम को इन मुसीबतों से छुटकारा दिलाये लोग गिरते पड़ते हजरते आदम अलैहिस्सलाम के पास जायेंगे और कहेंगे कि ऐ हजरते आदम आप इनसान के बाप हैं खुदाय तआला ने आप को अपने दस्ते कुदरत से बनाया फरिश्तों से आप को सजदा कराया हम लोग सख्त परेशानी में पड़े हैं आप हमारी शफाअत कीजिए कि खुदाय तआला हमें इनसे छुटकारा दे। हजरते आदम अलैहिस्सलातु वस्सलाम फरमायेंगे यह मेरा मरतबा नहीं तुम

किसी और के पास जाओ लोग हजरते नूह अलैहिस्सलातु वस्सलाम के पास जायंगे और उनकी बड़ाई बयान करके कहेंगे कि आप अपने परवरदिगार के यहाँ हमारी शफाअत कीजिए यहाँ से भी वही जवाब मिलेगा कि मैं इस लाइक नहीं तुम किसी और के पास जाओ। मुख्तसर यह कि लोग हजरते इब्राहीम, हजरते मूसा वगैरा बड़े-बड़े नबियों के पास जाकर शफाअत के लिए रोयेंगे और गिड़गिड़ायेंगे मगर हर जगह से यही जवाब मिलेगा कि यह मेरा मरतबा नहीं तुम किसी और के पास जाओ। यहाँ तक कि लोग हजरते ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम के पास जायेंगे वह भी यही कहेंगे कि मैं इस लाइक नहीं तुम किसी और के पास जाओ लोग कहेंगे आप हमें किस के पास भेजते हैं फरमायेंगे तुम उनके पास जाओ जिन के हाथ पर फतह रखी गई जिन्हें आज डर नहीं और वह हजरते आदम की सारी औलाद के सरदार हैं तुम मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पास जाओ वह खातमुन्नबीईन हैं वही आज तुम्हारी शफाअत करेंगे अब लोग फिरते फिराते ठोकरें खाते रोते चिल्लाते दुहाई देते हुए शफीउलमुजनिबीन रहमतुल्लिलआलमीन जनाब अहमद मुजतबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर होकर शफाअत के लिए कहेंगे हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फरमायेंगे कि शफाअत के लिए मैं हूँ यह फरमाकर खुदा की बारगाह में सज्दा करेंगें हुक्म होगा ऐ मुहम्मद अपना सर उठाओ और कहो तुम्हारी बात सुनी जाएगी और जो माँगोगे मिलेगा और शफाअत करो तुम्हारी शफाअत कबूल है अब शफाअत का सिलसिला शुरू हो जाएगा यहाँ तक कि जिसके दिल में राई के दाने से भी कम ईमान होगा सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम उस की भी शफाअत फरमायेंगे—ऐ अल्लाह ! हम को, हमारे माँ बाप को, हमारे उस्तादों को, हमारे शागिरदों को, हम से मुहब्बत करने वालों को और सब अहले सुन्नत व जमाअत को हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शफाअत नसीब फरमा—आमीन।

(3) शफाअत हक है उसका इनकार करना बद मजहबी व गुम-राही है (अशिअतुल्लम्आत जिल्द 4 सफा 408)

और हजरत मुल्ला अली कारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि लिखते हैं कि इमाम नौवी की किताब शरह मुस्लिम में है कि इमाम काजी अयाज रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने फरमाया कि अहले सुन्नत व जमाअत का मजहब यह है कि शफाअत जाइज है इसलिए कि खुदाय तआला ने खुल्लम खुल्ला फरमाया कि उस दिन किसी की शफाअत काम न देगी मगर उस शख्स की जिसे रहमान ने शफा-अत करने की इजाजत दे दिया हो और उसकी बात पसंद फरमाई हो (पारा 16 रुकू 15) और इस आयते करीमा के इलावा बहुत सी हदीसें हैं जिनका मजमुआ आखिरत में शफाअत के सहीह होने पर तवातुर की हद फो पहुंच चुका है शफाअत के हक होने पर सहाबा, ताबिईन तबअताबिईन और उनके बाद अहले सुन्नत व जमाअत का इजमा है (मिरकात जिल्द 5 सफा 277)

(4) शफाअत की कई किस्में हैं जैसा कि हजरत शेख अब्दुल हक्क मुहद्दिस देहलवी बुखारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने फरमाया कि शफाअत की पहली किस्म शफाअते उजमा है जो कि सब लोगों के लिए आम है और हमारे पैगम्बर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के साथ खास है यानि नबियों में से किसी और नबी को उस पर जुरअत और पहल करने की मजाल न होगी और यह शफाअत लोगों को आराम पहुँचाने, मैदाने हश्र में देर तक ठहरने से छुटकारा दिलाने, अल्लाह तबारक व तआला के फैसला और हिसाब के जल्दी करने और कियामत के दिन की सख्ती व परेशानी से निकालने के लिए होगी।

दूसरी किस्म की शफाअत एक कौम को बे हिसाब जन्नत में जाने के लिए होगी और यह शफाअत भी हमारे पैगम्बर सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के लिए साबित है और कुछ लोगों के नजदीक यह शफाअत हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ही के साथ खास है —तीसरी किस्म की शफाअत उन लोगों

के बारे में होगी कि जिनकी अच्छाईयाँ और बुराईयाँ बराबर होंगी और शफाअत की मदद से जन्नत में जायेंगे—चौथी किस्म की शफाअत उन लोगों के लिए होगी जो कि जहन्नम के हकदार हो चुके होंगे तो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम शफाअत फरमा कर उन को जन्नत में लावेंगे।

पाँचवीं किस्म की शफाअत मरतबे की ऊँचाई के लिए होगी—छठी किस्म की शफाअत उन गुनहगारों के बारे में होगी जो कि जहन्नम में पहुँच चुके होंगे और शफाअत की वजह से निकल आयेंगे और इस शफाअत में दूसरे नबी, फरिश्ते, आलिम और शहीद भी शरीक होंगे।

सातवीं किस्म की शफाअत जन्नत खोलने के बारे में होगी—आठवीं किस्म की शफाअत उन लोगों के अजाब को हल्का करने के बारे में होगी जो कि हमेशा के अजाब के हकदार होंगे—नवीं किस्म की शफाअत खास कर मदीना मुनव्वरा वालों और सरकारे अकदस के रौजए अनवर की जियारत करने वालों के लिए होगी।

(अशिअतुल्लम्आत जिल्द 4 सफा 382)

(5) हौजे कौसर जो कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को दिया गया हक है। (बहारे शरीअत)

(6) कियामत के दिन हर शख्स को उसकी नेकियों का रजिस्टर दाहने हाथ में दिया जाएगा और बुराईयों का बायें हाथ में और काफिर का रजिस्टर सीना तोड़कर उसका बायाँ हाथ उसके पीछे निकाल कर पीठ के पीछे दिया जाएगा। (बहारेशरीअत)

(7) हिसाब हक है और उस का न मानने वाला काफिर है।

(बहारे शरीअत)

(8) मीजान हक है उस पर लोगों के नेक व बद आमाल तौले जायेंगे नेकी या बदी का पल्ला भारी होने का यह मतलब है कि ऊपर उठे यानी दुनिया के जैसा मुआमला नहीं होगा कि जो भारी होता है नीचे झुकता है। (बहारे शरीअत)

(9) हुजूरे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को

खुदाय तआला मकामे महमूद देगा कि सब अगले और पिछले आप की तारीफ करेंगे ।

(10) सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को एक झंडा दिया जाएगा जिस का नाम लिवाउलहम्द है हजरते आदम अलैहिस्सलातु वस्सलाम से लेकर कियामत तक के सब मोमिन उसी झंडे के नीचे होंगे ।

जन्नत का बयान

(1) हजरते अबू. हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि खुदाय तआला ने फरमाया है कि मैंने अपने नेक बंदों के लिए ऐसी चीज तैयार कर रखी है कि जिस को न किसी आँख ने देखा न उसकी अच्छाइयों को किसी कान ने सुना और न किसी इनसान के दिल पर उस का ख्याल गुजरा । (बुखारी-मुस्लिम)

(2) हजरते बुरीदा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि सर-कारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जन्नतीयों की एक सौ बीस सफें (कतारें) होंगी और उन में से अस्सी सफें इस उम्मत की होंगी और चालीस सफें दूसरी उम्मतों की । (तिरमिजी)

(3) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि अगर जन्नतीयों की औरतों में से कोई औरत जमीन की तरफ झांके तो आसमान से जमीन तक रौशन हो जाए और जमीन व आसमान के बीच का पूरा हिस्सा महक जाए और उसके सर की ओढ़नी दुनिया और जो कुछ दुनिया में है उन सब से बेहतर है (बुखारी)

(4) हजरते साद इब्ने अबू वक्कास रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि नबी करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि अगर जन्नत की चीजों से नाखुन बराबर कोई चीज जाहिर हो जाए तो आसमान व जमीन के हर तरफ उस से सजावट पैदा हो जाए

और अगर जन्नतीयों में से कोई शख्स दुनिया की तरफ झांके और उस के कंगन जाहिर हो जायें तो उस की चमक सूर्य की चमक को मिटा दे जैसे कि तारों की जमक को सूर्य मिटा देता है। (तिरमिजी)

(5) हजरते अबू सईद और अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहुमा से रिवायत है कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि पुकारने वाला पुकार कर कहेगा कि (ऐ जन्नत वालो) तुम तनदुरुस्त रहो गे कभी बीमार न होगे, तुम जिन्दा रहोगे कभी न मरोगे, तुम जवान रहोगे कभी बूढ़े न होगे और तुम आराम से रहोगे कभी मेहनत व मशक्कत न उठाओ गे। (मुस्लिम)

(6) हजरते जाबिर रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहिवसल्लम ने फरमाया कि जन्नती, जन्नत में खायेंगे और पियेंगे लेकिन न थूकेंगे न पेशाब पाखाना करेंगे—और न रींट सिनकेंगे (छिनकेंगे) सहाबा ने पूछा खाने का फुजला क्या होगा ? हुजूर सल्लल्लाहू तआला अलैहिवसल्लम ने फरमाया कि अच्छी डिकार आएगी और ऐसा पसीना आएगा जो मुश्क की महक की तरह होगा और सुबहानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि कहना जन्नतीयों के दिल में डाल दिया जाएगा (जो उन की जुबान पर बे तकल्लुफ जारी होगा) जैसे कि साँस जारी है। (मुस्लिम)

(7) हजरत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि मरतवा के लिहाज से सबसे कम दरजा का जन्नती वह शख्स होगा जो अपने बागों अपनी बीवीयों अपने माल व असबाब अपने खिदमतगारों और अपने आराम करने की जगहों को एक हजार बर्ष के रास्ता के अंदर फैला हुआ देखेगा और खुदाय तआला के नजदीक सब से बड़े दरजा का जन्नती वह शख्स होगा जो सुबह व शाम अल्लाह की जियारत करेगा इस के बाद हुजूर

ने पारा 29 सूरए कियामह की आयते करीम पढ़ो जिस का मतलब यह है कि उस रोज बहुत से चेहरे अपने परवरदिगार की जियारत से हरे भरे और खुश व खुर्रम होंगे (तिरमिजी)

कुछ जुरुरी मसले

(1) जन्नतीयों को जन्नत में हर किस्म की लज्जत वाले फल और खाने मिलेंगे—जो चाहेंगे फौरन उन के सामने आ जाएगा अगर किसी चिड़या का गोश्त खाने को जी चाहेगा तो उसी वक्त भुना हुआ उन के सामने आ जाएगा—अगर किसी चीज के पीने को जी चाहेगा तो उसी चीज से भरा हुआ गिलास फौरन हाथ में आ जायेगा।

(2) कम दरजा जन्नती के लिए अस्सी हजार खादिम और बहत्तर बीवीयाँ होंगी और उन को ऐसे ताज मिलेंगे कि उस में का एक कम दरजा का मोती पूरी दुनिया को चमका दे।

(3) जन्नती आपस में भेंट मुलाकात करना चाहेंगे तो एक का तख्त दूसरे के पास खुद बखुद चला जायेग।

जहन्नम का बयान

(1) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि नबीए करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि जहन्नम की आग को एक हजार बर्ष जलाया गया यहां तक कि वह लाल हो गयी। फिर उसको एक हजार बर्ष तक जलाया गया—यहाँ तक कि वह सफेद हो गई। फिर उसे एक हजार वर्ष और जलाया गया यहां तक कि वह काली हो गई। अब वह काली और अँधेरी वाली है। (तिर्मिजी)

(2) हजरत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि दोजखीयों में सब से हल्का अजाब अबू तालिब को होगा। उस

को आग के जूते पहनाए जायेंगे जिन से उस का भेजा खौलने लगेगा। (बुखारी)

(3) हजरते समुरा इब्ने जुनदब रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि नबीए करीम अलैहिस्सलातु वस्सलीम ने फरमाया कि जहन्नमीओं में कुछ लोग वह होंगे जिनके टखनों तक आग होगी और कुछ लोग वह होंगे जिनके घुटने तक आग की लपट पहुंचे गी और कुछ लोग वह होंगे जिन के कमर तक होगी और कुछ लोग होंगे जिनके गले तक आग की लपटें होगों। (मुस्लिम)

(4) हजरते अबू सईद खुदरी रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहिवसल्लम ने फरमाया कि अगर उस पीले पानी का एक डोल (बालटी) जो जहन्नमीयों के जख्मों से जारी होगा दुनिया में डाल दिया जाये तो दुनिता वाले बदबू दार हो जायेंगे। (तिरमिजी)

(5) हजरत अब्दुल्लाह इब्ने हारिस इब्ने जज ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि जहन्नम में बुखती ऊँट के बराबर साँप हैं। यह साँप एक मरतबा किसी को काटे तो उस का दर्द और जहर चालीस वर्ष तक रहेगा। और जहन्नम में पालान बाँधे हुए खच्चरों जैसे बिच्छू हैं तो उनके एक मरतबा काटने का दर्द दो हजार चालीस साल तक रहेगा।

(मिशकात)

(6) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि जहन्नम में सिर्फ बद नसीब दाखिल होगा। पूछा गया या रसूलल्लाह ! बद नसीब कौन है ? फरमाया बद नसीब वह शख्स है कि जिसने खुदाय तआला की खुशी हासिल करने के लिए उसकी फरमाँ बरदारी नहीं की और अल्लाह तआला के लिए गुनाह को नहीं छोड़ा। (इब्ने माजा)

कुछ जुरुरी मसले

(1) जन्नत और जहन्नम हक हैं उन का न मानने वाला काफिर है। (बहारे शरीअत)

(2) दुनिया की आग जहन्नम की आग के सत्तर हिस्सों में से एक हिस्सा है। (बहारे शरीअत)

(3) हजरते जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने हुजूर सल्लल्लाहू तआला अलैहि वसल्लम से कसम खाकर कहा कि अगर जहन्नम को सुई की नोक के बराबर खोल दिया जाए तो उसकी गरमो से सब जमीन वाले मरजायें—और कसम खाकर कहा कि अगर जहन्नम का कोई दरोगा दुनिया वालों पर जाहिर हो जाए तो जमीन के रहने वाले सब के सब उनकी हैबत (डर) से मर जायें और कसम के साथ बयान किया कि अगर जहन्नमीयों की जंजीर की एक कड़ी दुदिया के पहाड़ों पर रख दी जाए तो काँपने लगे यहाँ तक कि नीचे की जमीन तक धंस जायें।

(बहारे शरीअत)

(4) जहन्न की गहराई इतनी ज्यादा है कि अगर पत्थर की चटान जहन्नम के किनारे से उस में फेंकी जाए तो सत्तर वर्ष में भी यह (नीचे) तक न पहुंचेगी। (बहारे शरीअत)

(5) जहन्नमीयों को तेल की जली हुई तलछट की तरह बहुत खौलता पानी पीने को दिया जाएग कि मुँह के करीब होते ही उस की तेजी से चेहरे की खाल गिर जाएगी। सर पर गरम पानी बहाया जाएग। जहन्नमीयों के बदन से जो पीप बहेगी वह पिलाई जाएगी कांटा दार थूहड़ खाने को दिया जाएगा वह गले में जाकर फन्दा डालेगा उस के उतारने के लिए पानो माँगेंगे तो उन को ऐसा खौलता हुआ पानी दिया जायेगा कि मुँह की सारी खाल उस में गिर पड़ेगी और पेट में जाते ही आँतों के टुकड़े-टुकड़े कर देगा तो वह शोरबे की तरह वह कर कदमों की तरफ निकलेंगी।

(बहारे शरीअत)

(6) जहन्नम वाले गधे की आवाज की तरह चिल्ला कर रोयेंगे पहले आँसू निकलेंगे जब आँसू खत्म हो जायेंगे तो खून रोयेंगे—रोते-रोते गालों में खनदकों की तरह गढ़े पड़ जायेंगे—रोने का खून और पीप इतना ज्यादा होगा कि उस में नाव डाली जाए तो चलने लगे। (अलअयाजु बिल्लाहि तआला)

वुजू का बयान

(1) हजरत अबू मालिक अशअरी रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि सफाई सुथराइ आधा ईमान है। (मुस्लिम शरीफ)

(2) हजरते उसमान रजियल्लाहु तआला अनहु ने क़हा कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जो शख्स वुजू करे और अच्छा वुजू करे तो उसके गुनाह उस के बदन से निकल जाते हैं यहाँ तक कि उसके नाखुनों के नीचे से भी निकल जाते हैं। (बुखारी मुस्लिम)

(3) हजरते सईद इब्ने जैद रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि जिस ने वुजू के शुरु में बिस्मिल्लाह न पढ़ी उस का वुजू पूरा नहीं—(तिरमिजी)

(4) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जब कपड़ा पहनो या वुजू करो तो अपने दाहिने से शुरु करो—(अबू दाऊद)

(5) हजरते उसमान रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने तीन-तीन मरतबा वुजु किया और फरमाया कि यह मेरा और मुझ से पहले जो नबी थे उन का वुजू है—(मिशकात)

(6) हजरते आइशा रजियल्लाहु तआला अनहा ने कहा कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि

मिस्वाक मुंह को पाक करने वाली और पर-वरदिगार को राज़ी करने वाली चीज है। (मिशकात)

(7) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूल अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि अगर मैं अपनी उम्मत के लिए मुश्किल न समझता तो उन्हें हुक्म देता कि वह इशा की नमाज देर से पढ़ें और हर नमाज के लिए मिस्वाक करें—

(बुखारी-मुस्लिम)

वुज़ू करने का मसनून तरीका

पहले नीयत करे और फिर बिस्मिल्लाह पढ़ने के बाद कम से कम तीन-तीन मरतबा ऊपर नीचे के दाँतों की चौड़ाई में मिस्वाक करे न कि लंबाई में और इस तरह कि पहले दाहिनी तरफ के ऊपर के दाँत मांजे फिर बाईं तरफ के ऊपर के दाँत फिर दाहिनी तरफ के नीचे के दाँत फिर बाईं तरफ के नीचे के दाँत मांजे—उस के बाद दोनों हाथ पर गट्टों समेत पानी मले और उंगलियों में खिलाल करे फिर बायें हाथ में लोटा वगैरा लेकर दायें हाथ पर उंगलियों की तरफ से शुरु करके गट्टे तक तीन बार पानी बहाए फिर लोटे को दाहिने हाथ में लेकर बायें हाथ पर तीन बार इसी तरह पानी बहाए और इस का ख्याल रहे कि उंगलियों की घाईयाँ पानी बहने से न रह जायें और अगर हौज से वुज़ू करता हो तो गट्टों तक हाथों को मलने के बाद हौज में पहले दाहिना हाथ डाल कर तीन बार हिलाए और फिर बायां हाथ डाल कर तीन बार हिलाए फिर तीन बार कुल्ली इस तरह करे कि मुंह की तमाम जड़ों और दाँतों की सब खिड़कियों में पानी पहुँच जाए और अगर रोजा दार न हो तो हर कुल्ली गर गरा के साथ करे फिर बायें हाथ की छोटी उंगली नाक में डाल कर उसे साफ करे और सांस की मदद से तीन बार दाहिने हाथ से नरम बांसों तक पानी चढ़ाए फिर मुंह पर अच्छी तरह पानी मल कर उस को तीन बार इस तरह धोये कि एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक और माथे के ऊपर कुछ सर के हिस्सा

से लेकर ठोढ़ी के नीचे तक हर-हर हिस्से पर पानी बह जाए और डाढ़ी के बाल व खाल को धोए हाँ अगर डाढ़ी के बाल घने हों तो खाल का धोना फर्ज नहीं सिर्फ मुस्तहब है—और डाढ़ी के जो बाल मुंह के दाइरे से नीचे हैं उन को भी धोए और डाढ़ी का खिलाल करे इस तरह कि उंगलियों को गरदन की तरफ से डाले और सामने निकाले—फिर दोनों हाथों पर कुहनियों समेत पानी मल कर पहले दाहिने हाथ पर और फिर बायें हाथ पर नाखुन के सर से शुरु करके कुहनियों के ऊपर तक बाल और हर हिस्सए खाल पर तीन बार पानी बहाए—फिर सर का मसह इस तरह करे कि दोनों हाथों के अँगूठे और कलिमा की उंगलियां छोड़ कर बाकी तीन-तीन उंगलियों के सिरे मिला कर माथे के बाल उगने की जगह पर रखे और सर के ऊपरी हिस्सा पर गुद्दी तक उंगलियों के पेट से मसह करता हुआ ले जाए और हथेलियाँ सर से अलग रहें फिर वहाँ से हथेलियों से सर की दोनों करवटों का मसह करते हुए माथे तक वापस लाए—या तीन-तीन उंगलियां सर के अगले हिस्से पर रखे और हथेलियाँ सर की करवटों पर जमाए हुए गुद्दी तक खींचता ले जाए और बस—फिर इस के बाद कलिमा की उंगलियों के पेट से कान के अंदुरुनी हिस्सा का मसह करे और अँगूठे के पेट से कान के बाहिरी हिस्सा का मसह करे और उंगलियों की पीठ से गरदन का मसह करे फिर पाँव पर टखनों समेत पानी मले और पहले दाहिने पाँव फिर बायें पाँव पर उंगलियों की तरफ से टखनों के ऊपर तक हर बाल और हर हिस्सए खाल पर तीन-तीन बार पानी बहाए और उंगलियों में खिलाल बायें हाथ की छोटी उंगली से इस तरह करे कि दाहिने पाँव की छोटी उंगली से शुरू कर के छोटी उंगली पर खत्म करे और हर हिस्सा को धोते वक्त दुरुद शरीफ पढ़ता रहे कि अफजल है—

कुछ जुरुरी मसले

(1) जिस्म के किसी हिस्सा के धोने के यह माना हैं कि उस के हर हिस्सा पर कम से कम दो बूँद पानी बह जाए (बहारे शरीअत जिल्द 2 सफा 93) और दुर्रे मुख्तार में है जिसके माना यह हैं

कि तकातुर के साथ पानी बहाया जाए इस तरह कि उजव के हर हिस्सा पर कम से कम दो बूँद पानी बह जाए और फतावा आलमगीरी जिल्द 1 सफा 4 में है कि जब तक आजाए वुजू के हर हिस्सा पर पानी की बूँद एक के बाद एक न गुजर जाए वुजू न होगा—और हिदाया की शरह इनाया में है कि जिन चीजों का धोना फर्ज है उन्हें सिर्फ पानी से भिगो लेने पर फर्ज अदा न होगा लिहाजा जो लोग वुजू करते वक्त मुंह और हाथ वगैरा पर तेल की तरह पानी सिर्फ चुपड़ लेते हैं या कुछ हिस्से पर पानी बहाते हैं और कुछ हिस्से को सिर्फ भिगो कर छोड़ देते हैं जैसे माथे के ऊपरी हिस्से 'कान के किनारे' हाथ की कुहनियों और पाँव के टखनों पर गीला हाथ सिर्फ फेर लेते हैं और पानी नहीं बहाते हैं उनका वुजू नहीं होता इसलिए कि अल्लाह ने धोने का हुक्म दिया है लिहाजा सिर्फ भिगोने से वुजू न होगा—

अफसोस कि आजकल जाहिल तो ज़ाहिल बहुत से पढ़े लिखे लोग भी इस मसला से लापर वाई बरतते हैं—तो कुर्आन मजीद की वह आयत उन के ऊपर फिट होती है जिस का मतलब यह है कि "काम करें, मशक्कत झेलें जायें भड़कती आग में" अल अयाजु बिल्लाह तआला।

(2) जब छोटे बरतन जैसे लोटे या वधने से वुजू कर रहा हो तो गट्टों तक हाथ धोने का मसनून तरीका यह है कि पहले दोनों गट्टों तक खूब भिगोले—उस के बाद बायें हाथ में बरतन उठा कर दाहिने हाथ पर नाखुन के सिरे से गट्टे के ऊपर तक तीन बार पानी बहाए फिर इसी तरह दाहिने हाथ में बरतन उठा कर बायें हाथ पर गट्टे तक तीन बार पानी बहाए—इसी तरह शरह विकाया जिल्द 1 सफा 59 तहतावी सफा 39 फतावा आलमगीरी जिल्द 1 सफा 6 और इनाया व किफाया और मराकिल फलाह में है—

(3) बहुत से लोग युं करते हैं कि नाक या आँख या भवों पर चुल्लू डाल कर सारे मुंह पर हाथ फेर लेते हैं और यह समझते हैं कि मुंह धुल गया हालाँ कि पानी का ऊपर चढ़ना कोई माना नहीं

रखता इस तरह मुंह धुलने से मुंह नहीं धुलता और वुजू नहीं होता
(बहारे शरीअत)

(4) वुजू करने में इन बातों की इहतियात जरूरी है—माथे के ऊपर बाल जमने की जगह से पानी का बहाना फर्ज है—डाढ़ी मोंछ और भवों के बाल अगर इतने छेदरे (हल्के) हों कि नोचे की खाल झलकती हो तो खाल पर पानी बहाना जुरुरी है—सिर्फ बालों का धोना काफी नहीं—आँख अंदर घुसी हो तो आँख और भवों के बीच हिस्सा पर पानी बहाने का ख़ास ख्याल रखे—मुंह धोते वक्त आँखें और होंट समेट कर जोर से बंद न करे वरना कुछ हिस्सा रह जाने की सूरत में वुजू न होगा—किसी वक्त आँख में कीचड़ वगैरा सख्त होकर जम जाता है उसे छुड़ा कर पानी बहाना जुरुरो है—गाल और कान के बीच वाला हिस्सा यानी गनपटी पर कान के किनारे तक पानी बहाना फर्ज है—इस से बहुत लोग लापर वाई करते हैं—नाक के छेद में कील वगैरा हो या न हो बहर हाल उस पर पानी डालना जुरुरी है—जितनी डाढ़ी चेहरे की हद में हो उस का धोना फर्ज है--और लटकी हुई डाढ़ी का मसह करना सुन्नत और धोना मुस्तहब है—पानी बहाने में उंगलियों की घाइयों और कर वटों का लिहाज जुरुरी है। खास कर पाँव में कि उस की उंगलियाँ कुदरती तौर पर मिली रहती है—बढ़े हुए नाखुनों के अन्दर जो जगह खाली हो उस का धुलना जुरुरी है—नाखुनों के सिरे से कुहनियों के ऊपर तक हाथ हर हिस्सा और एक-एक बाल का जड़ से नोक तक धुल जाना जुरुरी है चुल्लू में पानी लेकर कलाई पर उलट देना हरगिज काफी न होगा—कुहनियों पर पानी बहाने का खास ख्याल रखे कि अक्सर बे इहतियाती में धुलती नहीं सिर्फ गीली होकर रह जाती हैं बल्कि कुछ लोगों की कुहनियाँ गीली भी नहीं होती—अँगूठी, चूड़ी, कलाई के गहने और पाँव का हर वह गहना जो टखने पर या टखने से नीचे हों उन्हें हटा कर उनके नीचे पानी बहाना जुरुरी है—पूरे सर का मसह सुन्नत है और चौथाई सर का मसह फर्ज है—कुछ लोग सिर्फ उंगलियों के सिरे सर पर गुजार देते हैं जो फर्ज की मिकदार को भी काफी नहीं होता और कुछ लोगों का मसह यह है

कि टोपी उठा कर फिर सर पर रख देते हैं और बस—ऐसे लोगों का वुज़ू नहीं होता और उनकी नमाज़ें बेकार होती हैं—पाँव धोने में टखनो, तलओं, ऐड़ियों और कोचों का खास तौर पर ख्याल रखें कि अक्सर बे इहतियाती में यह हिस्से धुलने से रह जाते हैं—और वुज़ू नहीं होता—

(5) मुंह हाथ और पाँव के हर हिस्सा पर तीन बार पानी बहाना सुन्नत है चाहे तीन बार पानी बहाने के लिए कई चुल्लू पानी लेना पड़े इसलिए कि तीन चुल्लु पानी लेना सुन्नत नहीं बल्कि पूरे हिस्से पर तीन बार पानी बहाना सुन्नत है। ऐसा ही दुर्रे मुख्तार मये शामी जिल्द 1 सफा 86 में है—लिहाजा तीन चुल्लू पानी लेने की सुन्नत समझना गलती है—

(6) वुज़ू के पानी के लिए शरा की तरफ से कोई मिकदार मुकर्रर नहीं इसी तरह मिरकात शरह मिशकात जिल्द 1 सफा 326 में है—लिहाजा इतना ज्यादा पानी न खर्च करे कि इसराफ हो और न इस कदर कम खर्च करे कि सुन्नत अदा न हो—कुछ लोग सिर्फ एक छोटे से पानी के लोटे से वुज़ू बनाने की कोशिश करते हैं खुदाय तआला उन्हें धोने और भिगोने का फर्क समझने की तौफीक अता फरमाए आमीन—

(7) अगर इतना पानी न हो कि वुज़ू में मुंह, हाथ, और पाँव को तीन-तीन बार धोया जा सके तो दो-दो बार धोये और अगर दो-दो बार धोने के लिए काफी न हो तो एक-एक बार धोये और अगर इतना भी न हो कि मुंह और दोनों हाथ कुहनियों समेत और दोनों पाँव टखनों समेत एक बार धो सके तो अब तयम्मुम करके नमाज पढ़े—

(8) दूसरे के नाबालिग लड़के से बिला इवज पानी भरवा कर वुज़ू करना या किसी दूसरे काम में लाना जाइज नहीं (बहारे शरीअत—दुर्रे मुख्तार मए शामी जिल्द 4 सफा 531)

(9) कुछ मस्जिदों में छोटे हौज या किसी बड़े बरतन में पानी होता है वहुत से लोग जो बे वुज़ू होते हैं हाथ धोये बगैर छोटे बरतन से पानी निकालते हुए उंगली का पोर या नाखुन पानी में दाखिल

कर देते हैं इस तरह वह पानी खराब हो जाता है उस से वुज़ू करना जाइज नहीं।

(10) डोल, बालटी, घड़ा, लोटा या पाट के पानी में बे वज़ू आदमी के बे धुले हाथ का नाखुन या उंगली का पोर चला गया तो वह पानी खराब हो गया उससे वुज़ू करना जाइज नहीं—और अगर पहले हाथ धो लिया तो जो हिस्सा धुला हो उसे पानी में ड़ाल सकते हैं पानी खराब न होगा लेकिन अगर हाथ धो लेने के बाद कोई सबब वुज़ू टूटने का पाया गया जैसे हवा खारिज हुई या पेशाब किया तो अब हाथ डालने से पानी खराब हो जाएगा।

(11) इस तरह के खराब पानी को वुज़ू के काबिल बनाने का तरीका यह है कि जो पानी खराब न हो उसे खराब में इस कदर मिला दिया जाए कि खराब कम और अच्छा पानी ज्यादा हो जाए या खराब पानी के बरतन में अच्छा पानी इतना डाला जाए कि वह बरतन भर कर बहने लगे तो सब पानी वुज़ू के काबिल हो जाएगा (दुर्रे मुख़्तार)

(12) नाखुन की पालिश लगाया जिससे नाखुन पर हल्की तह जम गई तो अगर नाखुनों से पालिश साफ किए बगैर वुज़ू किया तो वुज़ू न हुआ।

(13) इस्तिनजा के बचे हुए पानी से वुज़ू करना जाइज है उसे फेंक देना नाजाइज व गुनाह है।

(14) वुज़ू के बचे हुए पानी को फेक देना हराम है और खड़े होकर पीना सवाब है।

(15) जो वुज़ू नमाजे जनाजा के लिए किया गया उस से हर नमाज पढ़ सकते हैं।

वुज़ू तोड़ने वाली चीजें

(1) हजरते अली इब्ने तलक रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि जब तुम में से किसी को हवा खारिज हो तो वह वुज़ू करे (तिरमिजी)

(2) हजरते अली करमल्लाहु तआला वज्हहू ने फरमाया कि मैंने नबीए करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम से मजी के बारे में पूछा तो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मजी निकलने से वुजू वाजिब हो जाता है यानी वुजू टूट जाता है (तिरमिजी)

(3) हजरते अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि जो शख्स लेट कर नींद से सो जाए उस पर वुजू वाजिब है इसलिए कि जब आदमी लेटता है तो उस के जोड़ ढीले पड़ जाते हैं (तिरमिजी)

कुछ जुरुरी मसले

(1) नबी का वुजू सोने से नहीं टूटता इसलिए कि उनकी आँखें सोती हैं और दिल जागता रहता है। बहारे शरीअत जिल्द 2 सफा 107 दुर्रे मुख्तार, रद्दुलमुहतार जिल्द 1 सफा 101 बहरुर्राइक जिल्द 1 सफा 39 और बुखारी शरीफ जिल्द 1 सफा 504 में है कि नबी की आँखें सोती हैं और उनके दिल जागते रहते हैं।

(2) जाहिलों में जो मशहूर है कि घुटना या शर्मगाह खुलने, अपनी या दूसरों की शर्मगाह देखने से वुजू जाता रहता है तो सही नहीं (बहारे शरीअत जिल्द 2)

(3) इन बातों से वुजू टूट जाता है—पाखाना, पेशाब, वदी, मजी, मनी, कीड़ा, पत्थरी मर्द या औरत के आगे या पीछे से निकलना—मर्द या औरत के पीछे से हवा निकलना—खून या पीप या जर्द (पीले) पानी का कहीं से निकल कर ऐसी जगह बहना जिसका वुजू या गुस्ल (नहाने) में धोना फर्ज है—खाना या पानी या सफरा (पित) की मुंह भर कै आना—इस तरह सो जाना कि बदन के जोड़ ढीले पड़ जायें, बेहोश होना, पागल हो जाना, गशी होना, किसी चीज का इतना नशा होना कि चलने में पाँव लड़खड़ायें, बालिग आदमी का रुकू और सज्दा वाली नमाज में इतनी जोर से हँसना कि आस पास वाले सुनें, दुखती आँख से आँसू बहना (और

यह आँसू नापाक है) मर्द का अपने आला को कुन्दी की हालत में औरत की शर्मगाह या किसी मर्द की शर्मगाह से मिलाना—या औरत का औरत से मिलाना जब कि कोई चीज बीच में न हो इससे भी वुजू टूट जाता है (बहारे शरीअत)

इस्तिनजा

(1) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि नबीए करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम जब संडास में जाते तो अपनी अँगूठी उतार देते—(इसलिए कि उस पर मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह लिखा था—(तिरमिजी)

हजरत शैख अब्दुल हक्क मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि अलैहि इस हदीस शरीफ की शरह में लिखते हैं कि इस हदीस से मालूम हुआ कि संडास में जाने वाले को चाहिए कि ऐसी चीज कि उसमें खुदा और रसूल का नाम या कुर्आन का कोई कलिमा हो तो उसे अपने साथ न ले जाए और कुछ शरहों में कहा गया है कि यह हुक्म नबीयों के नाम को भी शामिल है।

(अशिअतुल्लम्आत जिल्द 1 सफा 201)

(2) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम जब संडास में जाते तो यह दुआ पढ़ते 'अल्ला हुम्म इन्नी अ ऊ जु बिक मिनल खुबसि वल खबाइसि' इस का मतलब यह है कि ऐ अल्लाह मैं नापाकी और शैतानों से तेरी पनाह चाहता हूँ।

(3) हजरते अबू अय्यूब अंसारी रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि जब तुम पाखाना (या पेशाब) के लिए जाओ तो किबला की तरफ मुंह न करो और न उसकी तरफ पीठ करो (बुखारी-मुस्लिम)

हजरत शैख अब्दुलहक्क मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि इस्तिनजा के बयान में लिखते हैं कि हजरत इमामे आजम अबू हनीफा रजियल्लाहु तआला अनहु का मजहब यह है कि पेशाब

व पाखाना करने में किबला की तरफ मुँह या पीठ करना हराम है चाहे जंगल में हो या घरों में

(अशिअतुल्लम्आत जिल्द 1 सफा 198)

(4) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम जब बड़े इस्तिनजा का इरादा फरमाते तो जब तक बैठते हुए जमीन के करीब न पहुँच जाते कपड़ा न उठाते (तिरमिजी)

(5) हजरते अब्दुल्लाह इब्ने सरजिस रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि तुम में से कोई शख्स किसी बिल में हरगिज पेशाव न करे।

(अबू दा ऊद)

(6) हजरते उमर रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि नबीए करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने मुझे इस हाल में देखा कि मैं खड़े होकर पेशाब कर रहा था तो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ऐ उमर! खड़े होकर पेशाब न करो उसके वाद मैंने खड़े होकर कभी पेशाब न किया (तिरमिजी)

कुछ जरुरी मसले

(1) तहारत के बचे हुए पानी में वुजू कर सकते हैं—उसे फेंक देना इसराफ है (वहारे शरीअत)

(2) तहबंद और लुंगी पहन ने वाले पेशाब करने के लिए लोगों के सामने रान और घुटना खोल कर बैठ जाते हैं यह ना जाइज व हराम है इसलिए कि लोगों के सामने रान और घुटने का छिपाना फर्ज है (बहारे शरीअत)

रद्दुलमुहतार जिल्द 1 सफा 282 और बहारेशरीअत जिल्द 3 सफा 250 में है कि कुछ बेबाक (निडर) ऐसे हैं कि लोगों के सामने घुटने बलिक रान तक खोले रहते हैं यह भी हराम है और उसकी आदत है तो फासिक है।

नहाने का बयान

(1) हज़रते आइशा रजियल्लाहु तआला अनहा ने फरमाया कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम से मर्द के बारे में पूछा गया कि जो गीलापन पाये और ख्वाब में नापाक होना याद न हो— फरमाया गुस्ल करे और उस शख्स के बारे में पूछा गया जिसे ख्वाब का यकीन है और गीलापन नहीं पाता फरमाया उस पर गुस्ल नहीं— हज़रते उम्मे सुलैम रजियल्लाहु तआला अनहा ने अर्ज किया क्या औरत उस को देखे तो उस पर गुस्ल है ? फरमाया हाँ औरतें मरदों की मिस्ल हैं (तिरमिजी)

(2) हज़रते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जब तुम में कोई औरत के हाथों और पावों के दरमियान बैठे फिर कोशिश यानी हम बिस्तरी करे तो गुस्ल वाजिब हो गया अगरचे मनी न निकले

(बुखारी)

(3) हज़रते आइशा रजियल्लाहु तआला अनहा ने फरमाया कि नबीए करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम पर जब गुस्ल फर्ज होता फिर आप कुछ खाने या सोने का इरादा फरमाते तो वुजू कर लेते जिस तरह की नमाज के लिए वुजू किया जाता है

(बुखारी—मुस्लिम)

(4) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि हर बाल के नीचे जनाबत का असर है इसलिए हर बाल धोओ और बदन को साफ सुथरा करो (तिरमिजी)

हजरते मुल्ला अली कारी रहमतुल्लाहि अलैहि इस हदीस के नीचे लिखते हैं कि अगर एक बाल भी पानी पहुँचने से रह गया तो उसकी नापाकी बाकी रहेगी (मिरकात जिल्द 1 सफा 327)

(5) हजरते आइशा रजियल्लाहु तआला अनहा ने फरमाया कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम जब नापाकी का गुस्ल फरमाते तो शुरू यु करते कि पहले हाथ धोते फिर नमाज के जैसा

वुज़ू करते फिर उंगलियाँ पानी में डाल कर उन से बालों की जड़ें गीली करते फिर सर पर दोनों हाथ से तीन चुल्लू पानी डालते फिर तमाम बदन पर पानी नहाते और इमामे मुस्लिम की रिवायत में है कि हुज़ूर (जब गुस्ल) शुरू फरमाते तो हाथों को बरतन में डालने से पहले धो लेते फिर दाहिने हाथ से बायें हाथ पर पानी डालते इसके बाद अपनी शरमगाह धोते फिर वुज़ू फरमाते

(बुखारी मुस्लिम)

कुछ ज़ुरुरी मसले

(1) नहाने का तरीका यह है कि पहले दोनों हाथ गट्टों तक तीन मरतबा धोए फिर इस्तिनजा की जगह धोए उस के बाद बदन पर अगर कहीं नजासत यानी पेशाब या पाखाना या मनी वगैरा हो तो उसे दूर करे फिर नमाज जैसा वुज़ू करे मगर पाँव न धोए हाँ अगर चौकी या पत्थर वगैरा ऊँची चीज पर नहाता हो तो पाँव भी धो ले—उस के बाद बदन पर तेल की तरह पानी चुपड़े फिर तीन मरतबा दाहिने कंधे पर पानी बहाए और फिर तीन मरतबा बायें कंधे पर फिर सर पर और पूरे बदन पर तीन बार पानी बहाए सारे बदन पर हाथ फेरे और मले फिर गुस्ल करने की जगह से अलग हट जाए अगर वुज़ू करने में पाँव नहीं धोया था तो अब धो ले और फौरन कपड़ा पहन ले

(2) परदे की जगह में नंगे बदन नहाना जाइज है हाँ औरतों को ज्यादा इहतियात की जुरुरत है (बहारे शरीअत)

(3) लोगों के सामने रान और घुटना खोल कर नहाना या इतना बारीक कपड़ा पहन कर नहाना कि बदन झलके नाजाइज व हराम है (आमए कुतुब)

(4) मनी का अपनी जगह से शहवत के साथ अलग होकर निकलना इहतिलाम होना 'हश्फा का दाखिल होना, हैज से पाक होना, नफास का खत्म होना इन तमाम सूरतों में गुस्ल करना फर्ज है और जुमा, ईद, बकरईद, अरफा के दिन और इहराम बाँधते वक्त नहाना सुन्नत है (बहारे शरीअत)

अजान और इकामत

(1) हजरते मुआविया रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि मैंने रसूल अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम को फरमाते हुए सुना है कि मुअज्जिनों की गरदनें कियामत के दिन सब से ज्यादा लम्बी होंगी (मुस्लिम)

हजरत शैख अब्दुलहक्क मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि लिखते हैं कि इस हदीस शरीफ का मतलब यह है कि कियामत के दिन मुअज्जिनों को बहुत बड़ाई और ऊँचा दरजा मिलेगा (अशिअतुल्लम्आत जिल्द 1 सफा 312)

(2) हजरते अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जो शख्स सिर्फ सवाब की गरज से सात वर्ष अजान कहे उसके लिए जहन्नम से छुटकारा लिखा जाता है (तिरमिजी)

(3) हजरते जाबिर रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने हजरते बिलाल रजियल्लाहु तआला अनहु से फरमाया कि जब अजान कहो तो ठहर-ठहर कर कहो और जब तकबीर कहो तो जल्दी-जल्दी कहो और अजान व तकबीर के दरमियान इतना फासिला रखो कि अलग हो जाए खाने वाला अपने खाने से और पीने वाला अपने पीने से और पाखाना पेशाब करने वाला अपनी हाजत से और जब तक कि मुझे देख न लो नमाज के लिए खड़े न हो (तिरमिजी)

(4) हजरते अलकमा रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि मैं हजरते मुआविया रजियल्लाहु तआला अनहु के पास बैठा था कि उन के मुअज्जिन ने अजान पढ़ी हजरते मुआविया रजियल्लाहु तआला अनहु ने भी वही अल्फाज कहे जो मुअज्जिन ने कहे यहाँ तक कि जब मुअज्जिन ने हय्य अलस्सलाह कहा तो हजरते मुआविया ने---ला हौल वला कूवत इल्लाबिल्लाहिल अलीयिल अजीम कहा और उस के बाद हजरते मुआविया ने वही कहा जो मुअज्जिन ने कहा फिर हजरते मुआविया रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया

कि मैंने हुजूर अलैहिस्सलातु वस्लाम से सुना कि आप इसी तरह फरमाते थे (अहमद मिशकात)

कुछ जुरुरी मसले

(1) अजान के लिए जो जगह बनाई गई हो उस पर या मस्जिद के बाहर अजान पढ़ी जाए—मस्जिद के अन्दर अजान पढ़ना मकरूह व मना है चाहे अजान पंच वक्ती नमाज के लिए हो या खुत्बए जुमआ के लिए—दोनों का हुक्म एक है

(आलमगीरी-फतहुल कदीर-बहरुर्राइक-तहतावी-वगैरा)

(2) ना समझ बच्चे, जिस पर गुस्ल फर्ज हो और फासिक अगरचे आलिम ही हो उन की अजान मकरूह है लिहाजा उन सब की अजान दोबारा पढ़ी जाए (दुर्रेमुख्तार बहारे शरीअत)

(3) अजान में हुजूर पुरनूर शाफिए यौमुन्नशूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का नामे मुबारक सुन कर अँगूठे चूमना और आँखों से लगाना मुस्तहब है। तहतावी सफा 122 और रद्दुलमुहतार जिल्द 1 सफा 279 में है। मुस्तहब है कि जब अजान में पहली बार अशहदु अन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह सुने तो सल्लल्लाहु अलयक या रसूलल्लाह कहे और जब दूसरी बार सुने तो कुर्रतु ऐनी बिक या रसूलल्लाह और फिर कहे अल्ला हुम्म मत्तेअनी बिस्सम्अि बलबसरि और यह कहना अँगूठों के नाखून आँखों पर रखने के बाद हो। नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अपनी रिकावे अकदस में उसे जन्नत ले जायेंगे ऐसा ही कनजुलइबाद में है। यह मजमून जामिउर्रमूज अल्लामा कहसतानी का है और इसी के मिस्ल फतावा सूफिया में है।

(4) अजान और तकबीर के दरमियान सलात पढ़ना यानी बुलन्द आवाज से अस्सलातु बस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह कहना जाइज व मुस्तहब है। इस सलात का नाम शरा की बोली में तस्वीब है और तस्वीब को बड़े-बड़े आलिमों ने नमाज़े मगरिब के इलावा बाकी नमाजों के लिए मुस्तहसन करार दिया है जैसा कि फतावा आलम गीरी जिल्द 1 सफा 53 मराकीलफलाह शरह

नुरुल इजाह और मिरकात शरह मिशकात जिल्द 1 सफा 418 में है और दुर्रे मुख्तार मए रद्दुलमुहतार जिल्द 1 सफा 273 में अजान के बाद खास सलात व सलाम पढ़ने के बारे में लिखते हैं कि अजान के बाद अस्सलातु वस्सलामु अलयक या रसूलल्लाह पढ़ना माहे रबीउल आखर सन् 781 हिजरी में जारी हुआ और यह बेहतरीन बिदअत है।

(5) तकबीर के वक्त कोई शख्स आया तो उसे खड़े होकर इन्तिजार करना मकरूह है बल्कि बैठ जाए और तकबीर कहने वाला जब हय्य अलस्सलाह हय्य अलल्फलाह पर पहुंचे तो उस वक्त खड़ा हो इसी तरह फतावा आलमगीरी जिल्द 1 सफा 53 और रद्दुलमुहतार जिल्द 1 सफा 380 में है।

(6) जो लोग तकबीर के वक्त मस्जिद में मौजूद हैं बैठे रहें जब तकबीर कहने वाला हय्य अलस्सलाह हय्य अलल्फलाह पर पहुंचे तो उठें और यही हुक्म इमाम के लिए भी है फतावा आलम-गीरी जिल्द 1 सफा 53 में है। हजरते इमाम आजम, इमामे यूसुफ और इमामे मुहम्मद रहमतुल्लाहि तआला अलैहिम का मजहब यह है कि इमाम और मुकतदी उस वक्त खड़े हों जब कि तकबीर कहने वाला हय्य अलल्फलाह कहे और यही सहीह है। और शरह विकाय जिल्द 1 सफा 136 में है कि इमाम और मुकतदी हय्य अलस्सलाह कहने के वक्त खड़े हों इसी तरह मिरकात शरह मिशकात जिल्द 1 सफा 419 में भी है। ओर शैख अब्दुलहक्क मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि लिखते हैं कि बड़े-बड़े आलिमों ने फरमाया कि मजहब यह है हय्य अलस्सलाह के वक्त उठना चाहिए—

नमाज का बयान

(1) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि बताओ अगर तुम लोगों में किसी के दरवाजे पर नदी हो और वह उस में रोजाना पांच मरतबा नहाता हो तो क्या उस के बदन पर

कुछ मैल बाकी रह जाएगा ? सहाबा ने जवाब दिया कि ऐसी हालत में उसके बदन पर कुछ भी मैल बाकी न रहेगा। हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया बस यही हालत है पाँचों नमाजों की अल्लाह तआला उन के सब गुनाहों को मिटा देता है। (बुखारी मुस्लिम)

(2) हजरते अबू जर रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि एक दिन ठंडी के जमाना में जब कि पेड़ों के पत्ते गिर रहे थे। (पत झड़ का मौसिम था) हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम आबादी के बाहर गये तो आप ने एक पेड़ की दो डालियाँ पकड़ीं (और उन्हें हिलाया) तो उन डालियों से पत्ते गिरने लगे। आप ने फरमाया ऐ अबू जर ! हजरते अबूजर रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा हाजिर हूं या रसूलल्लाह—आपने फरमाया जब मुसलमान बंदा सिर्फ अल्लाह तआला के लिए नमाज पढ़ता है तो उसके गुनाह इस तरह झड़ जाते हैं जैसे कि यह पत्ते पेड़ से झड़ रहे हैं। (अहमद)

(3) हजरते सलमान रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि मैं ने रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम को यह फरमाते हुए सुना कि जो शख्स फज्र की नमाज को गया वह ईमान का झंडा ले कर गया। और जो सुब्ह सवेरे बाजार की तरफ गया तो वह शैतान का झंडा लेकर गया। (इब्ने माजा)

(4) हजरते अब्दुल्लाह इब्ने अम्र इब्ने आस रजियल्लाहु तआला अनहुमा से रिवायत है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने एक रोज नमाज का चरचा किया तो फरमाया कि जो शख्स नमाज की पाबंदी करेगा तो नमाज उस के लिए नूर का सबब होगी ईमान के कामिल होने की दलील होगी और कियामत के दिन बखशिश का जरीआ बनेगी और जो नमाज की पाबंदी नहीं करेगा उस के लिए न तो नूर का सबब होगी न ईमान के कामिल होने की दलील होगी और न बखशिश का जरिआ। और वह कियामत के दिन—कारून, फिरऔन, हामान और उवय इब्ने खलफ के साथ होगा। (मिशकात)

(5) हजरते अली करमल्लाहु तआला वजहहू ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने मुझ से फरमाया कि ऐ अली! तीन कामों में देर न करना—एक तो नमाज अदा करने में जब वक्त हो जाए, दूसरे जनाजा में जब कि वह तैयार हो जाए, तीसरे बेवा के निकाह में जब कि उस का मुनासिब रिश्ता मिल जाए।

(तिरमिजी)

(6) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलान ने फरमाया कि यह मुनाफिक की नमाज है कि बैठे हुए सूरज को अगोरता है यहाँ तक कि जब सूर्य पीला पड़ जाता है और शैतान की दोनों सींगों के वीच में आ जाता है तो खड़ा होकर चार चोंच मार लेता है—नहीं जिक्र करता उस (तंग वक्त) में अल्लाह तआला का मगर बहुत थोड़ा। (मुस्लिम)

(7) हजरते अम्र इब्ने शुऐब रजियल्लाहु तआला अनहुमा अपने दादा से रिवायत करते हैं उन्होंने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जब तुम्हारे बच्चे सात साल के हो जायें तो उन को नमाज पढ़ने का हुक्म दो और जब दस साल के हो जायें तो उन को मार कर नमाज पढ़ाओ और उन के सोने की जगहें अलग करो। (अबू दाऊद)

कुछ जुरुरी मसले

(1) आहिस्ता कुर्आन पढ़ने में इतना जुरुरी है कि खुद सुने अगर इस कदर आहिस्ता पढ़ा कि खुद न सुना तो नमाज न हुई। (बहारे शरीअत जिल्द 3 सफा 266) इसी तरह फतावा आलमगीरी जिल्द 1 सफा 65 में भी है।

(2) सज्दा में पाँव की एक उंगली का पेट जमीन से लगना शर्त है और हर पाँव की तीन-तीन उंगलियों का पेट लगना वाजिब, तो अगर किसी ने इस तरह सज्दा किया कि दोनों पाँव जमीन से उठे रहे तो नमाज न हुई। (बहारे शरीअत जिल्द 3 सफा 279 फतावा रजवीया जिल्द 1 सफा 556)

(3) बहुत सी औरतें अपनी बेवकूफी से फर्ज वाजिब सब नमाजें बगैर किसी वजह के बैठ कर पढ़ती हैं उन की नमाज नहीं होती इस लिए कि मरदों की तरह औरतों पर भी खड़े होकर नमाज पढ़ना फर्ज है। अगर किसी बीमारी या बुढ़ापे की वजह से कमजोर हो गई हैं लेकिन खिदमत करने वाली या लाठी या दीवार पर टेक लगा कर खड़ी हो सकती हैं तो फर्ज है कि खड़ी हो कर पढ़ें। यहाँ तक कि अगर कुछ देर ही के लिए खड़ी हो सकती हैं। इतना ही कि खड़ी हो कर अल्लाहु अकबर कह लें तो फर्ज है कि खड़ी होकर इतना कहलें फिर बैठ जायें। (बहारे शरीअत जिल्द 3 सफा 366 फतावा रजवीया जिल्द 3 सफा 52) आज कल आम तौर पर मर्द भी जरा सी तकलीफ में बैठ कर नमाज पढ़ना शुरु कर देते हैं हालाँ कि देर तक खड़े होकर इधर-उधर की बातें कर लिया करते हैं उन की नमाज नहीं होती इस लिए कि खड़े होने के बारे में औरत मर्द का हुक्म एक है।

(4) औरत ने इतना बारीक दो पट्टा ओढ़ कर नमाज पढ़ी कि जिस से बाल का काला पन चमकता है तो नमाज न होगी जब तक कि उस पर कोई ऐसी चीज न ओढ़े कि जिस से बाल का रंग छुप जाये। (बहारे शरीअत जिल्द 3 सफा 251 फताबा आलम गीरी जिल्द 1 सफा 54)

तरावीह का बयान

(1) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्ली ने फरमाया कि जो शख्स सच्चे दिल से और सहीह अकीदा के साथ रमजान में कयाम करे यानी तरावीह पढ़े तो उस के अगले गुनाह बख्श दिए जाते हैं।

(मुस्लिम)

(2) हजरते साइब इब्ने यजीद रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि हम सहाबए किराम हजरते उमर फारुके आजम रजियल्लाहु तआला अनहु के जमाना में बीस रकअत (तरावीह)

और वित्र पढ़ते थे (बैहकी) इस हदीस के बारे में मिरकात शरह मिशकात जिल्द 2 सफा 175 में है कि इमाम नौवी ने खुलासा में फरमाया कि इस रिवायत की इसनाद सहीह है।

(3) हजरते अजीज इब्ने रुमान रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि हजरते उमर रजियल्लाहु तआला अनहु के जमाने में लोग तेइस (23) रकअत पढ़ते थे (यानी बीस रकअत तरावीह और तीन रकअत वित्र) (इमामे मालिक)

बीस रकअत पर सहाबा का इत्तिफाक है

मलिकुल उलमा हजरत अल्लामा अलाउद्दीन अबूबकर इब्ने मसऊद कासानी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि लिखते हैं कि हजरते उमर फारुके आजम रजियल्लाहु तआला अनहु ने रमजान के महीना में सहाबा को हजरत उबय इब्ने कअब रजियल्लाहु तआला अनहु पर जमा फरमायआ या तो वह रोजाना सहाबा को बीस (20) रकअत पढ़ाते थे. और उन में से किसी ने मुखालफत नहीं की तो बीस (20) रकअत पर सहाबा का इत्तिफाक हो गया (बदाइ उस्सनाए जिल्द 1 सफा 288) और उम्दतुलकारी शरह बुखारी जिल्द 5 सफा 355 में है। अल्लामा इब्ने अब्दुलबर ने फरमाया कि (बीस रकअत तरावीह) जुमहूर आलिमों का कौल है कूफा के आलिम इमाम शाफिई और ज्यादातर बड़े-बड़े आलिम यही फरमाते हैं और यही सहीह है उबय इब्ने कअब से मनकूल है इस में सहाबा का इख्तिलाफ नहीं और अल्लामा इब्ने हजर ने फरमाया कि सहाबा का इस बात पर इत्तिफाक है कि तरावीह बीस (20) रकअत है। और मराकी ल्फलाह शरह नूरलइजाह में है कि तरावीह बीस (20) रकअत है इस लिए कि उस पर सहावा का इत्तिफाक है और मौलाना अब्दुलहई साहब फरंगी महली उम्दतुर्रि-आया हाशिया शरह विकाया जिल्द 1 सफा 175 में लिखते हैं कि हजरते उमर, हजरते उस्मान और हजरते अली रजियल्लाहु

तआला अनहुम के जमाने में और उनके बाद भी सहाबा का बीस (20) रकअत तरावीह पर इहतिमाम साबित है। इस मजमून की हदीस को इमामे मालिक, इब्ने सअद, और इमामे बेहकी वगैरहुम ने तखरीज की है और मुल्ला अली कारी रहम तुल्लाहि तआला अलैहि लिखते हैं कि सहाबा का इस बात पर इत्तिफाक है कि तरावीह बीस रकअत है। (मिरकात जिल्द 2 सफा 175)

बीस रकअत जुमहूर का कौल है और इसी पर अमल है

इमामे तिरमिजी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फरमाते हैं कि बहुत से आलिमों का इसी पर अमल है जो हजरत मौला अली हजरत फारुके आजम और दूसरे सहाबा रजियल्लाहु तआला अनहुम से बीस रकअत तरावीह मनकूल हैं—और सुफयान सौरी, इब्ने मुबारक और इमामे शाफिई रहमतुल्लाहि तआला अलैहिम भी यही फरमाते हैं (कि तरावीह बीस रकअत है) और इमामे शाफिई रहमतुल्लाहि अलैहि ने फरमाया कि हम ने अपने शहर मक्का शरीफ में लोगों को बीस रकअत तरावीह पढ़ते हुए पाया है (तिरमिजी सफा 99) और मुल्ला अलीकारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि शरह नुकाया में लिखते हैं कि बीस रकअत तरावीह पर मुसलमानों का इत्तिफाक है इसलिए कि इमाम बैहकी ने सहीह इसनाद से रिवा-यत की है कि हजरत उमर फारुके आजम, हजरत उस्तान गनी और हजरत मौला अली रजियल्लाहु तआला अनहुम के जमानों में सहाबा और ताबिईन बीस रकअत तरावीह पढ़ा करते थे। और तहतावी अला मराकिलफलाह सफा 224 में है कि हजरत अबू बकर सिद्दीक रजियल्लाहु तआला अनहु के इलावा खुल फाए राशिदीन रिजवानु-ल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन की हमेशगी से बीस रकअत तरा-वीह साबित है। और अल्लामा इब्ने आबिदीन शामी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि लिखते हैं कि तरावीह बीस रकअत है यही जुमहूर

उलमा का कौल है और पूर्व व पच्छिम सारी दुनिया के मुसलमानों का इसी पर अमल है (शामी जिल्द 1 मिसरी सफा 195) और शैख जैनुद्दीन इब्ने नुजैम रहमतुल्लाहि तआला अलैहि लिखते हैं कि बीस रकअत तरावीह जुमुहूर आलिमों का कौल है इसलिए कि मुअत्ता इमाम मालिक हजरत यजीद इब्ने रुमान रजियल्लाह तआला अनहु से रिवायत है। उन्हों ने फरमाया कि हजरते उमर फारुके आजम रजियल्लाहु तआला अनहु के जमाने में सहाबा तेईस रकअत पढ़ते थे (यानी बीस रकअत तरावीह और तीन रकअत वित्र) और इसी पर सारी दुनिया के मुसलमानों का अमल है (बहरुर्राइक जिल्द 2 सफा 66) और इनाया शरह हिदाया में है कि हजरते उमर रजियल्लाहु तआला अनहु के शुरु जमानए खिलाफत तक सहाबा तरावीह अलग-अलग पढ़ते थे उसके बाद हजरत उमर रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि मैं एक इमाम पर सहाबा किराम को जमा करना बेहतर समझता हूँ फिर उन्हों ने हजरत उबय इब्ने कअब रजियल्लाहु तआला अनहु पर सहाबा को जमा फरमाया—हजरते उबय ने लोगों को पाँच तरवीहा बीस रकअत पढ़ाई—और किफाया में है कि तरावीह कुल बीस रकअत है—और यह हमारा मसलक है और यही मसलक इमामे शाफिई रहम-तुल्लाहि तआला अलैहि का भी है। और बदाइउस्सनाए जिल्द 1 सफा 288 में है कि तरावीह की तादाद बीस रकअत है—पाँच तरवीहा दस सलाम के साथ, हर दो सलाम एक तरवीहा है और यही आम आलिमों का कौल है—और इमामे गजाली रहमतुल्लाहि अलैहि लिखते हैं कि तरावीह बीस रकअत है (इहयाउलउलूम जिल्द 1 सफा 201) और शरह विकाया जिल्द 1 सफा 175 में है कि तरावीह बीस-बीस रकअत मसनून है। और फतावा आलमगीरी जिल्द 1 सफा 108 में है कि तरावीह पाँच तरवीहा है, हर तरवीहा चार रकअत का दो सलाम के साथ, ऐसा ही सिराजिया में है। और हजरत शाह वलीउल्लाह साहब मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि लिखते हैं कि तरावीह की तादाद बीस रकअत है—

(हुज्जतुल्लाहिल्बालिगा जिल्द 2 सफा 18)

बीस रक अत तरावीह की हिकमत

बीस रकअत तरावीह की हिकमत यह है कि रात और दिन में कुल बीस रकअत फर्ज व वाजिब हैं, सत्तरह रकअत फर्ज और तीन रकअत वित्र और रमजान में बीस रकअत तरावीह मुकर्रर की गईं ताकि फर्ज व वाजिब के दरजे और बढ़ जायें और वह अच्छी तरह मुकम्मल हो जायें जैसा कि बहरुर्राइक जिल्द 2 सफा 67 पर हैं—अल्लामा हलबी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने फरमाया कि तरावीह के बीस रकअत होने में हिकमत यह है कि वाजिब और फर्ज जो दिन रात में कुल बीस (20) रकअत हैं उन्हीं को मुकम्मल करने के लिए सुन्नतें हैं तो तरावीह भी बीस (20) रकअत हुई ताकि मुकम्मल करने वाली तरावीह और जिन को मुकम्मल करना है यानी फर्ज व वाजिब दोनों बराबर हो जायें—और मराकी ल्फ-लाह के कौल व हि य इशरुन रक अतन की शरह में अल्लामा तह-तावी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि लिखते हैं कि बीस रकअत तरा-वीह मुकर्रर करने में हिकमत यह है कि मुकम्मल करने वाली सुन्नतों की रकआत और जो मुकम्मल होते हैं यानी फर्ज व वाजिब की रकअतों की तादाद बराबर हो जायें। और दुर्रे मुख्तार मए शामी जिल्द 1 सफा 495 में है कि तरावीह बीस रकअत है और बीस रकतअ तरावीह में हिकमत यह है कि मुकम्मिल मुकम्मल के बराबर हो—और दुर्रेमुख्तार की इसी इबारत के नीचे शामी में नहर से मनकूल है—वाजेह हो कि फर्ज अगरचे पहले से भी मुकम्मल हैं लेकिन रमजान के महीना में उस के कमाल की ज्यादती के सबब यह मुकम्मल करने वाली यानी बीस रकअत तरावीह बढ़ा दी गई तो वह खूब कामिल हो गये—

इमाम के पीछे कुर्आन पढ़ने का बयान

(1) हजरत अता इब्ने यसार रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि उन्हों ने हजरत जैद इब्ने साबित रजियल्लाहु तआला अनहु से इमाम के पीछे कुर्आन पढ़ने के बारे में पूछा तो उन्हों ने

फरमाया कि इमाम के पीछे किसी भी नमाज में कुर्आन पढ़ना जाइज नहीं चाहे इमाम आहिस्ता कुर्आन पढ़ता हो या ऊँची आवाज से—(मुस्लिम जिल्द 1 सफा 215)

(2) हजरत अबू मूसा अशअरी रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि जब तुम नमाज पढ़ो तो अपनी सफें सीधी करो फिर तुम में कोई इमामत करे तो जब वह तकबीर कहे तुम भी तकबीर कहो और जब वह कुर्आन पढ़े तुम चुप रहो—(मुस्लिम)

(3) हजरत जाबिर इब्ने अब्दुल्लाह रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जो शख्स इमाम के पीछे नमाज पढ़े तो इमाम का कुर्आन पढ़ना मुकतदी ही का कुर्आन पढ़ना है—(मुअत्ताइमामे मुहम्मद) हजरत मुहम्मद इब्ने मनीअ और इमाम इब्नुल हुमाम ने फरमाया कि यह इसनाद मुस्लिम और बुखारी की शर्त पर सहीह है—

(4) हजरत इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने फरमाया कि जो शख्स इमाम के पीछे नमाज पढ़े तो इमाम का कुर्आन पढ़ना उस के लिए काफी है। मुअत्ता इमामे मुहम्मद सफा 97)

(5) हजरते अबू हुरैरा रजिलल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि इमाम सिर्फ इस लिए मुकर्रर किया गया है कि उस की पैरवी की जाए तो जब वह कुर्आन पढ़े तो तुम चुप रहो, (तहतावी सफा 106)

मुस्लिम शरीफ जिल्द 1 सफा 175 में है कि अबू बकर ने सुलैमान से पूछा कि अबू हुरैरा की हदीस कैसी है तो उन्हों ने फरमाया कि सहीह है यानी यह हदीस कि जब इमाम कुर्आन पढ़े तो तुम चुप रहो—

कुछ जुरुरी मसले

हिदाया के लेखक ने इमाम के पीछे कुर्आन न पढ़ने पर सहाबा का इत्तिफाक नक्ल किया है जैसा कि हिदाया जिल्द 1 सफा 82 में

है कि मुकतदी इमाम के पीछे कुर्आन न पढ़े और इसी पर सहाबा का इत्तिफाक है और इनाया में है कि हिदाया के कौल "सहाबा का इत्तिफाक है" का मतलब यह है कि ज्यादा सहाबा का इत्तिफाक है इसलिए कि इमाम के पीछे कुर्आन पढ़ने से मुकतदी का रोका जाना बड़े-बड़े अस्सी (80) सहाबा से मरवी है—और इमामे शअबी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने फरमाया कि मैं ने जंगे बद्र में शरीक होने वाले सत्तर (70) सहाबा से मुलाकात की वह सब के सब इमाम के पीछे कुर्आन पढ़ने से मुकतदी को रोकते थे। और कुछ लोगों ने कहा कि इत्तिफाके सहाबा का मतलब मुजतहिदीने सहाबा और बड़े-बड़े सहाबा का इत्तिफाक है और बेशक हजरत अब्दुल्लाह बयान करते हैं कि मेरे बाप हजरत जैद इब्ने असलम रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि नबीए करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम के सहाबा में से दस सहाबी यानी हजरते अबू बकर, हजरते उमर इब्ने खत्ताब, हजरते उसमान इब्ने अफ्फान, हजरते अली इब्ने अबू-तालिब, हजरते अब्दुर्रहमान इब्ने औफ, हजरते सअद इब्ने वकास, हजरते अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद, हजरते जैद इब्ने साबित, हजरते अब्दुल्लाह इब्ने उमर और हजरते अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रजि-यल्लाहु तआला अनहुम अजमईन यह सब के सब इमाम के पीछे कुर्आन पढ़ने से सख्ती के साथ रोकते थे—और किफाया—में है कि बड़े-बड़े अस्सी सहाबा के बारे में रिवायत आई है कि वह मुकतदी को कुर्आन पढ़ने से रोकते थे—उन में हजरते अलीए मुरतजा, हजरते अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास, हजरते अब्दुल्लाह इब्ने उमर और हजरते अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद भी हैं—और दुर्रे मुख्तार में है कि मुकतदी सूर ए—फातिहा या किसी दूसरी सूरत को नहीं पढ़े गा—अगर उसने पढ़ा तो मकरूह तहरीमी है—

आमीन आहिस्ता कहने का बयान

(1) हजरते अबू हुरैरा रजिल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि जब इमाम आमीन कहे तो तुम भी आमीन कहो, इसलिए कि जिस की आमीन

मलाइका की आमीन के मुवाफिक होगी तो उस के पिछले गुनाह मुआफ कर दिए जायेंगे (बुखारी-मुस्लिम) और एक रिवायत में यह अल्फाज हैं कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब इमाम सूर ए फातिहा को पूरी करे तो तुम आमीन कहो इसलिए कि जिस का आमीन कहना फरिश्तों की आमीन कहने के मुताबिक होगा तो उसके पहले के गुनाह बख्श दिए जायेंगे, यह अल्फाज बुखारी के हैं और मुस्लिम में भी इसी के मिस्ल है (मिश्कात सफा 79)

इस हदीस शरीफ से दो बातें खुल्लम खुल्ला मालूम हुईं—पहली बात यह कि मुकतदी इमाम के पीछे सूर ए फातिहा न पढ़े इसलिए कि अगर मुकतदी कों सूरए-फातिहा पढ़ने का हुक्म होता तो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम युँ फरमाते कि जब तुम सूरए फातिहा पूरी करो तो आमीन कहो—मालूम हुआ कि मुकतदी सिर्फ आमीन कहेगा और सूरए-फातिहा पढ़ना इमाम का काम है।

दूसरी बात यह मालूम हुई कि आमीन आहिस्ता कहना चाहिए कि फरिश्ते भी आहिस्ता आमीन कहते हैं इसी लिए हम लोग उन के आमीन कहने की आवाज नहीं सुनते हैं लिहाजा ऊँची आवाज से आमीन कहना फरिश्तों के आमीन कहने की मुखालफत करना है—

कनजुद्दकाइक और बहरुर्राइक जिल्द 1 सफा 313 में है कि इमाम और मुकतदी दोनों आहिस्ता आमीन कहें—और दुर्रे मुख्तार में है कि इमाम आहिस्ता आमीन कहे—जैसे कि मुकतदी और अकेले नमाज पढ़ने वाले आहिस्ता आमीन कहते हैं—

रफए यदैन

(1) हजरते अलकमा ने कहा कि हजरत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि मैं तुम्हारे सामने हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की नमाज न पढ़ूँ पस आप ने नमाज पढ़ी और सिर्फ शुरु नमाज में अपने हाथों को उठाया—इमाम तिरमिजी ने फरमाया कि इब्ने मसऊद रजियल्लाहु तआला अनहु की हदीस हसन है और बहुत से सहाबी, आलिम और ताबिईन

आलिम यही फरमाते हैं (कि शुरु नमाज के इलावा रफए यदैन न किया जाए (तिरमिजी जिल्द 1 सफा 35)

(2) हजरत बराअ इब्ने आजिब रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि नबीए करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम जब नमाज शुरु करने के लिए तकबीर कहते तो अपने मुबारक हाथ को उठाते यहाँ तक कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के अँगूठे कानों की लौ के करीब हो जाते फिर हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम आखिर नमाज तक रफ ए यदैन न फरमाते

(तहतावी सफा 110)

(3) हजरते असवद रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि मैं ने फारुके आजम हजरते उमर रजियल्लाहु तआला अनहु को देखा कि पहली तकबीर में हाथ उठाते थे फिर आखिर नमाज तक ऐसा नहीं करते थे—(तहतावी सफा 111)

(4) हजरते मुजाहिद रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि मैं ने हजरते इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अनहुमा के पीछे नमाज पढ़ी तो वह सिर्फ पहली तकबीर में हाथ उठाते थे।

(तहतावी सफा 110)

इन हदीसों से खुल्लम खुल्ला मालूम हुआ कि हुजूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम, हजरते फारुके आजम, हजरते अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद, हजरते इब्ने उमर और सहाबा व ताबिईन के दूसरे बड़े-बड़े आलिम सिर्फ तकबीरे—तहरीमा के लिए हाथ उठाते थे फिर आखिर नमाज तक ऐसा नहीं करते थे—और कुछ रिवायतों से जो रुकू के पहले और बाद में हाथ का उठाना साबित है तो वह हुक्म पहले था बाद में मनसूख हो गया जैसा कि ऐनी शारेहे बुखारी ने रिवायत की है हजरते अब्दुल्लाह इब्ने जुबैर रजियल्लाहु तआला अनहु ने एक शख्स को रुकू में जाते हुए और रुकू से उठते वक्त हाथ उठाते हुए देखा तो आप ने उस से फरमाया कि ऐसा न करो इस लिए कि यह ऐसी चीज है कि जिस को हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने पहले किया था फिर बाद में छोड़ दिया।—

दुरुद शरीफ का बयान

(1) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि जो शख्स मुझ पर एक बार दुरुद भेजेगा खुदाए तआला उस पर दस मरतबा रहमत उतारेगा और उस के दस गुनाहों को मुआफ फरमाए गा और दस दरजे बुलन्द फरमाएगा (मिशकात) सल्लल्लाहु अलन्न बीयिलउम्मीयि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सलातों व सला मन अलैक या रसूलल्लाह--

(2) हुजरते इब्ने मसऊद रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि कियामत के दिन लोगों में सब से ज्यादा मेरे करीब वह शख्स होगा जिसने सब से ज्यादा मुझ पर दुरुद भेजा है (तिरमिजी) अल्ला हुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्म दिव व अला आलि सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिव व बारिक व सल्लिम—

(3) हजरते उबय इब्ने कअब रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि मैं ने पूछा या रसूलल्लाह मैं आप पर ज्यादा दुरुद पढ़ना चाहता हूँ अब उस के लिए अपने वजीफों के वक्तों में से कितना वक्त मुकर्रर करुँ ? फरमाया जितना तुम चाहो कहा चौथाई ? फरमाया जितना तुम चाहो और अगर ज्यादा कर लो तो तुम्हारे लिए और बेहतर है—मैं ने कहा आधा ? फरमाया जितना तुम चाहो और अगर उस से भी ज्यादा कर लो तो तुम्हारे लिए बेहतर है—मैं ने कहा दो तिहाई ? फरमाया जितना तुम चाहो अगर ज्यादा कर लो तो तुम्हारे लिए और बेहतर है—मैंने कहा तो फिर सारा वक्त दुरुद ही के लिए मुकर्रर कर लूँ ? फरमाया ऐसा हो तो वह तुम्हारे सारे कामों के लिए काफी होगा और तुम्हारा गुनाह मुआफ कर दिया जाएगा (तिरमिजी) सल्लल्लाहु अलन्नबी यिलउम्मीयि व आलि ही सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सलातों व सला मन अलैक या रसूलल्लाह—

(4) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि

रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि वह शख्स बे इज्जत हो जिस के सामने मेरा चरचा किया जाए और वह मुझ पर दुरुद न पढ़े। (तिरमिजी) अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिव व अला आलि सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिन मादनिल जूदि वल्करमि व असहाबि ही व बारिक व सल्लिम—

(5) हजरते अली करंमल्लाहु तआला वजहहू ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि अस्ल में कंजूस वह शख्स है जिस के सामने मेरा जिक्र हो और वह मुझ पर दुरुद न पढ़े (तिरमिजी) सल्लल्लाहु अलन्नबीयिल्उम्मीयि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सलातौं व सलामन अलैक या रसूलल्लाह—

(6) हजरते उमर इब्नुिलखत्ताब रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि दुआ आसमान व जमीन के दरमियान रुकी रहती है उस में से कुछ ऊपर नहीं चढ़ता जब तक कि तू अपने नबी पर दुरुद न भेजे—(तिरमिजी) अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम व बारिक अला सय्यिदिना मुहम्मदिन व आलिही व सहबिही अजमईन—

कुछ जुरुरी मसले

(1) बहुत से लोग आज कल दुरुद शरीफ के बदले तरह-तरह के इशारे लिखते हैं यह नाजइज व हराम हैं—और अगर मआजल्लाह शान घटाने का इरादा हो तो कुफ्र है—इसी तरह सहाबा और वलीयों के नामों के साथ रजियल्लाहु तआला अनहु की जगह रज लिखना मकरुह और महरुमी का सबब है।

(फतावा अफरीका, बहारे शरीअत)

(2) जिन के नाम मुहम्मद, अहमद अली, हसन, हुसैन वगैरा होते हैं कुछ लोग उन नामों पर स्वाद व ऐन का चिन्ह बनाते हैं यह भी मना है इस लिए कि उस जगह तो यह शख्स मुराद है उस पर दुरुद का इशारा क्या माना ?

दुरुद गंजे आशिकाँ

"सल्लल्लाहु अलन्नबीयिल्उम्मीयि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सलातों व सलामन अलैक या रसूलल्लाह"

जो शख्स हुजूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से सच्ची महब्बत रखे सारी दुनिया से ज्यादा हुजूर की बड़ाई दिल में जमाए, हुजूर की शान घटाने वालों से नफरत करे और उन से दूर रहे—वह अगर इस दुरुद शरीफ को बाद नमाजे जुमा मदीना शरीफ की तरफ मुंह कर के हाथ बाँधे हुए खड़े होकर 100 बार पढ़े तो उस के लिए अनगिनत फाइदे हैं जिन में से कुछ यहाँ लिखे जाते हैं—

(1) इस दुरुद शरीफ के पढ़ने वाले पर खुदाय तआला तीन हजार रहमतें उतारेगा। (2) उस पर दो हजार अपना सलाम भेजेगा। (3) पाँच हजार नेकीयाँ उसके कामों के रजिस्टर में लिखेगा। (4) उस के माल में तरक्की देगा। (5) उसके लड़कों और लड़कों के लड़कों में बरकत रखेगा। (6) दुश्मनों पर काबू देगा। (6) किसी दिन ख्वाब में सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ज्यारत होगी। ईमान के साथ मरेगा। (9) कियामत में हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शफाअत वाजिब होगी। (10) अल्लाह तआला उस से ऐसा खुश होगा कि कभी नाखुश न होगा।

जमाअत का बयान

(1) हजरते इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि जमाअत के साथ नमाज पढ़ने का सवाब अकेला पढ़ने के मुकाबले में सत्ताइस दरजा ज्यादा है—(बुखारी-मुस्लिम)

(2) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि मुनाफिकों पर फज्र

और इशा की नमाजों से ज्यादा कोई नमाज भारी नहीं—अगर लोग जानते कि इन दोनों नमाजों में क्या सवाब है तो घसिटते हुए चल कर उन में शरीक होते (बुखारी-मुस्लिम)

(3) हजरते उसमान रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि जिस ने इशा की नमाज जमाअत से पढ़ी तो ऐसा है जैसे कि वह आधी रात तक इबादत में खड़ा रहा और जिसने फज्र की नमाज जमाअत से पढ़ी तो ऐसा है जैसे कि उसने सारी रात नमाज पढ़ी—(मुस्लिम)

(4) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि कसम है उस जात की जिस के कब्जा में मेरी जान है—कि मेरा जी चाहता है कि मैं लकड़ियाँ इकट्ठा करने का हुक्म दूँ जब लकड़ियाँ इकट्ठा हो जायें तो नमाज का हुक्म दूँ कि उस की अजान दी जाए फिर किसी को हुक्म दूँ कि वह लोगों को नमाज पढ़ाए फिर मैं उन लोगों की तरफ जाऊँ जो नमाज में हाजिर नहीं होते यहाँ तक कि उनके घरों को जला दूँ—(बुखारी-मुस्लिम)

(5) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि नबीए करीब अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि अगर घरों में औरतें और बच्चे न होते तो मैं इशा की नमाज काइम करता और अपने जवानों को हुक्म दे देता कि जो कुछ (बे नमाजियों के) घरों में है आग से जला दें (अहमद)

(6) हजरते अबू दरदा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जिस आबादी या जंगल में तीन आदमी हों और उनमें नमाज जमाअत से न पढ़ी जाए तो शैतान उन पर काबू पा लेता है लिहाजा जमाअत को लाजिम जानो (अहमद अबूदाऊद)

कुछ जुरुरी मसले

(1) जो शख्स कि पागल न हो और बालिग हो और जमाअत से नमाज पढ़ने की कुदरत रखता हो तो उस पर जमाअत वाजिब है एक बार भी छोड़ने वाला गुनहगार सजा के लाइक है और कई बार छोड़े तो फासिक है उस की गवाही नहीं मानी जाएगी और उस को कड़ी सजा दी जाएगी अगर पड़ोसी चुप रहे यानी जमाअत में शरीक होने की ताकीद नहीं की तो वह भी गुनहगार होंगे

(बहारे शरीअत जिल्द 3 सफा 337)

और अशिअतुल्लम्आत जिल्द 1 सफा 458 में है कि शैख इब्ने हुमाम रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने नक्ल फरमाया कि हमारे ज्यादा वुजुरगों का मजहब यह है कि जमाअत वाजिब है और उस का नाम सुन्नत इस वजह से है कि उस का वाजिब होना सुन्नत से साबित है

मस्जिद का बयान

(1) हजरते उसमान रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जो शख्स खुदाय तआला (की खुशी) के लिए मस्जिद बनाएगा तो खुदाय तआला उस के लिए जन्नत में घर बनाएगा (बुखारी-मुस्लिम)

(2) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि खुदाय तआला के नजदीक सारी आबादियों में सब से प्यारी जगहें उसकी मस्जिदें हैं और सब से बुरी जगहें बाजार हैं (मुस्लिम)

(3) हजरते उसमान इब्ने मजऊन रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि मैं ने हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से कहा या रसूलल्लाह ! मुझे दुनिया छोड़ने की इजाजत दीजिए—हुजूर ने फरमाया कि मेरी उम्मत के लिए दुनिया का छोड़ना यही है कि वह मस्जिदों में बैठ कर नमाज का इन्तिजार करे (मिशकात)

(4) हजरते मुआविया इब्ने कुर्रा रजियल्लाहु तआला अनहुमा अपने बाप से रिवायत करते हैं कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्लाम ने इन दो सबजियां के खाने से मना फरमाया यानी प्याज और लहसुन से और फरमाया कि इन्हें खाकर कोई शख्स हमारी मस्जिदों के करीब हरगिज न आए। और फरमाया कि अगर खाना ही चाहते हो तो पका कर उन की महक दूर कर लिया करो—
(अबू दाऊद)

हजरते शैख अब्दुल हक्क मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फरमाते हैं कि हर वह चीज कि जिस की महक ना पसंद हो इस हुक्म में दाखिल है चाहे वह खाने वाली चीजों में से हो या न हो (अशिअतुल्लम्आत जिल्द 1 सफा 328)

(5) हजरते हसन बिसरी रजियल्लाहु तआला अनहु से बतरीके मुरसल रिवायत है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि एक जमाना ऐसा आएगा कि लोग मस्जिदों के अंदर दुनिया की बातें करेंगे तो उस वक्त तुम उन लोगों के पास न बैठना—खुदाय तआला को उन लोगों की कुछ परवा नहीं—(बैहकी)

हजरत शैख मुहक्किक रहमतुल्लाहि तआला अलैहि लिखते हैं कि इस हदीस शरीफ का मतलब यह है कि खुदाय तआला उन लोगों से नाखुश है—(अशिअतुल्लम्आत जिल्द 1 सफा 339)

कुछ जुरूरी मसले

(1) मस्जिद में कच्चा लहसुन और प्याज खाना या खाकर जाना जाइज नहीं जब तक कि महक बाकी हो और यही हुक्म उस चीज का है जिस की महक ना पसंद हो जैसे बीड़ी, सिगरेट, पी कर या मूली खाकर जाना—और जिसके मुँह में बदबू की बीमारी हो या कोई बदबूदार दवा लगाई हो तो जब तक महक दूर न हो उन सब को मस्जिद में आना मना है—इसी तरह मस्जिद में ऐसी माचिस और दिया सलाई जलाना कि जिस के रगड़ने में महक उड़ती हो मना है—(दुर्रे मुख्तार 'रद्दुलमुहतार' बहारे शरीअत)

(2) मस्जिद में मिट्टी का तेल जलाना हराम है मगर जब कि उस की महक बिल्कुल दूर कर दी जाए—

(फतावा रजवीया जिल्द 3 सफा 598)

(3) मस्जिद के करीब कोई मकान मजिस्द से ऊँचा हो तो हरज नहीं इसलिए कि मस्जिद उन जाहिरी दीवारों का नाम नहीं बल्कि उस जगह के मुकाबिल सातों आसमान तक सब मस्जिद है— इसी तरह दुर्रे मुख्तार में है—

(4) मस्जिद में जाते वक्त पहले दाहिना पाँव अंदर रखे और यह दुआ पढ़े "अल्लाहुम्मफ्तह ली अब्वा ब रहमति क" यानी ऐ अल्लाह ! तू अपनी रहमत के दरवाजे मेरे लिए खोल दे—

(5) मस्जिद से निकलते वक्त पहले बायाँ पाँव बाहर रखे और यह दुआ पढ़े—"अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक मिन फजलिक" यानी ऐ अल्लाह ! मैं तुझ से तेरा फज्ल माँगता हूँ—

जुमआ का बयान

(1) हजरते सलमान रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जो शख्स जुमआ के दिन नहाए और जिस कदर हो सके पाकी व सफाई करे और तेल लगाए या खुशबू मले जो घर मे मयस्सर आए—फिर घर से नमाज के लिए निकले और दो आदमियों के दरमियान (अपने बैठने या आगे गुजरने के लिए) जगह न बनाए—फिर नमाज पढ़े जो मुकर्रर कर दी गई है—फिर जब इमाम खुत्बा पढ़े तो चुपचाप बैठा रहे तो उस के वह सब गुनाह जो एक जुमआ से दूसरे जुमआ तक उस ने किए हैं मुआफ कर दिए जायेंगे (बुखारी)

(2) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जुमआ के दिन फरिश्ते मस्जिद के दरवाजे पर खड़े होकर मस्जिद में आने वालों की हाजिरी लिखते हैं जो लोग पहले आते हैं उन को पहले और जो बाद में आते हैं उन को बाद में और जो शख्स जुमआ की

नमाज को पहले गया उस की मिसाल उस शख्स की तरह है जिस ने मक्का शरीफ में कुर्बानी के लिए ऊँट भेजा, फिर जो दूसरे नम्बर पर आया उस की मिसाल उस शख्स की सी है जिस ने गाय भेजी फिर जो उस के बाद आए वह उस शख्स की तरह है जिस ने दुम्बा भेजा फिर जो उस के बाद आए वह उस शख्स की तरह है जिसने मुर्गी भेजी और जो उस के बाद आए वह उस शख्स की तरह है जिसने अंडा भेजा फिर जब इमाम खुत्बा के लिए उठता है तो फरिश्ते अपने कागज लपेट लेते हैं और खुत्बा सुनने में लग जाते हैं (बुखारी, मुस्लिम)

(3) हजरते समुरा इब्ने जुनदब रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जिस शख्स ने बगैर किसी सबब के जुमआ की नमाज छोड़ दी तो उसे चाहिए कि एक दीनार (अशरफी) खैरात करे अगर इतना न हो सके तो आधा दीनार—(अहमद—अबू दाऊद)

(4) हजरते समुरा इब्ने जुनदब रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि हाजिर रहो खुत्बा के वक्त और इमाम से करीब रहो इसलिए कि आदमी जिस कदर दूर रहेगा उसी कदर जन्नत में पीछे रहेगा अगरचे वह जन्नत में दाखिल जरूर होगा (अबू दाऊद)

(5) हजरते इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि जिस शख्स को मस्जिद में जुमआ के दिन ऊँघ आये तो उस को चाहिए कि वह अपनी जगह बदल दे। (तिरमिजी)

(6) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वस्सल्लम सख्त जाड़े के जमाने में जुमआ की नमाज सवेरे पढ़ते और सख्त गरमी के दिनों में देर से पढ़ते। (बुखारी शरीफ)

कुछ जुरुरी मसले

(1) खुत्वा पढ़ने वाले के सामने जो अजान होती है मुकतदियों को उसका जवाब हरगिज न देना चाहिए यही अहवत (ज्यादा इहतियाद) है (फतावा रजविया)

(2) खुत्वा में हुजूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का नामे पाक सुन कर अँगूठा न चूमे यह हुक्म सिर्फ खुत्वा के लिए है वरना आम हालात में नामे नामी सुन कर अँगूठा चूमना मुस्तहब है और दुरुद शरीफ दिल में पढ़े…जुबान न हिलाए इसलिए कि जुवान से चुप रहना फर्ज है। (फतावा रजवीया—दुर्रे मुख्तार मए रद्दुल मुहतार जिल्द 1 सफा 575)

(3) अरबी के इलावा किसी जुबान में खुत्बा पढ़ना या अरवी के साथ दूसरी जुबान को भी शामिल कर लेना मकरुह और सुन्नते मुतावारिसा के खिलाफ है। (फतावा रजवीया—बहारे शरीअत)

(4) देहात में जुमआ जाइज नहीं (आम्मए कुतुब) लेकिन अवाम अगर पढ़ते हों तो उन्हें मना न किया जाए।

(फतावा रजवीया हिस्सा 3)

(5) चूँकि देहात में जुमआ जाइज नहीं इसलिए देहात में जुमआ की नमाज पढ़ने से उस दिन की नमाजे जुहर बाकी रहती है लिहाजा देहात में जुमआ पढ़ने के वाद चार रकअत जुहर पढ़ना जुरुरी है। (कुतुबे आम्मा)

खुत्बा की अजान कहाँ दी जाए

(1) हजरते साइब इब्ने यजीद रजियल्लाहु तआला अनहु से मरवी है उन्होंने फ़रमाया कि जब हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जुमआ के दिन मिम्बर पर बैठते तो हुजूर के सामने मस्जिद के दरवाजे पर अजान होती। और ऐसा ही हजरते अबू बकर व उमर रजियल्लाहु तआला अनहुमा के जमाना में भी होता था। (अबू दाऊद जिल्द 1 सफा 162)

इस हदीस शरीफ से मालुम हुआ कि खुत्बा की अजान मस्जिद के बाहर सुन्नत है। हुजूर सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम और हजरते अबू बक्र व हजरते उमर रजियल्लाहु तआला अनहुमा के जमाना में खुत्बा की अजान मस्जिद के बाहर ही हुआ करती थी। इसीलिए बड़े-बड़े आलिम मस्जिद के अंदर देने को मना फरमाते हैं। फतावा काजी खाँ जिल्द 1 सफा 78 और फतावा आलमगीरी जिल्द 1 सफा 55 और बहरुर्राईक जिल्द 1 सफा 268 में है कि मस्जिद के अंदर अजान देना मना है—और फत्हुल कदीर जिल्द 1 सफा 215 में है कि बड़े-बड़े आलिमों ने फरमाया कि मस्जिद में अजान न दी जाए और तहतावी सफा 17 में है कि मस्जिद में अजान देना मकरुह है। इसी तरह कहस्तानी में नज्म से है—लिहाजा यह जो रवाज हो गया है कि अजान मस्जिद के अंदर दी जाती है गलत है। मुसलमानों को चाहिए कि इस गलत रवाज को छोड़ कर हदीस व फिक़ा पर अमल करें।

ईद और बकरईद का बयान

(1) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि नबीयि करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम जब हिजरत फरमा कर मदीना शरीफ गये तो हुजूर को मालूम हुआ कि यहाँ के लोग साल में दो दिन खेल कूद करते हैं खुशी मनाते हैं उस पर हुजूर ने लोगों से पूछा कि यह दो दिन कैसे हैं—लोगों ने कहा इन दिनों में हम लोग मुसलमान होने से पहले खुशियाँ मनाते और खेल-कूद करते थे। हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए उन दो दिनों को उन से अच्छे दिनों में बदल दिया है। उन में से एक दिन ईद और दूसरा बकरईद है। (अबू दाऊद)

(2) हजरते अबुल हुवलरस रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने अम्र इब्ने हज्म को जब कि वह नजरान में थे लिखा कि बकरईद की नमाज जल्द पढ़ो और ईद की नमाज देर से पढ़ो—और लोगों को वाज सुनाओ। (मिशकात)

(3) हज़रते जाबिर इब्ने समुरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि मैं ने रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम के साथ ईद व बकर ईद की नमाज बगैर अजान व इकामत के पढ़ी है। एक बार नहीं बल्कि कई बार। (मुस्लिम)

(4) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि ईदुलफित्र के दिन जब तक हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम चंद खुजूरें न खा लेते ईदगाह को न जाते और आप ताक खुजूरें खाते। (बुखारी)

(5) हजरते बुरैदा रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि ईदुलफित्र के दिन जब तक हुजूर अलैहिस्सातु वस्सलाम कुछ खा न लेते ईदगाह को न जाते और बकरईद के दिन उस वक्त तक कुछ न खाते जब तक कि नमाज न पढ़ लेते।(तिरमिजी इब्नेमाजा)

(6) हजरजे जाबिर रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ईद के दिन एक रास्ते से जाते थे दूसरे रास्ते से आते थे। (बुखारी)

कुछ जुरुरी मसले

(1) ईद व बकरईद की नमाज के बाद मुसाफहा करना और गले मिलना जैसा कि आम तौर पर मुसलमानों में रवाज है बेहतर है इस लिए कि इस में खुशी जाहिर करना है। (बहारे शरीअत)

(2) औरतों के लिए ईद व बकरईर की नमाज जाइज नहीं इसलिए कि ईदगाह में मरदों के साथ मेल-जोल होगा और इसी लिए अब औरतों को किसी नमाज में जमाअत की हाजिरी जाइज नहीं दिन की नमाज हो या रात की, जुमआ हो या ईद व बकरईद की चाहे वह जवान हो या बुढ़ि ऐसा ही तनवीरुल—अबसार व दुर्रे मुख्तार में है—और अगर सिर्फ औरतें जमाअत करें तो यह भी ना जाइज है इसलिए कि सिर्फ औरतों की जमाअत ना जाइज व मकरुह तहरीमी है ऐसा ही फतावा आलमगीरी जिल्द 1 सफा

80 और दुर्रे मुख्तार में है—और अगर अकेले-अकेले पढ़ें तो भी नमाज जाइज न होगी इसलिए कि ईद व बकरईद की नमाज के लिए जमाअत जुरुरी है—हाँ औरतें उस दिन अपने-अपने घरों में अकेले-अकेले नफ्ल नमाजें पढ़ें तो बहुत सवाब है।

बीमारी का बयान

(1) हजरते अबू सईद खुदरी रजिअल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि नबीयि करीम अलैहिस्सातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि मुसलमान को कोई रंज, कोई दुख, कोई फिक्र, कोई तकलीफ, कोई मुसीबत और कोई गम नहीं पहुंचता यहाँ तक कि काँटा जो उसे चुभे मगर अल्लाह तआला उन के सबब उस के गुनाहों को मिटा देता है। (बुखारी मुस्लिम)

(2) हजरते अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि नहीं पहुंचती मुसलमान को कोई तकलीफ मर्ज या उसके सिवा कुछ और—लेकिन अल्लाह तआला उस के छोटे गुनाहों को झाड़ देता है—जैसे दरख्त (पेड़) से पत्ते झड़ते हैं। (बुखारी मुस्लिम)

(3) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम के पास बुखार का चरचा किया गया तो एक शख्स ने बुखार को बुरा कहा—हूजूर ने फरमाया बुखार को बुरा न कहो इस लिए कि वह (मोमिन को) गुनाहों से इस तरह पाक कर देता है जैसे आग लोहे की मैल को साफ कर देती है। (इब्ने माजा)

(4) हजरते मुहम्मद इब्ने खालिद सुलमी अपने बाप से रिवायत करते हैं कि उन के दादा ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि वंदा के लिए अल्लाह के इल्म में जब कोई मरतबा मुकद्दर होता है और वह अपने अमल से उस मरतबे को नहीं पहुंचा तो खुदाए तआला उस के बदन या माल या औलाद पर मुसीबत डालता है फिर उस पर सब्र देता है यहाँ तक की उसे

उस मरतबा तक पहुंचा देता है जो उस के लिए अल्लाह के इल्म में मुकद्दर हो चुका है। (अबू दाउद)

(5) हजरते आइशा रजियल्लाहु तआला अनहा ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि जब बंदा के गुनाह ज्यादा हो जाते हैं और उस के अमल में कोई ऐसी चीज नहीं जो गुनाहों का कफ्फारा बन सके तो अल्लाह तआला उस को गम और परेशानी में डाल देता है ताकि उसके गुनाहों का कफ्फारा बन जाए। (मिशकात)

(6) हजरते सअद रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि नबीयि करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम से पूछा गया कि कौन लोग सख्त बलाओं में मुब्तिला होते हैं ? हुजूर ने फरमाया (सबसे पहले) नबी फिर उन के बाद जो अफ्जल हैं फिर उनके बाद जो अफ्जल हैं यानी दरजे के लिहाज से आदमी में दीन के साथ जैसा तअल्लुक होता है उसी इतिबार से बला में मुब्तिला किया जाता है अगर दीन में सख्त है तो बला भी उस पर सख्त होगी—और अगर दीन में कमजोर है तो उस पर आसानी की जाती है। यही सिलसिला हमेशा रहता है यहाँ तक की जमीन पर वह इस तरह चलता है कि उस पर कोई गुनाह नहीं रहता। (तिरमिजी)

(6) हजरते जाबिर इब्ने अतीक रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि खुदाय तआला की राह में कत्ल के इलावा सात शहादतें और हैं (1) जो ताऊन में मरे शहीद है। (2) जो डूब कर मरे शहीद है। (3) जो जातुलजंब (नमोनिया) में मरे शहीद है। (4) जो पेट की बीमारी में मरे शहीद हैं। (5) जो आग में जल जाए शहीद है। (6) जो इमारत के नीचे दब कर मर जाए शहीद हैं। (7) जो औरत बच्चा की पैदाइश के वक्त मर जाए शहीद है।

(अबू दाऊद)

बीमारी से जाहिर में तकलीफ पहुंचती है लेकिन हकीकत में वह बहुत अच्छी चीज है जिस से मुसलमान को हमेशा आराम पाने के लिए बहुत बड़ी दौलत हाथ आती है। इसलिए कि यह जाहिरी बीमारी

हकीकत में रुहानी बीमारियों का एक बड़ा ज़बरदस्त इलाज है बशर्ते कि आदमी मोमिन हो और बड़ी से बड़ी बीमारी में सब्र व शुक्र से काम ले अगर सब्र न करे बल्कि रोये पीटे तो बीमारी से कोई फाइदा न पहुँचे गा यानी सवाब से महरुम रहेगा—कुछ बेवकूफ बीमारी में निहायत बे जा बातें बोल- उठते हैं और कुछ खुदाय-तआला की जानिब (तरफ) जुल्म की निसबत करके कुफ्र तक पहुँच जाते हैं यह उन की इन्तिहाई बद बख्ती और दुनिया व आखिरत में हलाक होने का सबब है—'अल्अयाजु बिल्लाहि तआला'

बीमार को देखने जाना

(1) हजरते अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहू ने फरमाया कि मैंने नबीयि करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम को फरमाते हुए सुना कि जब कोई मुसलमान अपने बीमार भाई को सुबह के वक्त देखने जाता है तो शाम तक सत्तर (70) हजार फरिश्ते उस के लिए रहमत व बख्शिश की दुआ करते हैं और जो शाम के वक्त जाता है उस के लिए सत्तर (70) हजार फरिश्ते सुब्ह तक बख्शिश की दुआ करते हैं और उसके लिए जन्नत में एक बाग है—

(तिरमिजी—अबू दाऊद)

(2) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिसने अच्छा वुजू किया और सिर्फ सवाब हासिल करने की नीयत से अपने बीमार मुसलमान भाई को देखने गया तो उस को साठ बर्ष की राह के फासिले पर जहन्नम से दूर कर दिया जाता है—

(3) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि जो शख्स बीमार को देखने जाता है तो आसमान में एक पुकारने वाला पुकारता है कि तू अच्छा है और तेरा चलना अच्छा—और जन्नत की एक मंजिल को तूने (अपना) ठिकाना बना लिया—

(इब्ने माजा)

(4) हजरते जाबिर रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जो शख्स बीमार को देखने जाता है तो वह रहमत की नदी में डुबकी लगाता रहता है जब तक कि बैठ नहीं जाता और जब बैठ जाता है तो रहमत की नदी में डूब जाता है—(अहमद—मालिक)

(5) हजरते अबू सईद रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि जब तुम बीमार को देखने जाओ तो मौत के बारे में उस का रंज व गम दूर करो अगरचे उस से उस की मौत का वक्त नहीं टल सकता लेकिन उस का दिल खुश हो जाएगा—(तिरमिजी)

(6) हजरते सईद इब्ने मुसैयिब रजियल्लाहु तआला अनहु से मुरसलन मनकूल है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि बीमार को देखने का बेहतरीन तरीका यह है कि हाल चाल पूछने के बाद फौरन उठ जाए—(मिशकात)

(7) हजरते इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जो मुसलमान किसी बीमार मुसलमान को देखने जाए तो सात बार यह दुआ पढ़े "असअलुल्ला हलअजीम रब्बल अरशिल अजीमि ऐं यश फियक"

अल्लाह बुजुर्ग व बरतर से दुआ करता हूँ जो अर्शे अजीम का मालिक है तुझे अच्छा कर दे—अगर मौत का वक्त नहीं आ गया है तो इस दुआ से वह जुरुर अच्छा हो जाएगा—

दवा का बयान

(1) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि खुदाय तआला ने कोई ऐसी बीमारी नहीं पैदा की है जिस के लिए तनदुरुस्ती यानी दवा न उतारी हो—(बुखारी शरीफ)

(2) हजरते जाबिर रजियाल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि हर हर बीमारी की

दवा है_ जब बीमारी को (उसकी सहीह) दवा पहुँचा दी जाती है तो खुदाय तआला के हुक्म से बीमार अच्छा हो जाता है—

(मुस्लिम शरीफ)

(3) हजरते अबू दरदा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि खुदाय तआला ने बीमारी पैदा की है दवा भी—और हर बीमारी की दवा मुकर्रर फरमाई है लिहाजा दवा करो लेकिन हराम चीज से दवा न करो—

(अबू दाऊद)

(4) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने नजिस दवा (के इस्तेमाल) से मना फरमाया है—(अबू दाऊद—तिरमिजी)

नोट :—अंग्रेजी दवायें ज्यादा ऐसी मौजूद हैं जिन में स्प्रीट और शराब मिली होती है ऐसी दवायें हरगिज इस्तेमाल न की जायें—

(बहारे शरीअत जिल्द 16 सफा 127)

दुआ और तावीज

(1) हजरते आइशा रजियल्लाहु तआला अनहा ने कहा कि नबीये करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने हुक्म फरमाया है कि हम बुरी नजर के लिए झाड़ फूँक करायें—(बुखारी—मुस्लिम)

(2) हजरते उम्मे सलमा रजियल्लाहु तआला अनहा से रिवायत है कि नबीये करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने उन के घर में एक लड़की को देखा जिस का चेहरा पीला था हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया उसे झाड़ फुँक कराओ बुरी नजर लगी है—(बुखारी—मुस्लिम)

(3) हजरते औफ इब्ने मालिक अशजई रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि हम लोग जमानए जाहिलीयत में झाड़ फूँक करते थे (इस्लाम लाने के बाद) हम ने अर्ज किया या रसूलल्लाह ! उन मंत्रों की बाबत आप क्या फरमाते हैं ? हुजूर सल्लल्लाहु तआला

अलैहि वसल्लम ने फरमाया अपने मंत्र मुझे सुनाओ—उन मंत्रों में कोई हरज नहीं जब तक कि उन में शिर्क न हो (मुस्लिम)

हजरत शैख अब्दुल हक्क मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि इस हदीस की शरह में लिखते हैं कि मंत्र में जिन्न और शैतानों के नाम न हों और उस मंत्र से कुफ्र लाजिम न आता हो (तो उसके पढ़ने में कोई हरज नहीं) और इसीलिए अगले जमाने के आलिमों ने फरमाया है कि जिस मंत्र का माना मालूम न हो उसे नहीं पढ़ सकते—लेकिन जो हुजूर अलैहिस्सलाम से सहीह तौर पर मनकूल हो उसे पढ़ सकते हैं अगरचे उस का माना मालूम न हो—

(अशिअतुल्लम्आत जिल्द 3 सफा 604)

मौत का बयान

(1) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि लज्जतों को खत्म कर देने वाली चीज (मौत) को ज्यादा याद करो—

(तिरमिजी)

हजरते शैख अब्दुल हक्क मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि लिखते हैं कि मौत को याद करने का मतलब यह है कि दिल में खुदाय तआला का डर हो और उसी के हुक्म के मुताबिक अमल हो और तौबा व इस्तिगफार करे और आखिरत के नफा को (दुनिया के नफा पर) तरजीह दे—वरना बगैर अमल के सिर्फ मौत का चरचा करना और उस को याद रखना कोई चीज नहीं है—बल्कि (ऐसा करना) दिल की सख्ती का सबब हो सकता है जैसे कि गफलत और बे अमली के साथ खुदाय तआला को सिर्फ जुबानी तौर पर याद करना दिल के सख्त होने का सबब है—

(अशिअतुल्लम्आत जिल्द 1 सफा 653)

(2) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि तुम में कोई मौत की आरजू न करे (इसलिए कि) वह या तो अच्छा काम करने वाला

होगा तो हो सकता है कि उस के अच्छे काम बढ़ जायें—और या बुरा काम करने वाला होगा तो हो सकता है कि बाद में तौबा करके खुदाय तआला की खुशी हासिल कर ले—(बुखारी शरीफ)

हजरते शैख अब्दुल हक्क मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि लिखते हैं कि दुनियवी नुक्सान जैसे बीमारी या गरीबी वगैरा की वजह से मौत की तमन्ना करना मकरूह हैं—इसलिए कि बे सबरी और तकदीरे इलाही से मलाल व नाराजगी की निशानी हैं लेकिन खुदाय तआला की महब्बत और उस की मुलाकात के शौक में मौत की तमन्ना करना और इस दुनिया की तंगी व परेशानी से छुटकारा हासिल करने और मुल्के आखिरत और जन्नत में पहुँचने के लिए मौत की तमन्ना करना ईमान और उस के कमाल की निशानी है—इसी तरह दीनी नुक्सान के डर से मौत की आरजू करना मकरूह है (अशिअतुललम्आत जिल्द 1 सफा 653)

(3) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि नबीए करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम एक जवान के पास गये जो मरने के करीब था—हुजूर ने उस से फरमाया कि तू अपने आप को किस हाल में पाता है ? उसने कहा या रसूलल्लाह ! मैं खुदाय तआला की रहमत का उम्मीदवार हूँ और अपने गुनाहों से डरता हूँ—हुजूर ने फरमाया यह दोनों यानी उम्मीद और डर इस वक्त पर जिस बंदा के दिल में होंगे खुदाय तआला उसे वह चीज देगा जिस की वह उम्मीद रखता है और उस चीज से बचाए गा जिस से वह डरता है—(तिरमिजी)

(4) हजरते मअकल इब्ने यसार रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि अपने मरने वालों के करीब सूर ए यासीन शरीफ पढ़ो—

(अबू दाऊद)

हजरते शैख अब्दुल हक्क मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि इस हदीस की शरह में लिखते हैं कि जाहिर मतलब यह है कि मौत के वक्त सूर ए यासीन पढ़ी जाए और इसी पर अमल भी

है और हो सकता है कि यह मुराद हो कि मौत के बाद घर में पढ़ी जाए या क़ब्र के सिरहाने—(अशिअतुल्लम्आत जिल्द 1 सफा 662)

(5) हजरते अबू सईद और हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि अपने मरने वालों को कलिमए तय्यिबा की तलकीन करो—(मुस्लिम शरीफ)

तलकीन की सूरत यह है कि मौत के वक्त जो लोग मौजूद हैं बुलंद आवाज से कलिमए तय्यिबा पढ़ें लेकिन मरने वाले को उस के पढ़ने का हुक्म न करें—

मैयित को नहलाना और कफन पहनाना

(1) हजरते उम्मे अतीया रजियल्लाहु तआला अनहा कहती हैं कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम हमारे पास आए जब कि हम हुजूर की साहब जादी (हजरते जैनब रजियल्लाहु तआला अनहा) को नहला रहे थे—तो हुजूर ने फरमाया इसे नहलाओ तीन या पाँच या सात बार और नहलाने का सिलसिला दाहिनी तरफ से शुरू करें और पहले मुंह धोयें—(बुखारी)

नोट—मैयित को गुस्ल देने में कुल्ली न कराए और न नाक में पानी डाला जाए—(बहारे शरीअत)

(2) हजरते जाबिर रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जब कोई अपने भाई को कफन दे तो चाहिए कि अच्छा कफन दे—(मुस्लिम शरीफ)

हजरते शैख अब्दुल हक्क मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि इस हदीस की शरह में लिखते हैं कि अच्छे कफन का मतलब यह है कि कफन पूरा हो और साफ सुथरा व सफेद हो और उस में बेजा खर्च न हो नया कफन और पुराना जो धोया हुआ हो दोनों का हुक्म एक है लेकिन फुजूल खर्ची करने वाले जो दिखावा और

बड़ाई जाहिर करने के लिए करते हैं वह मकरुह और सख्त हराम है (अशिअतुल्लम्आत जिल्द 1 सफा 672)

(2) हजरते इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि तुम लोग सफेद कपड़ा पहना करो इसलिए कि वह अच्छे किस्म के कपड़े हैं और सफेद कपड़ों में अपने मुरदों को कफनाया करो

(अबू दाऊद तिरमिजी)

कुछ जुरुरी मसले

(1) जाहिलों में जो मशहूर है कि शौहर औरत के जनाजा को न काँधा दे सकता है न कब्र में उतार सकता है न मुंह देख सकता है यह बिल्कुल गलत है सिर्फ नहलाने और उसके नंगे बदन को हाथ लगाने की मुमानअत है (बहारे शरीअत जिल्द 4 सफा 519)

(2) मैयित के दोनों हाथ करवटों में रखें सीना पर न रखें कि यह काफिरों का तरीका है

(3) कुछ लोग मैयित के दोनों हाथ नाफ यानी ढोंड़ी के नीचे इस तरह रखते हैं कि जैसे नमाज में यह भी मना है

(4) मैयित की लुंगी सर से कदम तक होनी चाहिए यानी लिफाफा से इतनी छोटी जो बाँधने के लिए ज्यादा थी इसी तरह फतावा आलमगीरी जिल्द 1 सफा 150 हिदाया जिल्द 1 सफा 137 रद्दुलमुहतार जिल्द 1 सफा 603 और बहारे शरीअत में है) लिहाजा कुछ लोग जो नाफ से पिंडली तक रखते हैं यह सहीह नहीं

(5) औरत की ओढ़नी आधी पीठ से सीना तक होना चाहिए जिस का अंदाजा डेढ़ मीटर है और चौड़ाई एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक होना चाहिए और जो लोग जिंदगी की तरह ओढ़नी रखते हैं यह बे जा और सुन्नत के खिलाफ है

(बहारे शरीअत)

(6) औरत के लिए सीना बंद छाती से नाफ तक हो और बेहतर यह है कि रान तक हो ऐसा ही फतावा आलमगीरी में है

(7) सीना बंद लिफाफा के ऊपर होना चाहिए ऐसा ही फतावा आलमगीरी और फतहुलक़दीर में है लिहाजा सीना बंद को सब कपड़ों से पहले लपेटने का जो आम रवाज है वह गलत है

जनाजा का बयान

(1) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जनाजा के लेजाने में जल्दी करो इसलिए कि अगर वह नेक आदमी का जनाजा है तो उसे अच्छे घर की तरफ जल्द पहुँचना चाहिए और अगर बुरे का जनाजा है तो बुरे को अपनी गरदनों से जल्द उतार देना चाहिए (बुखारी मुस्लिम)

(2) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जो शख्स ईमान के सबब और सवाब पाने की नीयत से किसी मुसलमान के जनाजा के साथ-साथ चले यहाँ तक कि उस की नमाज पढ़े और उस के दफ्न से छुट्टी पाये तो वह दो कीरात सवाब लेकर वापस लौटता है जिस में से हर कीरात उहुद (पहाड़) के बराबर है और जो शख्स सिर्फ जनाजा की नमाज पढ़ कर वापस आ जाए और दफ्न में शामिल न हो तो वह एक कीरात का सवाब लेकर वापस होता है

(बुखारी मुस्लिम)

(3) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि कुछ सहाबा एक जनाजा के करीब से गुजरे तो भलाई के साथ उस का चरचा किया उस पर हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि वाजिब हो गई फिर लोगों का दूसरे जनाजा पर गुजर हुआ तो बुराई के साथ उस का चरचा किया उस पर हुजूर ने फरमाया वाजिब हो गई। हजरते फारुके आजम रजियल्लाहु तआला अनहु ने पूछा या रसूलल्लाह क्या चीज वाजिब हो गई। फरमाया जिस मैयित का तुम लोगों ने भलाई के साथ चरचा किया उस के लिए जन्नत वाजिब हो गई और जिस की तुम लोगों ने बुराई की उस के

लिए जहन्नम वाजिब हो गई तुम लोग जमीन पर खुदाय तआला के गवाह हो। (बुखारी मुस्लिम)

हजरते शैख अब्दुलहक्क मुहक्किक देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि इस हदीस शरीफ की शरह में लिखते हैं कि मुत्तकी परहेज-गार और सच्चे लोगों की ऐसी तारीफ मुराद है जिस में नफसानी गरज शामिल न हो इसलिए कि ऐसी ही तारीफ आदमी के जन्नती होने की पहचान है वरना अगर कुछ फासिक और गलत किस्म के लोग किसी गरज से किसी फासिक की तारीफ करें या किसी अच्छे दीनदार आदमी की बुराई करें तो उस की वजह से (जन्नती या जहन्नमी होने का) यकीन नहीं कर सकते।

(अशिअतुल्लम्आत जिल्द 1 सफा 682)

(4) हजरते आइशा रजियल्लाहु तआला अनहा ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि मुर्दों को बुरा भला न कहो (बुखारी)

(5) हजरते इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि अपने मुर्दों की अच्छाईयों का चरचा करो और उन की बुराईयों से बचो।

(अबू दाऊद तिरमिजी)

हजरते शैख अब्दुलहक्क मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि इस हदीस शरीफ की शरह में लिखते हैं कि यह हुक्म उन अच्छें मुसलमानों के साथ खास है जो खुल्लम खुल्ला बुरा काम और जुल्म नहीं करते हैं (अशिअतुल्लम्आत जिल्द 1)

(6) हजरते मुहम्मद इब्ने सीरीनरजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि एक जनाजा हजरते इमामे हसन इब्ने अली व इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुम के करीब से गुजरा तो हजरते इमामे हसन खड़े हो गये और हजरते इब्ने अब्बास नहीं खड़े हुए हजरते इमामे हसन ने हजरत इब्ने अब्बान से कहा क्या हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम एक यहूदी का जनाजा देखकर खड़े नहीं हुए

थे ? हजरते इब्ने अब्बास ने कहा हाँ ! लेकिन उस के बाद बैठे रहते थे (और खड़े न होते थे) (नसई)

अशिअतुल्लम्आत में है तो पहला हुक्म रद्द हो गया और यह रद्द होना सिर्फ यहूदी जनाजा के बारे में है या हर एक के लिए खुदाय तआला बेहतर जानता है लेकिन जाहिर यह है कि सब के लिए है। फतावा आलमगीरी जिल्द 1 सफा 152 में है कि जनाजा के लिए न खड़ा हो लेकिन उसमें शामिल होने का इरादा हो तो खड़ा हो सकता है। और तहतावी सफा 367 में है कि जनाजा देख कर खड़ा होना मकरुह है जैसा कि कहस्तानी में है।

मैयित का दफन करना

(1) हजरते उरवा इब्ने जुबैर रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि मदीना शरीफ में दो आदमी कब्र खोदा करते थे। एक उन में से हजरते तलहा अंसारी रजियल्लाहु तआला अनहु थे जो लहद यानी बगली खोदते थे और दूसरे हजरते अबूउबैदा इब्ने जर्राह रजियल्लाहु तआला अनहु थे जो बगली नहीं खोदते थे बल्कि सनदूकी कब्र बनाते थे हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के इन्तिकाल पर सहाबा ने आपस में तै किया कि जो उन दोनों में से पहले आएगा वह अपना काम करेगा। तो पहले वह सहाबी आए जो बगली खोदा करते थे तो उन्हों ने हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के लिए बगली कब्र तैयार की। (मिशकात)

(2) हजरते अली रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम एक आदमी के जनाजा में शरीक हुए तो फरमाया ऐ अली ! मुरदा को किबला की तरफ मुतवज्जिह करो और सब लोग 'बिइस्मिललाहि व अलामिल्लति रसूलिल्लाहि' पढ़ो यानी खुदाय तआला के नाम से और उस के प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शरीअत के मुताबिक तुझे कब्र में उतारता हूँ। और उसको करवट पर रखो। मुँह के बल औंधा न करो और न पीठ के बल चित लिटाओ। (बदाइउस्सनाए)

इस हदीस शरीफ से खुल्लम खुल्ला मालूम हुआ कि मैयित को दाहिनी करवट पर लिटाया जाए और यही सहीह है जैसा कि बहारे शरीअत जिल्द 4 सफा 545 में है 'मैयित को दाहिनी करवट पर लिटायें' और फतावा आलमगीरी जिल्द 1 सफा 155 और दुर्रे मुख्तार मए रद्दुलमुहतार जिल्द 1 सफा 626 बहरुर्राइक जिल्द 2 सफा 194 बदाइउस्सनाए जिल्द 1 सफा 319 और मराकील फलाह में है कि मैयित को कब्र में दाहिने पहलू पर लिटाना बेहतर है और फतहुलकदीर जिल्द 3 सफा 95 पर है कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इज्जत वाली कब्र शरीफ में किबला रुख अपनी दाहिनी करवट पर हैं और तहतावी सफा 269 में है कि मैयित को करवट पर लिटाने में उस की पीठ की जानिब मिट्टी वगैरा की टेक लगा दी जाए ताकि वह पलट न जाए।

(3) हजरते सुफयान तम्मार रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि उन्हों ने हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम की कब्र शरीफ को देखा जो ऊँट के कोहान की तरह (उठी हुई) थी (बुखारी)

(4) हजरते जाबिर रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि नबीये करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम की कब्र शरीफ पर पानी छिड़का गया और पानी छिड़कने वाले बिलाल इब्ने रुबाह थे। उन्हों ने मशक से पानी छिड़का और सिरहाने से छिड़कना शुरू किया और पाँव तक छिड़का। (बयहकी मिशकात)

कुछ जुरुरी मसले

(1) मुस्तहब यह है कि सिरहाने की तरफ दोनों हाथ से तीन बार मिट्टी डालें (तहतावी बहारे शरीअत)

(2) शजरा या अहद नामा कब्र में रखना जाइज है बेहतर यह है कि मैयित के मुँह के सामने किबला की तरफ ताक खोद कर उस में रखें। (बहारे शरीअत)

(3) मैयित के माथा या कफन पर अहद नामा लिखना बेहतर है ऐसा ही दुर्रे मुख्तार मए रद्दुलमुहतार जिल्द 1 सफा 633 में है।

(4) माथे पर बिस्मिल्लाह शरीफ या सीना पर कलिमए तैयिबा लिखना भी जाइज है मगर नहलाने के बाद कफन पहनाने से पहले कलिमा की उंगली से लिखें रोशनाई से न लिखें।

(रद्दुलमुहतार जिल्द 1 सफा 634)

(5) दफ्न के बाद कब्र के सिरहाने अजान पढ़ना जाइज बल्कि मुस्तहसन है। इस मसला के बारे में आला हजरत इमाम अहमद रजा बरेलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि का रिसाला ईजानुल अज्र फी अजानिल कब्र पढ़िए।

(6) आलिमों, सय्यिदों और बुजुर्गों की कब्रों पर गुम्बद या इमारत बनाना जाइज है। इसी तरह रद्दुलमुहतार जिल्द 1 सफा 627 और तहतावी सफा 370 में है।

(7) औलिया अल्लाह की बड़ाई जाहिर करने के लिए उन के मजारों पर चादर डालना, फूल रखना और उन के मजारों के करीब चिराग जलाना जाइज है।

(रद्दुलमुहतार 'आलम गीरी' हदीकए नदीया)

मैयित पर रोना

(1) हजरते अब्दुल्लाह इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि खबरदार हो कर सुन लो कि आँख के आँसू और दिल की तकलीफ के सबब खुदाय तआला अजाब नहीं फरमाता (और जुबान की तरफ इशारा करके फरमाया) लेकिन इसके सबब अजाब या रहम फरमाता है और घर वालों के रोने की वजह से मैयित पर अजाब होता है (जब कि उस ने रोने की वसीयत की हो या वहाँ रोने का रवाज हो और उस ने मना न किया हो या यह मतलब है कि उन के रोने से मैयित को तकलीफ होती है।' (बुखारी मुस्लिम)

(2) हजरते इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जो आँसू आँख में हो और जो तकलीफ से हो तो वह अल्लाह तआला की तरफ से

है और उस की रहमत का हिस्सा है और तकलीफ का जाहिर करना जो हाथ और जुबान से हो वह शैतान की तरफ से है।

(मिशकात)

(3) हजरते अबू मूसा अशअरी रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया जब किसी मोमिन बंदा का बेटा मर जाता है तो खुदाय तआला फरिश्तों से फरमाता है कि तुम ने मेरे बंदा के बेटे की रुह निकाल ली तो वह कहते हैं हाँ। फिर खुदाय तआला फरमाता है कि तुम ने उस के दिल के मेवा को तोड़ लिया तो वह कहते हैं हाँ! फिर खुदाय तआला फरमाता है (इस मुसीबत पर) मेरे बंदा ने क्या कहा? तो फरिश्ते कहते हैं कि तेरी तारीफ की और यह कहा कि हम अल्लाह के लिए हैं और उसी की तरफ लौटने वाले हैं तो खुदाय तआला फरमाता है कि मेरे उस बंदा के लिए जन्नत में एक घर बनाओ और उस का नाम बैतुलहम्द रखो। (अहमद तिरमिजी)

(4) हजरते मआज इब्ने जबल रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जिन दो मुसलमान यानी मियाँ बीवी के तीन बच्चे मर जायें तो खुदाय तआला उन दोनों को अपने फज्ल व रहमत से जन्नत में ले जाएगा सहाबा ने पूछा या रसूलल्लाह! अगर दो बच्चे मर जायें तो— हुजूर ने फरमाया दो का भी यही सवाब है। फिर सहाबा ने पूछा या रसूलल्लाह! और अगर एक मर जाए तो हुजूर ने फरमाया एक का भी यही सवाब है फिर फरमाया कसम है उस जात की जिस के कब्जा में मेरी जान है कि कच्चा हमल जो गिर जाता है अपनी माँ को आँवल के जरिए जन्नत की तरफ खींचेगा जब कि माँ (उस तकलीफ पर) सब्र और सवाब की चाहने वाली हुई हो।

(मिशकात)

(5) हजरते अब्दुल्लाह इब्ने जाफर रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने फरमाया कि जब हजरते जाफर के शहीद होने की खबर आई तो नबीये करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जाफर के

घर वालों के लिए खाना तैयार करो इसलिए कि उन को वह मुसीबत पहुँची है जो उन्हें खाना पकाने से रोक रखेगी।

(तिरमिजी, अबू दाऊद)

हजरत शैख अब्दुल हक्क मुहद्दिस दिहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि लिखते हैं कि इस हदीस शरीफ से साबित हुआ कि रिश्तेदारों, पड़ोसियों और दोस्तों को मैयित के घर पका हुआ खाना लाना मुस्तहब है। (अशिअतुल्लम्आत जिल्द 1)

कुछ जुरुरी मसले

(1) नौहा यानी मैयित की अच्छाईयाँ खूब बढ़ा चढ़ा कर बयान करके आवाज से रोना जिस को बैन कहते हैं हराम है।

(बहारे शरीअत—जौहरा)

(2) कपड़ा फाड़ना, मुंह नोचना, बाल खोलना, सर पर मिट्टी डालना, रान पर हाथ मारना और सीना कूटना सब जाहिलीयत के काम हैं। नाजाइज और गुनाह हैं।

(फतावा आलमगीरी जिल्द 1 सफा 157)

(3) आवाज से रोना मना है और आवाज ऊँची न हो तो वह मना नहीं। (बहारे शरीअत)

(4) पुरसा देना सुन्नत है और उस का वक्त मौत से तीन दिन तक है उस के बाद मकरुह है और अगर कोई मौजूद न था या जानता न था तो बाद में हरज नहीं। (बहारे शरीअत)

(5) पुरसा देने में यह कहे कि खुदाय तआला मैयित को बख्स दे और उस को अपनी रहमत में ढांके और तुम को सब्र की तौफीक दे और मुसीबत पर सवाब अता फरमाए। या इसी के मिस्ल दूसरे जुम्ले कहे।

(6) मैयित के घर सिर्फ पहले दिन खाना भेजना सुन्नत है उस के बाद मकरुह है। (बहारे शरीअत बहवाल ए आलमगीरी)

(7) मैयित के घर वाले तीजा के दिन या उस के बाद मैयित को सवाब पहुँचाने के लिए गरीबों और मिस्कीनों को खाना खिलायें तो बेहतर है लेकिन शादी विवाह की तरह दोस्तों और आम

मुसलमानों की दावत करें तो ना जाइज और बुरी बिदअत है कि इस किस्म की दावत तो खुशी के वक्त है न कि गम के वक्त। ऐसा ही फतावा आलमगीरी जिल्द 1 सफा 157 रद्दुलमुहतार जिल्द 1 सफा 629 और फतहुलकदीर जिल्द 2 सफा 102 में है

(8) तीजा वगैरा का खाना ज्यादा तर मैयित के छोड़े हुए माल से किया जाता है इस में यह लिहाज जुरूरी है कि वारिसों में नाबालिग न हो वरना सख्त हराम है लेकिन बालिग अगर अपने हिस्सा से करे तो हरज नहीं। (बहारे शरीअत बहवालए खानिया)

शहीद का बयान

(1) हजरते मिकदाद इब्ने मादीकरब रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि खुदाय तआला के तईं शहीद के लिए छे बातें हैं। (1) पहली ही मरतबा यानी खून की पहली बूँद गिरते ही उसे बख्शा जाएगा और उस का ठिकाना जन्नत में दिखाया जाएगा। (2) कब्र के अजाब से महफूज रखा जाएगा। (3) बड़ी घबराहट से अम्न में रहेगा। (4) उस के सर पर इज्जत का ऐसा ताज रखा जाएगा कि जिस का याकूत दुनिया और दुनिया की तमाम चीजों से बेहतर होगा। (5) उस के निकाह में बड़ी-बड़ी आँखों वाली बहत्तर (72) हूरें दी जायेंगी और उस के करीबी लोगों में से सत्तर (70) आदमियों के लिए उस की शफाअत कबूल की जाएगी। (तिरमिजी)

(2) हजरते अब्दुल्ला इब्ने अम्र इब्ने आस रजियल्लाहु तआला अनहुमा से रिवायत है कि नबीये करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि खुदाय तआला की राह में कत्ल किया जाना कर्ज के इलावा हर गुनाह को मिटा देता है। (मुस्लिम शरीफ)

(3) हजरते सहल इब्ने हुनैफ रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि जो शख्स खुदाय तआला से सच्चे दिल से शहीद होने को चाहे तो

अल्लाह तआला उसे शहीद का मरतबा दे देता है अगर चे वह अपने बिस्तर पर मरे। (मुस्लिम शरीफ)

(4) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जो शख्स मर गया और जिहाद न किया न जिहाद का ख्याल दिल में लाया तो उस की मौत निफाक की एक किस्म पर हुई। (मुस्लिम शरीफ)

(5) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि नबीये करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि अपनी जान व माल और जुबानों के जरिया दीन के दुश्मनों से जिहाद करो। (अबू दाऊद—नसई)

(6) हजरते अबु मूसा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि एक शख्स ने हुजूर के पास हाजिर होकर कहा कि कोई माले गनीमत के लिए लड़ता है, कोई मशहूर होने और नाम पैदा करने के लिए लड़ता है और कोई अपनी बहादुरी दिखाने के लिए लड़ता है तो उन में से हक्क की राह में लड़ने वाला कौन है? हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो इस लिए लड़ता है कि अल्लाह तआला के दीन का बोल बाला हो तो वह मुजाहिद फीसबीलिल्लाह है। (बुखारी मुस्लिम)

कब्रों की जियारत

(1) हजरते बुरीदा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि मैं ने तुम लोगों को कब्रों की जियारत से मना किया था। (अब मैं तुम्हें इजाजत देता देता हूं कि) उन की जियारत करो। (मुस्लिम)

(2) हजरते इब्ने मसऊद रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि मैं ने तुम लोगों को कब्रों की जियारत से रोका था तो अब मैं तुम्हें इजाजत देता हूं कि उन की जियारत करो इस लिए कि कब्रों की जियारत करना

दुनिया से नफरत पैदा करता है और आखिरत की याद दिलाता है।
(इब्ने माजा)

कुछ जुरुरी मसले

(1) कब्रों की जियारत का अच्छा तरीका यह है कि पायेंती की तरफ जाकर मैयित के मुँह के सामने खड़ा हो और यह कहे— अस्सलामु अलैकुम अहलदोरी कौमिम्मू मिनी न अनतुम सल फुन व इन्ना इन्शा अल्लाहु बिकुम लाहि कून नस अ लुल्लाह लना व लकु मुल अफ्व वल्आफि य ह—"फिर तीन या पाँच या सात या ग्यारह बार दुरुद शरीफ पढ़े उस के बाद जिस कदर हो सके कुर्आन शरीफ की सूरतें और आयतें तिलावत करे जैसे सूरए यासीन सूरए मुल्क, चारों कुल, सूरए फातिहा, सूरए बकरह के शुरु की कुछ आयतें, आयतुल कुरसी और सूरए बकरह की आखिरी आयतें वगैरा फिर आखिर में दुरुद शरीफ पढ़कर सवाब बख्शे। और बेहतर यह है कि सवाब बख्शने में सब मूमिनीन व मूमिनात को शामिल करे कि हर एक को पूरा-पूरा सवाब मिलेगा और किसी के सवाब में कोई कमी न होगी। रद्दुल मुहतार)

(2) औलिया अल्लाह के मजारों की जियारत के लिए सफर करना जाइज है। (बहारे शरीअत बहवालए रद्दुलमुहतार)

(3) औलिया अल्लाह की जियारत करना खुदाय तआला से महब्बत की दलील है और जियारत करने वालों को काफिर व बिदअती कहना खुली हुई गुमराही और बद अकीदगी है। ऐसा ही तफसीर सावी जिल्द 1 सफा 245 में है।

(4) अगर उर्स के दिनों में ना जाइज काम पाये जायें तो उन की वजह से जियारत न छोड़े इस लिए कि ऐसी बातों से नेक काम छोड़ा नहीं जाता बल्कि उसे बुरा जाने और बंद करने की कोशिश करे। ऐसा ही रद्दुल मुहतार जिल्द 1 सफा 631 में है।

(5) औरतों को अजीजों की कब्रों पर जाना मना है इस लिए कि वह रोयें धोयें गी।

(6) औलिया अल्लाह् के मजारों पर बरकत के लिए हाजिर होने में बूढ़ी औरतों के लिए हरज नहीं और जवानों के लिए ना जाइज है। ऐसा ही रद्दुल मुहतार जिल्द 1 सफा 631 में है।

और अल्लामा तहतावी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि रद्दुल मुहतार के मिस्ल लिखने के बाद फरमाते हैं हासिल यह है कि औरतों के लिए इजाजत सिर्फ उस सूरत में है जब कि जियारत ऐसे तरीका पर हो कि उस में कोई फितना न हो।

(तहतावी सफा 376)

और हजरत सदरुश्शरीआ रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने लिखा है कि अस्लम यह है कि औरतें बिल्कुल (यानी जवान हों या बूढ़ी सब) मना की जायें। (बहारे शरीअत जिल्द 4 सफा 549)

(7) मजारों पर हाथ फेरना, उन्हें चूमना, उन के सामने झुकना और ज़मीन पर चेहरा मलना मना है। ऐसा ही अशिअ तुल्लम्आत जिल्द 1 सफा 716 और फतावा आलमगीरी जिल्द 5 सफा 304 में है। और फतावा रजवीया जिल्द 4 सफा 8 में है। मजार को बोसा न देना चाहिए।

(8) कब्र को सज्दा करना हराम है और इबादत की नीयत से हो तो कुफ्र है। शरह फिक्ह अकबर सफा 230 में है कि अल्लाह के इलावा दूसरे के लिए सज्दा हराम है। और फतावा आलमगीरी जिल्द 5 सफा 231 में जवाहिरुल अख्लाती से है कि फकीह अबू जाफर रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने फरमाया कि अगर इबादत की नीयत से बादशाह को सज्दा किया या कोई नीयत उस वक्त न थी तो काफिर हो गया।

सवाब बख्शने का बयान

(1) हजरते सअद इब्ने उबादा रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि उन्हों ने हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम से कहा कि उम्मे सअद यानी मेरी माँ का इन्तिकाल हो गया है उन के लिए कौन सा सद्का अफ्जल है सरकारे अकदस ने फरमाया पानी

(बेहतरीन सद्का है तो हुजूर के कहने के मुताबिक) हजरते सअद रजियल्लाहु तआला अनहु ने कुआँ खुदवाया और उसे अपनी माँ की तरफ निसबत करते हुए) कहा यह कुआँ सअद की माँ के लिए है। यानी इस का सवाब उन की रुह को मिले।

(अबू दाऊद—मिशकात सफा 199)

(2) हजरते आइशा रजियल्लाहु तआला अनहा से रिवायत है कि एक शख्स आये और उन्होंने कहा या रसूलल्लाह! मेरी माँ यकायक मर गई और वह किसी बात की वसीयत न कर सकी। मेरा ख्याल है कि मौत के वक्त अगर उसे कुछ कहने सुन ने का मौका मिलता तो वह खैरात जुरुर करती तो अगर मैं उसकी तरफ से खैरात करुँ तो क्या उस की रुह को सवाव पहुंचे गा? सरकारे अकदस ने फरमाया कि हाँ पहुँचे गा।

(मुस्लिम शरीफ जिल्द 1 सफा 324)

अल्लामा नौवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि लिखते हैं कि इस हदीस शरीफ से साबित हुआ कि अगर मैयित की तरफ से खैरात किया जाए तो मैयिक को उस का फाइदा और सवाब पहुंचता है। इसी पर आलिमों का इत्तिफाक है।

(नौवी शरह मुस्लिम जिल्द 1 सफा 324)

ऊपर की हदीसों से यह बातें खुल्लम-खुल्ला मालूम हुईं।

(1) मैयित को सवाब बख्शने के लिए पानी बेहतरीन ख़ैरात है कि कुवाँ वगैरा खुदवा कर उस का सवाब मैयित को बख्श दिया जाए।

(2) मैयिक को किसी नेक काम का सवाव बख्शना बेहतर है।

(3) सवाब बख्शने के शब्द जुबान से कहना सहाबी की सुन्नत है।

(4) खाना या मिठाई बगैरा को सामने रख कर सवाब बख्शना जाइज है इसलिए कि हजरते सअद रजियल्लाहु तआला अनहु ने करीब के इशारा का शव्द वोलते हुए फरमाया "हाजिही लि उम्मि सअद"—यह कुआँ सअद की माँ के लिए है—यानी ऐ अल्लाह तआला

इस कुयें के पानी का सवाब मेरी माँ को दे—इस से मालूम हुआ कि कुवाँ उन के सामने था।

(5) गरीब व मिस्कीन को खाना वगैरा देने से पहले भी सवाब बख्शना जाइज है। जैसा कि हुजूर के सहाबी ने किया कि कुवाँ तैयार होने के साथ उन्हों ने सवाब बख्श दिया हालाँ कि लोगों के पानी इस्तिमाल करने के बाद सवाब मिलेगा। इसी तरह अगरचे गरीब व मिस्कीन को खाना देने पर सवाब मिलेगा लेकिन उस सवाब को पहले ही बख्श देना भी जाइज है।

(6) किसी चीज पर मैयित का नाम आने से वह चीज हराम न होगी जैसे गौस पाक का बकरा और गाजी मियाँ का मुरगा वगैरा इसलिए कि एक बड़े मरतबा के सहाबी ने उस कुयें को अपनी मरहूमा माँ के नाम से मनसूब किया था जो आज तक बीरे (कुवाँ) उम्मि सअद ही के नाम से मशहूर है।

जकात का बयान

(1) हजरते इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि जो शख्स माल हासिल करे तो उस पर उस वक्त तक जकात नहीं जब तक कि उस पर एक साल न गुजर जाए। (तिरमिजी)

(2) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जो शख्स सोने या चाँदी के शरई निसाब का मालिक हो और वह उस का हक्क यानी जकात न अदा करे तो कियामत के दिन उस के लिए उस सोने और चाँदी की सिलें बनाई जायें गी और उन्हें आग में तपाया जाए गा। फिर उन सिलों से उन की करवट, माथा और पीठ को दागा जाए गा और जब वह ठंडी हो जाएगी तो फिर जहन्नम की आग में गरमा कर दागा जाएगा और हमेशा इसी तरह होता रहेगा।

(मुस्लिम)

(3) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिस शख्स को खुदाय तआला ने माल दिया तो उस ने उस की जकात नहीं अदा की तो उस के माल को कियामत के दिन गन्जे साँप की शक्ल में बदल दिया जायेगा जिस के सर पर दो चित्तियाँ होंगी वह साँप उस के गले में हार बनाकर डाल दिया जाएगा फिर वह साँप उसकी बाछें पकड़े गा और कहेगा कि मैं तेरा माल हूँ, मैं तेरा खजाना हूं उस के बाद हुजुर ने पारा 4 रुकू 9 की आयत पढ़ी जिस का मतलब यह है कि "और जो लोग कनजूसी करते है उस चीज में जिसे खुदाय तआला ने उन्हे अपनी मिहरबानी से दिया तो हरगिज उसे अपने लिए अच्छा न समझें बल्कि वह उन के लिए बुरा है। जल्द ही वह माल कि जिस में कनजूसी किया था कियामत के दिन उन के गले का हार होगा। (बुखारी शरीफ)

(4) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि तुम्हारा खजाना कियामत के दिन एक गंजा साँप बनेगा उस का मालिक उससे भागेगा और वह साँप उस को खोजता फिरेगा यहाँ तक की उस को पा लेगा और उसकी उंगलियों को चबाएगा। (अहमद)

(5) हजरते अम्र इब्ने शुऐब रजियल्लाहु तआला अनहुमा अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं कि दो औरतें हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के पास हाजिर हुई और उन के हाथों में सोने के दो कंगन थे आप ने उन से पूछा क्या तुम इन की जकात देती हो? उन्हों ने कहा नहीं आप ने फरमाया क्या तुम इस बात को पसंद करती हो कि खुदाय तआला तुम को आग के दो कंगन पहनाए? उन्हों ने कहा नहीं। आप ने फरमाया तो फिर उन की जकात अदा किया करो। (तिरमिजी)

(6) हजरते समुरा इब्ने जुनदब रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम हम को हुक्म देते थे कि हम ब्युपार के लिए तैयार की जाने वाली चीजों की जकात निकाला करें। (अबू दाऊद)

(7) हज़रते मूसा इब्ने तलहा रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि हमारे पास हजरत मआज इब्ने जबल रजियल्लाहु तआला अनहु का वह खत मौजूद है जिसे हुजूर ने उन्हें भेजा था। रावी ने कहा कि हुजूर ने मआज इब्ने जबल को हुक्म फरमाया था कि वह गेहूं, जौ अँगूर और खुजूर की पैदावार में (मुसलमानों से) जकात वसूल करें। (मिशकात)

कुछ जुरुरी मसले

(1) जकात के बारे में मालिके निसाब वह शख्स है जो साढ़े बावन तोले चाँदी या साढ़े सात तोला सोने का मालिक हो या उन में से किसी एक की कीमत के तिजारती सामान का मालिक हो और जिन चीजों का मालिक हो वह सब अस्ली हाजत से ज्यादा और दैन (कर्ज) से फारिग हों। मालिके निसाब की यह तारीफ सिर्फ छुपी हुई दौलत के लिहाज से है।

(2) जकात के देने में देर करने वाला गुनहगार है उस की गवाही नहीं कबूल की जाएगी। (बहारे शरीअत फतावा आलमगीरी जिल्द 1 सफा 160)

(3) जकात का रुपया मुरदा के कफन व दफन या मस्जिद और मदरसा के बनाने में नहीं लगाया जा सकता ऐसा ही फतावा आलमगीरी जिल्द 1 सफा 176 में है।

(4) जकात का माल अगर मस्जिद और मदरसा वगैरा के बनाने में खर्च करना चाहें तो उस का तरीका यह है कि किसी गरीब आदमी को दे दें फिर वह खर्च करे तो सवाब दोनों को मिलेगा।

(रद्दुलमुहतार बहारे शरीअत)

(5) इस जमाना के वहाबी जो कि अल्लाह की तौहीन करते हैं और हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की जात में ऐब निकालते हैं जिन को मक्का शरीफ और मदीना तैयिबा के बड़े-बड़े आलिमों ने बिलइत्तिफाक काफिर व मुरतद कहा है। अगरचे वह

अपने आप को मुसलमान कहें उन्हें जकात देना हराम और सख्त हराम है और अगर दी तो हरगिज अदा न होगी।

(बहारे शरीअत)

(6) गेहूँ, जौ, ज्वार, बाजरा, धान और हर किस्म के गल्ले, अलसी, कुसुम, अखरोट, बादाम और हर किस्म के मेवे, रूई, फूल, गन्ना, खरबूज, तरबूज, खीरा, ककड़ी, बैंगन और हर किस्म की तरकारियाँ सब में जकात वाजिब है। थोड़ा पैदा हो या ज्यादा

(आलमगीरी बहारे शरीअत)

(7) जो खेत बरसात या नहर नाले के पानी से सींचा जाए उस में दसवाँ हिस्सा वाजिब है और जिस की सिंचाई चरसे डोल टियुब-वेल से हो उस में पैदावार का बीसवाँ हिस्सा वाजिब है और अगर पानी खरीद कर सिंचाई की जब भी बीसवाँ हिस्सा वाजिब है।

(दुर्रे मुख्तार रद्दुलमुहतार)

(8) जिस चीज में दसवाँ या बीसवाँ हिस्सा वाजिब हुआ उस में कुल पैदावार का दसवाँ या बीसवाँ दिया जाएगा। खेती के खर्चे यानी हल 'बैल' देख भाल करने वाले और काम करने वालों की मजदूरी या बीज वगैरा की कीमत उन में से कोई खर्च भी जकात में मुजरा नहीं किया जाएगा (दुर्रे मुख्तार बहारे शरीअत)

सदकए फित्र

(1) हजरते इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने वाजिब ठहराया सदकए फित्र को गुलाम 'आजाद' मर्द, औरत, बच्चे, और बूढ़े हर मुसलमान पर, एक साअ जौ या खजूर और हुक्म फरमाया कि नमाजे (ईद) के लिए निकलने से पहले उस को अदा किया जाए।

(बुखारी मुस्लिम)

(2) हजरते इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने रम-जान के आखिर में लोगों से फरमाया कि तुम लोग अपने रोजों का सदका अदा करो। क्योंकि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इस सद्का को हर मुसलमान पर मुकर्रर फरमाया है चाहे वह

आजाद हो या गुलाम, मर्द हो या औरत, छोटा हो या बड़ा—हर एक की तरफ से एक साअ खजूर या जौ या आधा साअ गेहूँ

(अबू दाऊद नसई)

(3) हजरते अब्दुल्लाह इब्ने सालबा या सालबा इब्ने अब्दुल्लाह इब्ने अबू सगीर अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि एक साअ गेहूँ दो आदमी की तरफ से काफी है चाहे वह बालिग हों या ना बालिग आजाद हों या गुलाम, मर्द हों या औरत—खुदाय तआला उस से तुम्हारे मालदार को पाक करता है और गरीब को उससे ज्यादा देता है जितना कि उस ने दिया (अबूदाऊद)

(4) हजरते इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने सद्‌कए फित्र इसलिए मुकर्रर किया ताकि वाहियात और बेहूदा बातों से रोजा पाक हो जाए और दूसरी तरफ मिस्कीनों के लिए खूराक हो जाए।

(अबू दाऊद)

(5) हजरते अम्र इब्ने शुऐब रजियल्लाहु तआला अनहुमा अपने बाप से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं कि नबीये करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने एक शख्स को भेजा कि मक्का शरीफ की गलियों में इलान कर दे कि सद्‌कए फित्र हर मुसलमान पर वाजिब है चाहे वह मर्द हो या औरत, आजाद हो या गुलाम, नाबालिग हो या बालिग (तिरमिजी)

कुछ जुरुरी मसले

(1) सद्‌कए फित्र मालिके निसाब पर वाजिब है कि अपनी तरफ से और अपने छोटे बच्चों की तरफ से निकाले जब कि बच्चा मालिके निसाब न हो और अगर हो तो बच्चा का सद्‌का उसी के माल से अदा किया जाए—

(दुर्रे मुख्तार—बहार)

(2) सद्‌कए फित्र के मसले में मालिके निसाब वह शख्स है जो साढ़े बावन तोला चाँदी या साढ़े सात तोला सोना का मालिक हो,

या उन में से किसी एक की कीमत के सामान का मालिक हो और जिन चीजों का मालिक हो वह सब अस्ली हाजत से ज्यादा हों।

(3) सद्कए फित्र वाजिब होने के लिए रोजा रखना जुरुरी नहीं। अगर किसी सबब जैसे सफर, बीमारी, बुढ़ापे की वजह से या मआजल्लाह बिला वजह रोजा न रखा जब भी वाजिब है।

(बहारे शरीअत रद्दुलमुहतार जिल्द 2 सफा 76)

(4) अगर बाप गरीब हो या मर गया हो तो दादा पर अपने गरीब यतीम पोते, पोती, की तरफ से सद्कए फित्र देना वाजिब है। (दुर्रे मुख्तार)

(5) गेहूँ, जौ, खजूर और मुनक्का के इलावा अगर किसी दूसरी चीज से फितरा अदा करना चाहें जैसे चावल, बाजरा, और कोई गल्ला, तो आधे साअ गेहूँ या एक साअ जौ की कीमत का लिहाज करना होगा—(बहारे शरीअत)

(6) ईद के दिन उजाला होने के बाद ईदगाह जाने से पहले सद्कए फित्र निकालना मुस्तहब है। ऐसा ही फतावा आलमगीरी जिल्द 1 सफा 180 में है।

(7) रमजान के महीना में और रमजान से पहले सद्कए फित्र अदा करना जाइज है। (फतावा आलमगीरी जिल्द 1 सफा 179)

(8) साअ का वजन तीन सौ इक्क्यावन (351) रुपया भर है यानी अंग्रेजी सेर से चार सेर छे छटांक एक रुपया भर। और आधा साअ एक सौ साढ़े पच्हत्तर (175½) रुपया भर है। यानी दो सेर तीन छटांक आठ आना भर। इसलिए कि साअ वह पैमाना है जिस में आठ रत्ल अनाज आए ऐसा ही शरह विकाया जिल्द 1 सफा 239 में है और एक रत्ल आधा मन है। ऐसा ही शामी, जिल्द 2 सफा 79 में है कि साअ वह पैमाना हुआ कि जिस में चार मन अनाज आए। मन को मुद भी कहते हैं ऐसा ही रद्दुलमुहतार जिल्द 2 सफा 79 पर है और मन जिस को मुद भी कहते हैं चालीस अस्तार का होता है और हर अस्तार साढ़े चार (4½) मिस्काल तो हर मन एक सौ अस्सी (180) मिस्काल हुआ ऐसा ही शरह विकाया जिल्द

1 सफा 240 में है। तो साअ वह पैमाना हुआ कि जिसमें (4 मन × 180 मिस्काल = 720 मिस्काल) सात सौ बीस मिस्काल अनाज आए। फिर अनाज हल्के भारी हर तरह के होते हैं। साअ के बारे में किस अनाज का इतिबार है? तो कुछ बड़े आलिमों ने माश व अदस यानी मसूर और उरद का इतिबार किया है। और सदरुश्शरीआ शरहविकाया के लेखक ने फरमाया कि माश व अदस गेहूँ से भारी होते हैं लिहाजा वह पैमाना कि जिस में आठ रत्ल यानी सात सौ बीस मिस्काल मसूर और उरद आएगा छोटा होगा और वह पैमाना कि जिसमें सात सौ बीस मिस्काल गेहूँ आए बड़ा होगा लिहाजा ज्यादा इहतियात इस में है कि गेहूँ का इतिबार किया जाए (शरह विकाया जिल्द 1 सफा 239)

और चूँकि गेहूँ जौ से भारी होता है लिहाजा वह पैमाना कि जिस में आठ रत्ल यानी सात सौ बीस मिस्काल जौ आए बड़ा होगा इसी लिए अल्लामा इब्ने आबिदीन शामी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने शरह विकाया के लेखक की इस इहतियात को लिखने के बाद फरमाया कि सब से ज्यादा इहतियात यह है कि जौ का इतिबार किया जाए बल्कि यह भी लिखा कि कुछ आलिमों ने हाशिया जैलई से नक्ल किया है कि हरम शरीफ मक्का मुअज्जमा के पहले और इस वक्त के बुजुरगों का अमल और फतवा इसी पर है कि साअ के बारे में जौ का इतिबार किया जाए जैसा कि रद्दुलमुहतार जिल्द 2 सफा 80 पर है।

खुलासा यह है कि साअ वह पैमाना है कि जिस में सात सौ बीस मिस्काल जौ आयें इसी में सब से ज्यादा इहतियात है और इसी पर हरम शरीफ मक्का मुअज्जमा के बुजुरगों का अमल और फतवा है। और मिस्काल का वजन साढ़े चार माशा है तो साअ वह पैमाना हुआ कि जिस में (720 मिस्काल × $4\frac{1}{2}$ माशा = 3240 माशे) सात सौ बीस मिस्काल यानी तीन हजार दो सौ चालीस माशे जौ अयें। फिर चूँकि बारा माशे का तोला होता है तो साअ वह पैमाना हुआ कि जिस में (3240 माशे ÷ 12 = 270 तोले)

तीन हजार दो सौ चालीस माशे यानी 270 तोले जौ आयें। और चूँकि एक रुपया का वजन सवा ग्यारा माशे होता है इसलिए साअ वह पैमाना हुआ कि जिस में 3240 माशे ÷ 11¼ माशे = 288 रुपया भर) बत्तीस सौ चालीस माशे यानी दो सौ अठासी रुपया भर जौ आयें। और आधा साअ वह पैमाना हुआ कि जिस में एक सौ चव्वालीस रुपया भर जौ आयें। फिर चूँकि गेहूँ जौ से भारी होता है तो जिस पैमाने में एक सौ चव्वालीस रुपया भर जौ आएगा उसी पैमाने में गेहूं एक सौ चव्वालीस रुपया भर से ज्यादा आएगा। आला हजरत इमाम अहमद रजा फाजिले बरेलवी रजियल्लाहु तआला अनहु ने इस का तजरबा किया तो वह पैमाना कि जिस में एक सौ चव्वालीस रुपया भर जौ आए उसी पैमाना में एक सौ पच्हत्तर रुपया अठन्नी भर गेहूं आए। फतावा रजविया जिल्द 1 लाहौरी सफा 145 में है कि फकीर ने 27 रमजानुल मुबारक सन् 27 हिजरी को नीम साअ शओरी का तजरबा किया जो ठीक चार रत्ल जौ का पैमाना था उसमें गेहूं बराबर हमवार मुसत्तह भर कर तौले तो एक सौ चव्वालीस रुपया भर जौ की जगह एक सौ पच्हत्तर रुपया आठ आना भर गेहूं आए तो आधा साअ गेहूँ सदक ए फित्र का वजन एक सौ पच्हत्तर रुहया आठ आना भर हुआ जो अंग्रेजी सेर से दो सेर तीन छटाँक और आठ आने भर है इस लिए कि अंग्रेजी सेर अस्सी रुपया भर है यानी पूरे पच्हत्तर तोले का है। (मनजरुल फतावा) और नये पैमाने से आधे साअ गेहूँ का वजन दो किलो और तकरीबन 47 ग्राम होगा क्यों कि अस्सी रुपया भर का सेर नौ सो तैंतीस ग्राम का होता है। यहीं से यह बात साबित हो गई कि आला हजरत फाजिले बरेलवी रजियल मौला तआला अनहु का मस्लक इन्तिहाई इहतियात और आला दरजा तहकीक का है।

सखी और कनजूस

(1) हजरते अबू सईद रजियल्लाहु तआला अनहु कहते हैं कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि इनसान का अपनी

जिन्दगी के दिनों में एक दिरहम खैरात करना मरने के वक्त सो दिरहम खैरात करने से बेहतर है। (अबू दाऊद)

(2) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु कहते हैं कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि सखी अल्लाह तआला से करीब है जन्नत से करीब है। लोगों से करीब है और जहन्नम से दूर है और कनजूस अल्लाह तआला से दूर है जन्नत से दूर है लोगों से दूर है और जहन्नम से करीब है और जाहिल सखी खुदा के नजदीक इबादत गुजार बखील से कहीं बेहतर है। (तिरमिजी)

(3) हजरते अबू बकर सिद्दीक रजियल्लाहु तआला अनहु कहते हैं कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि मक्कार और बखील जन्नत में न जायें गे और न वह शख्स जो खैरात देकर इहसान जताए। (तिरमिजी)

(4) हजरते अबू सईद रजियल्लाहु तआला अनहु कहते हैं कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि मुमिन में दो बातें यानी कनजूसी और बद मिजाजी जमा नहीं होतीं। (तिरमिजी)

(5) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु कहते हैं कि उन्हों ने हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम को यह कहते हुए सुना है कि बनी इस्राईल में तीन आदमी थे एक कोढ़ी, दूसरा गन्जा और तीसरा अन्धा, अल्ला तआला ने उन का इमतिहान लेना चाहा और उनकी तरफ एक फरिश्ता को भेजा फरिश्ता सब से पहले कोढ़ी के पास आया और पूछा तुझे सब से ज्यादा कौन सी चीज पसंद है उस ने कहा कि अच्छा रंग और खूब सूरत चमड़ा और उस ऐब का दूर हो जाना जिसके सबब लोग मुझ से नफरत करते हैं, हुजूर ने फरमाया कि यह सुन कर फरिश्ते ने उस के बदन पर हाथ फेरा और उस का कोढ दूर हो गया और उस के बदन का रंग निखर गया और चमड़ा अच्छे रंग का हो गया। उसके बाद फरिश्ता ने कहा तुजको किस किस्म का माल पसंद है? उस ने ऊँट कहा या गाय (हदीस के रावी हजरते इसहाक को शक है कि उस ने ऊँट कहा या गाय) बहर हाल कोढ़ी और गंजे में से एक ने ऊँट बतलाए

और दूसरे ने गायें। हुजूर ने फरमाया कि उस के चाहने के मुवाफिक उस को हमल वाली ऊँटनियां दी गईं और फरिश्ता ने उस को यह दुआ दी कि खुदा तेरे लिए उन में बरकत दे। हुजूर ने फरमाया कि उसके बाद फरिश्ता गंजे के पास आया और पूछा तुझ को कौन सी चीज ज्यादा पसंद है उसने कहा खूबसूरत बाल और उस ऐब का दूर हो जाना जिस के सबब से लोग मुझ से नफरत करते हैं यानी गंजापन। हुजूर ने फरमाया कि फरिश्ता ने उस के सर पर हाथ फेरा उस का गंजापन दूर हो गया और खूब सूरत बाल उसे दिए फिर फरिश्ता ने उस से पूछा तुझ को कौन सा माल पसंद है उसने कहा गायें तो उस को हमल वाली गायें दी गईं और फरिश्ता ने उस को दुआ दी कि खुदा तेरे इस माल में बरकत दे। हुजूर फरमाते हैं कि उस के बाद फरिश्ता अन्धे के पास गया और पूछा तुझ को कौन सी चीज बहुत पसंद है? उस ने कहा कि अल्लाह तआला मेरी आँखों की रौशनी मुझ को वापस कर दे ताकि मैं अपनी आँखों से लोगों को देखूँ। हुजूर फरमाते हैं कि फरिश्ता ने उस की आँखों पर हाथ फेरा और खुदा ने उसकी आँख की रौशनी उस को लौटा दी फिर फरिश्ता ने उस से पूछा किस किस्म का माल तुझ को पसंद है? उस ने कहा बकरियाँ चुनानचे उस को ज्यादा बच्चे देने वाली बकरियाँ दे दी गईं। पस उन तीनों के माल में खुदा ने बरकत दी और कोढ़ी और गंजे के ऊँटों और गायों से जंगल भर गया और अन्धे की बकरियों के झुंड मैदानों में नजर आने लगे। हुजूर फरमाते हैं कि उस के बाद फरिश्ता कोढ़ी की सूरत में उस कोढ़ी के पास पहुँचा और कहा कि मैं एक मिस्कीन आदमी हूँ मेरे सफर का सामान खत्म हो गया अब मंजिले मकसूद तक पहुंचना खुदा की मेहरबानी और तेरी मदद से हो सकता है पस मैं तुझ से उस की जात का वास्ता देकर जिस ने तुझ को अच्छा रंग अच्छा चमड़ा और माल दिया है एक ऊँट माँगता हूँ कि उस के जरिए मंनजिले मकसूद तक पहुँच जाऊँ कोढ़ी ने उस जवाब में कहा मेरे ऊपर बहुत से हक्क हैं (इतनी गुनजाइश नहीं है कि मैं तेरी कुछ मदद कर सकूँ) फरिश्ता ने उस के जवाब में

कहा मैं गोया तुझ को पहचानता हूँ तू वही कोढ़ी है जिस से लोग नफरत करते थे और तू गरीब था। खुदा ने तुझे माल दिया कोढ़ी ने कहा यह माल मुझ को अपने खानदान से (वरासत में) मिला है। फरिश्ता ने कहा अगर तू झूटा है तो खुदा तुझ को फिर वैसा ही कर दे जैसा कि तू पहले था। उसके बाद हुजूर ने फरमाया कि फिर फरिश्ता गंजे की सूरत में उस गंजे के पास आया और उस से भी वही कहा जो कोढ़ी से कहा था और उसने भी वही जवाब दिया जो कोढ़ी ने जवाब दिया था तो फरिश्ते ने कहा अगर तू झूटा है तो खुदा तुझ को वैसा ही कर दे जैसा कि तू पहले था। फिर हुजूर ने फरमाया कि उस के बाद फरिश्ता अन्धे के पास आया और कहा कि मैं एक मर्द मिस्कीन और मुसाफिर हूँ और मेरा सामाने सफर जाता रहा, पस अब मनजिले मकसूद तक पहुँचना खुदा की इनायत से फिर तेरे जरिए हो सकता है तो मैं तुझ से उस जात का वास्ता देकर जिस ने तुज को दो बारा आँख की रौशनी दी है एक बकरी माँगता हूँ कि उसके जरिए अपना सफर पूरा कर लूँ। अन्धे ने यह सुन कर कहा बेशक मैं अन्धा था खुदा ने मेरी आँख की रौशनी मुझ को वापस दी पस तुझ को जितना चाहिए ले जा और जितना तेरा जी चाहे छोड़ जा। कसम है खुदा की आज मैं तुझ को तकलीफ नहीं दूँगा उस चीज को वापस करने की जो तू लेगा। फरिश्ते ने यह सुन कर कहा तू अपना माल अपने पास रख तुम लोगों का इम्तिहान लिया गया था खुदा तुझ से राजी और खुश हुआ। और तेरे साथियों से खुदाय तआला नाराज हुआ।

(बुखारी—मुस्लिम)

भीक माँगना कैसा है ?

(1) हजरते अब्दुल्लाह इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि आदमी हमेशा लोगों से भीक माँगता रहेगा यहाँ तक कि कियामत के दिन वह इस हालत में आएगा कि उस के मुँह पर गोश्त की

बोटी न होगी यानी निहायत बे आबरू होकर आएगा

(बुखारी मुस्लिम)

(2) हज़रते जुबैर इब्ने अव्वाम रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि तुम में से जो शख्स अपनी रस्सी ले और लकड़ियों का एक गठ्ठा पीठ पर लाद कर लाए और उनको बेचे और अल्लाह तआला भीक माँगने की बेइज्जती से उस के चेहरे को बचाए तो यह बेहतर है इस बात से कि लोगों से भीक माँगे और वह उस को दें या न दें (बुखारी)

(3) हज़रते इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अनहुमा से रिवायत है कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीममिम्बर पर बैठे हुए थे। सद्का का और भीक माँगने से बचने का चर्चा करते हुए फरमाया कि ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है। ऊपर वाला हाथ खर्च करने वाला है और नीचे वाला हाथ माँगने वाला

(बुखारी मुस्लिम)

(4) हज़रते समुरा इब्ने जुनदब रजियल्लाहु तआला अनहु नें कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि भीक माँगना एक किस्म की छीलन है कि आदमी भीक माँग कर अपने मुँह को नोचता है तो जो चाहे अपने मुंह पर इस छीलन को खूब जाहिर करे और जो चाहे उस से अपना चेहरा बचाए रखे। हाँ अगर आदमी हुकूमत वाले से अपना हक्क माँगे या ऐसी बात में सुवाल करे कि उस से चार ए कार न हो तो जाइज है।

(अबूदाऊद तिरमिजी)

(5) हज़रते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया जो शख्स माल बढ़ाने के लिए लोगों से भीक माँगता है वह ऐसा है कि आग का टुकड़ा माँगता है तो उस को इख्तियार है कि बहुत माँगे या कम माँगे

(मुस्लिम)

कुछ ज़रूरी मसले

(1) जो शख़्स अपनी शरई ज़रूरतों के लाइक़ माल रखता है या उसके कमाने पर कुदरत रखता है उसे भीक माँगना हराम है और जो शख़्स उस के माल को जानता हो उस पर देना हराम लेने वाला और देने वाला दोनों गुनहगार

(फ़तावा रज़विया जिल्द 4 सफ़ा 501)

(2) भीक मांगने वाले तीन तरह के होते हैं। एक मालदार जैसे बहुत से क़ौम के फ़कीर, जोगी और साधू। उन्हें भीक माँगना हराम और उन्हें देना भी हराम। ऐसे लोगों को देने से ज़कात नहीं अदा हो सकती।

दूसरे वह जो हकीकत में फ़कीर हैं यानी निसाब के मालिक नहीं हैं मगर मज़बूत और तनदुरुस्त हैं कमाने की कूवत रखते हैं और भीक माँगना किसी ऐसी ज़रूरत के लिए नहीं जो उन की ताकत से बाहर हो। मज़दूरी वग़ैरा कोई काम नहीं करना चाहते। मुफ़्त खाना खाने की आदत पड़ी है जिसके सबब भीक माँगते फिरते हैं। ऐसे लोगों को भीक माँगना हराम है। और जो उन्हें माँगने से मिले वह उन के लिए ख़बीस है। हदीस शरीफ़ में है कि न किसी मालदार के लिए सद्क़ा हलाल है न किसी तनदुरुस्त और ताक़त वाले के लिए। उन्हें भीक देना मना है कि गुनाह पर मदद करना है। लोग अगर नहीं देंगे तो वह मेहनत मज़दूरी करने पर मजबूर होंगे। अल्लाह तआला ने फ़रमाया– गुनाह और ज़्यादती पर मदद न करो (पारा 6 रुकू 5) मगर ऐसे लोगों को देने से ज़कात अदा हो जाएगी जब कि और कोई शरई रुकावट न हो। इसलिए कि वह निसाब के मालिक नहीं हैं।

तीसरे वह जो न माल रखते हैं और न कमाने की ताकत रखते हैं। या जितने की हाजत है उतना कमाने की ताकत नहीं रखते, ऐसे लोगों को अपनी हाजत पूरी करने भर की भीक माँगना जाइज़ है और माँगने से जो कुछ मिले वह उन के लिए हलाल और तैयिब है।

और यह लोग जकात के बेहतरीन मसरफ हैं। उन्हें देना बहुत बड़ा सवाब है। और यही वह लोग हैं जिन्हें झिड़कना हराम है।
(फतावा रजविया जिल्द 4 सफा 468)

(3) ढोल, हारमोनियम, सारंगी बजाने वालों और गाने वालों को भीक देना मना है। (अशिअतुल्लम्आत जिल्द 2 सफा 30)

(4) आज कल बहुत से लोग अंधे, लूले, लंगड़े, अपाहिज को भीक नहीं देते और गाने वाली, जवान औरतों से गाना सुनते और उन्हें भीक देते हैं यह सख्त नाजाइज और हराम है।

रोजा का बयान

(1) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जब रमजान का महीना शुरु होता है तो आसमान के दरवाजे खोल दिए जाते हैं और एक रिवायत में है कि जन्नत के दरवाजे खोल दिए जाते हैं और जहन्नम के दरवाजे बंद कर दिए जाते हैं और शैतान जंजीरों में जकड़ दिए जाते हैं। और एक रिवायत में है कि रहमत के दरवाजे खोल दिए जाते हैं। (बुखारी—मुस्लिम)

हजरते शैख अब्दुल हक्क मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि इस हदीस की शरह में लिखते हैं कि आसमान के दरवाजे खोल दिए जाने का मतलब है लगातार रहमत का भेजा जाना और बगैर किसी रुकावट के खुदा की बारगाह में अमल का पहुँचना और दुआ का कबूल होना और जन्नत के दरवाजे खोल दिए जाने का मतलब है अच्छे अमल की तौफीक और हुस्ने कबूल अता फरमाना। और दोजख के दरवाजे बंद किए जाने का मतलब है रोजा दारों के नुफूस को बुरी बातों की आलूदगी से पाक करना और गुनाहों पर उभारने वाली चीजों से नजात पाना और दिल से लज्जतों के हासिल होने की ख्वाहिशों का तोड़ना और शैतानों को जंजीरों में जकड़ दिए जाने का मतलब है बुरे ख्यालों के रास्तों का बंद हो जाना। (अशिअतुल्लम्आत जिल्द 2 सफा 62)

(2) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जो शख्स ईमान के साथ सवाब की उम्मीद से रोजा रखेगा तो उस के अगले गुनाह बख्श दिए जायेंगे और जो ईमान के साथ सवाब की नीयत से रमजान की रातों में इबादत करेगा तो उस के अगले गुनाह बख्श दिए जायेंगे और जो ईमान के साथ सवाब हासिल करने की गरज से शबे कद्र में इबादत करेगा उस के अगले गुनाह बख्श दिए जायें गे। (बुखारी—मुस्लिम)

(3) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु कहते हैं कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जब रमजान के महीना की पहली रात होती है तो शैतानों और सरकश जिन्न कैद कर लिए जाते हैं और जहन्नम के दरवाजे बंद कर दिए जाते हैं (फिर रमजान भर) उन में से कोई दरवाजा खोला नहीं जाता और जन्नत के दरवाजे खोल दिए जाते हैं तो उन में से कोई दरवाजा बंद नहीं किया जाता और पुकारने वाला पुकारता है कि ऐ भलाई के चाहने वाले मुतवज्जिह हो और ऐ बुराई का इरादा रखने वाले ! बुराई न कर। और अल्लाह बहुत से लोगों को जहन्न से आजाद करता है और हर रात ऐसा होता है।

(तिरमिजी—इब्ने माजा)

(4) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु कहते हैं कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि रमजान आया यह बरकत का महीना है अल्लाह तआला ने इस के रोजे तुम पर फर्ज किये हैं। इस में आसमान के दरवाजे खोल दिए जाते हैं और जहन्नम के दरवाजे बंद कर दिए जाते हैं और सरकश शैतानों को हार पहनाए जाते हैं। और उस में एक रात ऐसी है जो हजार महीनों से अफ्जल है जो उस की बरकतों से महरुम रहा वह बेशक महरुम है। (मिश्कात)

(5) हजरते सलमान फारसी रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने शाबान के आखिर में वअज

फरमाया। ऐ लोगो ! तुम्हारे पास बड़ाइ वाला बरकत वाला महीना आया ! वह महीना जिस में एक रात हजार महीनों से अच्छी है उस के रोजे अल्लाह तआला ने फर्ज किए और उस की रात में नमाज पढ़ना ततौओ यानी नफल करार दिया है जो उस में नेकी का काम यानी नफल इबादत करे तो ऐसा है जैसे और महीना में फर्ज अदा किया। और जिस ने एक फर्ज अदा किया तो ऐसा है जैसे और दिनों में सत्तर (70) फर्ज अदा किया यह सब्र का महीना है और सब्र का सवाब जन्नत है और यह गमख्वारी का महीना है और इस महीना में मोमिन की रोजी बढ़ा दी जाती है। जो उस में रोजा दार को इफ्तार कराए उस के गुनाहों के लिए बखशिश है और उस की गरदन जहन्नम से आजाद कर दी जाए गी और उस में इफ्तार कराने वाले को वैसा ही सवाब मिलेगा जैसा रोजा रखने वाले को मिलेगा बगैर इस के कि उस के सवाब में कुछ कमी हो। हम ने कहा या रसूलल्लाह हम में का हर शख्स वह चीज नहीं पाता जिस से रोजा इफ्तार कराए। हुजूर ने फरमाया अल्लाह तआला यह सवाब उस शख्स को भी देगा जो एक घूँट दूध या एक खजूर या एक घूँट पानी से इफ्तार कराए और जिस ने रोजा दार को पेट भर खाना खिलाया उस को अल्लाह तआला मेरे हौज से पिलाए गा। वह कभी प्यासा न होगा। यहाँ तक की जन्नत में दाखिल हो जाए गा। यह वह महीना है कि इस का शुरु वाला हिस्सा रहमत है और इस का बीच वाला हिस्सा बख्शिश है और इस का आखिरी हिस्सा जहन्नम से आजादी है। और जो अपने गुलाम पर इस महीना में काम लेने में कमी कर दे तो अल्लाह तआला उसे बख्श देगा और जहन्नम से आजाद फरमाएगा। (बैहकी)

(6) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि नबीए करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि रमजान की आखीर रात में इस उम्मत की बख्शिश होती है। कहा गया क्या वह शबे कद्र है ? फरमाया नहीं। लेकिन काम करने वालों को उस वक्त मजदूरी पूरी दी जाती है जब वह काम वह पूरा कर ले। (अहमद)

(7) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि जिस को रोजा की हालत में खुद बखुद कै आ जाए उस पर कजा वाजिब नहीं और जो अपने इरादा से कै करे उस पर कजा वाजिब है।

(तिरमिजी—अबू दाऊद)

(8) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जो शख्स (रोजा रख कर) बुरी बात कहना और उस पर अमल करना न छोड़े तो खुदाय तआला को इस की परवा नहीं कि उसने खाना पीना छोड़ दिया है। (बुखारी)

इस हदीस शरीफ की शरह में हजरत शैख अब्दुल हक्क मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि लिखते हैं। मतलव यह है कि रोजा कबूल न होगा इस लिए कि रोजा के वाजिब करने का मकसद यही भूक और प्यास नहीं हैं बल्कि लज्जतों की ख्वाहिशों का तोड़ना और खुद गरजी की आग को बुझाना मकसद है ताकि नफ्स ख्वाहिशों की तरफ जांने के बजाय अल्लाह के हुक्म पर चलने वाला हो जाए। (अशिअतुल्लम्आत जिल्द 2 सफा 85)

(9) हजरते सल्मा इब्ने मुहब्बक रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जिस शख्स के पास ऐसी सवारी हो जो आराम से मंजिल तक पहुँचा दें तो उस को चाहिए कि रोजा रखे जहाँ भी रमजान आ जाए।

(अबू दाऊद)

(10) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि अल्लाह तआला ने (शरई) मुसाफिर से आधी नमाज मुआफ फरमादी (यानी मुसाफिर चार रकअत वाली फर्ज नमाज दो पढ़े) और मुसाफिर, दूध पिलाने वाली और पेट में बच्चा वाली औरत से रोजा मुआफ कर दिया। (यानी उन लोगों को इजाजत है कि उस वक्त रोजा न रखें बाद में कजा कर लें।

(अबू दाऊद—तिरमिजी)

हजरत शैख अब्दुल हक्क मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि इस हदीस शरीफ की शरह में लिखते हैं कि दूध पिलाने वाली और पेट में बच्चा वाली औरत को रोजा न रखने की इजाजत सिर्फ उस सूरत में है कि बच्चा को या खुद उस को रोजा से नुक्सान पहुँचे (वरना इजाजत नहीं है)

(11) हजरते अबू अय्यूब अंसारी रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जिस ने रमजान का रोजा रखा फिर उस के बाद छे रोजे शव्वाल के रखे तो उस ने गोया हमेशा रोजा रखा (मुस्लिम)

(12) हजरते अबू कतादा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि मुझे खुदाय तआला की रहमत से उम्मीद है कि अरफा के दिन का रोजा एक साल अगले और एक साल पिछले का गुनाह दूर कर देगा।

(मुस्लिम)

वाजेह हो कि अरफा का रोजा मैदाने अरफात में मना है।

(बहारे शरीअत)

(13) हजरते हफ्सा रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि चार चीजें हैं जिन्हें हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम नहीं छोड़ते थे। दसवीं मुहर्रम का रोजा, जिलहिज्जा के रोजे (एक से नौ तक) हर महीना के तीन रोजे, दो रकअतें फज्र की फर्ज से पहले (नसई)

(14) हजरते अबू जर रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि ऐ अबू जर! जब (किसी) महीना मे तीन दिन रोजा रखना हो तो तेरा, चौदा और पंदरा तारीख को (रोजा) रखो (तिरमिजी-नसई)

कुछ जुरुरी मसले

(1) पहली शव्वाल और 10-11-12 जिलहिज्जा को रोजा रखना मकरूह तहरीमी और नाजाइज है।

(तहतावी सफा 387 दुर्रेमुख्तार रद्दुलमुहतार जिल्द 2 सफा 86)

(2) इहतिलाम हो जाने या हमबिस्तरी करने के बाद नहाया नहीं और इसी हालत में पूरा दिन गुजार दिया तो वह नमाजों के छोड़ देने के सबब सख्त गुनहगार होगा मगर रोजा हो जाएगा। (बहरुर्राइक जिल्द 2 सफा 273 फतावा आलमगीरी जिल्द 1 सफा 187)

(3) बीमार को बीमारी के बढ़ जाने या देर में अच्छा होने या तन्ददुरुस्त को बीमार हो जाने का यकीन हो तो रोजा तोड़ने की इजाजत है। यकीन की तीन सूरतें हैं। (1) उसकी खुली हुई पहचान पाई जाती है। (2) या उस शख्स का अपना तजरबा है या किसी सुन्नी मुसलमान माहिर डाक्टर या हकीम ने उसकी खबर दी हो जब कि वह फासिक न हो और अगर न कोई पहचान हो न तजरबा न इस किस्म के डाक्टर ने उसे बताया बल्कि किसी काफिर या फासिक या बद मजहब डाक्टर या हकीम के कहने से रोजा तोड़ दिया तो कफ्फारा लाजिम आएगा।

(रद्दुलमुहतार जिल्द 2 सफा 120 बहारे शरीअत)

(4) जो शख्स रमजान में बिला सबब खुल्लम खुल्ला जान बूझ कर खाये तो बादशाहे इस्लाम उसे कत्ल कर दे।

(शामी—बहारे शरीअत)

(5) इतिकाफ करने वाले के सिवा दूसरों को मस्जिदों में रोजा इफ्तार करना खाना पीना जाइज नहीं।

(दुर्रे मुख्तार फतावा रजविया)

लिहाजा दूसरे लोग अगर मस्जिद में इफ्तार करना चाहते हैं तो इतिफाक की नीयत करके मस्जिद में जायें कुछ जिक्र या दुरुद शरीफ पढ़ने के बाद अब खा पी सकते हैं. मगर इस सूरत में भी मस्जिद की इज्जत जुरुरी है। आज कल बम्बई वगैरा की बहुत सी मस्जिदों में बल्कि कुछ देहातों में भी इफ्तार के वक्त मस्जिदों की बड़ी बे हुरमती (बेइज्जती) करते हैं जो नाजाइज और हराम है। इमाम और मस्जिदों के मुतवल्लियों को इस बात पर तवज्जुह करना जुरुरी है। वरना कियामत के दिन उन से सख्त पूछ गछ होगी।

चाँद देखने का बयान

(1) हजरते इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जब तक चाँद न देख लो रोजा न रखो और जब तक चाँद न देख लो इफ्तार न करो। और अगर बादल या गर्द व गुबार होने की वजह से चाँद नजर न आये तो (तीस दिन की) गिनती पूरी कर लो और एक रिवायत में है कि महीना कभी उन्नतीस (29) दिन का होता है पस तुम जब तक चाँद न देख लो रोजा न रखो और अगर तुम्हारे सामने बादल या गर्द व गुबार हो जाए तो तीस दिन की गिनती पूरी कर लो (बुखारी मुस्लिम)

हजरत शेख अब्दुल हक्क मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि इस हदीस की शरह में लिखते हैं कि शरीअत में जोतिषी की बात मोतबर नहीं उस पर भरोसा नहीं कर सकते और हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम व सहाबा व ताबिईन रिजवानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन और अगले पिछले आलिमों ने उस पर अमल नहीं किया और न इतिबार किया।

(2) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि चाँद देख कर रोजा रखना शुरू करो और चाँद देख कर इफ्तार करो और अगर बादल हो तो शाबान की गिनती पूरी कर लो।

(3) हजरते इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि एक देहात के रहने वाले ने हुजूर के पास जाकर कहा कि मैंने रमजान का चाँद देखा है हुजूर ने फरमाया क्या तू गवाही देता है कि अल्लाह तआला के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं। कहा हाँ फरमाया क्या तू गवाही देता है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) अल्लाह तआला के रसूल हैं उसने कहा हाँ! हुजूर ने फरमाया ऐ बिलाल! लोगों में इलान कर दो कि कल रोजा रखें। (अबू दाऊद—तिरमिजी—नसई)

हजरते शैख अब्दुल हक्क मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फरमाते हैं कि इस हदीस शरीफ से साबित हुआ कि एक मर्द मस्तूरुलहाल यानी जिस का फासिक होना जाहिर न हो उस की खबर रमजान के चाँद के बारे में मान ली जाती है शहादत का शब्द जुरुरी नहीं। (अशिअतुल्लम्आत जिल्द 2 सफा 79)

कुछ जुरुरी मसले

(1) चाँद के साबित होने की कई सूरतें हैं—

(1) चाँद की खबर—29 शाबान को चाँद निकलने की जगह साफ न हो तो एक मुसलमान मर्द या औरत जब कि फासिक न हो तो उस की खबर से रमजान का चाँद साबित हो जाएगा और चाँद निकलने की जगह साफ होने की सूरत में एक शख्स का जो फासिक न हो आबादी से बाहर खुले मैदान में या ऊँचे मकान पर से देखना काफी है वरना एक बड़ी जमाअत चाहिए जो अपनी आँख से चाँद का देखना बयान करे बाकी ग्यारा महीनों के लिए चाँद निकलने की जगह साफ न होने की सूरत में दो आदिलों की गवाही जुरुरी है और साफ होने की सूरत में इतनी बड़ी जमाअत चाहिए जिन का झूट पर इत्तिफाक करना मुश्किल हो।

(दुर्रे मुख्तारमए रद्दुलमुहतार जिल्द 2 सफा 93 व 95 बहरुर्राइक जिल्द 2 सफा 269)

(2) शहादत अलश्शहादत—यानी गवाहों ने चाँद खुद न देखा बल्कि देखने वालों ने उन के सामने गवाही दी और अपनी गवाही पर उन्हें गवाह किया तो इस तरह भी चाँद का सुबूत हो जाता है जब कि अस्ल गवाहान आने से मजबूर हों उसका तरीका यह है कि गवाहाने अस्ल में से हर एक दो आदमियों से कहें कि मेरी इस गवाही पर गवाह हो जाओ कि मैंने फुलाँ साल के फुलाँ महीना का चाँद फुलाँ दिन की शाम को देखा। फिर उन गवाहों में से हर एक आकर यु गवाही दें कि मैं गवाही देता हूँ कि फुलाँ इब्ने फुलाँ और फुलाँ इब्ने फुलाँ ने मुझे अपनी इस गवाही पर गवाह किया कि उन्हों

ने फुलाँ साल के फुलाँ महीना का चाँद फुलाँ दिन की शाम को देखा और उन्हों ने मुझ से कहा कि मेरी इस गवाही पर गवाह हो जाओ

(दुर्रे मुख्तार मए रद्दुलमुहतार जिल्द 4 सफा 409)

(3) शहादत अलल्कजा—यानी किसी दूसरे शहर में शरीअत के काजी या मुफ्ती के सामने चाँद होने पर गवाहियाँ गुजरीं और उस ने चाँद के साबित होने का हुक्म दिया। उस गवाही और हुक्म के वक्त दो आदिल गवाह मौजूद थे। उन्हों ने यहाँ आकर मुफ्ती के सामने कहा कि हम गवाही देते हैं कि हमारे सामने फुलाँ शहर के फुलाँ मुफ्ती के पास गवाहियाँ गुजरीं कि फुलाँ चाँद का देखना फुलाँ दिन की शाम को हुआ है और मुफ्ती ने इन गवाहियों पर फुलाँ रोज चाँद के साबित होने का हुक्म दिया तो इस तरह भी चाँद का सुबूत हो जाता है।

(फतावा इमामे गज्जी सफा 6 फतहुलकदीर जिल्द 2 सफा 243)

(4) किताबुलकाजी इलल काजी—शरीअत का काजी और जहाँ शरीअत का काजी न हो वहाँ शहर के सब से बड़े सुन्नी सहीह अकीदा वाले आलिम के सामने शरीअत वाली गवाही गुजरे। वह दूसरे शहर के सब से बड़े सुन्नी सहीह अकीदा वाले आलिम के नाम खत लिखे कि मेरे सामने इस मजमून पर शरई गवाही गुजरी और उस खत में अपना नाम और जिस के पास खत भेजना हो उस का पूरा नाम व पता लिखें और वह खत दो आदिल मुत्तकी परहेजगार को दे वह लोग दूसरे शहर के उस आलिम के पास लायें और गवाही दें कि यह खत फुलाँ शहर के फुलाँ आलिम का है तो दूसरे शहर का आलिम अगर इस गवाही को अपने मजहब के लिहाज से सुबूत के लिए काफी समझे तो उस पर अमल कर सकता है।

(फतावा रजविया जिल्द 4 सफा 551)

अगर शहर के सब से बड़े सुन्नी सहीह अकीदा वाले आलिम का खत न हो किसी दूसरे का खत हो या दो गवाह लेकर न जायें या दोनों आदिल परहेजगार न हों तो इन सूरतों में दूसरे शहर के आलिम को खत पर अमल करना जाइज नहीं।

(5) इस्तिफाजा—यानी जिस इस्लामी शहर में ऐसा मुफ्ती हो कि रोजा और ईद व बकरईद उसी के फतवा से होते हों। जाहिल लोग खुद ईद व रमजान न ठहरा लेते हों वहां से कुछ जमाअतें आयें और सब एक जुबान से खबर दें कि वहां फुलां दिन चांद देख कर रोजा हुआ या ईद की गई तो इस तरह भी चांद का सुबूत हो जाता है लेकिन सिर्फ बाजारी अफवाह उड़ जाए और कहने वाले का पता न हो पूछने पर जवाब मिले कि सुना है या लोग कहते हैं तो ऐसी खबर हरगिज इस्तिफाजा नहीं। और ऐसा शहर कि जहां कोई मुफ्ती न हो या हो मगर ना अहल हो या भरोसा के लाइक हो मगर वहां के जाहिल लोग जब चाहते हैं ईद व रमजान खुद कर लेते हैं जैसा कि आज कल आम तौर पर हो रहा है तो ऐसे शहरों की शुहरत कबूल के काबिल नहीं है (फतावा रजविया जिल्द 4 सफा 553)

(6) इक्माले इद्दत—यानी जब एक महीना का तीस दिन पूरा हो जाए तो दूसरे महीना का चाँद साबित हो जाएगा लेकिन अगर एक गवाह की गवाही पर रमजान का चाँद मान लिया गय. और इस हिसाब से तीस दिन पूरे हो गये मगर चाँद निकलने की जगह साफ होने के बावजूद चाँद नजर नहीं आया तो इस सूरत में तीस दिन काफी नहीं बल्कि एक रोजा और रखना पड़ेगा।

(दुर्रे मुख्तार मए रद्दुल मुहतार जिल्द 2 सफा 97)

(2) अगर चाँद शरीअत के तरीका से साबित हो जाए तो पच्छिम वालों का देखना पूरब वालों के लिए लाजिम होगा—ऐसा ही फतावा इमामे गज्जी सफा 5 में है।

(3) जनतिरी से चाँद हरगिज साबित न होगा।

(शामी जिल्द 2 सफा 94 दुर्रे मुख्तार)

(4) अखवार से भी चाँद हरगिज साबित न होगा इस लिए कि अखबारी खबरें बसा अवकात गप निकलती हैं और अगर खबर सही हो तो भी बगैर शरीअत वाले सुबूत के हरगिज कबूल के काबिल नहीं। (रद्दुल मुहतार—जिल्द 2 सफा 97)

(5) खत से भी चाँद साबित न होगा इसलिए कि एक लिखावट

दूसरी लिखावट से मिल जाती है लिहाजा उस से यकीन वाला इल्म न होगा। (दुर्रे मुख्तार—हिदाया)

(6) तार और टेलीफोन बे इतिबारी में खत से बढ़ कर हैं इसलिए कि खत में कम से कम लिखने वाले के हाथ की पहचान होती है। तार व टेलीफोन में वह भी नहीं। और जब गवाह परदे के पीछे होता है तो गवाही नहीं मानी जाती इसलिए कि एक आवाज से दूसरी आवाज मिल जाती है तो तार और टेलीफोन के जरिए गवाही कैसे मानी जा सकती है।

(फतावा आलमगीरी जिल्द 3 सफा 357)

(7) रेडियो और टेलीवीजन में तार व टेलीफोन से ज्यादा परेशानियां हैं इसलिए कि तार व टेलीफोन पर सुवाल व जवाब भी कर सकते हैं। मगर रेडियो और टेलीवीजन पर कुछ भी नहीं कर सकते। बहरहाल यह नई चीजें खबर पहुँचाने में तो काम आ सकती हैं लेकिन गवाहियों में नहीं मानी जा सकतीं। यही वजह है कि खत, तार, टेलीफोन, रेडियो, टेलीवीजन की खबरों पर कचेह-रियों के मुकद्दमों का फैसला नहीं होता बल्कि गवाहों को हाजिर होकर गवाही देनी पड़ती है फिर फैसला होता है।

तअज्जुब है कि जब दुनियवी झगड़ों में मौजूदा कचेहरी का कानून रेडियो और टेलीवीजन के जरिए गवाही मानने को तैयार नहीं तो फिर दीनी मुआमले में शरीअत का कानून उनके जरिए गवाही कैसे मान सकता है।

हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की हदीस है कि अगर चाँद में शुब्हा हो जाए तो तीस दिन की गिनती पूरी करो। (बुखारी—मुस्लिम) मगर अफसोस कि इस जमाना के बहुत से मुसलमान कि उन में ज्यादा बेनमाजी व बे रोजादार होते हैं, टेलीफोन और रेडियो वगैरा की खबर पर एक हंगामा खड़ा करके कियामत बरपा कर देते हैं।

खुदाय तआला उन नासमझ मुसलमानों को अपने नबीए करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम की हदीस पर अमल की तौफीक अता फरमाए—आमीन।

(8) जहाँ इस्लामी बादशाह और शरीअत का काजी कोई न हो तो शहर का सब से बड़ा सुन्नी सहीह अकीदा वाला मुफ्ती उस का काइम मुकाम है और जहाँ कोई मुफ्ती न हो तो आम मुसलमानों के सामने चाँद की गवाही दी जाए।

(फतावा रजविया—जिल्द 4 सफा 547)

(9) बे नमाजी, या नमाज पढ़ता हो मगर जमाअत छोड़ने की आदत रखता हो, डाढ़ी मुन्डे, डाढ़ी कतरवा कर एक मुठ्ठी से कम रखाने वाले यह सब फासिक मोलिन हैं इन की गवाही शरीअत नहीं मानती। इसी तरह काफिर, बद मजहब, और नाबालिग की गवाही भी शरा के नजदीक इतिबार के काबिल नहीं। (कुतुबे आम्मा)

(10) चाँद देख कर उस की तरफ उंगली से इशारा करना मकरुह है अगरचे दूसरे को बताने के लिए हो—

(बहारे शरीअत जिल्द 5 सफा 685)

(11) मुसलमानों को अपने सारे कामों में अरबी इस्लामी तारीख व सन् का इतिबार करना वाजिब है। दूसरी तारीख व सन् का इतिबार करना जाइज नहीं ऐसा ही तफसीरे कबीर जिल्द 4 सफा 445 में है।

शबे कद्र

(1) हजरते अनस इब्ने मालिक रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि जब रमजान का महीना शुरु हुआ तो हुजूर अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि यह महीना तुम में आया है। और इसमें एक रात ऐसी है जो हजार महीनों से अच्छी है तो जो शख्स इसकी बरकतों से महरुम रहा वह तमाम भलाइयों से महरुम रहा और नहीं महरुम रखा जाता इस की भलाइयों से मगर वह जो बिल्कुल बे नसीब हो—(इब्ने माजा)

(2) हजरते आइशा रजियल्लाहु तआला अनहा ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि रमजान की आखिरी दहाई की फुटकर रातों में शबे कद्र को खोजो—(बुखारी)

(3) हजरते आइशा रजियल्लाहु तआला अनहा ने फरमाया कि

मैं ने हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम से पूछा कि या रसूलल्लाह ! अगर मुझ को शबे कद्र मालुम हो जाए तो मैं उस में क्या करूँ ? आप ने फरमाया कि यह दुआ पढ़ो—अल्ला हुम्म इन्नक अफूउन तुहिब्बुल अफ्व फअफु अन्नी । यानी ऐ अल्लाह ! तू मुआफ फरमाने वाला है मुआफ करना तुझे पसंद है तो मुझे मुआफ फरमा दे ।

(तिरमिजी)

(4) हजरते आइशा रजियल्लाहु तआला अनहा ने फरमाया कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम जितनी रमजान की आखिरी दहाई में (इबादत के लिए) कोशिश करते थे उतनी किसी दूसरे दहाई में न करते थे । (मुस्लिम)

(5) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि जब शबे कद्र आती है तो जिबरईल अलैहिस्सलाम फरिश्तों की जमाअत के साथ आते हैं और हर उस बंदा के लिए बख्शिश की दुआ करते हैं । जो खड़े होकर या बैठ कर खुदाय तआला के जिक्र में लगा रहता है । फिर जब उन्हें ईद का दिन नसीब होता है तो खुदाय तआला अपने उन बंदों पर अपने फरिश्तों के सामने अपनी खुशी जाहिर करता है । और फरमाता है कि ऐ मेरे फरिश्तो ! उस मजदूर की मजदूरी क्या है जो अपना काम पूरा कर दे । फरिश्ते कहते हैं कि ऐ मेरे परवरदिगार उस की मजदूरी यह है कि उस को पूरा बदला दिया जाए । खुदाय तआला फरमाता है कि ऐ मेरे फरिश्तो ! मेरे बंदों और मेरी लौंडियों ने (मेरे मुकर्रर किए हुए) फर्ज को अदा कर दिया अब वह घरों से दुआ के लिए ईदगाह की तरफ निकले हैं । कसम है अपनी इज्जत, अपने जलाल, अपनी बख्शिश व रहमत अपनी शान की बड़ाई और अपनी रिफअतिमकान की कि मैं उन की दुआओं को कबूल करूँगा फिर खुदाय तआला फरमाता है ऐ मेरे बंदो ! अपने घरों को लौट जाओ मैं ने तुम को बख्श दिया और तुम्हारी बुराईयों को नेकियों से बदल दिया । फरमाया हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने तो मुसलमान ईदगाह से इस हाल में वापस होते हैं कि उन के गुनाह बख्श दिए जाते हैं (बैहकी)

(6) हजरते आइशा रजियल्लाहु तआला अनहा ने फरमाया कि रमजान की आखिरी दहाई आती तो हुजूर अलैहिस्सातु वस्सलाम अपने तहबंद को मजबूत बाँध लेते (यानी इबादत में बहुत कोशिश फरमाते) रातों को जागते और अपने घर वालों को जगाते

नोट—बाज जगहों पर शबे कद्र में इशा की नमाज के लिए सात बार अजान कहते हैं यह बे अस्ल है जिस का कोई सुबूत नहीं।

इतिकाफ

(1) हजरते आइशा रजियल्लाहु तआला अनहा से रिवायत है कि नबीए करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम रमजान के आखिरी दस दिनों में इतिकाफ किया करते थे यहाँ तक कि इसी तरीके पर इन्तिकाल फ़रमाया। (बुखारी मुस्लिम)

(2) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम रमजान के आखिरी दस दिनों में इतिकाफ फरमाया करते थे और एक साल इतिकाफ नहीं फरमाया तो दूसरे साल बीस दिन इतिकाफ फरमाया।

(तिरमिजी अबू दाऊद)

रमजान के आखिरी दस दिनों में इतिकाफ करना सुन्नते मुअक्कदा है। जैसा कि हजरत शैख अब्दुलहक्क मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फरमाते हैं कि जाहिरे मजहबे हनफीया में इतिकाफ सुन्नते मुअक्कदा है इसलिए कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम हमेशा इतिकाफ फरमाया करते थे यहाँ तक कि इस दुनिया से तशरीफ ले गए।

कुछ जुरुरी मसले

(1) इतिकाफ की तीन किस्में हैं। (1) वाजिब कि इतिकाफ की मन्नत मानी जैसे युँ कहा कि मेरा बच्चा तन्दुरुस्त हो गया तो मैं तीन दिन इतिकाफ करूंगा तो बच्चा के तन्दुरुस्त होने पर रोजा के साथ तीन दिन का इतिकाफ वाजिब होगा। (2) सुन्नते मुअक्कदा कि बीसवीं रमजान को सूरज (सूर्य) डूबते वक्त इतिकाफ

की नीयत से मस्जिद में हो और तीसवां रमजान को सूरज के डूबने के बाद या उन्तीस को चांद होने के बाद निकले यह इतिकाफ सुन्नते किफाया है। यानी अगर सब लोग छोड़ दें तो सब की पकड़ होगी और एक ने कर लिया तो सब छुट्टी पा गये। इन दोनों के इलावा जो इतिकाफ किया जाए वह मुस्तहब है। यह तीसरी किस्म है।

(2) इतिकाफ करने वाला दुनयवी बात न करे, कुर्आन मजीद दुरुद शरीफ पढ़े और दीन का इल्म पढ़ने में लगा रहे। हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम और दूसरे नबियों और वलियों के वाकिया की किताबें पढ़ें। ऐसा ही फतावा आलमगीरी जिल्द 1 सफा 198 में है।

(3) मुस्तहब इतिकाफ की आसान सूरत यह है कि जब भी मस्जिद में दाखिल हों तो दरवाजा पर मस्जिद में जाने की नीयत के साथ इतिफाक की भी नीयत कर लें जब तक मस्जिद में रहें गे इतिकाफ का भी सवाव मिलेगा। नीयत के अल्फाज (शब्द) यह हैं। बिस्मिल्लाहि दखल्तु व अलैहि तवक्कल्तु व न वयतु सुन्नत इतिकाफ। अल्ला हुम्म फ्तह ली अब्वाव रह मति क : यानी अल्लाह तआला के मुकद्दस नाम की बरकत के साथ मैं दाखिल हुआ और उसी पर मैं ने भरोसा किया और मैंने सुन्नते इतिकाफ की नीयत की। या अल्लाह मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाजे खोल दें।

कुर्आन मजीद पढ़ने का बयान

हजरते उस्मान रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजुर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि तुम में सब से अच्छा आदमी वह है जिस ने कुर्आन को सीखा और दूसरों को सिखाया।

(बुखारी)

(2) हजरते मआज जुहनी रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सातु वस्सलाम ने फरमाया कि जो आदमी

क़ुर्आन को पड़े और उस पर अमल करे तो क़ियामत के दिन उस के माँ और बाप को ऐसा ताज पहनाय‌ा जाएगा कि उस की चमक दुनिया के सूरज की चमक से बढ़ कर होगी जब कि सूर्य को इतना करीब मान लिया जाए कि जैसे तुम्हारे घरों में उतर आया है। फिर तुम समझ सकते हो कि जब माँ-बाप का यह मरतबा होगा तो उस शख्स का क्या दरजा होगा जिस ने क़ुर्आन करीम पर अमल किया।
(अहमद)

(3) हजरते इब्ने मसऊद रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जो शख्स क़ुर्आन मजीद में से एक हर्फ (अक्षर) पढ़े तो हर हर्फ के बदले एक नेकी मिले गी और हर नेकी दस नेकियों के बराबर होगी। (तिरमिजी)

क़ुर्आन में कुल 321267 हुरुफ हैं तो पूरे क़ुर्आन की तिलावत से 3212670 नेकियाँ मिलेंगी।

(4) हजरते बरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि एक शख्स सूरए कहफ पढ़ रहा था और उस के करीब एक तरफ दो रस्सियों से घोड़ा बंधा हुआ था उस घोड़े पर एक बादल छा गया और घोड़े से करीब हुआ फिर और करीब हुआ और घोड़े ने उस को देख कर उछलना कूदना शुरु किया जब सुब्ह हुई तो उस ने हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के पास आकर सारा किस्सा बयान किया आप ने फरमाया यह सकीना यानी रहमत थी जो क़ुर्आन पढ़ने के सबब उतरी। (बुखारी—मुस्लिम)

(5) हजरते अबू सईद खुदरी रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि उसैद इब्ने हुजैर ने बयान किया है कि मैं रात को सूरए बक़रा पढ़ रहा था और मेरा घोड़ा मेरे पास बंधा हुआ था यका यक घोड़ा कूदने उछलने लगा मैं पढ़ते-पढ़ते चुप हो गया तो घोड़ा भी ठहर गया मैंने फिर पढ़ना शुरु किया घोड़ा फिर उसी तरह उछलने कूदने लगा आखिर मैंने पढ़ना बंद कर दिया और मेरा बेटा यहया घोड़े के करीब सो रहा था मुझको डर हुआ कि कहीं घोड़ा उस को तकलीफ न पहुँचादे इस ख्याल से यहया को हटाकर जब आसमान की तरफ सर उठाया तो अचानक देखा कि

कोई चीज छप्पर की तरह है जिस में चिरागों जैसी चमकती हुई चीजें हैं। जब सुब्ह हुई तो इस किस्सा को मैं ने हुजूर अलैहिस्स-लातु वस्सलाम से बयान किया—आपने फरमाया। ऐ इब्ने हुजैर कुर्आन पढ़ते रहो। मैंने कहा या रसूलल्लाह! मेरा बेटा यहया करीव था मुझ को डर हुआ कि कहीं घोड़ा उस को कुचल न दे। इसलिए मैं यहया की तरफ चला गया और आसमान की तरफ सर उठाया तो कोई चीज छप्पर की तरह दिखाई दी जिस में चिरागों की तरह चीजें थी। फिर मैंने बाहर निकल कर देखा तो कुछ भी न था हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया तुम जानते हो वह क्या था? मैंने कहा नहीं, आपने फरमाया वह फरिश्ते थे जो तेरे कुर्आन पढ़ने को सुनने आये थे अगर तू बरावर पढ़ता रहता तो सुब्ह को लोग फरिश्तों को देखते और फरिश्ते उन की नजरों से न छुपते। (बुखारी—मुस्लिम)

(6) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने हजरते उबय इब्ने कअ्ब रजियल्लाहु तआला अनहु से पूछा कि तुम नमाज में क्या पढ़ते हो तो उन्हों ने सूरए फातिहा पढ़ी तो हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कसम है उस जात की जिस के कब्जा में मेरी जान है कि तौरात इनजील और जबूर (यहाँ कत कि) कुर्आन में इस के मिस्ल (कोई दूसरी सूरत) नहीं उतरी। (तिरमिजी)

(7) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि हर चीज का दिल है और कुर्आन का दिल सूरए यासीन है। तो जो शख्स सूरए यासीन को पढ़े उस के लिए दस कुर्आन पढ़ने का सवाव लिखा जाता है।

(तिरमिजी—दारमी)

(8) हजरते अता इब्ने रिबाह रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि मुझ को मालूम हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि दिन के शुरु हिस्सा में जो शख्स सूरए

यासीन पढ़े तो उस की हाजतें और मुरादें पूरी कर दी जाती हैं।
(दारमी)

(9) हजरते माकिल इब्ने यसार मुजनी रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि नबीए करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि जिस आदमी ने सिर्फ खुदा की खुशी हासिल करने के लिए सूरए यासीन को पढ़ा तो उस के अगले गुनाह मुआफ किए जाते हैं। तो इस सूरत को तुम लोग अपने मुरदों के पास पढ़ा करो। (बैहकी)

(10) हजरते अली रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि मैं ने हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम को यह फरमाते हुए सुना कि हर चीज की एक खूब सूरती है और कुर्आन पाक की खूब सूरती सूरए रहमान है। (बयहिकी)

(11) हजरते अबू दरदा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया क्या तुम में से कोई आदमी रात के वक्त तिहाई कुर्आन नहीं पढ़ सकता। सहाबा ने पूछा या रसूलल्लाह ! तिहाई कुर्आन कैसे पढ़ा जाए ? आप ने फरमाया पूरी सूरए इख्लास तिहाई कुर्आन के बराबर है।
(मुस्लिम—बुखारी)

(12) हजरते अबू मूसा अशअरी रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि कुर्आन की हिफाजत करो। कसम है उस जात की जिस के कब्जा में मीरी जान है अपनी रस्सी से ऊँट निकल जाने की बनिसबत कुर्आन सीना से जल्द निकल जाता है। (बुखारी—मुस्लिम)

(13) हजरते सईद इब्ने उबादा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जो शख्स कुर्आन मजीद पढ़े और फिर उस को भूल जाए वह कियामत के दिन खुदा से इस हाल में मिले गा कि उस के हाथ पाँव कोढ़ के सबब गल गये होंगे। (अबू दाऊद—दारमी)

कुछ जुरुरी मसले

(1) नमाज के बाहर किसी सूरत के शुरु से पढ़ते वक्त अऊजु बिल्लाहि मि नश्शयता निर्रजीम—पढ़ना मुस्तहब और बिस्मिल्लाह पढ़ना सुन्नत है। और बीच सूरत से पढ़ना शुरु करे तो अऊजु बिल्लाह और बिस्मिल्लाह से पढ़ना मुस्तहब है। (बहारे शरीअत)

(2) सूरए तौबा के शुरु में अऊजु बिल्लाह पढ़ने का नया तरीका जो आज कल के हाफिजों ने निकाला है बे अस्ल है। और यह जो मशहूर है कि "सूरए तौबा के किसी हिस्सा से पढ़ना शुरु करे तो बिस्मिल्लाह न पढ़े यह महज गलत है।

(बहारे शरीअत जिल्द 3 सफा 309)

(3) कुछ जगहों पर सूरए तौबा की आखिरी दो आयतों से पढ़ना शुरु करते हैं तो बिस्मिल्लाह नहीं पढ़ते हाँलाँ कि इस आयत के शुरु में भी अऊजु बिल्लाह और विस्मिल्लाह पढ़ना मुस्तहव है।

(4) किसी जगह सब लोग बुलंद आवाज से कुर्आन मजीद पढ़ें यह हराम है। बहुत सी जगहों पर तीजों में सव बुलंद आवाज से पढ़ते हैं यह हराम है अगर कई आदमी पढ़ने वाले हों तो हुक्म है कि आहिस्ता पढ़ें। (बहारे शरीअत जिल्द 3 सफा 310—दुर्रे मुख्तार मए रद्दुलमुहतार जिल्द 1 सफा 383)

(5) पूरे कुर्आन मजीद का जुबानी याद करना फर्जे किफाया है और सूरए फातिहा और एक दूसरी छोटी सूरत या उस की मिस्ल जैसे तीन छोटी आयतें या एक बड़ी आयत का जुबानी याद करना वाजिबे ऐन है। (बहारे शरीअत) और दुर्रे मुख्तार में भी ऐसा ही है।

(6) कुर्आन मजीद के सब हरफों (अक्षरों) को उस की सहीह आवाज के साथ पढ़ें वरना मतलब बिगड़ने की सूरत में नमाज न होगी। (बहारे शरीअत)

(7) जो लोग कुर्आन मजीद के सहीह पढ़ने पर कुदरत न

रखते हों उन के लिए ज़रूरी है कि सहीह पढ़ने की पूरी कोशिश जारी रखें वरना नमाज न होगी। (फतावा रजविया जिल्द 3 सफा 95—शामी जिल्द 1 सफा 409)

(8) देहातों में छोटे-छोटे मदरसों के बहुत से मुदर्रिसीन को (अध्यापकों को) देखा गया है कि वह कुर्आन मजीद के हुरुफ (अक्षरों) को सहीह नहीं पढ़ते हैं यह सख्त गुनाह है। और कुछ तो बिला वुजु कुर्आन मजीद को हाथ लगाते हैं जो सख्त नाजाइज व हराम है।

(9) आज कल बहुत से हाफिज इस तरह कुर्आन मजीद पढ़ते हैं कि ज़ल्दी में लफ्ज के लफ्ज खा जाते हैं और उस पर फख्र होता है कि फुलाँ इतना जल्द पढ़ता है हालाँ कि इस तरह कुर्आन मजीद पढ़ना सख्त हराम है। (बहारे शरीअत जिल्द 3 सफा 306)

(10) मकरुह वक्तों में यानी सूर्य निकलते, डूबते वक्त और दोपहर में कुर्आन मजीद का पढ़ना जाइज है मगर बेहतर नहीं। हजरत सदरुश्शरीआ मौलाना अमजद अली साहब रहमतुल्लाहि तआला अलैहि लिखते हैं कि इन वक्तों में कुर्आन मजीद पढ़ना बेहतर नहीं। बेहतर यह है कि जिक्र और दुरुद शरीफ में लगा रहे। (बहारे शरीअत जिल्द 3 सफा 230) और बेहतर का खिलाफ बिला कराहत जाइजा है।

हज्ज का बयान

(1) हजरते इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि ऐ लोगो! खुदा ने तुम पर हज्ज फर्ज किया है। अकरा इब्ने हाबिस रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने खड़े हो कर पूछा। या रसूलल्लाह! क्या हर साल हज्ज फर्ज है? फरमाया अगर मैं हाँ कर दूँ तो हर साल हज्ज फर्ज हो जाए और अगर हर साल फर्ज हो जाए तो तुम उसे अदा करने की ताकत नहीं रखते। इसलिए हज्ज पूरी जिन्दगी

में सिर्फ एक मरतबा फ़र्ज है और जो इस से ज्यादा करे वह नफ़ल है। (अहमद—दारमी मिशकात)

मालूम हुआ कि हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शरीअत के हुक्मों पर पूरा इखतियार रखते हैं कि अगर चाहते तो हर साल हज्ज करना फर्ज कर देते।

(2) हजरते इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जो आदमी हज्ज का इरादा करे तो फिर जल्द उस को पूरा करे।

(अबू दाऊद—दारमी)

(3) हजरते इब्ने मस्ऊद रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि नबीए करीम अलैहिस्सातु वस्सलाम ने फरमाया कि हज्ज और उमरा एक के बाद दूसरे को अदा करो (यानी किरान का इहराम बाँधों या एक के बाद फौरन दूसरे का इहराम बाँधों इसलिए कि यह दोनों (गरीब और गुनाहों*) को इस तरह दूर कर देते हैं जिस तरह भट्टी लोहे चाँदी और सोने की मैल को दूर कर देती है। और हज्ज मकबूल का बदला सिर्फ जन्नत है। (तिरमिजी—नसई)

(4) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जो शख्स हज्ज या उमरा या अल्लाह के रास्ता में लड़ाई के इरादा से निकला और फिर रास्ता ही में मर गया तो अल्लाह तआला उस के हक में हमेशा के लिए मुजाहिद, हाजी और उमरा करने वाले का सवाब लिख देता है। (बैहिकी—मिशकात)

(5) हजरते इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि रमजान में उमरा करना हज्ज के बराबर है।

(6) हजरते अबू रजीन उकेली रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि वह नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि

---

* इस का मतलब या तो यह है कि रुपया पैसा से मालदार हो जाता है और या तो यह है कि दिल गनी हो जाता है।

वसल्लम के पास हाजिर हुए और कहा या रसूलल्लाह ! मेरा बूढ़ा बाप इतना कमजोर है कि हज्ज व उमरा की ताकत नहीं रखता और न सवारी पर सफर करने की उस में कूवत है। आप ने फरमाया तू अपने बाप की तरफ से हज्ज व उमरा कर ले।

(तिरमिजी—अबू दाऊद)

(7) हजरते इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने फ़रमाया कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के पास एक आदमी ने हाजिर हो कर कहा कि मेरी बहन ने हज्ज की मन्नत मानी थी। (और मन्नत पूरी करने से पहले) वह मर गई। आप ने फरमाया अगर उस पर कर्ज होता तो क्या उस को तू अदा करता ? उसने कहा हाँ। आप ने फरमाया तो फ़िर खुदाय तआला का कर्ज भी अदा कर कि उस का अदा करना ज्यादा जुरुरी है।

(बुखारी—मुस्लिम)

(8) हजरते इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि औरत बगैर महरम के हरगिज सफर न करे (चाहे वह हज्ज ही का सफर क्यों न हो—(बुखारी—मुस्लिम)

(9) हजरते अली रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि जो शख्स राह के खर्च और बैतुल्लाह शरीफ तक पहुँचा देने वाली सवारी के खर्च का मालिक हो और फिर उस ने हज्ज नहीं किया तो उस के यहूदी या नसरानी होकर मरने में कोई फर्क नहीं और यह इसलिए कि कुर्आन मजीद में है कि खुदाय तआला के लिए बैतुल्लाह का हज्ज करना लोगों पर फर्ज है जब कि हज्ज के सारे जुरुरी खर्च का मालिक हो—

(तिरमिजी)

कुछ जुरुरी मसले

(1) दिखावे के लिए हज्ज करना और हराम माल से हज्ज को जाना हराम है। (दुर्रे मुख्तार—रद्दुलमुहतार—बहारे शरीअत सफा 719 जिल्द 6)

(2) हज्ज करने के लिए भी तस्वीर और फोटो खिचाना जाइज नहीं चाहे हज्ज फर्ज हो या नफ्ल—(फतावा रजविया—जिल्द 3 सफा 729 पर अशबाह से है कि गुनाह से बचना नेकी कमाने से अहम है।)

(3) औरत को मक्का शरीफ तक जाने में तीन रोज या ज्यादा का रास्ता हो तो उस के साथ शौहर या महरम होना ज़ुरूरी है चाहे वह जवान औरत हो या बूढ़ी। महरम का मतलब यह है कि जिस से हमेशा के लिए उस औरत का निकाह हराम है। चाहे नसब की वजह से निकाह हराम हो जैसे बाप, वेटा और भाई वगैरा या दूध के रिशता से निकाह हराम हो जैसे दूध शरीकी भाई बाप देटा वगैरा या ससुराली रिशता के सबब निकाह हराम हो जैसे ससुर और शौहर का बेटा वगैरा—(बहारे शरीअत)

(4) शौहर या महरम जिस के साथ औरत सफर कर सकती है उस का आकिल—बालिग होना और फासिक न होना शर्त है। पागल या नाबालिग या फासिक के साथ नहीं जा सकती—

(आलमगीरी—दुर्रे मुख्तार—बहारे शरीअत)

(5) औरत को बगैर महरम या शौहर के हज्ज के लिए जाना हराम है अगर हज्ज करेगी तो हो जाएगा मगर हर कदम पर गुनाह लिखा जाएगा (फतावा रज़विया जिल्द 4 सफा 691)

कुछ औरतें बगैर महरम अपने पीर या किसी बूढ़े आदमी के साथ हज्ज को जाती हैं यह भी ना जाइज व हराम है।

(6) औरत के साथ शौहर या महरम न हो तो उस पर ज़ुरुरी नहीं कि हज्ज के जाने के लिए निकाह करे—(बहारे शरीअत)

(7) अगर हज्ज के खर्च का मालिक हो और खुज़ूर बगैरा लाने की ताकत न रखता हो तब भी हज्ज को जाना फर्ज है। उस की वजह से हज्ज न करना हराम है। (बहारे शरीअत)

(8) सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के रौजा की ज्यारत और बैतुल्लाह शरीफ की हाजिरी के बाद हाजियों को चाहिए तो यह था कि अपने लोगों में मजहबी रंग पैदा करते।

मगर अफसोस कि ऐसा करने की बजाय वहाँ से रेडियो लाकर अपने लोगों को देते हैं जिस से वह गाना बजाना सुन कर गुनाह कमाते रहते हैं। जिस से रेडियो लाने वाले हाजी भी गुनहगार होते हैं। इसलिए कि अल्लाह ने फरमाया कि नेकी और परहेजगारी पर लोगों की मदद करो गुनाह और ज्यादती पर मदद न करो

(पारा 6—रुकू 5)

(9) जिस ने पाक माल, पाक कमाई, पाक नीयत से हज्ज किया और उस में लड़ाई झगड़ा और हर किस्म के गुनाह से बचा फिर हज्ज के बाद फौरन मर गया इतनी मुहलत न मिली कि जो अल्लाह या बंदों के हक उस के जिम्मा थे उन्हें अदा करता या अदा करने की फिक्र करता तो हज्ज कबूल होने की सूरत में पूरी उम्मीद है कि अल्लाह तआला अपने सारे हक्क को मुआफ फरमा दे और बंदों के हक्क को अपने जिम्मा लेकर हक्क वालों को कियामत के दिन राजी करे। (आजबुल इमदाद लेखक आला हजरत अहमदरजा—अलैहिर्रहमह)

और अगर हज्ज के बाद जिंदा रहा और जहाँ तक हो सका हक्क अदा किया गुजरे हुए सालों की बाकी जकात अदा कर दी, छूटी हुई नमाज और रोजा की कजा की, जिस का हक्क मार लिया था उस को या मरने के बाद उसके वारिसों को दे दिया, जिसे तकलीफ पहुँचाई थी मुआफ करा लिया जो हक्क वाला न रहा उस की तरफ से सदका कर दिया। अगर अल्लाह और बंदों के हक्क में से अदा करते-करते कुछ रह गया तो मौत के वक्त अपने माल में से उन के अदा करने की वसीयत कर गया। खुलासा यह कि अल्लाह और बंदों के हक्क से छुटकारे की जहाँ तक हो सका पूरी कोशिश की तो उस के लिए बखशिश की और ज्यादा उम्मीद है। (आजबुलइमदाद)

हाँ अगर हज्ज के बाद कुदरत होने के बावजूद इन बातों से लापरवाई बरती उन्हें अदा न किया तो यह सब गुनाह फिर से उस के जिम्मा होंगे इसलिए कि अल्लाह और बंदों के हक्क तो बाकी ही थे उन के अदा करने से देर करना फिर ताजा गुनाह हुआ जिस

को दूर करने के लिए वह हज्ज काफी न होगा इसलिए कि हज्ज वक्त पर नमाज और रोजा वगैरा अदा न करने के गुनाह को धोता है। हज्ज से नमाज और रोजा की कजा हरगिज नहीं मुआफ होती और न अगले जमाना के लिए आजादी मिलती है। बल्कि मकबूल हज्ज की पहचान ही यह है कि हाजी पहले से अच्छा होकर वापस हो। (आजबुलइमदाद)

आज कल बहुत से लोग कई वर्षों तक अल्लाह के हक्क यानी नमाज, रोजा और जकात वगैरा नहीं अदा करते और बंदों के हक्क की कुछ परवा नहीं करते, किसी को कत्ल करते हैं, किसी की जमीन ज़बरदस्ती ले लेते हैं, किसी का माल चुराते हैं, किसी का रुपया ले लेते हैं और किसी को सताते हैं फिर हज्ज कर आते हैं और यह समझते हैं कि हमारा सब गुनाह मुआफ हो गया न अब छूटी हुई कजा नमाजें पढ़नी हैं न बंदों के हक्क मुआफ कराना है यह उन की बहुत बड़ी भूल है।

मौला तआला मुसलमानों को तौफीक अता फरमाए कि वह अल्लाह और बंदों के हक्क को पूरा करें। आमीन विजाहि हबीविही सय्यिदिल मुरसलीन सलवातुल्लाहि तआला व सलामुहू अलैहि व अलैहिम अजमईन।

मदीना शरीफ की हाजिरी

(1) हजरते इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जो शख्स मेरी क़ब्र कीजियारत करे उस के लिए मेरी शफाअत वाजिब है।

(दार कुतनी—बैहिकी)

(2) हजरते इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जो मेरी जियारत के लिए आया। सिवाय मेरी जियारत के और किसी मतलव के लिए न आया तो मुझ पर हक्क है कि कियामत के दिन उस की शफाअत करूं—(दारकुतनी—तबरानी) अल्लाहुम्मर जुकना शफाअत

हबीबिकल मुस्तफा व नबीयिकल मुजतबा अलैहिस्तहीयतु वस्सना= यानी ऐ अल्लाह ! अपने हबीबे मुस्तफा व नबीए मुजतबा अलैहिस्तहीयतु वस्सना की शफाअत हमें नसीब फरमा।

(3) हजरते इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जिस ने हज्ज किया और मेरी वफात के बाद मेरी कब्र की जियारत की तो ऐसा है जैसे मेरी (दुनियवी) जिंदगी में जियारत की—

(दारकुतनी—तबरानी)

नोट—(1) ज्यारते अकदस वाजिब के करीब है।

(फतावा रजविया—बहारे शरीअत)

(2) हज्ज के लिए जाना और सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के रौजा की जियारत न करना बदनसीबी की पहचान है।

नबी जिंदा हैं

(1) हजरते अबू दरदा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि खुदाय तआला ने जमीन पर नबियों के जिस्मों को खाना हराम फरमा दिया है। लिहाजा अल्लाह के नबी जिंदा हैं। रोजी दिए जाते हैं।

(इब्ने माजा—मिशकात सफा 121)

हजरत शैख अब्दुल हक्क मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि इस हदीस की शरह में लिखते हैं कि खुदाय तआला के नबी दुनियवी जिंदगी की हकीकत के साथ जिंदा है।

(अशिअतुल्लम्आत जिल्द 1 सफा 576)

और हजरते मुल्ला अलीकारी अलैहि रहमतुलबारी इस हदीस की शरह में फरमाते हैं कि नबी की दुनियवी और बाद वफात की जिंदगी में कोई फर्क नहीं इसीलिए कहा जाता है औलिया अल्लाह मरते नहीं बल्कि एक घर से दूसरे घर की तरफ चले जाते हैं।

(मिरकात जिल्द 2 सफा 212)

(2) हजरते औस इब्ने औस रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि खुदाय तआला ने नबियों के जिस्मों को जमीन पर (खाना हराम फरमा दिया है) (अबू दाऊद—नसई—दारमी—बैहिकी—इब्ने माजा—मिशकात सफा 120)

हजरते मुल्ला अली कारी इस हदीस की शरह में फरमाते हैं कि नबी अपनी कब्रों में जिंदा हैं।

(मिरकात—जिल्द 2 सफा 209)

और हजरते शैख अब्दुल हक्क मुहद्दिस देहलवी बुखारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि इसी हदीस की शरह में फरमाते हैं कि नबी जिन्दा हैं और उन की जिन्दगी सब मानते आये हैं। कोई खिलाफ नहीं है। उन की जिंदगी जिस्मानी हकीकी दुनियावी है। शहीदों की तरह सिर्फ मानवी और रुहानी नहीं है।

कुछ जुरुरी मसले

(1) नबी वफात के बाद दुनियवी जिन्दगी की हकीकत के साथ जिंदा रहते हैं इसीलिए मेराज की रात में जब सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम बैतुलमुकद्दस पहुँचे तो नबियों को वहाँ नमाज पढ़ाई। अगर नबी वफात के बाद जिन्दा न होते तो बैतुलमुकद्दस में नमाज पढ़ने के लिए कैसे आते।

(2) नबियों की जिंदगी जिस्मानी हकीकी दुनियवी है। शहीदों की तरह सिर्फ मानवी और रुहानी नहीं है इसीलिए नबी की वफात के बाद उन का छोड़ा हुआ माल बाँटा नहीं जाता और न उन की औरतें दूसरे से निकाह कर सकती हैं और शहीदों का छोड़ा हुआ माल बंटता है और उन की औरतें इद्दत गुजारने के बाद दूसरे से निकाह कर सकती हैं।

(3) नबियों की जिंदगी बरजखी नहीं बल्कि दुनियवी है बस फर्क सिर्फ यह है कि हम जैसे लोगों की निगाहों से छुपे हैं।

माराकिल फलाह में है कि यह बात बड़े-बड़े तहकीक करने वाले आलिमों के नजदीक साबित है कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु

तआला अलैहि वसल्लम (हकीकी दुनियवी जिंदगी के साथ) जिंदा हैं। उन को रोजी दी जाती है। तमाम लज्जत वाली चीजों का मजा पाते हैं लेकिन जो लोग कि ऊँचे दरजों तक नहीं पहुँचते हैं उन की आँखों से छुपे हैं (तहतावी सफा 447)

और नसीमुर्रियाज शरह शिफा काजी अयाज जिल्द 1 सफा 196 में है कि नबी हकीकी जिंदगी के साथ अपनी कब्रों में जिन्दा हैं।

और मिरकात शरह मिशकात जिल्द 1 सफा 284 में है कि बेशक हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम जिंदा हैं उन्हें रोजी दी जाती है और उन से हर किस्म की मंदद माँगी जाती है।

और हजरते शैख अब्दुल हक्क मुहद्दिस देहलवी बुखारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने अपने खत सुलूक अकरबुस्सुबुल बित्तवज्जुहि इला सैइदिर्रसुल मए अखबारुल अख्यार रहीमिया देव बंद की छापी हुई सफा 161 में फरमाया कि उम्मत के आलिमों में बहुत से इख्तिलाफ और कई मजहब होते हुए किसी को इस मसला में कोई इख्तिलाफ नहीं है कि आँ हजरत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम (दुनियवी) जिन्दगी की हकीकत के साथ काइम और बाकी हैं। नबी की इस जिंदगी में मजाज की मिलावट और फेर फार का वहम नहीं है और उम्मत के कामों पर हाजिर व नाजिर हैं और हकीकत चाहने वालों के लिए और उन लोगों के लिए कि आँ हजरत की जानिब तवज्जुह रखते हैं हुजूर उन को फाइदा पहुँचाने वाले और परवरिश करने वाले हैं।

(4) पारा 23 आखिरी रुकू की आयत में अल्लाह ने जो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के लिए मौत आना जिक्र फरमाया तो उस का मतलब इस दुनिया से जाना है और हदीसों में वफात के बाद की हकीकी जिन्दगी मुराद है।

खरीदने और बेचने का बयान

हलालरोजी

(1) हजरते अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि (शरीअत के दूसरे) फर्जों के बाद हलाल रोजी हासिल करना फर्ज है।

(बैहिकी मिशकात)

(2) हजरते अबू बकर रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिस बदन को हराम खूराक दी गई वह जन्नत में न जाएगा।

(बैहिकी मिशकात)

(3) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि लोगों पर एक जमाना ऐसा भी आएगा जब कि कोई इस बात की परवा न करेगा कि उस ने जो माल हासिल किया वह हलाल है या हराम।

(बुखारी शरीफ)

कुछ जुरुरी मसले

(1) चक्की वाले गेहूँ वगैरा पीसने के बाद फी किलो तीस चालीस ग्राम आटा 'जरती' कहकर निकाल लेते हैं यह नाजाइज व हराम है इसलिए कि इतना ज्यादा आटा नहीं जलता—सुबूत यह है कि चक्की वाले के पास दस पाँच किलो आटा हर दिन बच जाता है।

और अगर चक्की वाले कुछ पैसा और अपने पिसे हुए में से कुछ आटा मजदूरी ठहरा दें तो यह भी ना जाइज है। बहारे शरीअत जिल्द 14 सफा 141 में है कि मजदूरी पर काम कराया और यह तै पाया कि इसी में से इतना तुम मजदूरी ले लेना यह नाजाइज है जैसे कपड़ा बुनने के लिए सूत दिया और कह दिया कि आधा कपड़ा

मजदूरी में ले लेना या गल्ला उठा कर लाओ उस में से दो सेर मजदूरी ले लेना या चक्की चलाने के लिए बैल लिए और जो आटा पीसा जाएगा उस में से इतना मजदूरी में दे दिया जाएगा (या खेत कटवाया और उसी में से मजदूरी देना तै किया) यह सब सूरतें नाजाइज हैं। इसी तरह दुर्रे मुख्तार और आलम गीरी में भी है।

हाँ पैसा और कुछ गेहूँ या बाजरा वगैरा मजदूरी मुकर्रर करें तो जाइज है। बहारे शरीअत में है कि जाइज होने की सूरत में है कि जो कुछ मजदूरी में देना है उस को ही पहले से अलग कर दे कि यह तुम्हारी मजदूरी है। जैसे सूत को दो हिस्सा करके एक हिस्सा की निसबत कहा कि इस का कपड़ा बुन दो और दूसरा दिया कि यह तुम्हारी मजदूरी है या गल्ला उठाने वाले को उसी गल्ला में से निकाल कर दे दिया कि यह तेरी मजदूरी है और यह गल्ला फुलाँ जगह पहुँचा दे (जैसा कि) फाड़ वाले पहले ही अपनी भुनाई निकाल कर बाकी को भूनते हैं।

(2) कुछ लोग इस तरह से खेत कटवाते हैं कि हम फी बीघा या हर रोज चार सेर धान मजदूरी देंगे मगर यह नहीं ठहराते कि हम तुम्हारे काम किए हुए में से देंगे—अब चाहे उसी काम किए हुए में से दें कोई हरज नहीं। (दुर्रे मुख्तार)

(3) कपड़ा सिलने के लिए दिया तो दरजी ने उस में से काट लिया—रूई कातने के लिए दी तो कातने वाले ने रूई निकाल ली, कपड़ा बुनने के लिए दिया तो बुनने वाले ने सूत निकाल लिया और भरने के लिए दिया तो भरने वालों ने सूत निकाल लिया यह सब नाजाइज व हराम है।

अफसोस कि यह सारी बातें खुल्लम खुल्ला मुसलमानों में इस तरह रवाज पा गई हैं कि अब लोगों को ख्याल ही नहीं होता कि हम हराम रोजी से अपना पेट भर कर अपनी आखिरत बरबाद कर रहे हैं बल्कि अवाम तो अवाम कुछ खास लोग भी इस तरह हराम रोजी कमाने में निडर दिखाई देते हैं।

अच्छा व्यवपारी

(1) हज़रते अबू सईद रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि बहुत सच्चे और दियानतदार व्यवपारी (का हश्र) नबियों सिद्दीकों और शहीदों के साथ होगा।

(अलैहिमुस्सलाम रजियल्लाहु तआला अनहुम)

(2) हज़रते उबैद इब्ने रिफाआ रजियल्लाहु तआला अनहु अपने बाप से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि कियामत के दिन (गलत) व्यवपारियों का हश्र ना फरमानों के साथ होगा मगर जो व्यवपारी खुदाय तआला से डरते हुए हराम से बचे, झूटी कसम न खाये और सच बोले (तो उस का हश्र फाजिरों के साथ नहीं होगा (तिरमिजी इब्ने माजा)

(3) हजरते वासिला इब्ने अस्का रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि मैं हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम को फरमाते हुए सुना कि जो शख्स ऐबदार चीज बेचे और उस के ऐब को जाहिर न करे वह हमेशा अल्लाह तआला के गजब में रहेगा और फरिश्ते उस पर लानत करते रहेंगे (इब्ने माजा)

कुछ जुरुरी मसले

(1) मुरदार की चरबी को बेचना या उस से किसी तरह का फाइदा उठाना जाइज नहीं न उसे चिराग में जला सकते हैं न चमड़ा पकाने के काम में ला सकते हैं।

(शामी जिल्द 4 सफा 120 बहारे शरीअत जिल्द 11 सफा 578)

(2) मुरदार के चमड़े को भी बेचना जाइज नहीं जो पकाया हुआ न हो और दबागत कर ली हो तो बेचना जाइज है और उस को काम में लाना भी जाइज है। (दुर्रे मुख्तार बहारे शरीअत) दबागत की तीन सूरतें हैं खारे नमक वगैरा किसी दवा से पकाया जाए या सिर्फ धूप या हवा में सुखा लिया जाए कि सारा पानी सूख कर बदबू जाती रहे। (बहारे शरीअत)

(3) हिन्दुस्तान के काफिर हरबी हैं (तफसीराते अहमदीया सफा 300) और काफिरे हरबी के हाथ मुरदार की चर्बी और चमड़ा बेचना जाइज है। (बहारे शरीअत ब हवालए रद् दुलमुहतार)

(4) कुछ लोग गाय बकरी बटाई पर देते हैं कि जितने बच्चे पैदा होंगे दोनों आधा-आधा ले लेंगे यह नाजाइज है। बच्चे उसी के हैं जिस की गाय और बकरी है दूसरे को सिर्फ उस के काम की वाजिबी मजदूरी मिलेगी। (बहारे शरीअत जिल्द 14 सफा 2219 शामी जिल्द 3 सफा 361 और ऐसे ही तातार खानिया में है इसी तरह फतावा आलम गीरी जिल्द 4 सफा 430 में है)

(5) किसी को मुर्गी दी कि जितने अंडे देगी दोनों आधा-आधा बाँट लेंगे यह भी नाजाइज है। अंडे उसी के हें जिसकी मुर्गी है। (फतावा आलमगीरी जिल्द 4 सफा 430 बहारे शरीअत जिल्द 14 सफा 143)

(6) किसी चीज की कीमत ज्यादा माँगना फिर उस से कम माँगना फिर उस से कम पर दे देना जाइज है। यह झूट में दाखिल नहीं है।

(7) तालाबों और झीलों का मछलियों के शिकार के लिए ठेका देना जैसा कि हिन्दुस्तान में राइज है ना जाइज है।

(बहारे शरीअत जिल्द 11 सफा 87)

सूद का बयान

(1) हजरते जाबिर रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने सूद लेने वालों, सूद देने वालों, सूदी दस्तावेज लिखने वालों और उस के गवाहों पर लानत फरमाई है और फरमाया कि वह सब (गुनाह में) बराबर के शरीक हैं। (मुस्लिम शरीफ)

(2) हजरते अब्दुल्लाह इब्ने हनजला गसीलुल मलाइका रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि सूद का एक दिरहम जिस को आदमी जान बूझ कर

खाये उस का गुनाह छत्तीस बार जिना करने से ज्यादा है।

(अहमद—दार कुतनी—मिशकात)

(3) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि सूद (का गुनाह) ऐसे सत्तर गुनाहों के बराबर है जिन में सब से कम दर्जा का गुनाह यह है कि मर्द अपनी मां से जिना करे।

(इब्ने माजा—बैहिकी)

(4) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जो शख्स किसी को कर्ज दे और फिर कर्ज लेने वाला उस के पास कोई हदिया और तुहफा भेजे या सवारी के लिए कोई जानवर पेश करे तो उस सवारी पर सवार न हो और उस का हदिया और तुहफा कबूल न करे अल्बत्ता कर्ज देने से पहले आपस में इस तरह का मुआमला होता रहा हो तो कोई हरज नहीं। (इब्ने माजा बैहिकी)

हजरते शैख अब्दुल हक्क मुहद्दिस देहलवी बुखारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि इस हदीस शरीफ की शरह में लिखते हैं कि हर कर्ज कि जिस से फाइदा हासिल हो सूद है।

(अशिअतुल्लम्आत जिल्द 3 सफा 25)

कुछ जुरुरी मसले

(1) सूद हराम कतई है उस के हराम होने का इनकार करने वाला काफिर है। हराम समझ कर सूद लेने वाला फासिक है उस की गवाही नहीं मानी जाएगी। (बहारे शरीअत)

(2) जो मुआमला दो मुसलमानों के दरमियान मना है अगर काफिर हरबी के साथ किया जाए तो मना नहीं मगर शर्त यह है कि मुसलमान का फाइदा हो जैसे एक रुपया के बदले में दो रुपया खरीदे या उस के हाथ मुरदार को बेच डाला कि इस तरीका पर मुसलमान से रुपया हासिल करना शरा के खिलाफ और हराम है

और काफिर से हासिल करना जाइज है ।

(शामी—बहारे शरीअत जिल्द 11 सफा 153)

(3) हिंदुस्तान अगरचे दारुल इस्लाम है उस को दारुल हरब कहना सहीह नहीं मगर यहाँ के कुफ्फार यकीनन न तो जिम्मी हैं न मुस्तामिन क्योंकि जिम्मी या मुस्तामिन के लिए वादशाहे इस्लाम का जिम्मा और अम्न देना जुरुरी है । लिहाजा यहाँ के काफिरों के माल अक्दे फासिद के जरिए हासिल किए जा सकते हैं जब कि बद अहदी न हो । (बहारे शरीअत जिल्द 11 सफा 153)

(4) हिन्दुस्तानी काफिरों का माल चोरी, डाका, मक्कारी और फरेब से हासिल करना जाइज नहीं ।

(5) इंडिया गौरमेन्ट की तरफ से जगह-जगह जो बिलाक काइम हैं वहाँ से रुपया वगैरा जाइद रकम देने की शर्त पर बिला जुरुरत लाना और उन्हें नफा देना मना है ।

(6) बैंक चाहे इंडिया (गैर मुस्लिम हुकूमत) का हो या किसी काफिर हरबी का उस का नफा शरअन सूद नहीं इसी तरह इंडिया गौरमेन्ट या काफिर हरबी के मुस्लिम मुलाजिमीन को फन्ड का जो नफा मिलता है वह भी सूद नहीं । अलबत्ता मुस्लिम बैंक का नफा सूद है ।

फतावा अजीजिया जिल्द 1 सफा 39 पर है कि हरबियों से रुपया का नफा लेना इस वजह से हलाल है कि हरबी का माल जाइज है । अगर बद अहदी न हो और जब हरबी खुद ब खुद दे तो बिला शुबहा जाइज है ।

रहन और बैए सलम

(1) हजरते इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम मदीना तैइबा में तशरीफ लाए । मदीना के लोग फलों में साल दो साल और तीन साल की ऐडवान्स बिक्री किया करते थे । हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जो शख्स इस तरह की बिक्री करे उसे

चाहिए कि मुकर्ररा नाप मुकर्ररा वजन और मुकर्ररा मुद्दत के साथ करे। (बुखारी—मुस्लिम)

(2) हजरते सईद इब्ने मुसैइब रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि किसी चीज को रहन कर देने से रहन करने वाले की मिलकियत खत्म नहीं हो जाती उस के नफा का हकदार राहिन[1] है और (चीज बरबाद हो जाए तो) मुरतहिन[2] जुर्माना का जिम्मादार है। (मिशकात)

---

1. राहिन—जो दूसरे के पास कोई चीज रखे।
2. मुरतहिन—जिस के पास कोई चीज रहन रखी जाए।

कुछ जुरुरी मसले

(1) बैए सलम यानी ऐसी खरीदारी व बिक्री कि जिस में कीमत नक़द और माल उधार हो जाइज है। जैसे जैद ने बकर से कहा कि आप सौ रुपया हमें दे दीजिए हम फी रुपया एक किलो गेहूँ आप को फुलाँ तारीख में दे देंगे। तो चाहे उस वक्त या अदा करने के वक्त बाजार का भाव दो रुपया किलो हो जैद पर फी रुपया एक किलो गेहूँ देना वाजिब होगा इसलिए कि यह बै शरअन जाइज है। मगर शर्त यह है कि जिस चीज को बेचा गया हो उस की जिंस बयान कर दी जाये कि गेहूँ देगा या जौ और उस की किस्म बयान कर दी जाए कि फुलाँ नाम का गेहूँ देगा और यह भी बयान करना जुरुरी है कि वह गेहूँ बहुत ऊँचा वाला होगा या दरमियानी या कम दर्जा वाला और यह भी बताना जुरुरी है कि गेहूँ कितना देगा ? किस तारीख में देगा और किस जगह देगा और भी कुछ शर्तें हैं जिन को बहारे शरीअत वगैरा से मालूम करें।

(2) खेत रहन रखने का जो आम रिवाज है कि किसी शख्स को कुछ रुपया दे कर उस का खेत इस शर्त पर रहन रखते हैं कि हम खेत से फाइदा उठाते रहेंगे और गौरमिन्टी लगान देते रहेंगे फिर जब तुम रुपया अदा करोगे तो हम खेत वापस कर देंगे। यह

ना जाइज़ है इसलिए कि कर्ज देकर नफा हासिल करना सूद है। हराम है। हदीस शरीफ में है "कुल्लु कर्ज़िन जर्र नफ़अन फ हो व रिबन" यानी कर्ज से जो नफा हासिल हो वह सूद है। अलबत्ता काफिर हरबी का खेत इस तरह ले सकता है।

(3) कुछ लोग खेत इस तरह रहन रखते हैं कि जिस के पास रहन रखा गया वह खेत को जोते बोये फाइदा हासिल करे और खेत का दस पाँच रुपया साल किराया मुकर्रर कर देते हैं और तै यह पाता है कि वह रकम कर्ज से मुजरा होती रहेगी जब कुल रकम अदा हो जाएगी तो खेत वापस हो जाएगा। इस सूरत में बजाहिर कोई खराबी नहीं मालूम होती अगरचे किराया कम तै पाया हो इसलिए कि यह सूरत इजारा में दाखिल है यानी इतने ज़माना के लिए खेत किराया पर दिया और किराया एडवान्स ले लिया।

(बहारे शरीअत जिल्द 17 सफा 39)

कर्जदार को मुहलत देना

(1) हज़रते अबू कतादा रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि मैंने रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम को फरमाते हुए सुना कि जो शख्स कर्जदार को मुहलत दे या कर्ज मुआफ कर दे तो अल्लाह तआला उस को कियामत के दिन की सख्तियों से महफूज रखेगा।

(मुस्लिम शरीफ)

(2) हज़रते इमरान इब्ने हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जिस का किसी शख्स पर कोई हक हो वह उसे मुहलत दे तो उसे हर दिन के इवज (बदले में) सद्का का सवाब मिलेगा। (अहमद—मिशकात)

(3) हज़रते अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि मोमिन की जान अपने कर्ज के सबब लटकी रहती है यहां तक कि उस का कर्ज अदा न कर दिया जाए।

(4) हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने अमर रज़ियल्लाहु तआला अनहुमा

से मरवी है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि शहीद के सब गुनाह बख्श दिये जाते हैं सिवाय कर्ज के (मुस्लिम)

जमीन पर नाजाइज कब्जा

(1) हजरते सालिम रजियल्लाहु तआला अनहु अपने बाप से रिवायत करते हैं कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि जो शख्स दूसरे की जमीन का कुछ हिस्सा नाहक दबा ले तो उसे कियामत के दिन सात जमीनों की (तह) तक धँसाया जाएगा। (बुखारी शरीफ)

(2) हजरते सईद इब्ने जैद रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्लाम ने फरमाया कि जो शख्स किसी की बालिश्त भर जमीन जुल्म से हासिल करेगा उसे कियामत के दिन सात जमीनों का हार पहनाया जाएगा। (मुस्लिम—बुखारी)

(3) हजरते अबू हुर्रा रकाशी रजियल्लाहु तआला अनहु अपने चचा से रिवायत करत हैं कि उन्हों ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि खबरदार (किसी पर) जुल्म न करना (और) कान खोल कर सुन लो कि किसी शख्स का माल (तुम्हारे लिए) हलाल नहीं हो सकता मगर वह खुशी दिल से राजी हो जाए (बैहिकी)

निकाह का बयान

(1) हजरते अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि ऐ नौजवानो ! तुम में से जो आदमी औरत का खर्च बरदाश्त कर सकता हो वह निकाह करे कि यह (अजनबी औरत की तरफ से) निगाह को रोकने वाला शर्मगाह की हिफाजत करने वाला है और जो औरत का खर्च बरदाश्त न कर सकता हो वह रोजे रखे इसलिए कि रोजा शहवत को तोड़ता है। (बुखारी—मुस्लिम)

(2) हजरते अब्दुल्लाह इब्ने अम्र रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि सारी

दुनिया जिन्दगी की पूँजी है और दुनिया की बेहतरीन पूँजी नेक औरत है। (मुस्लिम)

(3) हजरते इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि निकाह के इलावा (और कोई रिश्ता) देखने में नहीं आया जो दो आदमियों के दर-मियान इतनी गहरी महब्बत पैदा कर दे। (इब्ने माजा)

कुछ जुरुरी मसले

(1) जो आदमी महर और औरत के खर्च की ताकत रखता हो उस के निकाह करने के बारे में हुक्म यह है कि अगर उसे यकीन हो कि निकाह न करने पर वह गुनाह में फँस जाएगा तो निकाह करना फर्ज है और अगर इस का यकीन नहीं वलिक सिर्फ डर है तो निकाह करना वाजिब है और औरत की ख्वाहिश बहुत ज्यादा न हो तो निकाह करना सुन्नते मुअक्कदा है और अगर इस बात का डर है कि निकाह करेगा तो औरत को पूरा खर्च न दे सकेगा या निकाह के बाद जो चीजें जुरुरी हैं उन्हें पूरा न कर सकेगा तो निकाह करना मकरुह है और अगर इन बातों का डर ही नहीं है बल्कि यकीन हो तो निकाह करना हराम है।

(दुर्रे मुख्तार—रद्दुलमुहार—बहारे शरीअत)

(2) कुछ लोग बेवा औरतों का निकाह करना खानदान के लिए बे इज्जती समझते हैं यह ना जाइज और गुनाह है।

(3) मुरतद व मुरतद्दा का निकाह किसी से सहीह नहीं हो सकता न मुसलमान से न काफिर से न मुरतद्दा व मुरतद से।

(बहारे शरीअत बहवालए दुर्रे मुख्तार)

(4) वहाबियो, देव बंदियो, राफजियों, नेचरियों, वगैरा बद दीनों के साथ शादी बिवाह करना अहले सुन्नत के लिए हरगिज जाइज नहीं।

(5) पूरे हिन्दुस्तान में आम तौर पर जो रवाज है कि औरत या वली से एक शख्स इजाजत ले कर आता है जिसे वकील कहते हैं वह निकाह पढ़ाने वाले से कह देता है कि मैं फुलाँ का वकील हूँ

आप को इजाजत देता हूँ कि निकाह पढ़ा दीजिए। यह महज गलत है। वकील को यह इख्तियार नहीं कि इस काम के लिए दूसरे को वकील बना दे अगर ऐसा किया गया तो निकाह फुजूली हुआ (औरत की) इजाजत पर मौकूफ रहेगा इजाजत से पहले मर्द व औरत हर एक को तोड़ देने का इख्तियार हासिल है। लिहाजा यूँ चाहिए कि जो निकाह पढ़ाए वह खुद औरत या उस के वली का वकील बने। (बहारे शरीअत) या फिर औरत का वकील इस बात की भी इजाजत हासिल करे कि वह निकाह पढ़ाने के लिए दूसरे को वकील बना सकता है।

(6) कुछ लोग ईजाब व कबूल के अल्फाज बहुत आहिस्ता बोलते हैं अगर इतना आहिस्ता बोले कि हाजिरीन में से दो आदमियों ने भी इजाब व कबूल के अल्फाज न सुने तो निकाह न हुआ।

(7) निकाह से पहले लड़की और लड़का को कालिमए तैइबा और ईमान मुजमल व मुफस्सल पढ़ना जैसा कि राइज है बेहतर है।

(8) निकाह का खुत्बा ईजाब व कबूल से पहले पढ़ना मुस्तहब है।

महर का बयान

(1) हजरते उकबा इब्ने आमिर रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि (निकाह की) शर्तों में से जिस शर्त का पूरा करना तुम्हारे लिए सबसे ज्यादा जुरुरी है वह वही शर्त है जिस के जरिए तुम ने औरतों की शर्मगाहों को अपने लिए हलाल किया है। (यानी—दैन महर)

(बुखारी—मुस्लिम)

(2) हजरते अबू सलमा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि मैं ने हजरते आइशा रजियल्लाहु तआला अनहा से पूछा कि नबीए करीम अलैहिस्सलातु वस्सलीम का महर कितना था? उन्हों ने फरमाया कि हुजूर का महर आप की (अक्सर) बीवियों के लिए बारा ऊकिया और एक नश था। फिर हजरते आइशा ने फरमाया

जानते हो नश क्या है ? मैं ने कहा नहीं। उन्हों ने फरमाया कि आधा ऊकिया तो सब मिल कर पाँच सौ दिरहम हुए। (मुस्लिम)

एक ऊकिया चालीस दिरहम का और एक नश बीस दिरहम का होता है लिहाजा बारा ऊकिया और एक नश का 500 दिरहम हुआ तफसील यह है 12 ऊकिया × 70 दिरहम = 480 दिरहम + 20 दिरहम = 500 दिरहम। फिर एक दिरहम साढ़े तीन माशा का होता है तो पाँच सौ दिरहम का साढ़े सत्रा सौ माशा हुआ (500 दिरहम × $3\frac{1}{2}$ माशा = 1750 माशा) और बारा माशा का तोला होता है तो साढ़े सत्रा सौ माशा का एक सौ पैंतालीस तोला दस माशा हुआ 1750 माशा ÷ 12 माशा = 145 तोला 10 माशा। [1]जिस की कीमत फी तोला पाँच रुपया के हिसाब से लग भग सवा सात (725) सौ रुपया हुई। और अगर चाँदी की कीमत 40 रुपया तोला हो जाए तो लग भग 5834 रु० हुआ।

महरे फातिमा

हजरते फातिमा रजियल्लाहु तआला अनहा का महर चार सौ मिसकाल यानी एक सौ साठ रुपये भर चाँदी थी जिस की कीमत 5 रु० भर के हिसाब से आठ सौ रुपये हुई अगर चाँदी की कीमत 40 रुपये भर हो जाए तो एक सौ साठ रुपये भर चाँदी की कीमत छे हजार चार सौ (6400) रुपये होगी। फतावा रजविया जिल्द 5 सफा 325 में है कि अस्ल महर जिस पर निकाह हुआ चार सौ मिसकाल[2] चाँदी थी।

कुछ जुरुरी मसले

(1) महर कम से कम दस दिरहम (2 तोला 11 माशा चाँदी) है जिस की कीमत पाँच रुपया फी तोला के हिसाब से चौदा रुपया

---

1. नये वजन से 1 किलो 701 ग्रा० हुआ—मु० अय्यूब अफ्रीकी फाज़िले फैजुर्रसूल।
2. नये वजन से एक किलो 75 ग्रा० तकरीबन हुआ—मु० अय्यूब अफ्रीकी

(14 रु०) अट्ठावन (58) पैसे हुई। और अगर चाँदी का भाव चालीस रुपया तोला हो जाए तो दस दिरहम का 116 रु० 67 पै० हो जाए गा खुलासा यह कि चाँदी के भाव की कमी बेशी पर रुपया से महर की कमी बेशी होती रहेगी। लिहाजा इस मंहगाई के जमाना में महर कम से कम तीन रु० साढ़े दस आना समझना गलती है।

(2) महर के ज्यादा होने की हद मुकर्रर नही हजार दस हजार बल्कि चालीस पचास हजार और इस से ज्यादा भी महर मुकर्रर कर सकते हैं।

(3) महर तीन तरह का होता है एक वह कि औरत के साथ तनहाई होने से पहले देना तै पाया हो। दूसरे वह कि जिस के अदा करनें के लिए कोई वक्त मुकर्रर हो। तीसरे वह कि न तनहाई से पहले देना तै पाया हो और न कोई वक्त मुकर्रर हो। और इसी का हमारे हिन्दुस्तान में आम तौर से रवाज है।

(4) वह महर कि तनहाई होने से पहले देना तै पाया हो उस को लेने के लिए औरत अपने को शौहर से रोक सकती है। और जिस का वक्त मुकर्रर हो उस वक्त के आने के बाद रोक सकती है पहले नहीं रोक सकती। और तीसरे किस्म का महर वसूल करने के लिए कभी नहीं रोक सकती।

(5) हिन्दुस्तान में आम तौर पर रवाज है कि औरत जब मरने लगती है तो उस से महर मुआफ करते हैं। हालाँ कि उस वक्त में बीवी ने मुआफ भी कर दिया तो वारिसों की इजाजत के बिगैर मुआफ नहीं होगा। (दुर्रे मुख्तार—आलमगीरी)

दावते वलीमा

हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि वलीमा करो अगर्चे एक ही बकरी का हो। (बुखारी—मुस्लिम)

(2) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु कहते हैं कि

हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि सब से बुरा खाना वलीमा का वह खाना है जिस के लिए सिर्फ मालदार लोग बुलाये जायें और गरीब मुहताज लोगों को न पूछा जाये।

(बुखारी—मुस्लिम)

(3) हजरते अब्दुल्लाह इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जिस शख्स को खाने की दावत दी जाए और वह (बिला वजह शरई) दावत कबूल न करे तो उस ने अल्लाह तआला और उसके रसूल की ना फरमानी की। और जो बिगैर दावत के पहुँच जाये तो वह चोर की तरह गया और डाकू बन कर निकला। (अबू दाऊद)

मियाँ बीवी का बाहमी बरताव

(1) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि अगर मैं किसी को हुक्म देता कि वह अल्लाह के सिवा किसी (दूसरे) को सजदा करे तो औरत को जुरुर हुक्म देता कि वह अपने शौहर को सजदा करे (लेकिन) अल्लाह के इलावा किसी को सजदा हराम है इसलिए औरत अपने शौहर को सजदा तो नहीं कर सकती अलबत्ता उस के लिए शौहर की फरमाँ बददारी का हुक्म जुरुर है। (तिरमिजी)

(2) हजरते उम्मे सलमा रजियल्लाहु तआला अनहा ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जो औरत इस हाल में मरे कि उसका शौहर उस से राजी और खुश हो तो वह औरत जन्नती है। (तिरमिजी)

(3) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया मुसलमानों में पूरे ईमान वाला वह आदमी है जो अपनी आदतों में सब से अच्छा हो और तुम में सब से ज्यादा अच्छे वह लोग हैं जो अपनी औरतों के लिए सब से अच्छे हों। (तिरमिजी)

(4) हजरते हकीम इब्ने मुआविया कुशैरी रजियल्लाहु तआला अनहु अपने बाप से रिवायत करते हैं उन्हों ने कहा कि मैं ने पूछा

या रसूलल्ला ! हम में से किसी की औरत का उस पर क्या हक़ है ? फरमाया कि जब तुम खाओ तो उसे खिलाओ और जब तुम पहनों तो उसे भी पहनाओ और (अगर किसी गलत बात पर सजा देनी हो तो) उस के मुँह पर न मारो, और उसे बुरा न कहो और उसे न छोड़ो मगर घर में। (अबू दाऊद—मिशकात)

(5) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जिस शख्स की दो औरतें हों और वह उन के दरमियान इनसाफ से काम न ले तो कियामत के दिन इस हाल में उठेगा कि उस के जिस्म (बदन) का एक धड़ अलग हो गया होगा। (मिशकात)

परदा की बातें

(1) हजरते इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया तुम में से कोई आदमी जब अपनी औरत के साथ हमबिस्त्री करना चाहे तो यह दुआ पढ़ें, अल्ला हुम्म जन्निबनश्शैता न व जन्निबिश्शैतान मा रजक तना, यानी ऐ अल्लाह तू हम को शैतान से बचा और जो बच्चा हमें दे उसे भी शैतान से बचा। फिर अगर उसी हम बिस्तरी में हमल हो गया तो शैतान उस लड़के को कभी नुकसान नहीं पहुँचाये गा। (अबू दाऊद—मिशकात)

(2) हजरते इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला पनहुमा ने फरमाया कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम पर आयत उतरी कि तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेती हैं तुम अपनी खेती में जिस तरह चाहो आओ। तो इस का मतलब यह है कि आगे से आओ और पीछे से आओ लेकिन पीछे के मकाम में हमविस्त्री करने से बचो और हैज की हालत (में हमबिस्त्री) से परहेज करो। (तिरमिजी)

(3) हजरते खुजैमा इब्ने साबित रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि अल्लाह तआला हक बात (के जाहिर करने) से शर्म नहीं करता तुम लोग औरतों के मकाम में हम बिस्तरी न करो।

(अहमद—तिरमिजी)

(4) हजरते इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि अल्लाह तआला उस शख्स को रहमत की नजर से नहीं देखे गा जो मर्द या औरत के साथ उस के पीछे के मकाम में हम बिस्तरी करे।

(तिरमिजी—मिशकात)

(5) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जो शख्स अपनी बीवी से उस के पीछे के मकाम में हम बिस्तरी करे वह मलऊन है।

(अहमद)

देखना जाइज नहीं

(1) हजरते इब्ने मसऊद रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि औरत औरत है यानी परदा में रखने की चीज है जब वह बाहर निकलती है तो शैतान उस औरत को घूरता है यानी अजनबी औरत को देखना शैतान का काम है। (तिरमिजी)

(2) हजरते उम्मे सलमा रजियल्लाहु तआला अनहा से रिवायत है कि मैं और हजरते मैमूना हुजूर के पास हाजिर थीं कि (एक अन्धे सहाबी) हजरते इब्ने मकतूम रजियल्लाहु तआला अनहु सामने से हुजूर के पास आ रहे थे तो सरकार ने (हम दोनों से) फरमाया कि पर्दा कर लो (हजरते उम्मे सलमा फरमाती है) मैं ने कहीं या रसूलल्लाह! क्या वह अन्धे नहीं हैं? वह हमें नहीं देख सकेंगे हुजूर ने फरमाया क्या तुम दनों भी अन्धी हो क्या तुम उन्हें नहीं देखो गी (अहमद—तिरमिजी—अबू दाऊद) यानी मर्द के लिए जिस तरह अजनबी औरत को देखना ना जाइज है इसी तरह औरत के लिए अजनबी मर्द को देखना भी जाइज नहीं।

(3) हजरते जरीर इब्ने अब्दुल्लाह ने फरमाया कि मैंने हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम से (किसी औरत पर) यकायक निगाह पड़ जाने के बारे में पूछा तो हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने मुझे निगाह फेर लेने का हुक्म फरमाया। (मुस्लिम)

(4) हजरते बुरोदा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने हजरते अली रजियल्लाहु तआला अनहु से फरमाया कि ऐ अली (अजनबी औरत पर) एक निगाह के बाद दूसरी निगाह मत डालो कि यकायक पड़ जाने वाली पहली निगाह तुम्हारे लिए मुआफ है। दो बारा देखना जाइज नहीं।

(तिरमिजी)

(5) हजरते जाबिर रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि औरत शैतान की सूरत में अगे आती है और शैतान की शक्ल में पीछे जाती जब तुम में से किसी को दूसरे की औरत अच्छी मालूम हो फिर उस का ख्याल दिल में जम जाये तो वह अपनी औरत के पास चला जाये और उससे हमबिस्तरी कर ले इसलिए कि ऐसा करना उस के दिल के ख्याल को दूर कर देगा। (मुस्लिम शरीफ)

अजनबी औरत के साथ तनहाई

(1) हजरते जाबिर रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि खबरदार ! कोई मर्द किसी बिवाही औरत के पास रात न गुजारे मगर सिर्फ इस हालत में कि वह मर्द या तो उस औरत का शौहर हो या उसका महरम।

(मुस्लिम शरीफ)

(2) हजरते उमर रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि कोई मर्द किसी अजनबी औरत के साथ तनहाई में नहीं इकट्ठा होता लेकिन इस हाल में कि वहाँ दो के इलावा तीसरा शैतान भी होता है।

(तिरमिजी)

(3) हजरते उकबा इब्ने आमिर रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि तुम दूसरे की औरतों के पास जाने से बचो एक अंसारी ने कहा या रसूलल्लाह ! अगर वह औरत का देवर हो तो—फरमाया देवर तो मौत है यानी वह और भी खतरनाक है। (मुस्लिम)

(4) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम अपनी एक बीवी के साथ थे इतने में एक आदमी सामने से गुजरा हुजूर ने उस को बुलाकर फरमाया ऐ फुलाँ सुन ले कि यह औरत मीरी फुलाँ बीवी है। वह शख्स बोला या रसूलल्लाह ! जब मैं किसी और के साथ बुरा ख्याल नहीं करता तो मआजअल्लाह आप के साथ बुरा ख्याल करूँगा। सरकारे अकदस ने फरमाया बात दरअस्ल यह है कि शैतान इनसान के बदन के अंदर खून की नालियों में दौड़ता फिरता है इसलिए ऐसा हो सकता है कि वह तेरे दिल में वस वसा डाल दे कि रसूले खुदा एक अजनबी औरत के साथ हैं। (मुस्लिम)

जिना—लवातत

(1) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जिना करने वाला जिस वक्त जिना करता है (उस वक्त) मोमिन नहीं रहता यानी मोमिन की खूबियों से महरुम हो जाता है। (बुखारी शरीफ)

(2) हजरते अम्र इब्ने आस रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि मैंने हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम को फरमाते हुए सुना कि जिस कौम में जिना फैल जाता है वह कौम कहत साली में जुरुर मुबतिला की जाती है। और जिस कौम में रिशवत आम होती है वह (अपने दुशमन के) डर में मुबतिला रहती है।—

(अहमद—मिशकात)

(3) हजरते जाबिर रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि एक मर्द ने एक औरत से जिना किया तो हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने उसे कोड़े लगवाये फिर खबर दी गई वह शादी शुदा है तो हुजूर ने उसे संग सार करा दिया यानी लोगों ने पत्थरों से मार-मार कर उसे हिलाक कर दिया। (अबू दाऊद)

(4) हजरते इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जिस आदमी को

तुम (हजरत) लूत अलैहिस्सलाम की कौम का काम करते हुए पाओ तो दोनों को मार डालो (तिरमिजी)

(5) हजरते इब्ने अब्बास व अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहुमा से रिवायत है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जो आदमी लूत की कौम का काम करे वह मलऊन है (रजीन) और उन्हीं की एक रिवायत में हजरते इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहु से है कि हजरते अली रजियल्लाहु तआला अनहु ने दोनों को जला दिया और हजरते अबू बकरसिद्दीक रजियल्लाहु तआला अनहु ने उन दोनों पर दीवार गिरा दी।

कुछ जुरुरी मसले

(1) यहाँ अगर हुकूमते इस्लामिया होती तो जिना करने वाले को सौ कोड़े मारे जाते या संगसार किया जाता यानी इस कदर पत्थर मारा जाता कि वह मर जाता। मगर इस हाल में जानी और जानिया के लिए यह हुक्म है कि मुसलमान उनका पूरे तौर पर बाईकाट करें उनके साथ खाना पीना, उठना बैठना, सलाम व कलाम और हर किस्म के इस्लामी काम बंद कर दें जब तक कि तौबा करके वह गुनाह से अलग न हो जायें। अगर मुसलमान ऐसा नहीं करेंगे तो वह भी गुनहगार होंगे।

(2) लवातत करने वाले जिसमानी तौर पर भी सख्त सजा के मुस्तहक हैं कि हजरते अली रजियल्लाहु तआला अनहु ने उन्हें जला दिया। हजरते अबू बकर सिद्दीक रजियल्लाहु तआला अनहु ने उन पर दीवार गिरा दी और एक रिवायत के मुताबिक हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने हुक्म दिया कि उन्हें मार डालो। इस से पता चलता है कि यह काम जिना से भी बुरा है।

जमानए मौजूदा में लवातत करने वाले और कराने वाले के बारे में यह हुक्म है कि मुसलमान उन का पूरे तौर पर बाईकाट करें और इस बुरे काम से अलग होने के लिए उन पर अपनी ताकत भर इतनी सख्ती करें कि वह अपने इस गंदे काम से अलग हो जायें।

अगर मुसलमान अपनी लापरवाई से काम लेकर चुप रहेंगे तो गुनहगार होंगे।

तलाक का बयान

(1) हज़रते इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि सारी हलाल चीजों में खुदाय तआला के नजदीक सब से नापसंदीदा चीज तलाक है। (अबू दाऊद)

(2) हजरते सौबान रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जो औरत वगैर किसी खास सबब के शौहर से तलाक माँगे उस पर जन्नत की खुशबू हराम है। (तिरमिजी—अबू दाऊद)

(3) हजरते महमूद इब्ने लबीद रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम को खबर दी गई कि एक शख्स ने अपनी बीवी को तीन तलाकें इकट्ठी दी हैं। यह सुनते ही हुजुर नाराज हो कर खड़े हो गये फिर फरमाया क्या अल्लाह तआला की किताब के साथ खेल किया जाता है हालाँ कि मैं तुम्हारे अंदर मौजूद हूँ। (नसई)

मालूम हुआ कि एक वक्त में तीन तलाकें देनी हराम हैं।

(मिरकात)

(4) हजरते आइशा रजियल्लाहु तआला अनहा ने फरमाया कि रिफाआ कुर्जी की बीवी ने हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के पास आकर कहा कि मैं रिफाआ के पास थी तो उन्हों ने मुझे तीन तलाकें दे दीं। उस के बाद मैंने अब्दुर्रहमान इब्ने जबीर से निकाह कर लिया और नहीं है उनका······मगर कपड़े के दामन की तरह नर्म (यानी वह हमबिस्तरी की कुदरत नहीं रखते) तो हुजूर ने फरमाया कि तुम लौट कर रिफाआ के पास जाना चाहती हो? उन्हों ने कहा हाँ, हुजूर ने फरमाया कि तुम उस वक्त तक उन की तरफ लौट कर नहीं जा सकती हो जब तक कि अब्दुर्रहमान तुम से हमबिस्तरी न कर लें। (बुखारी—मुस्लिम)

कुछ जरुरी मसले

(1) तलाक़ तीन तरह की होती है। रजई, बाइन और मुगल्लजा—तलाक रजई का मतलब यह कि शौहर इद्दत के अंदर रजअत कर सकता है चाहे औरत राजी हो या न हो। और इद्दत के बाद औरत की मर्जी से निकाह कर सकता है। हलाला की जुरुरत नहीं। और तलाक बाइन का मतलब यह है कि औरत की मर्जी से शौहर इद्दत के अंदर निकाह कर सकता है और इद्दत के बाद भी हलाला की जुरुरत नहीं। और तलाके मुगल्लजा का मतलब यह है कि औरत हलाला के बगैर पहले शौहर के लिए जाइज नहीं।[1]

(2) हलाला की सूरत यह है कि अगर तलाक देने वाला शौहर उस से हमबिस्तरी कर चुका है तो इद्दत पूरी होने के बाद दूसरे से निकाह करे और यह दूसरा शौहर उस से हमबिस्तरी भी करे अब दूसरे शौहर की मौत या तलाक के बाद इद्दत पूरी होने पर पहले शौहर से निकाह कर सकती है। और अगर औरत से मर्द ने हमबिस्तरी नहीं की है तो पहले शौहर के तलाक देने के फौरन बाद दूसरे से निकाह कर सकती है इसलिए कि ऐसी औरत के लिए इद्दत नहीं। (आलमगीरी—बहारे शरीअत वगैरा)

हदीस शरीफ में हलाला करने वाले और हलाला कराने वाले पर जो लानत आई है उस का मतलब यह है कि ईजाब व कबूल में हलाला की शर्त लगाई जाए। और अगर ईजाब व कबूल में हलाला की शर्त न लगाई जाए तो कोई हरज नहीं बल्कि अगर भलाई की नीयत हो तो सवाब पायेगा। दुर्रे मुख्तार मए रद्दुलमुहतार जिल्द 2 सफा 559 में है कि हलाला करने वाले और हलाला कराने वाले पर उस सूरत में लानत की गई है जब कि ईजाब व कबूल में हलाला की शर्त लगाई जाए। जैसे मर्द औरत से इस तरह कहे कि मैं ने

---

1. रजई, बाइन और तलाके मुगल्लजा की सूरतें बहारे शरीअत वगैरा से मालूम करें।

तुम से निकाह किया इस बात पर कि तू पहले शौहर के लिए हलाल हो जाए। लेकिन अगर हलाला की नीयत दिल में हो (और ईजाब व कबूल में हलाला की शर्त का चर्चा न आए) तो इस में कोई हरज और कराहत नहीं बल्कि अगर भलाई की नीयत से हो तो सवाब पाएगा।

(3) तलाक देना जाइज है लेकिन बिला शरई वजह के मना है।

(4) शरई वजह हो तो तलाक देना मुबाह है बल्कि अगर औरत शौहर को या दूसरों को तकलीफ देती हो या नमाज न पढ़ती हो तो तलाक देना मुस्तहब है। (बहारे शरीअत)

(5) अगर शौहर नामर्द है या उस पर किसी ने जादू कर दिया हो कि हमबिस्तरी नहीं कर पाता और उसके दूर करने की भी कोई सूरत नजर नहीं आती तो इन सूरतों में तलाक देना वाजिब है अगर तलाक नहीं देगा तो गुनहगार होगा।

(बहारे शरीअत व हवालए दुर्रे मुख्तार वगैरा)

इद्दत

(1) हजरते मिसवर इब्ने मखरमा से रिवायत है कि सुबयआ अस्लमीया को शौहर के इन्तिकाल के कुछ अर्सा बाद बच्चा पैदा हुआ तो हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के पास आईं और निकाह की इजाजत तलब की। हुजूर ने उन को इजाजत दे दी तो उन्हों ने निकाह कर लिया। (बुखारी शरीफ)

मालूम हुआ कि पेट में बच्चा वाली औरत की इद्दत बच्चा पैदा होना है। ऐसा ही अशिअतुल्लम्आत जिल्द 3 सफा 184 में है। और बेवा अगर पेट में बच्चा वाली न हो तो उस की इद्दत चार महीना दस दिन है। ऐसा ही पारा 2 रुकू 14 में है। और तलाक वाली औरत अगर पेट में बच्चा वाली हो तो उस की इद्दत भी बच्चा पैदा होना है। ऐसा ही पारा 28 रुकू 17 में है। और तलाक वाली औरत जिस से शौहर ने हमबिस्तरी की हो अगर आइसा यानी पचपन साला या नाबालिगा हो तो उस की इद्दत तीन माह

है। ऐसा ही पारा 28 सूरए तलाक में है। और तलाक वाली औरत जिस से शौहर ने हमबिस्तरी की हो अगर पेट में बच्चा वाली या नाबालिगा या पचपन साला न हो यानी माहवारी वाली हो तो उस की इद्दत तीन माहवारी है। चाहे तीन माहवारी तीन माह या तीन बर्ष या उस से ज्यादा में आयें। पारा 2 रुकू 12 और तलाक वाली औरत जिस से शौहर ने हमबिस्तरी नहीं की है उस के लिए कोई इद्दत नहीं ऐसा ही पारा 22 रुकू 3 में है।

नोट—जाहिलों में जो मशहूर है कि तलाक वाली औरत की इद्दत तीन महीना तेरह दिन है तो यह बिल्कुल गलत है।

हलाल और हराम जानवर

(1) हजरते जाबिर रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने घरेलू गधों, खच्चरों, फाड़खाने वाले जानवरों और पंजा से शिकार करने वाली चिड़यों के गोश्त को ख़ैबर के दिन हराम किया। (तिरमिजी)

(2) हजरते सफीना रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि मैं ने सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के साथ सुरख़ाब का गोश्त खाया है। (अबू दाऊद)

(3) हजरते अबू मूसा रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि मैं ने रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम को मुर्गा का गोश्त खाते हुए देखा है। (बुखारी—मुस्लिम)

(4) हजरते अबू कतादा रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि उन्हों ने नील गाय देखा तो शिकार किया हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया क्या तुम्हारे पास उस के गोश्त का कुछ हिस्सा है? कहा हाँ, उस की रान है, हुज़ूर ने उसको कबूल फरमाया और खाया। (बुखारी—मुस्लिम)

(5) हजरते इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि हमारे लिए दो मुरदार जानवर और दो ख़ून हलाल किए गए हैं। मुरदार जानवर तो मछली और टिड्डी हैं और दो ख़ून कलेजी और तिल्ली हैं। (इब्ने माजा—मिशकात)

(6) हजरते जाबिर रजियल्लाहु तआला ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फमाया कि दरिया (नदी) ने जिस मछली को बाहर फेंक दिया उसे खाओ और जो पानी में मर कर तैरने लगे उसे न खाओ। (अबू दाऊद इब्ने माजा)

(7) हजरते इकरमा हजरते इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुम से रिवायत करते हैं कि सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम साँपों को मार डालने का हुक्म फरमाया करते थे और फरमाते थे कि जो आदमी इस डर से न मारे कि दूसरे साँप उस से बदला लेंगे तो वह हमारे तरीके पर नहीं। (मिशकात)

(8) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जो आदमी गिरगिट या छिपकली को पहली मार में मार डाले। उस के लिए सौ नेकियाँ लिखी जाती हैं और दूसरी में उस से कम और तीसरी में उस से भी कम। (मुस्लिम शरीफ)

कुछ जुरुरी मसले

(1) वह कौवा जो मुरदार खाता है हराम है और महोका कि यह कौवे की तरह एक जानवर होता है हलाल है।

(रद्दुलमुहतार)

(2) मछली के इलावा पानी के सब जानवर हराम हैं जैसे कछुआ, मगरमछ वगैरा।

(3) झींगा के मछली होने में इख्तिलाफ है लिहाजा उस से बचना बेहतर है। (बहारे शरीअत)

(4) पानी में कोई ऐसी चीज डाल दी कि जिस से मछली मर गई और यह मालूम है कि इस चीज के डालने से मरी है तो वह मछली हलाल है। (दुर्रे मुख़्तार)

(5) खरगोश जो बिल्ली की तरह एक तेज रफतार जानवर होता है हलाल है। (हिदाया सफा 425)

शिकार और जबह

(1) हजरते अदी इब्ने हातिम रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि मैं ने कहा या रसूलल्लाह ! आप का क्या ख्याल है ? अगर हम में से किसी को शिकार मिल जाये और उस के पास छुरी न हो तो क्या वह पत्थर और लाठी की खपच्चो से उस को हलाल कर सकता है ? हुजूर ने फरमाया अल्लाह का नाम लेकर जिस चीज से चाहो खून बहाओ (हलाल करने का हक अदा हो जाएगा)

(अबू दाऊद—मिशकात)

(2) हजरते अदी इब्ने हातिम रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि नबीए करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जिस कुत्ते या वाज को तुम ने सिखाया हो और फिर अल्लाह तआला का नाम लेकर उस को शिकार पर छोड़ो तो जिस जानवर को वह तुम्हारे लिए पकड़ रखे (और खुद न खाये) तो उस को तुम खालो। मैं ने कहा अगरचे वह शिकार को मार डाले। हुजूर ने फरमाया जब शिकार को मार डाले और खुद उस में से कुछ न खाये तो शिकार को उस ने तेरे लिए पकड़ रखा है।

(अबू दाऊद—मिशकात)

(3) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि जो आदमी जानवरों की हिफाजत या शिकार करने या खेत की देख भाल के मकसद के इलावा सिर्फ शौक के लिए कुत्ता पाले तो रोजाना एक कीरात के बराबर उस का सवाब कम होगा। (बुखारी—मुस्लिम)

(4) हजरते अब्दुल्लाह इब्ने अम्र इब्ने आस रजियल्लाहु तआला अनहुम से रिवायत है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जो आदमी गौरय्या या उस से बड़ी चिड़िया को नाहक मारे तो खुदाय तआला उसके बारे में पूछे गा। कहा गया या रसूलल्लाह ! चिड़यों का हक क्या है ? फरमाया उन्हें हलाल करे तो खाये न यह कि सर काट कर फेंक दे।

(अहमद—नसई—मिशकात)

(5) हज़रते आइशा रजियल्लाहु तआला अनहा ने फरमाया कि सहाबा ने अर्ज किया या रसूलल्लाह ! यहाँ कुछ कौमें रहती हैं जिन के शिर्क का ज़माना बहुत करीब है (यानी नये मुसलमान हैं) वह लोग हमारे पास गोश्त लाते हैं और हम नहीं जानते कि हलाल करने के वक्त वह खुदाय तआला का नाम लेते हैं या नहीं। हुज़ुर ने फरमाया कि तुम अल्लाह का नाम लो और खाओ।

(बुखारी)

(6) हज़रते शद्दाद इब्ने औस रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि जब (जानवर) हलाल करना चाहो तो ठीक से हलाल करो। अपनी छुरी को तेज करलो और जानवर को तकलीफ न पहुँचाओ।

(मुस्लिम)

कुछ ज़ुरुरी मसले

(1) हलाल करने में चार रगें काटी जाती हैं—हलकूम जिस में साँस आती है। मरी जिस से खाना पानी उतरता है। इन के अगल-बगल और दो रगें होती हैं जिन में खून की खानी होती है—इन को वद जैन कहते हैं। (बहारे शरीअत)

(2) चार रगों में से तीन कट गईं या हर एक का ज्यादा हिस्सा कट गया तो जानवर हलाल है।

(3) मुशरिक, वहाबी, मुर्तद, दहरिया, नैचरी का जबीहा हराम व मुरदार है।

(4) हिन्दु ने कहा कि यह मुसलमान का हलाल किया हुआ है तो उस का खाना जाइज नहीं। और अगर यह कहा कि मैं मुसलमान से खरीद कर लाया हूँ तो उस का खाना जाइज है।

(5) हलाल करने में जन बूझ कर बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर न कहा तो जानवर हराम है और भूल कर ऐसा हुआ तो हलाल है। (हिदाया जिल्द 4 सफा 419—बहारे शरीअत)

(6) इस तरह हलाल करना कि छुरी हराम मग्ज तक पहुँच

जाय या सर कट कर अलग हो जाए मकरुह है। मगर वह जानवर खाया जाए गा यानी कराहत उस काम में है न कि जानवर में।

(हिदाया—बहारे शरीअत)

(7) बकरी और भैंस वगैरा में बाइस (22) चीजें ना जाइज हैं। औझड़ी, आतें, पेशाब की थैली, फोते, जकर यानी नर की पहचान, फर्ज यानी मादा की पहचान, पाखाना का मकाम, रगों का खून, जिगर का खून, तिल्ली का खून, पित्ता, पित यानी वह पीला पानी जो कि पित्ता में होता है। गुदूद, हराम मग्ज, गर्दन के दो पट्ठे जो शानों तक खिचे रहते हैं 'नाक की तरी' नुतफा चाहे नर की मनी मादा में पाई जाए या खुद उस जानवर की मनी हो, वह खून जो बच्चादान में नुतफा से बनता है। वह गोश्त का टुकड़ा जो बच्चा दान में नुतफा से बनता है चाहे हाथ पांव वगैरा बने हों या न बने हों, बच्चा जो बच्चादान में पूरा जानवर बन गया और मुर्दा निकला या बगैर हलाल किये मर गया।

(8) औलिया अल्लाह की नज्र व नियाज के जानवर का गोश्त जाइज है जब कि बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर कह कर हलाल किया गया हो। (तफसीराते अहमदिया सफा 42)

(9) शिकारी जानवर का किया हुआ शिकार निम्न लिखित शर्तों के साथ जाइज है—

(1) शिकारी जानवर मुसलमान का हो और सिखाया हुआ हो।

(2) उस ने शिकार को जख्म लगा कर मारा हो दबूच कर न मरा हो।

(3) शिकारी जानवर बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर कह कर छोड़ा गया हो।

(4) अगर शिकार के मरने से पहले शिकारी उस के पास पहुँचा तो उसने बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर कह कर उसे हलाल किया हो। इन शर्तों में से अगर कोई शर्त न पाई गई तो जानवर हलाल न होगा। (खजाइनुल इरफान)

(10) सिखाये हुए शिकारी जानवर की पहचान यह है कि अगर शिकार पर छोड़ा जाए तो छुट जाये और रोका जाए तो रुक जायें। और शिकार किये हुए जानवर को मालिक के लिए छोड़ रखे उस में से कुछ न खाये। (तफसीर जलालैन सफा 93)

(11) बन्दूक या गुलेल का किया हुआ शिकार अगर मर जाये तो हराम है।

(रद्दुलमुहतार—बहारे शरीअत—फतावा काजी खाँ)

(12) जो शिकार शौकिया सिर्फ दिल बहलाने के लिए हो बन्दूक गुलेल का हो चाहे मछली का रोजाना हो चाहे कभी-कभी बिल्कुल हराम है। (दुर्रे मुख्तार)

(13) कुछ लोग मछलियों के शिकार में जिन्दा मछली या जिन्दा मेंडकी काँटे में पिरो देते हैं और उस से बड़ी मछली फंसाते हैं ऐसा करना मना है कि इस से जानवर को तकलीफ देना है। इसी तरह जिन्दा घींसा (केंचुआ) कांटे में पिरो कर शिकार करते हैं यह भी मना है (बहारे शरीअत जिल्द 17 सफा 2730)

(14) कुछ लोग कसाई के धंधा को मकरूह समझते हैं हालाँ कि उस की कराहत का कौल किसी से मनकूल नहीं।

(बहारे शरीअत बहवालए रद्दुल मुहतार)

कुर्बानी

(1) हजरते जैद इब्ने अरकम रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के सहाबा ने कहा या रसूलल्लाह ! यह कुर्बानियाँ क्या हैं ? आप ने फरमाया यह तुम्हारे बाप हजरते इब्राहीम अलैहिस्सलाम की सुन्नत है सहाबा ने पूछा या रसूलल्लाह ! क्या इस से हम को सवाब मिलेगा ? फरमाया हर बाल के बदले एक नेकी है कहा और ऊन या रसूलल्लाह ! तो आप ने फरमाया कि ऊन के हर बाल में भी एक नेकी मिलेगी।

(अहमद—इब्ने माजा)

(2) हजरते आइशा रजियल्लाहु तआला अनहा ने कहा कि

रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि कुर्बानी के दिनों में आदमी का कोई काम खुदाय तआला के नजदीक खून बहाने (यानी कुर्बानी करने) से ज्यादा पियारा नहीं और वह जानवर कियामत के दिन अपनी सींगों, बालों, खुरों के साथ आयेगा और कुर्बानी का खून जमीन पर गिरने से पहले खुदाय तआला के नजदीक कबूल की जगह में पहुँच जाता है।

(तिरमिजी-इब्ने माजा)

(3) हजरते हनश रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि मैं ने हजरते अली करमल्लाहु तआला वजहहू को दो दुंबे जवह करते हुए देखा मैं ने पूछा यह क्या है? उन्हों ने फरमाया कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने मुझे वसीयत फरमाई है कि मैं हुजूर की तरफ से कुर्बानी किया करूँ तो मैं (दूसरा दुंबा हुजूर की तरफ से) कुर्बानी कर रहा हूँ। (अबू दाऊद)

(4) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जिस पर कुर्बानी वाजिब हो और वह न करे तो हमारी ईदगाह के करीब हरगिज न आये। (इब्ने माजा)

(5) हजरते उम्मे सलमा रजियल्लाहु तआला अनहा से रिवायत है कि नबीए करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जब तुम बकर ईद का चाँद देखो और तुम में का कोई कुर्बानी करना चाहे तो उस को चाहिए कि बाल और नाखून कटवाने से रुका रहे।

(मुस्लिम)

कुछ जुरुरी मसले

(1) कुर्बानी के मसले में निसाब का मालिक वह शख्स है जो साढ़े बावन तोला चाँदी या साढ़े सात तोला सोना का मालिक हो या उन में से किसी एक की कीमत के सामान का मालिक हो और सब चीजें अस्ली हाजत से ज्यादा हों।

(2) जो मालिके निबास अपने नाम से एक बार कुर्बानी कर

चुका है और दूसरे साल भी वह साहिबे निसाब है तो फिर उस पर अपने नाम से कुर्बानी वाजिब है और यही हुक्म हर साल का है।

(3) अगर कोई साहिबे निसाब अपनी तरफ से कुर्बानी करने के बजाय दूसरे की तरफ से कर दे और अपने नाम से न करे तो गुनहगार होगा। लिहाजा अगर दूसरे की तरफ से भी करना चाहता है तो उस के लिए एक दुसरी कुर्बानी का इन्तिजाम करे।

(4) कुछ लोगों का जो यह ख्याल है कि "अपनी तरफ से जिन्दगी में सिर्फ एक बार कुर्बानी वाजिब है" गलत और बे बुनियाद है। इसलिए कि मालिके निसाब पर हर साल अपने नाम से कुर्बानी वाजिब है।

(5) देहात में दस्वीं जिलहिज्जा को उजाला होने के बाद ही से कुर्बानी करना जाइज है लेकिन मुस्तहब यह है कि सूर्य निकलने के बाद करे। (फतावा आलमगीरी जिल्द 5 सफा 260)

(6) शहर में नमाजे ईद से पहले कुर्बानी करना जाइज नहीं।

(बहारे शरीअत)

(7) शहर वाले आदमी को कुर्बानी का जानवर देहात में भेज कर नमाजे ईद से पहले कुर्बानी कराके गोश्त को शहरों में मंगा लेना जाइज है। दुर्रे मुख्तार मए रद्दुलमुहतार जिल्द 5 सफा 209)

(8) कुर्बानी का चमड़ा या गोश्त या उस में की कोई चीज कस्साब या जबह करने वाले को मजदूरी में देना जाइज नहीं।

(दुर्रे मुख्तार)

(9) कुर्बानी का गोश्त काफिर को न दे। (बहारे शरीअत)

(10) कुर्बानी के जानवर को बायें करवट पर इस तरह लिटायें कि उस का मुँह किबला की तरफ हो और अपना दाहिना पाँव उस की करवट पर रखें और जबह से पहले दुआ पढ़ें फिर अल्ला हुम्म मिन क वलक बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर पढ़ते हुए तेज छुरी से जबह करें। कुर्बानी अपनी तरफ से हो तो जबह के बाद

यह दुआ पढ़ें—अल्लाहुम्म त कब्बल मिन्नी कमा तकब्बलत मिन खलीलिक इब्राहीम अलैहिस्सलामु व हबीबिक मुहम्मदिन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम—और अगर दूसरे की तरफ से जबह करता है तो मिन्नी की जगह मिन के बाद उस का नाम ले।

अकीका

(1) हजरते सलमान इब्ने आमिर जब्बी रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि मैं ने हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम को फरमाते हुए सुना कि लड़के के पैदा होने के साथ अकीका है लिहाजा उसकी तरफ से जानवर जबह करो। (बुखारी शरीफ)

(2) हजरते इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुमा से रिवायत है कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने हजरते इमामे हसन व इमामे हुसैन रजियल्लाहु तआला अनहुमा का अकीका एक-एक मेंढे से किया (अबू दाऊद) और इमाम नसई की रिवायत में दो मेंढे से किया।

(3) हजरते अम्र इब्ने शुऐब रजियल्लाहु तआला अनहुमा अपने बाप से और वह अपने दादा (हजरते अब्दुल्लाह) से रिवायत करते हैं उन्हों ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जिस आदमी के कोई औलाद पैदा हुई फिर उस ने उस की तरफ से जानवर हलाल करना चाहा तो वह लड़के की तरफ से दो बकरी और लड़की की तरफ से एक बकरी हलाल करे। (अबू दाऊद)

कुछ जुरुरी मसले

(1) अकीका के लिए सातवाँ दिन बेहतर है और सातवें दिन न कर सके तो जब चाहे कर सकता है सुन्नत अदा हो जाएगी।

(2) लड़के के अकीका में बकरा और लड़की के अकीका में बकरी हलाल की जाये यानी लड़के में नर जानवर और लड़की में मादा मुनासिब है। लेकिन अगर लड़के के अकीका में बकरी और

लड़की के अकीका में बकरा जबह किया जब भी हरज नहीं (बहारे शरीअत)

(3) कुर्बानी की तरह अकीका में भी बकरा और बकरी की उम्र एक साल होना जुरुरी है। (बहारे शरीअत)

(4) जाहिलों में जो मशहूर है कि 'अकीका का गोश्त बच्चा के मां बाप, दादा दादी और नाना नानी न खायें' यह गलत है। इस का कोई सुबूत नहीं (बहारे शरीअत)

अच्छे बुरे नाम

(1) हजरते इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि खुदाय तआला के नजदीक तुम्हारे नामों में बेहतरीन नाम अब्दुल्लाह और अब्दुर्रहमान है। (मुस्लिम)

(2) हजरते अबू दरदा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि कियामत के दिन तुम को तुम्हारे नाम और तुम्हारे बापों के नाम से पुकारा जाएगा लिहाजा अपने नाम अच्छे रखो (अहमद—अबू दाऊद)

(3) हजरते अबू वहब जुसमी रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि नबी के नामों पर नाम रखो (अबू दाऊद)

(4) हजरते जाबिर रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मेरे नाम पर नाम रखो (बुखारी मुस्लिम)

(5) हजरते अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि जिस आदमी के तीन बेटे पैदा हों और वह उन में से किसी का नाम भी मुहम्मद न रखे तो वह जाहिल है। (तबरानी कबीर)

(6) हजरते आइशा रजियल्लाहु तआला अनहा ने फरमाया

कि नबीए करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम बुरे नाम को (अच्छे नाम से) बदल दिया करते थे। (तिरमिजी)

(7) हजरते इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अनहुमा से रिवा-यत है कि हजरते फारुके आजम की एक साहबजादी थीं जिन का नाम सहीह नहीं था रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने उन का नाम बदल कर जमीला रख दिया (मुस्लिम)

कुछ जुरुरी मसले

(1) जिस का नाम अब्दुर्रहमान, अब्दुल्खालिक, अब्दुलमाबूद, अब्दुलकुद्दूस या अब्दुल कय्यूम हो उसे रहमान, खालिक, माबूद, कुद्दूस, कय्यूम कहना हराम है। हाँ अगर अब्दुर्रहीम, अब्दुलकरीम, अब्दुल अजीज इस किस्म का नाम हो तो रहीम, करीम और अजीज कह सकते हैं।

(2) अब्दुल मुस्तफा, अब्दुर्रसूल, अब्दुन्नबी नाम रखना जाइज है। (बहारे शरीअत)

(3) गुलाम मुहम्मद, गुलाम अली, गुलाम हसन, गुलाम हुसैन वगैरा जिन में नबी सहाबा या औलिया अल्लाह के नाम की तरफ गुलाम की इजाफत करके नाम रखा जाए जाइज है। इसी तरह मुहम्मद बख्श, नबी बख्श, पीर बख्श, अली बख्श, हुसैन बख्श, वगैरा जिन में किसी नबी या वली के नाम के साथ बख्श का लफ्ज मिलाया गया हो जाइज है। (बहारे शरीअत)

(4) मुहम्मद नबी, अहमद नबी, मुहम्मद रसूल, रसूलुल्लाह, नबी युल्लाह या नबी युज्जमा नाम रखना हराम है।

(अहकामे शरीअत—बहारे शरीअत)

(5) नबी और वली की औरतों और लड़कियों का और सहा-बिया औरतों का मुबारक नाम छोड़ कर आज कल लोगों ने बाजारी औरतों के भड़क दार नाम पर अपनी लड़कियों का नाम रखना इख्तियार कर लिया है। जैसे नजमा, सुरय्या, मुशतरी, और परवीन वगैरा—ऐसा न चाहिए।

खाने का बयान

(1) हजरते हुजैफा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जिस खाने पर बिस्मिल्लाह न पढ़ी जाए उस खाने को शैतान अपने लिए हलाल समझता है। (मुस्लिम)

(2) हजरते इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि तुम में से जब कोई आदमी कुछ खाना चाहे तो दाहिने हाथ से खाये और जब कोई चीज पीना चाहे तो दाहिने हाथ से पिये। (मुस्लिम शरीफ)

(3) हजरते इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि कोई आदमी न बायें हाथ से कुछ खाये और न कुछ पिये इसलिए कि बायें हाथ से शैतान खाता और पीता है। (मुस्लिम शरीफ)

चाय और बीड़ी सिगरेट भी बायें हाथ से नहीं पीना चाहिए।

(4) हजरते आइशा रजियल्लाहु तआला अनहा ने फरमाया कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम हलवा और शहद पसंद फरमाते थे। (बुखारी शरीफ)

इस हदीस की शरह में हजरत शैख अब्दुल हक्क मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फरमाते हैं कि हलवा सिर्फ उस को कहा जाता है कि जो खास तरीका से बनाया जाता है और मीठा व चरबी का होता है। इसी तरह मजमउल बिहार में है। (लिहाजा हलवा का तरजमा सिर्फ मिठाई करना सहीह नहीं है।)

(अशिअतुल्लम्आत जिल्द 3 सफा 491)

(5) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जब खाने में मक्खी गिर जाए तो उसे डुबाओ (और फेंक दो) क्यों कि उस के एक पर में बीमारी और दूसरे में तनदुरुस्ती है और उसी बाजू से अपने को बचाती है जिस में बीमारी है (तो वह खाने में पहले पड़ जाता है। लिहाजा उसे पूरी डुबो दो। (अबू दाऊद)

(6) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने कभी किसी खाने को ऐब नहीं लगाया (यानी बुरा नहीं कहा) अगर चाहते तो खा लेते और न चाहते तो छोड़ देते। (बुखारी)

(7) हजरत आइशा सिद्दीका रजियल्लाहु तआला अनहा ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जब कोई आदमी खाना खाये और खाने पर अल्लाह का नाम लेना भूल जाए तो उस को चाहिए कि बीच ही में यह दुआ पढ़ ले बिस्मि-ल्लाहि अव्वलहू व आखिरहू। (तिरमिजी)

(8) हजरते अबू सईद खुदरी रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि हुजूर अलैहिस्सलाम जब खाने से फारिग होते तो यह दुआ पढ़ते।*

"अलहम्दु लिल्लाहिल्लजी अतअमना व सकाना व जअलना मिनल मुस्लिमीन" (तिरमिजी—अबू दाऊद)

---

* यानी अल्लाह तआला का शुक्र है जिस ने हमें खिलाया पिलाया और मुसलमान बनाया।

पीने का बयान

(1) हजरते इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि ऊँट की तरह एक सांस में कोई चीज न पियो। बल्कि दो-दो तीन-तीन मरतबा में पियो और जब पियो बिस्मिल्लाह कह लो और जब मुँह से हटाओ तो अलहम्दु लिल्लाहि कहो। (तिरमिजी)

(2) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम पीने में तीन बार सांस लेते थे। (बुखारी—मुस्लिम) और इमामे मुस्लिम की रिवायत में इतना ज्यादा है कि हुजूर फरमाते थे इस तरह पीने में ज्यादा सैराबी होती है। और तनदुरुस्ती के लिए फाइदामंद (भी) है। (मिशकात)

(3) हजरते इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने

फरमाया कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने बरतन में सांस लेने और फूंकने से मना फरमाया। (अबू दाऊद)

(4) हज़रते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने खड़े होकर पीने से मना फरमाया।
(मुस्लिम शरीफ)

(5) हज़रते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि खड़े होकर हरगिज कोई आदमी न पिये और जो भूल कर ऐसा कर गुजरे तो वह कै कर दे। (मिशकात)

हजरते शैख अब्दुल हक्क मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि इस हदीस की शरह में फरमाते हैं कि जब भूल कर पीने में कै करने का हुक्म है तो जान बूझ कर पीने में बदरजए औला यह हुक्म होगा।

कपड़ा पहनने का बयान

(1) हजरते समुरा रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि उजले कपड़े पहना करो इसलिए कि वह बहुत अच्छा होता है।
(अहमद—मिशकात)

(2) हजरते इबादा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि पगड़ी जुरुर बांधा करो कि यह फरिश्तों की पहचान है और उसके (शमला) को पीठ के पीछे लटकालो। (बैहिकी—मिशकात)

(3) हजरते आबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम जब कुर्ता पहनते तो पहले दाहिनी आसतीन पहनते—(तिरमिजी)

(4) हजरते अबू सईद खुदरी रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि मैं ने हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम को फरमाते हुए सुना कि मोमिन की लुंगी आधी पिंडलियों तक है और आधी पिंडली और टखनों के दरमियान हो जब भी कोई हरज नहीं—जो (कपड़ा) टखने से नीचे हो वह आग में है। हुजूर ने इस जुम्ला को तीन बार फरमाया और अल्लाह तआला कियामत के दिन उस की तरफ निगाह नहीं फरमाएगा जो लुंगी (या पाजामा की घमंड से घसीटता चले)

(अबू दाऊद)

(5) हजरते अम्र इब्ने शुऐब अपने बाप से रिवायत करते हैं कि उन के दादा ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि अल्लाह तआला को यह बात पसंद है कि उस के दिये हुए माल व दौलत का असर बंदा (के लिबास वगैरा से) जाहिर हो।

(तिरमिजी)

हजरते शैख अब्दुल हक्क मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि इस हदीस की शरह में फरमाते हैं कि यहाँ से मालूम हुआ कि अल्लाह की नेमत को छिपाना जाइज नहीं और गोया नेमत की नाशुकरी का सबब है।

(6) हजरते आइशा रजियल्लाहु तआला अनहा से रिवायत है कि अस्मा बिन्ते अबू बकर (रजियल्लाहु तआला अनहुमा) बारीक कपड़े पहन कर हुजूर के सामने आईं 'हुजूर ने उन की जानिब से मुँह फेर लिया और फरमाया ऐं असमा! औरत जब बालिग हो जाये तो उस के बदन का कोई हिस्सा हरगिज न दिखाई देना चाहिए सिवाय इस के और इस के—और इशारा फरमाया अपने मुँह और हथेलियों की जानिब। (अबू दाऊद—मिशकात)

(7) हजरते अलकमा इब्ने अबू अलकमा अपनी माँ से रिवायत करते हैं कि हफ्सा बिन्ते अब्दुर्रहमान हजरते आइशा रजियल्लाहु तआला अनहुमा के पास बारीक दुपट्टा ओढ़ कर आईं तो हजरते आइशा रजियल्लाहु तआला अनहा ने उनका दुपट्टा फाड़ दिया और मोटा दुपट्टा उढ़ा दिया। (मालिक—मिशकात)

नोट—आज कल औरतें बहुत बारीक और बदन से कसा हुआ कपड़ा पहनने लगी हैं जिस से बदन के ज्यादा हिस्से जाहिर होते हैं औरतों को ऐसा कपड़ा पहनना हराम है।

आज कल मर्द भी ऐसी हलकी लुंगी पहनने लगे हैं जिस से बदन की रंगत झलकती है और पर्दा नहीं होता मर्दों को भी ऐसी लुंगी पहनना हराम है। कुछ लोग उसी को पहन कर नमाज भी पढ़ते हैं उन की नमाज नहीं होती इसलिए कि नाफ से घुटने तक छिपाना नमाज में फर्ज है। और कुछ लोग धोती बांधते हैं। धोती बांधना हिन्दुओं का तरीका है और उस से पर्दा भी नहीं होता कि चलने में रान का पिछला हिस्सा खुल जाता है। मुसलमानों को इस से बचना जुरूरी है। और नेकर जांघिया पहनना कि जिस से घुटना खुला रहे हराम है।

जूता पहनना

(1) हजरते जाबिर रजियल्लाहु तआला ने फरमाया कि हम हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के साथ एक सफर में थे तो हुजूर ने फरमाया कि जूते ज्यादा पहना करो इसलिए कि आदमी जब तक जूता पहने रहता है वह सवार (की तरह) है। (अबू दाऊद)

(2) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जब जूता पहने तो पहले दाहिने पाँव में पहने और जब उतारे तो पहले बायें पाँव का उतारे। (बुखारी—मुस्लिम)

(3) हजरते फजाला इब्ने उबैद रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम हम को हुक्म फरमाते थे कि कभी-कभी हम नंगे पाँव रहें। (अबू दाऊद)

(4) हजरते अबू मुलैका रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि किसी ने हजरते आइशा रजियल्लाहु तआला अनहा से कहा कि एक औरत (मरदाना) जूता पहनती है। उन्होंने फरमाया कि हुजूर ने मरदों का जूता और कपड़ा पहनने वाली औरतों पर लानत फरमाई है। (अबू दाऊद)

अंगूठी का बयान

(1) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने (मरदों को) सोने की अंगूठी से मना फरमाया—(मुस्लिम शरीफ)

नौवी शरह मुस्लिम जिल्द 2 सफा 195 में है कि मुसलमानो का इस बात पर इत्तिफाक है कि औरतों के लिए सोने की अंगूठी जाइज है और मरदों के लिए हराम है। और अशिअतुल्लम्आत जिल्द 3 सफा 559 में है कि सोने की अंगूठी का हराम होना मरदों के लिए है और औरतों के लिए हराम नहीं है।

(2) हजरते अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुमा से रिवायत है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने एक सहाबी के हाथ में सोने की अंगूठी देखी तो उसे उतार कर फेंक दी और फरमाया कि तुम में से कोई आदमी जहन्नम के अंगारे का इरादा करता है यहाँ तक कि उस को अपने हाथ में ले लेता है। जब हुजूर चले गये तो किसी ने उस सहाबी से कहा कि अपनी अंगूठी उठा लो किसी और काम में लाना। उन्हों ने कहा खुदा की कसम मैं उसे कभी न लूँगा जब कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फेंक दी है। (मुस्लिम शरीफ)

(3) हजरते बुरीदा रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने एक आदमी से फरमाया जो पीतल की अंगूठी पहने हुए था—कि क्या बात है कि तुझ से मूर्तियों की बू आती है। उन्हों ने वह अंगूठी फेंक दी। फिर लोहे की अंगूठी पहन कर आए। हुजूर ने फरमाया क्या बात है—कि मैं देखता हूँ तुम जहन्नमियों का गहना पहने हुए हो? उस आदमी ने वह अंगूठी भी फेंक दी। फिर पूछा या रसूलल्लाह! किस चीज की अंगूठी बनवाऊँ फरमाया चाँदी की बनाओ और एक मिसकाल पूरा न करो यानी वजन में पूरा साढ़े चार माशा न हो बल्कि कुछ कम हो।

(तिरमिजी)

नोट—मरदों को एक से ज्यादा अंगूठी पहनना या छल्ले पहन-ना या एक से जाइद नगीने वाली अंगूठी पहनना अगरचे चाँदी की हो नाजाइज है। (बहारे शरीअत)

हजामत का बयान

(1) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि पाँच चीजें फितरत से हैं (यानी नबियों की सुन्नत हैं) खतना करना (2) नाफ के नीचे के बाल मूँडना (3) मूँछें कतरवाना (4) नाखुन कटवाना और (5) बगल के बाल उखेड़ना—(बुखारी-मुस्लिम)

(2) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि मूँछें काटने 'बाल तराशने' बगल के बाल उखेड़ने और नाफ के नीचे के बाल मूँडने में हमारे लिए यह वक्त मुकर्रर किया गया है कि चालीस दिन के अंदर ही इन कामों को जुरुर कर लें।

(मुस्लिम शरीफ)

हजरते शैख अब्दुल हक्क मुहद्दिस देहलवी रमतुल्लाहि तआला अलैहि इस हदीस की शरह में लिखते हैं कि चालीस दिन से ज्यादा नहीं गुजरना चाहिए और अगर इस से कम में करे तो अच्छा है। और बयान किया गया है कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मूँछ और नाखून हर जुमा को काटते थे और हर बीस रोज पर नाफ के नीचे का बाल मूँडते थे और हर चालीस रोज पर बगल के बाल उखाड़ते थे। (अशिअतुल्लमआत जिल्द 3 सफा 569)

(3) हजरते अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहू ने फरमाया कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने औरत को सर मुँड़ाने से मना फरमाया। (नसई—मिशकात)

कुछ जुरुरी मसले

(1) नाखुन काटने में हुजूर सैइदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से इस तरह रिवायत है कि दाहिने हाथ की कलिमा

की उंगली से शुरू करे और छोटी उंगली पर खत्म करे फिर बायें हाथ की छोटी उंगली से शुरू कर के अँगूठे पर खत्म करे फिर दाहिने हाथ के अँगूठे का नाखुन काटे। (बहारे शरीअत)

(2) आज कल औरतें सर के बाल कटा कर लौंडों की सूरत इख्तियार करने लगी हैं यह सख्त नाजाइज व गुनाह है। हुजूर सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने ऐसी औरतों पर लानत फरमाई है। अल्अयाजु बिल्लाहि तआला।

(3) सुन्नत यह है कि मर्द पूरे सर के बाल मुंडवाये या बढ़ाए और मांग निकाले—(फतावा आलम गीरी मिसरी जिल्द 5 सफा 312—तफसीराते अहमदिया सफा 31)

दाढ़ी और मोंछ का बयान

(1) हजरते इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि मुशरिकीन की मुखालफत करो (इस तरह कि) दाढ़ियों को बढ़ाओ और मूँछों को कतराओ और एक रिवायत में है मूँछों को खूब कम करो और दाढ़ियों को बढ़ाओ। (बुखारी-मुस्लिम)

(2) हजरते जैद इब्ने अरकम रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया जो अपनी मूँछ न काटे वह हम में से नहीं है। (यानी हमारे तरीका के खिलाफ है। (तिरमिजी—नसई)

(3) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि मोंछें कटाओ और दाढ़ियाँ बढ़ाओ (इस तरह) मजूसियों की मुखालफत करो—

(मुस्लिम शरीफ)

कुछ जुरुरी मसले

(1) आज कल मुसलमानों ने दाढ़ी में तरह-तरह का फैशन निकाल रखा है। बहुत से लोग बिल्कुल सफाया करा देटे हैं। कुछ

लोग सिर्फ ठोढ़ी पर जरा सी रखते हैं। कुछ लोग एक दो उंगुल दाढ़ी रखते हैं और अपने को शरीअत का फरमाँ बरदार समझते हैं। हालाँकि दाढ़ी का बिल्कुल सफाया कराने वाले और दाढ़ी को एक मुट्ठी से कम रखने वाले दोनों शरीअत की निगाह में बराबर हैं। बहारे शरीअत जिल्द 16 सफा 197 में है—दाढ़ी बढ़ाना पहले नबियों की सुन्नतों में से है। मुंडाना या एक मुट्ठी से कम कराना हराम है। और हजरते शेख अब्दुल-हक्क मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि अशिअतुललम्आत जिल्द 1 सफा 212 में फरमाते हैं कि दाढ़ी मुंडाना हराम है 'और अंग्रेजों' हिन्दुओं और कलंदरियों का तरीका है। और दाढ़ी को एक मुट्ठी तक छोड़ देना वाजिब है। और जिन आलिमों ने एक मुट्ठी दाढ़ी रखने को सुन्नत करार दिया है। (तो वह इस वजह से नहीं कि उनके नजदीक वाजिब नहीं बल्कि इस वजह से कि या तो यहाँ सुन्नत का मतलब दीन का चालू रास्ता है। या इस वजह से कि एक मुट्ठी का वाजिब होना हदीस शरीफ से साबित है। जैसा कि नमाजे ईद को सुन्नत फरमाया (हालाँ कि नमाजे ईद वाजिब है)

और दुर्रे मुख्तार मए रद्दुलमुहतार जिल्द 2 सफा 116 'रद्दुलमुहतार जिल्द 2 सफा 117 'बहरुर्राइक जिल्द 2 सफा 280 "फतहुल कदीर जिल्द 2 सफा 260 और तहतावी सफा 491 में है कि दाढ़ी जब कि एक मुट्ठी से कम हो तो उस को काटना जिस तरह कि कुछ पच्छिम के रहने वाले और जनाने जनखे करते हैं किसी के नजदीक हलाल नहीं और कुल दाढ़ी का सफाया करना यह काम तो हिन्दुस्तान के यहूदियों और ईरान के मजूसियों का है।

(2) एक मुट्ठी से कुछ ज्यादा दाढ़ी रखना जाइज है लेकिन हमारे बहुत बड़े-बड़े ज्यादा आलिमों के नजदीक उस की बहुत लंबाई कि मुनासिब हद से बाहर और उंगली उठाने का सबब हो मकरुह व ना पसंदीदा है। (लम्अतुज्जुहा)

खिजाब का बयान

(1) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि बुढ़ापे को बदल डालो यानी खिजाब लगाओ और यहूदियों के जैसा न करो। (तिरमिजी)

(2) हजरते अबू जर रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि सब से अच्छी चीज जिस से उजले बालों का रंग बदला जाये मेंहदी और कतम है। यानी मेंहदी लगाई जाये या कतम—(अबू दाऊद)

(3) हजरते इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुमा से रिवायत है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वस्सल्लम ने फरमाया कि आखिरी जमाना में कुछ लोग होंगे जो काला खिजाब करेंगे जैसे कबूतर के पोटे—वह लोग जन्नत की खुशबू नहीं पायेंगे—

(अबू दाऊद—नसई—मिशकात)

सोने और लेटने का बयान

(1) हजरते जाबिर रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने पाँव पर पाँव रखने से मना फरमाया है जब कि चित लेटा हो। (मुस्लिम शरीफ)

यह मना उस वक्त है जब कि एक पाँव खड़ा हो कि इस तरह बे परदगी का डर है और अगर पाँव को फैला कर एक को दूसरे पर रखे तो कोई हरज नहीं—(बहारे शरीअत)

(2) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने एक आदमी को पेट के बल लेटे हुए देखा फरमाया इस तरह लेटने को अल्लाह तआला पसंद नहीं फरमाता (तिरमिजी)

(3) हजरते जाबिर रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने ऐसी छत पर सोने से मना फरमाया कि जिस पर गिरने से कोई रोक न हो। (तिरमिजी)

कुछ मसले

(1) मुस्तहब यह है कि वुजू के साथ सोये और कुछ देर दाहिनी करवट पर दाहिने हाथ को रुखसार (गाल) के नीचे रख कर किबला रुख सोये फिर उस के बाद बाईं करवट पर।

(2) जब लड़की और लड़के की उम्र दस वर्ष हो जाये तो उन्हें अलग-अलग सुलाना चाहिए।

(3) मियाँ बीवी जब एक चार पाई पर सोयें तो दस वर्ष के बच्चा को अपने साथ न सुलायें।

(4) दिन के शुरु हिस्सा में सोना या मगरिब और इशा के बीच सोना मकरुह है। (बहारे शरीअत)

(5) हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में उत्तर जानिब पाँव फैला कर सोना बिला शुबहा जाइज है। उसे नाजाइज समझना गलती है।

(6) जब सो कर उठे तो यह दुआ पढ़े। "अल्हम्दुलिल्लाहिल्लजी अहयाना बाद मा अमानता व इलैहिन्नुशूर।

"(बहारे शरीअत)

सपना देखने का बयान

(1) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि अच्छा सपना नुबूवत के छियालीस हिस्सों में में से एक हिस्सा है। (बुखारी-मुस्लिम)

(2) हजरते अबू कतादा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि अच्छा सपना खुदाय तआला की तरफ से है और बुरा सपना शैतान की जानिब से।

(बुखारी—मुस्लिम)

(3) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्सलीम ने फरमाया कि जिस

ने सपना में मुझ को देखा उस ने (वाकिई) मुझाही को देखा इसलिए कि शैतान मेरी सूरत नहीं बन सकता। (बुखारी—मुस्लिम)

(4) हजरते जाबिर रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि नबीए करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम की खिदमत में एक आदमी ने हाजिर होकर कहा—(या रसूलल्लाह !) मैं ने ख्वाब में देखा कि जैसे मेरा सर काट डाला गया है हुजूर अलैस्सिलातु वस्सलाम यह सुन कर हंसे और फरमाया जब सपना में शैतान किसी के साथ खेले तो वह उस सपना को लोगों से बयान न करे। (मुस्लिम—शरीफ)

(5) हजरते जाबिर रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि तुम में से जो कोई बुरा सपना देखे तो उस को चाहिए कि बायें तरफ तीन बार थूक दे और तीन बार शैतान से खुदाय तआला की पनाह माँगे और जिस करवट पर पहले था उसे बदल दे। (मुस्लिम शरीफ)

फाल का बयान

(1) हजरते हफ्सा रजियल्लाहु तआला अनहा ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि जो आदमी काहिन और जोतषियों के पास जाकर कुछ पूछे उस की चालीस दिन की नमाजें कबूल नहीं की जायेंगी। (मुस्लिम शरीफ)

(2) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जो आदमी काहिन और जोतषी के पास जाये और उस के बयान को सच्चा जाने तो वह कुर्आन और दीने इस्लाम से अलग हो गया।

(अहमद—अबू दाऊद)

(3) हजरते आइशा रजियल्लाहु तआला अनहा ने फरमाया कि कुछ लोगों ने रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम से काहिनों की बाबत पूछा (कि उन की बातें भरोसा के काबिल हैं या नहीं) हुजूर ने फरमाया वह बिल्कुल भरोसा के काबिल नहीं हैं। लोगों ने कहा या रसूलल्लाह ! बाज वक्त वह ऐसी खबरें देते हैं जो सच हो जाती

है। हुजूर ने फरमाया वह हक है जिस को (फरिश्तों से) शैतान उचक लेता है और अपने दोस्त काहिन के कान में इस तरह डाल देता है जिस तरह एक मुर्गी दूसरी मुर्गी के कान में आवाज पहुँचाती है फिर वह काहिन उस हक में सौ से ज्यादा झूटी बातें मिला देते हैं। (बुखारी मुस्लिम)

छींक और जमाही का बयान

(1) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम को जब छींक आती तो मुँह को हाथ या कपड़े से छिपा लेते और आवाज नीची करते। (तिरमिजी)

(2) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैस्सिलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जब किसी को छींक आये तो अल्हम्दुलिल्लाह कहे और उस का भाई या साथ वाला यर हमुकल्लाह कहे जब यर हमुकल्लाह कह ले तो छींकने वाला उस के जवाब में यह कहे—"यह दी कुमुल्लाह व युसलिहु बा ल कुम"

(बुखारी)

(3) हजरते अबू सईद खुदरी रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि हुजूर अलैस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जब किसी को जमाही आये तो अपना हाथ मुँह पर रख ले क्योंकि शैतान मुँह में घुस जाता है। (मुस्लिम शरीफ)

कुछ मसले का बयान

(1) नबी जमाही से बचे हुए हैं इसलिए कि उसमें शैतान का दखल है उसके रोकने की अच्छी तरकीब यह है कि जब जमाही आने वाली हो तो दिल में ख्याल करे कि नबी इससे बचे हुए हैं फौरन रुक जायेगी। (बहारे शरीअत—शामी जिल्द 1 सफा 336)

(2) अगर छींकने वाला अल्हम्दु लिल्लाह कहे तो सुनने वाले पर फौरन इस तरह जवाब देना वाजिब है कि वह सुन ले।

(3) कुछ लोग छींक को बदफाली बयान करते हैं जैसे किसी काम के लिए जा रहा है और किसी को छींक आ गई तो समझते हैं वह काम पूरा नहीं होगा यह जहालत है इसलिए कि बदफाली कोई चीज नहीं बल्कि ऐसे मौका पर छींक आना और उस पर ज़िक्रे इलाही करना नेक फाली है।

इजाजत का बयान

(1) हज़रते जाबिर रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि मैंने नबीए करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम के घर पर हाजिर होकर दरवाजा खटखटाया तो हुजूर ने फरमाया कौन है ? मैंने कहा कि मैं हूं तो आपने फरमाया मैं (तो) मैं भी हूँ। (बुखारी—मुस्लिम)

यानी जवाब में अपना नाम लेना चाहिए "मैं" कहना काफी नहीं है इसलिए कि "मैं" तो हर आदमी है।

(2) हजरते अब्दुल्लाह इब्ने युस्र रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम जब किसी के दरवाजा पर जाते तो दरवाजा के सामने नहीं खड़े होते थे बल्कि दाहिने या बायें दरवाजा से हट कर खड़े होते थे। (अबू दाऊद)

(3) हजरते अता इब्ने यसार रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि एक सहाबी ने रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम से पूछा क्या मैं अपनी माँ के पास जाऊँ तो उससे भी इजाजत लूं ? हुजूर ने फरमाया हाँ। उन्होंने कहा मैं तो उसके साथ उस मकान में रहता हूं। हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया इजाजत लेकर उसके पास जाओ। उन्होंने कहा मैं अपनी माँ का खादिम हूं। यानी बार-बार आना जाना होता है फिर इजाजत की क्या जुरुरत ? रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि इजाजत लेकर जाओ। क्या तुम पसंद करते हो कि अपनी माँ को नंगे देखो ? कहा नहीं। फरमाया तो इजाजत हासिल कर लिया करो।

(मालिक—मिशकात)

सलाम का बयान

(1) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि क्या मैं तुम को ऐसी बात न बताऊँ कि जब तुम उसे करो तो तुम्हारे दरमियान महब्बत बढ़े और वह यह है कि आपस में सलाम को रवाज दो। (मुस्लिम)

(2) हजरते जाबिर रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि कलाम से पहले सलाम करना चाहिए। (तिरमिजी)

(3) हजरते अब्दुल्लाह रजियल्लाहु तआला अनहु से मरवी है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि सलाम में पहल करने वाला गुरुर और घमंड से पाक है। (बैहकी)

(4) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु से मरवी है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जब कोई तुम में से मुसलमानों के मजमा में पहुँचे तो सलाम करे फिर अगर बैठने की जुरुरत हो तो बैठ जाये और जब चलने लगे तो दोबारा सलाम करो। (तिरमिजी)

नोट—जो लोग कुर्आन शरीफ या वाज सुनने सुनाने में लगे हों या पढ़ने पढ़ाने में लगे हों उन्हें सलाम न किया जाये।

(5) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि ऐ बेटे ! जब तू घर में दाखिल हो तो घर वालों को सलाम कर इसलिए कि तेरा सलाम तेरे और तेरे घर वालों के लिए बरकत का सबब होगा।

(तिरमिजी)

(6) हजरते अम्र इब्ने शुऐब रजियल्लाहु तआला अनहुमा अपने बाप से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जो आदमी (सलाम करने में) गैरों का तरीका अपनाये वह हम से नहीं है। यहूद व नसारा का तरीका न अपनाओ 'यहूदियों का सलाम उंगलियों के इशारा से

है, और नसारा का सलाम हथेलियों के इशारा से है।

(तिरमिजी-मिशकात)

(7) हजरते जाबिर रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि अगर तुम्हारी भेंट बद मजहबों से हो उन्हें सलाम न करो। (इब्ने माजा)

कुछ जुरुरी मसले

(1) खत में सलाम लिखा होता है उस का भी जवाब देना वाजिब है उस की दो सूरतें हैं। एक तो यह कि जुबान से जवाब दे दूसरे यह कि सलाम का जवाब लिख कर भेज दे।

(बहारे शरीअत-दुर्रेमुख्तार और शामी जिल्द 5 सफा 275)

(2) किसी ने खत में लिखा कि फुलाँ को सलाम कहो तो जिस को खत लिखा गया है उस पर सलाम का पहुँचाना वाजिब नहीं अगर पहुँचाएगा तो सवाब पायेगा।

(3) किसी ने कहा कि फुलाँ को मेरा सलाम कह देना और उसने वादा कर लिया तो सलाम पहुँचाना वाजिब है अगर नहीं पहुँचाएगा तो गुनहगार होगा। (फतावा आलमगीरी शामी)

(4) किसी ने सलाम भेजा तो इस तरह जवाब दे कि पहले पहुँचाने वाले को फिर उस को जिस ने सलाम भेजा है यानी युँ कहे—अलैक व अलैहिस्सलाम। (फतावा आलमगीरी)

मुसाफहा का बयान

(1) हजरते बरा इब्ने आजिब रजियल्लाहु तआला अनहु कहते हैं कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जब दो मुसलमान आपस में मिलते हैं और मुसाफहा करते हैं तो उन दोनों के जुदा होने से पहले उन को बख्श दिया जाता है। (तिरमिजी)

(2) हजरते अता खुरासानी रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि आपस में मुसाफहा किया करो इस से दुश्मनी दूर होगी। (तिरमिजी)

(3) हजरते जारे जो (वफ्दे) अब्दुल कैस में शामिल थे फरमाते हैं कि जब हम मदीना में आये तो हम जल्द जल्द अपनी सवारियों से उतर पड़े और हम हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के हाथ और पांव को बोसा दिए। (अबू दाऊद मिशकात)

कुछ जुरुरी मसले

(1) दीनी पेशवा का हाथ और पांव चूमना जाइज है। हजरते शैख अब्दुल हक्क मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि अलैहि अशिअतुल्लम्आत जिल्द 4 सफा 21 पर फरमाते हैं कि परहेजगार आलिम का हाथ चूमना जाइज है और कुछ आलिमों ने फरमाया कि मुस्तहब है और वफ्दे अब्दुल कैस की हदीस की शरह में फरमाते हैं कि इस हदीस शरीफ से पांव चूमने का जाइज होना साबित हुआ और दुर्रे मुख्तार में है कि बरकत के लिए आलिम और परहेजगार आदमी का हाथ चूमना जाइज है।

(2) हर नमाज बा जमाअत के बाद भी मुसाफहा करना जाइज है। दुर्रे मुख्तार में है कि अस्र की नमाज के बाद भी मुसाफहा करना जाइज है और आलिमों ने जो उसे बिदअत फरमाया तो वह जाइज और अच्छी बिदअत है। ऐसा ही इमाम नौवी ने अपनी अफकार में फरमाया।

(3) वहाबी गैर मुकल्लिद दोनों हाथों से मुसाफहा करने को नाजाइज और हदीस के खिलाफ बताते हैं यह उन की जहालत है। हजरते शैख अब्दुल हक्क मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि अशिअतुल्लम्आत तरजमा मिशकात जिल्द 4 सफा 20 पर फरमाते हैं कि मुलाकात के वक्त मुसाफहा करना सुन्नत है और दोनों हाथ से करना चाहिए

और हदीसों में जो यद कहा गया है उस से सिर्फ एक हाथ से मुसाफहा का मतलब समझना सहीह नहीं इस लिए कि ऐसी दो चीजें जो एक दूसरे के साथ रहती हों जैसे हाथ, पाँव, आँख, मोजा, जूता और दस्ताना वगैरा उस में वाहिद का लफ्ज बोल कर दोनों

मुराद लिए जाते हैं जैसे जैद ने हाथ से पकड़ा यानी दोनों हाथ से और पाँव से चला 'यानी दोनों पाँव से और आँख से देखा यानी दोनों आँख से और कहा जाता है जैद ने जूता पहना यानी दोनों जूते और इसी पर दूसरी चीजों को समझना चाहिए।

यह काइदा हिन्दुस्तान, ईरान और अरब में सब जगह माना हुआ है वरना हदीस शरीफ 'अतयबुल कसबि अमलुर्रजुलि बिय दिही' का यह मतलब हो जाएगा कि सिर्फ एक हाथ की कमाई बेहतर है दोनों हाथ की कमाई बेहतर नहीं और मशहूर हदीस 'अलमुस्लिमु मन सलिमल्मुस्लिमून मिनलिसानिही व यदिही 'का यह मतलब मानना पड़ेगा कि पूरा मुसलमान वह आदमी है जिस के सिर्फ एक हाथ से मुसलमान अमान में रहें और दूसरे हाथ से तकलीफ में।

नोट—इस मसला का ज्यादा बयान आला हजरत इमाम अहमद रजा रजियल्लाहु तआला अनहु की किताब सफाइहुल्लुजैन में मिलेगा

माँ बाप के हक का बयान

(1) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि उस की नाक गुबार आलूद हो। उस की नाक खाक आलूद हो। उस की नाक खाक आलूद हो (यानी जलील व रुसवा हो) किसी ने पूछा या रसूलल्लाह वह कौन है ? हुजूर ने फरमाया कि जिस ने माँ बाप दोनों को या एक को बुढ़ापे के वक्त में पाया फिर (उनकी खिदमत करके) जन्नत में दाखिल न हुआ। (मुस्लिम शरीफ)

(2) हजरते मुआबिया इब्ने जाहिमा रजियल्लाहु तआला अनहुमा से रिवायत है कि उनके वालिद जाहिमा हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के पास हाजिर हुए और कहा या रसूलल्लाह ! मेरा इरादा जिहाद में जाने का है हुजूर से राय लेने के लिए हाजिर हुआ हूँ। फरमाया क्या तेरी माँ है ? कहा हाँ ? फरमाया उस की खिदमत अपने ऊपर लाजिम कर ले कि जन्नत माँ के पाँव तले है।

(अहमद—नसई—मिशकात)

(3) हज़रते इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जिस ने इस हाल में सुबह की कि माँ बाप के बारे में अल्लाह तआला का फर्मां बरदार रहा तो उस के लिए सुबह ही को जन्नत के दो दरवाजे खुल जाते हैं और माँ बाप में से एक हो तो एक दरवाजा खुलता है और जिस ने इस हाल में सुबह की कि माँ बाप के बारे में खुदाय तआला का ना फरमान बंदा रहा तो उस के लिए सुबह ही को जहन्नम के दरवाजे खुल जाते हैं और एक हो तो एक दरवाजा खुलता है। एक सहाबी ने कहा अगर चे माँ बाप उस पर जुल्म करें हुज़ूर ने फरमाया अगर चे जुल्म करें अगर चे जुल्म करें अगर चे जुल्म करें।

(बैहकी—मिशकात)

(4) हज़रते अबू उमामा रज़ियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि एक शख्स ने अर्ज किया या रसूलल्लाह! माँ बाप का औलाद पर क्या हक है? फरमाया कि वह दोनों तेरी जन्नत व दोजख हैं यानी जो लोग उन को खुश रखेंगे जन्नत पायेंगे और जो उन को नाखुश रखेंगे जहन्नम में जायेंगे। (इब्ने माजा)

(5) हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने अम्र रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि परवरदिगार की खुशी बाप की खुशी में है और परवरदिगार की नाराजगी बाप की नाराजगी में है। (तिरमिज़ी)

(6) हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि यह बात बड़े गुनाहों में से है कि आदमी अपने माँ बाप को गाली दे। लोगों ने पूछा या रसूलल्लाह! क्या कोइ अपने माँ बाप को भी गाली देता है? फरमाया हाँ (उस की सूरत यह होती है कि) यह दूसरे के बाप को गाली देता है तो वह उस के बाप को गाली देता है और यह दूसरे की माँ को गाली देता है तो वह उस की माँ को गाली देता है। (बुखारी—मुस्लिम)

(7) हज़रते अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि

हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जो माँ बाप दोनों या उन में से किसी एक की कब्र पर हर जुमा को जियारत के लिए हाजिर हो तो अल्लाह तआला उस के गुनाह बख्श देगा और वह माँ बाप के साथ अच्छा बरताव करने वाला लिखा जाएगा।

(मिशकात)

औलाद के हक का बयान

(1) हजरते जाबिर इब्ने समुरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि कोई शख्स अपनी औलाद को अदब सिखाये तो उस के लिए एक साअ (लगभग 4 कि० ग्रा०) गल्ला सदका करने से बेहतर है। (तिरमिजी)

(2) हजरते अय्यूब इब्ने मूसा रजियल्लाहु तआला अनहु अपने बाप से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि औलाद के लिए बाप की कोई बख्शिश अच्छी परवरिश से बेहतर नहीं है।

(बैहकी—मिशकात)

(3) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जिस की परवरिश में दो लड़कियाँ बालिग होने तक रहें तो वह कियामत के दिन इस तरह आएगा कि मैं और वह बिल्कुल पास-पास होंगे। यह कहते हुए हुजूर ने अपनी उंगलियाँ मिला कर फरमाया कि इस तरह।

(मुस्लिम)

(4) हजरते सुराका इब्ने मालिक रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि हुजूर अलैहिस्सलात वस्सलाम ने फरमाया कि क्या मैं तुम को यह न बता दूँ कि सब से अच्छा सद्का क्या है? और वह अपनी उस लड़की पर सद्का करना है जो तुम्हारी तरफ (बेवा या तलाक होने के सबब) वापस लौट आई और तुम्हारे सिवा कोई उस का जिम्मेदार नहीं। (इब्ने माजा—मिशकात)

(5) हजरते इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा

कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु ने फरमाया कि जो शख्स तीन लड़कियों या तीन बहनों को पाले फिर उनको अदब सिखाये और उनके साथ मेहरबानी करे यहाँ तक कि खुदा उन को बे परवा कर दे (यानी वह बालिग हो जायें और उनका निकाह हो जाये) तो पालने वाले पर अल्लाह तआला जन्नत को वाजिब कर देगा एक सहाबी ने पूछा या रसूलल्लाह ! और दो बेटियों या दो बहनों के पालने पर क्या सवाब है ? हुज़ूर ने फरमाया दो का सवाब भी यही है (रावी कहते हैं) अगर सहाबा एक बेटी या एक बहन के बारे में पूछते तो एक के बारे में भी हुज़ूर यही फरमाते। (मिशकात)

कुछ जुरुरी बातें

बच्चा का अच्छा सा नाम रखे बुरा नाम न रखे कि बुरे नाम का बुरा असर होगा तो अदब कबूल न करेगा। माँ या किसी नेक नमाज़ी औरत से दो साल तक दूध पिलवाये पाक कमाई से उन की परवरिश करे कि ना पाक माल नापाक आदतें पैदा करता है। खेलने के लिए अच्छी चीज जो शरअन जाइज हो देता रहे। बहलाने के लिए उन से झूटा वादा न करे। जब कुछ होशियार हो तो खाने पीने, उठने बैठने चलने फिरने माँ बाप और उस्ताद वगैरा की इज्जत करने का तरीक़ा बताये, नेक उस्ताद के पास कुर्आन मजीद पढ़ाये, इस्लाम व सुन्नत सिखाये, हुज़ूर सैइदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की इज्जत व महब्बत उन के दिल में डाले कि यही अस्ले ईमान है। जब बच्चा की उम्र सात वर्ष हो जाये तो नमाज की ताकीद करे और जब दस वर्ष का हो जाये तो नमाज के लिए सख्ती करे अगर न पढ़े तो मार कर पढ़ाये, वुज़ू गुस्ल और नमाज वगैरा के मसले बताये। लिखने और पानी में तैरने को सिखाये, बुरी सुबहत से बचाये, इश्किया नावेल और अफसाने वगैरा हरगिज न पढ़ने दे। जब जवान हो जाये तो नेक शरीफुन्नसब लड़की से शादी कर दे और वरासत से उसे हरगिज महरूम न करे।

और लड़कियों को सीना पिरोना, कातना और खाना पकाना

सिखाये, सूरये नूर की तालीम दे और लिखना हरगिज न सिखाये कि फितना का डर है। बेटों से ज्यादा उन की दिल जूई करे। नौ वर्ष की उम्र से उन की खास निगरानी शुरु करे। शादी बारात में जहाँ नाच गाना हो वहाँ हरगिज न जाने दे। रेडियो से भी गाना बजाना हरगिज न सुनने दे। जब बालिग हो जाए तो नेक शरीफुन्न-सब लड़के के साथ निकाह कर दे फासिक व फाजिर खास कर बद मजहब के साथ हरगिज निकाह न करे। (मश्अलतुल इरशाद इला हुकूकिल औलाद मुसन्निफा आला हजरत इमाम अहमद रजा रजियल्लाहु तआला अनहु)

भाई वगैरा के हक

(1) हजरते सईद इब्ने आस रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि बड़े भाई का हक छोटे भाई पर ऐसा है जैसा कि बाप का हक बेटे पर। (बैहकी)

(2) हजरते इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सातु वस्सलाम ने फरमाया कि जो हमारे छोटों पर रहम न करे, हमारे बढ़ों की इज्जत न करे, नेकी का हुक्म न दे और बुराई से मना न करे वह हम में से नहीं है। (तिरमिजी)

(3) हजरते इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलान ने फरमाया कि जो शख्स यतीम को अपने खाने पीने में शरीक करे अल्लाह तआला उस के लिए जन्नत वाजिब कर देगा। (मिशकात)

(4) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्समाम ने फरमाया कि वह शख्स जन्नत में नहीं जायेगा जिस का पड़ोसी उस के जुल्म से बचा न हो।

(मुस्लिम शरीफ)

(5) हजरते इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि मैं ने हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम को फरमाते हुए सुना कि वह मोमिन नहीं जो खुद पेट भर खाये और उस का पड़ोसी उस की बगल में भूका रहे। (बैहकी—मिशकात)

(6) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलामु ने फरमाया कि कसम है उस जात की जिस के कब्जा में मेरी जान है कि बंदा उस वक्त तक मोमिन नहीं होता जब तक कि अपने भाई के लिए भी वह पसंद न करे जिस को वह खुद अपने लिए पसंद करता है। (बुखारी—मुस्लिम)

चोरी करना और शराब पीना

(1) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि चोर पर अल्लाह तआला ने लानत फरमाई है। (बुखारी—मुस्लिम)

(2) हजरते फुजाला इब्ने उबैद रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के पास एक चोर लाया गया तो उस का हाथ काटा गया। फिर हुजूर ने फरमाया कि वह कटा हुआ हाथ उसकी गरदन में लटका दिया जाये।(तिरमिजी)

(3) हजरते अब्दुल्लाह इब्ने अम्र रजियल्लाहु तआला अनहुमा से रिवायत है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि माँ बाप की ना फरमानी करने वाला, जुआ खेलने वाला, एहसान जताने वाला और शराब की आदत रखने वाला जन्नत में न जायेगा। (मिशकात)

(4) हजरते अबू उमामा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फममाया कि अल्लाह तआला फरमाता है कसम है मेरी इज्जत की मेरा जो बंदा शराब का एक घूँट भी पियेगा मैं उस को उसी के मिस्ल पीप पिलाऊँगा और जो बंदा मेरे डर से शराब पीना छोड़ देगा मैं उस को मुबारक हौजों में से (शराबे-तहूर) पिलाऊँगा। (अहमद—मिशकात)

(5) हजरते वाइल हजरमी रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि तारिक इब्ने सुवैद ने हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम से शराब बनाने के बारे में पूछा तो हुजूर ने मना फरमाया—उन्हों

ने कहा हम तो उसे सिर्फ दवा के लिए बनाते हैं। हुजूर ने फरमाया वह दवा नहीं है बल्कि वह खुद बीमारी है। (मुस्लिम शरीफ)

(6) हजरते जाबिर रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जो शराब पिये उसे दुर्रे मारो और जो शख्स चौथी मरतबा शराब पिये उसे कत्ल कर दो। (तिरमिजी)

नोट—अगर इस्लामी हुकूमत होती तो चोरी करने वाले का हाथ काटा जाता और शराब पीने वाले को अस्सी कोड़े मारे जाते। मौजूदा सूरत में उन के लिए यह हुक्म है कि मुसलमान उन का बाई काट करें उन के साथ खाना पीना उठना बैठना और किसी तरह के इस्लामी तअल्लुक न रखें जब तक कि वह लोग तौबा कर के अपना बुरा काम छोड़ न दें। अगर मुसलमान ऐसा न करें गे तो वह भी गुनहगार होंगे।

झूट का बयान

(1) हजरते इब्ने मसऊद रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि सच बोलना नेकी है। और नेकी जन्नत में ले जाती है। और झूट बोलना बड़ा गुनाह है और बड़ा गुनाह जहन्नम में ले जाता है। (मुस्लिम शरीफ)

(2) हजरते इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जब बंदा झूट बोलता है तो उस की बदबू से फरिश्ता एक मील दूर हट जाता है। (तिरमिजी)

(3) हजरते सफवान इब्ने सुलैम रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम से पूछा गया क्या मोमिन डरपोक होता है? हुजूर ने फरमाया हाँ! (हो सकता है) फिर पूछा गया क्या मोमिन कनजूस हो सकता है? फरमाया हाँ (हो सकता है) फिर पूछा गया क्या मोमिन झूटा होता है? फरमाया नहीं। (बैहकी—मिशकात)

(4) हजरते उम्मे कुलसूम रजियल्लाहु तआला अनहा ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि वह आदमी झूटा नहीं है जो लोगों के दरमियान सुलह पैदा करता है अच्छी बात कहता है और अच्छी बात पहुँचाता है। (बुखारी—मुस्लिम)

नोट—अपना हक पाने के लिए या अपने ऊपर से जुल्म दूर करने के लिए झूट बोलना जाइज है। (दुर्रे मुख्तार, फतावा रजविया जिल्द 3 सफा 192) और हजरत सदरुश्शरीआ रहमतुल्लाहि तआला अलैहि लिखते हैं कि तीन सूरतों में झूट बोलना जाइज है। यानी उस में गुनाह नहीं।

(1) जंग की सूरत में कि यहाँ अपने मुकाबिल को धोका देना जाइज है। इसी तरह जब जालिम जुल्म करना चाहता हो तो उस के जुल्म से बचने के लिए भी जाइज है।

(2) दो मुसलमानों में झगड़ा है और यह उन दोनों में सुलह कराना चाहता है। तो इस सूरत में झूट बोलना जाइज है। जैसे एक के सामने यह कह दे कि वह तुम्हें अच्छा जानता है। तुम्हारी तारीफ करता था या उसने तुम्हें सलाम कहला भेजा है। और दूसरे के पास भी इसी तरह की बातें करे ताकि दोनों में दुश्मनी कम हो जाये और सुलह हो जाये।

(3) अपनी औरत को खुश करने के लिए कोई बात वाकिआ के खिलाफ कहना जाइज है। (बहारे शरीअत जिल्द 16 सफा 136 बहवालए आलमगीरी) और सच बोलने में फसाद पैदा होता हो तो इस सूरत में भी झूट बोलना जाइज है। और बे गुनाह को कत्ल से बचाने के लिए झूट बोलना वाजिब है। (बहारे शरीअत जिल्द 16 सफा 136)

चुगली और गीबत का बयान

(1) हजरते हुजैफा रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि मैं ने हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम को फरमाते हुए सुना कि चुगली खाने वाला जन्नत में नहीं जाएगा। (बुखारी—मुस्लिम)

(2) हजरते अब्दुर्रहमान इब्ने गनम और अस्मा बिन्ते यजीद रजियल्लाहु तआला अनहुमा से रिवायत है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि खुदाय तआला के बहुत बुरे बंदे वह हैं जो लोगों में चुगली खाते फिरते हैं और दोस्तों के दरमियान जुदाई डालते हैं। (अहमद—बैहकी)

(3) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि तुम्हें मालूम है गीबत क्या चीज है? लोगों ने कहा अल्लाह व रसूल उस को अच्छा जानते हैं। फरमाया गीबत यह है कि तू अपने भाई के बारे में ऐसी बात कहे जो उसे बुरी लगे किसी ने कहा अगर मेरे भाई में वह बुराई मौजूद हो तो क्या उस को भी गीबत कहा जाएगा? फरमाया जो कुछ तुम कहते हो अगर उस में मौजूद हो जभी तो गीबत है। और अगर तुम ऐसे बात कहो जो उस में मौजूद न हो तो यह तो झूटा इल्जाम है। (मुस्लिम शरीफ)

(4) हजरते अबू सईद व हजरते जाबिर रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि गीबत, जिना से बुरी है। सहाबा ने कहा या रसूलल्लाह! गीबत जिना से बुरी क्यों है? फरमाया आदमी जिना करता है फिर तौबा करता है तो अल्लाह तआला उस को अपनी मेहरबानी से मुआफ फरमा देता है। लेकिन गीबत करने वाले को अल्लाह तआला मुआफ नहीं फरमाता जब तक कि उस को वह आदमी मुआफ न कर दें जिस की गीबत की गई है। (बैहकी—मिशकात)

(5) हजरते बह्ज इब्ने हकीम रजियल्लाहु तआला अनहु अपने बाप से रिवायत करते हैं और वह अपने दादा से कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया क्या तुम लोग बुरे को बुरा कहने से बचते हो? आखिर उसे लोग क्यों कर पहचानेंगे। बुरे की बुराईयाँ बयान किया करो ताकि लोग उस से बचें।

(सुननेबैहकी)

कुछ जुरुरी मसले

(1) फासिके मोलिन यानी खुल्लम खुल्ला बड़ा गुनाह् करने वाले और बद मजह्ब की बुराई बयान करना जाइज है बल्कि अगर लोगों को उस की बुराई से बचाना मकसूद हो तो सवाब मिलने की उम्मोद है। (बह्ारे शरीअत बह्वालए रद्दुलमुह्तार)

(2) जो शख्स खुल्लम खुल्ला बुरा काम करता हो और उस को इस बात की कोई परवा नहीं कि लोग उसे क्या कहें गे तो उस शख्स की उस बुरी बात का बयान करना गीबत नहीं। मगर उस की दूसरी बातें जो जाहिर नहीं हैं उन का चर्चा करना गोबत है।

(बह्ारे शरीअत बह्वालए रद्दुलमुह्तार)

आज कल बहुत से वहाबी अपनी वहाबियत छुपाते और खुद को सुन्नी जाहिर करते हैं और जब मौका पाते हैं तो बद मजह्बी को आहिस्ता-आहिस्ता फैलाते हैं उन की बद मजह्बी को जाहिर करना गीबत नहीं इसलिए कि लोगों को उन के मक्र व बुराई से बचाना है और अगर वह अपनी बद मजह्बी को नहीं छुपाता बल्कि खुल्लम खुल्ला जाहिर करता है जब भी गीबत नहीं इसलिए कि वह खुल्लम खुल्ला बुराई करने वालों में दाखिल है। (बह्ारे शरीअत)

जुबान की हिफाजत और तनहाई वगैरा

(1) हजरते अब्दुल्लाह इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जो शख्स चुप रहा उसने नजात पाई। (तिरमिजी)

(2) हजरते अबूजर रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि मैं ने हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम को फरमाते हुए सुना कि अकेले रहना बुरे साथी से बेहतर है और अच्छा साथी बेहतर है अकेला रहने से और भलाई सिखाना बेहतर है चुप रहने से। और चुप रहना बेहतर है बुराई सिखाने से। (बैह्की—मिशकात)

(3) हजरते इब्ने मसऊद रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि मुसलमान को गाली देना बड़ा गुनाह है। (बुखारी—मुस्लिम)

(4) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया कि जब फासिक यानी बड़े गुनहगार की तारीफ की जाती है तो अल्लाह तआला गजब फरमाता है। और फासिक यानी बड़े गुनहगार की तारीफ से अल्लाह का अर्श काँप उठता है। (बैहकी)

जब फासिक की तारीफ करने से अल्लाह का अर्श काँपने लगता है तो बद दीन और बद मजहब की तारीफ करने से अर्शे इलाही किस कदर काँपता होगा। अल्अयाजु बिल्लाहि तआला।

दुश्मनी और जलन का बयान

(1) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि बंदों के आमाल हर हफ्तह दो मरतबा पेश किए जाते हैं। पीर और जुमेरात को पस हर बंदा की बख्शिश होती है सिवा उस बंदा के जो अपने किसी मुसलमान भाई से दुश्मनी रखता है उस के बारे में हुक्म दिया जाता है कि उन दोनों को छोड़े रहो (यानी फरिश्ते उनके गुनाहों को न मिटायें) यहाँ तक कि वह आपस की दुश्मनी को खत्म कर दें।

(मुस्लिम)

(2) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि किसी मुसलमान को जाइज नहीं कि वह तीन दिन से ज्यादा किसी मुसलमान को दुश्मनी से छोड़ रखे। अगर तीन दिन गुजर जायें तो उस को चाहिए कि अपने भाई से मिल कर सलाम करे अगर वह सलाम का जवाब दे दे तो सुलह के सवाब में दोनों शरीक हैं और अगर सलाम का जवाब न दे तो जवाब न देने वाला गुनाहगार हुआ और सलाम

करने वाला तअल्लुक छोड़ने के गुनाह से बरी हो गया।

(अबूदाऊद—मिशकात)

(3) हजरते जुबैर रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि अगली उम्मतों की बीमारी तुम्हारी तरफ भी आ गई वह बीमारी दुश्मनी और जलन है जो मूँडने वाली है। मेरा यह मतलब नहीं कि वह बाल मूँडती है बल्कि वह दीन को मूँडती है। (अहमद—तिरमिजी)

(4) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि हसद और जलन से अपने आप को बचाओ इसलिए कि हसद नेकियों को इस तरह खा जाता है जिस तरह आग लकड़ी को।

(अबूदाऊद)

फाइदा—किसी शख्स में कोई अच्छाई देख कर यह तमन्ना करना कि वह अच्छाई उस से दूर होकर मेरे पास आ जाये इसे हसद कहते हैं। हसद करना हराम है। (बहारे शरीअत) और अगर यह तमन्ना है कि वह अच्छाई मुझ में भी हो जाये तो इसे रश्क कहते हैं। यह जाइज है।

खुदा ही के लिए महब्बत खुदा ही के लिए दुश्मनी

(1) हजरते अबू जर रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम हम लोगों के पास तशरीफ लाये और फरमाया कि तुम लोग जानते हो कि खुदाय तआला के नजदीक कौन सा अमल सबसे पसंदीदा है? किसी ने कहा नमाज और जकात किसी ने कहा जिहाद। हुजूर ने फरमाया अल्लाह तआला के नजदीक सब से पसंदीदा अमल "अल्हुब्बु फिल्लाह वल्बुगजु फिल्लाह" है। यानी खुदा ही के लिए किसी से महब्बत करना और खुदा ही के लिए किसी से नफरत करना। (अहमद—अबू दाऊद)

हजरते शेख अब्दुलहक्क मुहद्दीस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि इस हदीस की शरह में फरमाते हैं कि यहाँ सुवाल पैदा होता है कि "हुब्बु फिल्लाह" का नमाज, जकात और जिहाद से ज्यादा महबूब होना कैसे सहीह होगा जब कि यह चीजें सब अमल से बेहतर हैं। इस का जवाब यह है कि जो शख्स सिर्फ अल्लाह तआला के लिए महब्बत करेगा वह नबी-वली और अल्लाह तआला के हर नेक बंदों से महब्बत करेगा और उन लोगों की पैरवी व फरमाँ बरदारी भी जुरुर करेगा (इसलिए कि महब्बत के लिए फरमाँ बरदारी जुरुरी है।) और जो शख्स की खुदाय तआला के लिए दुश्मनी करेगा तो दीन के दुश्रनों से यक़ीनन दुश्मनी करेगा। गोया हुजूर ने फरमाया कि अमलों और फरमाँ बरदारियों का मदार और जड़ हुब्बु लिल्लाह—और बुगजु लिल्लाह है।

(अशिअतुल्लम्आत जिल्द 4 सफा 138)

(2) हजरते इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने अबूजर से फरमाया कि ऐ अबूजर ! ईमान की कौन सी गिरह ज्यादा मजबूत है ? कहा अल्लाह और रसूल उस को ज्यादा जानते हैं। हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया अल्लाह तआला ही के लिए आपस में दोस्ती रखना और अल्लाह ही के लिए किसी को दोस्त बनाना और किसी को दुश्मन समझना। (बैहकी)

(3) हजरते अबू रजीन रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने उन से फरमाया क्या मैं तुझे दीन की वह जड़ न बता दूँ जिस के जरिये तू दुनिया व आखिरत की भलाई हासिल कर ले (पहली बात तो यह कि) अल्लाह वालों की मज्लिसों में बैठना अपने लिए लाजिम कर ले। और जब अकेला रहना मयस्सर आये तो जितना हो सके खुदाय तआला की याद में अपनी जुबान हिला और खुदाय तआला ही के लिए दोस्ती कर और उसी के लिए दुश्मनी कर। (बैहकी)

गुस्सा और घमण्ड का बयान

(1) हजरते बहज इब्ने हकीम अपने बाप से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि गुस्सा ईमान को ऐसा बरबाद करता है जिस तरह एलवा शहद को खराब कर देता है। (बैहकी)

(2) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि बहादर वह नहीं जो पहलवान हो और दूसरे को पछाड़ दे बल्कि बहादर वह शख्स है जो गुस्सा के वक्त अपने आप को काबू में रखे।

(बुखारी—मुस्लिम)

(3) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि हजरते मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा ऐ मेरे परवरदिगार! कौन बंदा तेरे नजदीक ज्यादा इज्जत वाला है? फरमाया वह बंदा जो कुदरत रखते हुए मुआफ कर दे। (बैहकी—मिशकात)

(4) हजरते इब्ने मसऊद रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जिस शख्स के दिल में राई बराबर घमंड होगा वह जन्नत में नहीं जाएगा। एक शख्स ने कहा (या रसूलल्लाह) आदमी इस बात को पसंद करता है कि उसका पहनावा अच्छा हो और उस का जूता अच्छा हो (क्या यह भी घमंड में दाखिल है?) हुजूर ने फरमाया खुदाय तआला जमील है और वह जमाल (आराइश) को पसंद फरमाता है इसलिए आराइश व जमाल की ख्वाहिश घमंड नहीं है। और अलबत्ता घमंड हक को कबूल न करना और लोगों को हकीर व जलील (कम दरजा व बेइज्जत) समझना है।

(5) हजरते फारुके आजम रजियल्लाहु तआला अनहु ने मिंबर पर खड़े हो कर फरमाया—ऐ लोगो! तवाजु (यानी आजिजी व इनकिसारी) इख्तियार करो मैंने हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम को

फरमाते हुए सुना है कि जो खुदा की खुशी हासिल करने के लिए तवाजु करता है खुदाय तआला उसे ऊँचा फरमाता है यहाँ तक कि वह अपने आप को छोटा समझता है मगर लोगों की नजर में वह बड़ा समझा जाता है। और जो घमंड करता है अल्लाह तआला उसे पस्त कर देता है यहाँ तक कि वह लोगों की नजरों में बे इज्जत रहता है और अपने तईं अपने आप को बड़ा ख्याल करता है हालाँ कि अनंजाम कार एक दिन वह लोगों की निगाह में कुत्ते और सूअर से भी बुरा हो जाता है।

जुल्म का बयान

(1) हजरते इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अनहुमा से रिवायत है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जुल्म कियामत के दिन अंधेरियों का सबब होगा।

(बुखारी—मुस्लिम)

(2) हजरते औस इब्ने शुरहबील से रिवायत है कि उन्हों ने हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम को फरमाते हुए सुना कि जो शख्स जालिम को कूवत देने के लिए उस का साथ दे यह जानते हुए कि वह जालिम है तो वह इस्लाम से खारिज हो जाता है। (बैहकी) यानी यह एक मुसलमान का काम नहीं है।

(3) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया क्या तुम्हें मालूम है गरीब कौन है ? लोगों ने कहा हम में गरीब वह आदमी है जिस के पास न पैसे हों न सामान—हुजूर ने फरमाया मेरी उम्मत में दर अस्ल गरीब वह आदमी है जो कियामत के दिन नमाज 'रोजा' जकात लेकर आये इस हाल में कि उस ने किसी को गाली दी हो 'किसी पर तुहमत लगाई हो' किसी का माल खा लिया हो 'किसी को कत्ल किया हो और किसी को मारा हो तो अब उन्हें खुश करने के लिए उस आदमी की नेकियाँ उन मजलूमों के बीच में बाँट दी जायेंगी पस उस की नेकियाँ खत्म हो जाने के बाद भी अगर लोगों

के हक्क उस पर बाकी रह जायेंगे तो अब हक्कदारों के गुनाह लाद दिये जायेंगे यहाँ तक कि उसे जहन्नम में फेंक दिया जाएगा।

नोट—बंदों पर दो किस्म के हक्क होते हैं। अल्लाह के हक्क और बंदों के हक्क 'इन दोनों को अदा करना जुरुरी है लेकिन उन में बंदों के हक्क बहुत अहम हैं इसलिए कि खुदाय तआला अपने करम से अगर चाहे तो अपने हक्क को मुआफ फरमादे लेकिन बंदों के हक्क को अल्लाह तआला हरगिज नहीं मुआफ फर माएगा जब तक कि वह बंदे न मुआफ कर दें कि जिन के हक्क उस पर होते हैं लिहाजा अल्लाह के हक्क के साथ बंदों के हक्क अदा करने की जहाँ तक हो सके कोशिश करे वरना कियामत के दिन सख्त अजाब में गिरफतार होगा।

माल वगैरा की लालच का बयान

(1) हजरते इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुमा से रिवा-यत है कि नबीए करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि अगर (दुनिया दार) आदमी के पास माल से भरे हुए दो जंगल हों जब भी वह तीसरे जंगल की आरजू करेगा और ऐसे (लालची) आदमी का पेट कब्र की मिट्टी के सिवा और कोई चीज नहीं भर सकती। (बुखारी—मुस्लिम)

(2) हजरते काब इब्ने मालिक रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि दो भूके भेड़िये जिन्हें बकरियों में छोड़ दिया जाये वह इतना नुकसान नहीं पहुँचाते जितना कि माल और मरतबा की लालच इनसान के दीन को नुकसान पहुँचाती है। (तिरमिजी)

(3) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि नबीए करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरराया कि दिरहम व दीनार के बंदे पर लानत की गई है। (तिरमिजी)

(4) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि नबीए करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि आदमी बूढ़ा

होता है और दो बातें उस की जवान होती हैं माल की लालच और उम्र की ज्यादती। (बुखारी—मुस्लिम)

दुनिया की महब्बत का बयान

(1) हजरते हुजैफा रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि मैं ने रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम को फरमाते हुए सुना कि दुनिया की महब्बत हर बुराई की जड़ है। (मिशकात)

(2) हजरते अबू मूसा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जो आदमी अपनी दुनिया से महब्बत करता है। (ऐसी महब्बत जो अल्लाह व रसूल की महब्बत पर गालिब हो) तो वह अपनी आखिरत को नुकसान पहुँचाता है और जो अपनी आखिरत से महब्बत करता है वह अपनी दुनिया को नुकसान पहुँचाता है तो (ऐ मुसलमानो !) फना होने वाली चीज (यानी दुनिया) को तज कर वाकी रहने वाली चीज (यानी आखिरत) को इख्तियार कर लो। (अहमद—मिशकात)

(3) हजरते सह्ल इब्ने साद रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि अगर दुनिया खुदाय तआला की नजर में मच्छर के पर बराबर भी वक़अत (इज्जत) रखती तो उस में से काफिर को एक घूँट भी न पिलाता।)

(4) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि (कान खोल कर) सुन लो दुनिया मलऊन है। और जो चीजें उसमें हैं वह भी मलऊन हैं मगर अल्लाह का जिक्र और वह 2 चीजें जिन्हें अल्लाह तआला दोस्त रखता है और आलिम या तालिबे इल्मे दीन भी।

(तिरमिजी)

(5) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि दुनिया मोमिन का जेल खाना है और काफिर की जन्नत है। (मुस्लिम शरीफ)

उम्र और माल की ज्यादती कब नेमत है

(4) हजरते इब्ने शद्दाद रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि खुदाय तआला के नजदीक उस मोमिन से अच्छा कोई नहीं है जिसने खुदाय तलाआ की तस्वीह व तकबीर और उसकी इबादत व तहलील के लिए इस्लाम में ज्यादा उम्र पाई। (अहमद—मिशकात)

(2) हजरते अबू बकर रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि एक सहाबी ने पूछा या रसूलल्लाह ! कौन आदमी बहुत अच्छा है ? सरकारे अकदस ने फरमाया कि वह आदमी जिस की उम्र ज्यादा हो और काम अच्छे हों। फिर पूछा कि कौन आदमी बहुत बुरा है ? फरमाया वह आदमी जिस की उम्र ज्यादा हो और अमल बुरे हों (तिरमिजी)

(3) हजरते अबू सईद खुदरी रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि (दुनिया का) माल हरा रंगीन तरोताजा और लज्जत वाला है तो जो आदमी उस को जाइज तरीका से हासिल करे और जाइज कामों में खर्च करे तो ऐसा माल बहुत अच्छा मददगार है। (बुखारी—मुस्लिम)

(4) हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के एक सहाबी ने कहा कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जो शख्स अल्लाह तआला से डरे उसके लिए मालदार होना कोई हरज नहीं और परहेजगार आदमी के लिए जिसमानी तनदुरुस्ती मालदारी से वेहतर है। और खुशदिली भी खुदाय तआला की नेमतों में से (एक बड़ी) नेमत है। (मिशकात)

(5) हजरते सुफयान सौरी रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि अगले जमाना में माल को बुरा समझा जाता था लेकिन आज कल माल मोमिन की ढाल है। और फरमाया अगर यह माल हमारे पास न होते तो यह (जाहिर परस्त) बादशाह हम लोगों को

बे इज्जत समझते। और फरमाया कि जिस आदमी के पास कुछ माल हो उसे चाहिए कि उसे ठीक से रखे (यानी उस के बढ़ाने की तदबीरें करे) इसलिए कि यह ऐसा जमाना है कि अगर कोई गरीब हो जायेगा तो वही सब से पहले अपने दीन को (दुनिया के बदले) बेच डालेगा। और फरमाया कि हलाल माल फुजूल खर्ची में बरबाद नहीं होता। (मिशकात)

दिखावे के लिए काम करना

(1) हजरते महमूद इब्ने लबीद रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि नबीए करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि तुम्हारे बारे में जिस चीज से मैं बहुत डरता हूँ वह शिर्के असगर है। सहाबा ने पूछा या रसूलल्लाह ! शिर्के असगर क्या चीज है ? फरमाया रिया (यानी दिखाबे के लिए काम करना) (अहमद)

(2) हजरते अबदुल्लाह इब्ने अम्र रजियल्लाहु तआला अनहुमा से रिवायत है कि उन्हों ने रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम को फरमाते हुए सुना कि जो आदमी लोगों में अपने अमल का चर्चा करेगा तो खुदाय तआला उस की (रियाकारी) को लोगों में मशहूर कर देगा और उस को बेइज्जत करेगा। (बैहकी)

(3) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि बंदा ने जब लोगों के सामने नमाज पढ़ी तो अच्छाई के साथ पढ़ी और जब लोगों के सामने नहीं पढ़ी तो भी अच्छाई के साथ पढ़ी तो खुदाय तआला फरमाता है कि मेरा यह बंदा सच्चा है। (यानी रियाकारी नहीं करता) (इब्ने माजा)

(4) हजरते शद्दाद इब्ने औस रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि मैं ने हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम को फरमाते हुए सुना कि जिस आदमी ने दिखावे के लिए नमाज पढ़ी उस ने शिर्क किया और जिस आदमी ने दिखावे के लिए रोजा रखा तो उस ने शिर्क किया

और जिस ने दिखावे के लिए सद्का किया तो उस ने शिर्क किया।

(अहमद—मिशकात)

हज़रते शैख अब्दुल हक्क मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि इस हदीस की शरह में लिखते हैं कि जो काम दिखावे के लिए करे शिर्क है। खुलासा यह कि शिर्क दो तरह के होते हैं जली और खफी बुत परस्ती करना खुल्लम खुल्ला शिर्क है (यह शिर्क जली है) और रिया कारी जो कि अल्लाह के इलावा दूसरे के लिए अमल करता है वह भी छुपे तौर पर बुत परस्ती करता है (यानी यह शिर्क खफी है) जैसा कि कहा गया है कि हर वह चीज जो तुझे खुदाय तआला से रोके वह तेरा बुत है

(अशिअतुल्लमआत जिल्द 4 सफा 250)

तस्वीर का बयान

(1) हजरते अबू तलहा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जिस घर में कुत्ता या जानदार की तस्वीरें हों उस में रहमत के फरिश्ते नहीं आते

(बुखारी—मुस्लिम)

(2) हजरते अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि मैं ने रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम को फरमाते हुए सुना कि खुदाय तआला के यहाँ सब से ज्यादा अजाब उन लोगों को दिया जाएगा जो जानदार की तस्वीरें बनाते हैं।

(बुखारी—मुस्लिम)

(3) हजरते इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने फरमाया कि मैं ने रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम को फरमाते हुए सुना कि जो आदमी (जानदार की) तस्वीर बनायेगा तो खुदाय तआला बेशक उसे अजाव देगा यहाँ तक कि वह अपनी बनाई हुई तस्वीर में जान डाल दे और यह हकीकत है कि वह उस में कभी जान नहीं डाल सकेगा। (इसलिए अजाब का मुस्तहक यकीनी है।

(बुखारी शरीफ)

(4) हजरते आइशा सिद्दीका रजियल्लाहु तआला अनहा ने कहा कि नबीए करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि हब्शा के लोगों का हाल यह है कि जब उन में कोई नेक आदमी मर जाता है तो वह लोग उसकी क़ब्र पर इबादत खाना बना लेते हैं। फिर उस में उन (नेक लोगों की) तस्वीर बनाते हैं, यह लोग खुदाय तआला की बहुत बुरी मख्लूक हैं। (मिशकात)

जुरुरी नोट—आज कल बहुत से जाहिल गंवार सूफी कहलाने वाले और बुजुर्गाने दीन से झूटी महब्बत का दावा करने वाले 'हजरते गौसे पाक' हजरते ख्वाजा गरीब नवाज 'हजरते महबूबे इलाही' हजरते साबिर कलयरी, हजरते कलीमुल्लाह शाह जहाँ आबादी, हजरते ताजुद्दीन नागपुरी, हजरते हाजी वारिस अली शाह और दूसरे वलियों और बुजुर्गों की तस्वीरें अपने घरों और दुकानों में रखते हैं यह नाजाइज और गुनाह है। और कुछ लोग बुजुर्गों की तस्वीर के सामने बा अदब बैठ कर उन का तसौउर करते हैं यह बुत परस्ती के मिस्ल है बल्कि इस्लाम में बुत परस्ती का दरवाजा खोलना है, जो सख्त हराम और नाजाइज है।

जल्दबाजी करने न करने का बयान

(1) हजरते सह्ल इब्ने साद साइदी रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि नबीए करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि कामों में जल्दबाजी न करना खुदाय तआला की तरफ से है और जल्द बाजी करना शैतान की तरफ से है। (तिरमिजी)

(2) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि एक शख्स ने नबीए करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम से अर्ज किया कि मुझे नसीहत फरमाईए, हुजूर ने फरमाया कि अपना क़ाम खूब गौर व फिक्र के बाद किया करो अगर उस का अनजाम अच्छा नजर आये तो कर डालो और खराबी का डर हो तो मत करो।
(मिशकात)

(3) हजरते मुस्अब इब्ने साद अपने बाप से रिवायत करते हैं कि नबीए करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि जल्द-

बाजी न करना हर चीज में अच्छा है लेकिन आखिरत के काम में देर करना अच्छा नहीं। (अबू दाऊद)

नेकी का हुक्म देना और बुराई से रोकना

(1) हजरते अबू सईद खुदरी रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि जो आदमी कोई बात शरा के खिलाफ देखे तो उसे अपने हाथ से रोक दे और अगर हाथ से रोकने की ताकत न हो तो जुबान से मना करे और अगर जुबान से भी मना करने की ताकत न हो तो दिल से बुरा जाने और यह सब से कमजोर ईमान है।

(मुस्लिम)

(2) हजरते अबू बकर सिद्दीक रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि मैं ने हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम को फरमाते हुए सुना कि लोग जब कोई बात शरा के खिलाफ देखें और उस को न मिटायें तो अनकरीब खुदाय तआला उन को अपने अजाब में मुब्तिला करेगा। (तिरमिजी—इब्नेमाजा)

(3) हजरते उर्स इब्ने अमीरा रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि नबीए करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि जब किसी जगह कोई गुनाह किया जाये तो जो आदमी वहाँ मौजूद हो मगर उसे वह ना पसंद समझता हो तो वह उस आदमी की तरह है जो वहाँ मौजूद नहीं। और जो आदमी वहाँ मौजूद न हो लेकिन उस को पसंद करता हो तो वह उस आदमी की तरह है जो वहाँ मौजूद हो। (अबू दाऊद)

(4) हजरते जाबिर रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि खुदाय तआला ने जिबरईल अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया कि फुलाँ शहर को जो ऐसा और ऐसा है उस के रहने वालों के साथ उलट दो—जिबरईल अलैहिस्सलाम ने कहा कि ऐ मेरे परवरदिगार उन रहने वालों में

तेरा फुलाँ बंदा भी है जिसने एक मिनट भी तेरी ना फरमानी नहीं की है तो खुदाय तआला ने फरमाया कि मैं फिर हुक्म देता हूँ कि उस पर और कुल रहने वालों पर शहर को उलट दो इसलिए कि उस का चेहरा गुनाहों को देख कर मेरी खुशी के लिए एक मिनट भी नहीं बदलता। (बैहकी—मिशकात)

(5) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि मैं ने मेराज की रात में देखा कि कुछ लोगों के होंट आग की कैंचियों से काटे जा रहे हैं। मैं ने पूछा जिबरईल यह कौन लोग हैं ? उन्हों ने कहा यह आप की उम्मत के वाइज हैं जो लोगों को नेकी की हिदायत करते थे और अपने आप को भूल जाते थे। यानी खुद नेक काम न करते थे।

(मिशकात)

(6) हजरते उसामा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि कियामत के दिन एक आदमी को लाकर जहन्नम में डाल दिया जायेगा तो उसकी आँतें फौरन पेट से निकल कर आग में गिर पड़ेंगी फिर वह उन्हें पीसेगा यानी उनके गिर्द चक्कर काटेगा जैसे पनचक्की का गधा आटा पीसता है तो जहन्नमी यह देख कर उसके पास जमा हो जायेंगे और उस से कहेंगे ऐ फुलाँ तेरा क्या हाल है यानी यह तू क्या कर रहा है ? क्या तू हम को नेक काम करने और बुरे काम से बाज रहने का हुक्म नहीं देता था ? वह कहेगा हाँ मैं तुम को नेक काम का हुक्म देता था और खुद उस को नहीं करता था और बुरे काम से तुम को रोकता था और खुद उस को करता था।

(बुखारी—मुस्लिम)

हजरते शैख अब्दुल हक्क मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि इस हदीस शरीफ की शरह में फरमाते हैं। मालूम हुआ कि दूसरों को अच्छी बात का हुक्म देना और बुराई से रोकना और खुद उस पर अमल न करना अजाब का सबब है। लेकिन यह अजाब अमल न करने की वजह से है। अच्छी बात के हुक्म देने और बुराई से रोकने की वजह से नहीं है इसलिए कि अगर अच्छी बात के करने

और बुराई से रोकने का काम भी नहीं करेगा तो दो वाजिब छोड़ने के सबब और ज्यादा अजाब का मुस्तहक़ होगा।

(अशिअतुल्लमआत जिल्द 4 सफ़ा 175)

और हजरते शैख लिखते हैं कि अच्छी बात करने का हुक्म देना उस बात के वाजिब होने में खुद हुक्म देने वाले का भी अमल करने वाला होना शर्त नहीं है बल्कि अगर अमल भी अच्छी बात का हुक्म देना जाइज है इसलिए कि अपने आप को अच्छी बात का हुक्म करना वाजिब है। और दूसरे को अच्छी बात का हुक्म करना दूसरा वाजिब है। अगर एक वाजिब छूट जाये तो दूसरे वाजिब का छोड़ना हरगिज जाइज न होगा और वह जो कुर्आन मजीद पारा 29 में आया है। वह बात कि युँ कहते हो जो खुद नहीं करते— अगर उसे अच्छी बात के हुक्म देने और बुरी बात से रोकने के बारे में मान लिया जाये तो अमल न करने पर डाँट व फटकार है न कि कहने पर। हाँ इस में शक नहीं है कि अगर खुद भी अमल करे तो अच्छा है इसलिए कि ऐसे आदमी का अच्छी बात का हुक्म करना असर नहीं करता जो खुद बे अमल है।

कुछ मसले

(1) अच्छी बात के हुक्म करने की कई सूरतें हैं। अगर जानता हो कि नसीहत को कबूल कर लेंगे और बुराई से रुक जायेंगे तो ऐसी सूरत में नसीहत करना वाजिब है चुप रहना जाइज नहीं। और अगर जानता हो कि नसीहत करने पर लोग बुरा भला कहेंगे या मार पीट करेंगे जिस से दुश्मनी पैदा होगी तो इन सूरतों में चुप रहना अफ्जल है। और अगर मार पीट को सब्र कर लेगा तो मुजाहिद है ऐसे आदमी को अच्छी बात के हुक्म करने और बुरी बात से रोकने में कोई हरज नहीं और अगर जानता है कि नसीहत कबूल न करेंगे और मार पीट व गाली गलूज का डर भी नहीं है तो नसीहत करने न करने का इख्तियार है और बेहतर यह है कि इस सूरत में नसीहत करे ऐसा ही फतावा आलमगीरी जिल्द 5 सफ़ा 309 में है।

(2) बुराई देखने वाले पर लाजिम है कि उस से रोके अगर्चे वह खुद उस बुराई में मुबतिला हो इसलिए कि शरा ने बुराई से बचना और दूसरे को उस से रोकना यह दोनों बातें लाजिम की हैं तो बुराई से न बचने पर रोकने से छुटकारा नहीं पायेगा ऐसा ही फतावा हिंदिया जिल्द 5 सफा 309 में है।

तवक्कुल-अल्लाह पर भरोसा करना

(1) हजरते अम्र इब्ने साद रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि जो आदमी अल्लाह तआला पर भरोसा कर ले और अपने सब कामों को खुदाय तआला के सिपुर्द कर दे तो अल्लाह तआला उस के लिए काफी है। (इब्ने माजा)

(2) हजरत फारुके आजम रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि मैं ने हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम को फरमाते हुए सुना कि अगर तुम लोग खुदाय तआला पर भरोसा कर लो जैसा कि भरोसा का हक है तो वह तुम को इस तरह रोजी देगा जिस तरह चिड़ियों को रोजी देता है कि वह सुबह को भूके निकलते हैं और शाम को पेट भर के वापस लौटते हैं। (तिरमिजी)

(3) हजरते अबू जर रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि नबीए करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि हलाल को अपने ऊपर हराम कर लेने और माल को बरबाद कर देने का नाम दुनिया छोड़ना नहीं है बल्कि दुनिया छोड़ना यह है कि जो कुछ (माल व दौलत) तेरे हाथों में है उस पर भरोसा न कर बल्कि उस पर भरोसा कर जो खुदाय तआला के कब्जा में है।

(तिरमिजी)

(4) हजरते सुहैब रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि मोमिन का मुआमला अजीब है कि उसके हर काम में भलाई है और यह दर्जा मोमिन के इलावा किसी और को हासिल नहीं है। अगर उसे खुशी

का मौका मिले और उस पर खुदाय तआला का शुक्र बजालाये तो उस में उस के लिए भलाई है और अगर कभी मुसीबत पहुँचे और वह उस पर सब्र करे तो उस में भी उस के लिए भलाई है।

(मुस्लिम)

(5) हजरते साद रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहिवसल्लम ने फरमाया कि आदमी की नेक बख्ती यह है कि जो कुछ अल्लाह तआला ने उस के लिए मुकद्दर कर दिया है उस पर राजी रहे और आदमी की बदबख्ती यह है कि वह खुबाय तआला से भलाई माँगना छोड़ दे और आदमी की बदबख्ती यह भी है कि खुदाय तआला ने (उस के बारे में) जो कुछ मुकद्दर फरमा दिया है वह उस पर नाराज हो।

(अहमद—तिरमिजी)

नरमी, हया और अच्छी आदत

(1) हजरते आइशा रजियल्लाहु तआला अनहा से रिवायत है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि खुदाय तआला मेहरबान है और मेहरबानी को पसंद फरमाता है।

(मुस्लिम शरीफ)

(2) हजरते जरीर रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि नबीए करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जो आदमी नरमी से महरूम किया जाता है वह (दूसरे लफ्जो में) भलाई से महरूम किया जाता है। (मुस्लिम)

(3) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि शर्म व हया ईमान का हिस्सा है और ईमान वाला जन्नत में जायेगा और बे हयाई व बेहूदगी की बातें करना बुराई का हिस्सा है और बुराई वाला जहन्नम में जाएगा। (अहमद-तिरमिजी)

(4) हजरते इमरान इब्ने हुसैन रजियल्लाहु तआला अनहु ने

कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि हया की सारी सूरतें अच्छी हैं। (बुखारी—मुस्लिम)

(5) हजरते इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अनहुमा से रिवायत है कि नबीए करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि ईमान और हया दोनों एक दूसरे के साथी हैं तो जब उन में से एक उठा लिया जाता है तो दूसरा भी उठा लिया जाता है। (बैहकी)

(6) हजरते मालिक रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि मैं अच्छी आदतों के पूरा करने के लिए भेजा गया हूँ। (मुअत्ता-मिशकात)

(7) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि मुसलमानों में पूरे ईमान वाले वह लोग हैं जिन की आदतें अच्छी हैं। (अबू दाऊद)

हँसना और मुस्कराना

(1) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि ज्यादा न हंसो इसलिए कि ज्यादा हँसना दिल को मुर्दा बना देता है।

(अहमद—तिरमिजी)

(2) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि अबुलकासिम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि कसम है उस जात की जिस के कब्जा में मेरी जान है अगर तुम लोग उन बातों को जान लो जिन्हें मैं जानता हूँ तो तुम बहुत ज्यादा रोओ और कम हँसो। (बुखारी शरीफ)

(3) हजरते आइशा रजियल्लाहु तआला अनहा ने फरमाया कि मैं ने नबीए करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम को ऐसा खुल कर हँसते हुए कभी नहीं देखा कि उन का तालू नजर आ जाये, आप सिर्फ मुस्कराया करते थे। (बुखारी)

हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की फजीलतें

(1) हज़रते सौबान रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है उन्हों ने कहा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि मैं खातमुन्नबीईन हूँ मेरे बाद कोई नबी नहीं होगा।

(अबू दाऊद—तिरमिजी—मिशकात सफा 465)

(2) हज़रते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है उन्हों ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि रसूलों का सिलसिला मुझ पर खत्म कर दिया गया

(बुखारी—मुस्लिम—मिशकात सफा 511)

(3) हजरते इरबाज इब्ने सारिया रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है। वह सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं हुजूर ने फरमाया कि मैं खुदाय तआला के नजदीक उस वक्त खातमुन्नबीईन लिखा गया जब कि हजरते आदम अलैहिस्सलाम अपनी गुंधी हुई मिट्टी में थे (यानी उन का पुतला उस वक्त तक तैयार नहीं हुआ था। (मिशकात सफा 513)

(4) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि इस दरमियान में कि सो रहा था मैं ने देखा कि जमीन के खजानों की कुनजियाँ लाई गईं और मेरे दोनों हाथों में रख दी गईं।

(बुखारी—मुस्लिम—मिशकात सफा 512)

(5) हजरते अली रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मुझे वह दिया गया जो मुझ से पहले किसी नबी को नहीं दिया गया था रोब व दबदबा से मेरी मदद फरमाई गई और मुझे सारी जमीन की कुनजियाँ अता हुईं। (अहमद, अलअमनु व ल उला सफा 57)

(6) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि मैं कियामत

के दिन आदम अलैहिस्सलाम की औलाद का सरदार रहूँगा और मैं सब से पहले कब्र से उठूँगा और सब से पहले मैं ही शफाअत करूँगा और सब से पहले मेरी ही शफाअत कबूल की जायेगी (मिशकात)

(7) हजरते जाबिर रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मैं सब से पहले शफाअत करूँगा और मेरी शफाअत सब से पहले कबूल की जायेगी और मुझे उस पर घमंड नहीं।

(दारमी—मिशकात सफा 514)

(8) हजरते इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि खुदाय तआला के तईं मैं औवलीन व आखिरीन में सब से ज्यादा इज्जत व बुजुर्गी वाला हूँ (तिरमिजी—दारमी—मिशकात सफा 514)

(9) हजरते जाबिर इब्ने समुरा रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि मैं ने सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को चाँदनी रात में देखा तो कभी मैं हुजूर की तरफ देखता था और कभी चाँद की तरफ। हुजूर उस वक्त लाल कपड़ा पहने हुए थे तो (आखिर मैं ने फैसला किया कि) वह चाँद से बढ़ कर खूबसूरत हैं। (तिरमिज़ी—दारमी—मिशकात 517)

(10) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का रंग रौशन और चमक दार था और हुजूर का पसीना जैसे मोती था और किसी दीबा व रेशम के कपड़े को मैं ने हुजूर की मुबारक हथेलियों से नर्म नहीं पाया और मैं ने कोई ऐसा मुश्क व अंबर नहीं सूँघा जिस की खुशबू हुजूर के जिस्म मुबारक की खुशबू से बढ़ कर हो

(बुखारी—मुस्लिम—मिशकात सफा 516)

(11) हजरते जाबिर रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि नबीए करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम जब किसी रास्ता से गुजरते फिर हुजूर के बाद जो भी उस रास्ता से गुजरता तो हुजूर

के पसीना की महक से जान लेता कि हुजूर इधर से गए हैं।

(दारमी—मिशकात सफा 517)

कुछ जुरुरी मसले

(1) हुजूर सैइदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का चेहरा ऐसा चमकदार था कि हदीस रिवायत करने वालों के कहने के मुताबिक आप के चेहरे में चाँद व सूर्य तैरते थे। जिस ने ईमान की हालत में एक बार चेहरा देख लिला वह सहाबी हो गया जो नुबुवत के बाद सब से बड़ा दर्जा है।

(2) सर बड़ा और बुर्जुग था जिस से वड़ाई टपकती थी और जो अल्लाह के डर से हर वक्त झुका रहता था।

(3) कदे मुबारक न ज्यादा लंबा था और न ज्यादा छोटा। मगर इनसानों के मजमा में खड़े होते तो सब से ऊँचे नजर आते।

(4) जिस्मे पाक नूरानी था इसलिए उस का साया न सूर्य की रोशनी में पड़ता था और न चाँदनी में। जिस्म पर मक्खी कभी नहीं बैठी।

(5) बाल मुबार कुछ बल खाये हुए थे जो अक्सर कंधे तक लटकते रहते थे और जब कभी चेहरए अनवर पर बिखर जाते तो कुर्आन मजीद की कुछ आयतों की तफसीर बन जाती।

(6) दाढ़ी शरीफ घनी थी और चेहरए अनवर उसके घेरे में ऐसा मालूम होता था जैसे आबनोसी रिहल पर कुर्आन मजीद रखा हो। नाक सडोल और पतली थोड़ी उठी हुई जो अचानक देखने पर शोलए नूर मालूम होती थी।

(7) सीना मुबारक चौड़ा था जिसमें नाफ तक बालों की एक हल्की तहरीर थी। पेट की ऊँचाई सीना के बराबर थी जिसे चार बार फरिश्तों ने चाक करके इल्म व हिकमत का नूर भरा था।

(8) गरदन शरीफ निहायत लतीफ व शफ्फाफ थी व कौले हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु चाँदी की ढली हुई थी।

(9) माथा चौड़ा और चमकदार था जिसे लोग चाँद का टुकड़ा

कहते थे जो रातों को खुदाय तआला के हुजूर में सज्दा रेज रहा करती थी।

(10) कान निहायत मौजूं और सुबुक दूर व नजदीक से यकसाँ सुनते थे जंगली जानवरों व चिड़ियों की बोल चाल और पेड़ व पत्थर की जुबान से बा खबर।

(11) दाँत मुबारक मोतियों से ज्यादा चमकदार जिन से मुसकराते समय रौशनी फूट पड़ती थी और दर व दीवार चमक उठते थे।

(12) पीठ मुबारक हमवार और सफेद व शफ्फाफ थी जैसे चाँदी की ढली हुई जिस पर (कंधों) के बीच में कबूतर के अंडे के बराबर उभरी हुई मोहरे नुबूवत थी।

(13) आँखें काली व सुरमगीं और पलकें बड़ी थीं जो हर वक्त गैब का मुशाहदा करती थीं और आगे पीछे यकसाँ देखती थीं। सारी काइनात में सिर्फ उन्हीं आँखों ने खुदाय तआला को बे पर्दा देखा था।

(14) हाथ मुबारक चौड़ा और गोश्त से भरा हुआ था जो मुसाहफा करता उस का हाथ खुशबू दार हो जाता उन्हीं हाथों को खुदाय तआला ने अपना हाथ फरमाया था।

(15) उंगलियाँ लंबी और बख्शिश के लिए फैली हुई रहती थीं। जिन के बीच से जुरुरत के वक्त पानी उबलने लगता था और जिन के इशारे चाँद का सीना फट गया और डूबा हुआ सूर्य पलट आया।

(16) पिंडलियाँ हमवार और शीशा की तरह लतीफ व शफ्फाफ थीं।

(17) कलाईयां थोड़ीं लंबी और गुदाज। रंग निखरा हुआ साफ व शफ्फाफ था।

(18) अबरु मेहराबे हरम की तरह कमानदार थे जिन से मकामे का ब कौसैन का राज जाहिर था।

(19) होंट गुले कुद्स की पत्तियों की तरह पतले-पतले और

गुलाब की पंखड़ियों से ज्यादा नर्म व नाजुक जिन के हिलने पर कार कुना ने कजा व कद्र हर वक्त कान लगाये रहते थे।

(20) आवाज इन्तिहाई दिलकश और मीठी कि दुश्मनों को भी प्यार आजाए और इतनी ऊँची कि फारान से गूंजे तो सारी दुनियां में फैल जाए। रहमत व करम के मौका पर गुल व लाला के जिगर की ठंडक और कभी गैरते हक की जलाल आजाए तो पहाड़ों के कलेजे दहलजायें।

(21) रोना सिसकती हुई दबी-दबी आवाज अल्लाह के डर के गल्बा से सियाह कारान उम्मत के गम में रिक्त अंगेज आयतें पढ़ कर और रात की दुआओं में भीगी-भीगी पलकों पर आंसूओं के झलकते हुए मोती।

(22) हँसी इन्तिहाई खुशी के मौका पर सिर्फ एक हल्की मुस्कराहट फैल जाती रौशनी की एक किरन फूटती और दर व दीवार चमक जाते इसी रौशनी में एक बार हजरते आइशा सिद्दीका रजियल्लाहु तआला अनहा ने अपनी सूई तलाश कर ली थी।

(23) पसीना मुबारक इन्तिहाई खुशबूदार था। जिधर से गुजर जाते फिजा मुअत्तर हो जाती। बगल शरीफ के पसीना से एक दुल्हन मुअत्तर की गई तो पुश्त दर पुश्त उसकी औलाद में खुशबू का असर था।

(24) थूक मुबारक जख्मियों और बीमारों के लिए तन्दुरुस्ती का मरहम था। खारी कुयें उसकी बरकत से मीठे हो जाते। दूध पीते बच्चे के मुंह में पड़ जाता तो दिन भर माँ के दूध के बगैर आराम से रहता।

(मदारिजुन्नुबूवत, शमाइले तिरमिजी, नसीमुर्रियाज, खसाइसे कुबरा, जवाहिरुलबिहार, बहवालये सहीफऐ जमाल अल्लामा अरशदुलकादिरी)

हुजूर की तरह कोई नहीं

(1) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु से मरवी है उन्हों ने फरमाया कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम

ने रात और दिन लगातार रोजा रखने से मना फरमाया तो एक सहाबी ने हुजूर से कहा या रसूलल्लाह ! आप तो रात दिन लगातार रोजा रखते हैं। हुजूर ने फरमाया कि मेरी तरह तुम में कौन है बे शक मैं इस हाल में रात गुजारता हूँ कि मेरा परवरदिगार मुझे खिलाता पिलाता है। (बुखारी जिल्द 1 सफा 263, मुस्लिम सफा 352, मिशकात सफा 175)

हजरते इमाम नौवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फरमाते हैं कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के कौल: इन्नी उबीतु युतइमुनी रब्बी व यस कीनी का मतलब यह है कि खुदाय तआला मुझे वह ताकत देता है जो औरों को खा पीकर हासिल होती है।

(नौवी मए मुस्लिम जिल्द 1 सफा 351)

(2) हजरते इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अनहुमा से रिवायत है कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने माहे रमजान में रात दिन लगातार रोजा रखा तो लोगों ने भी रात दिन लगातार रोजा रखा तो हुजूर ने लोगों को ऐसा करने से मना फरमाया। कहा गया हुजूर तो रात दिन लगागार रोजा रखते हैं। सरकार ने फरमाया कि मैं तुम्हारी तरह नहीं हूँ। मैं खिलाया और पिलाया जाता हूँ।

(मुस्सिम जिल्द 1 सफा 351)

(3) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि नबीए करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने (सहाबा से) फरमाया कि तुम लोग रात दिन रोजा मत रखो। सहाबा ने कहा हुजूर तो रात दिन लगातार रोजा रखते हैं। सरकार ने फरमाया कि मैं तुम्हारी तरह हरगिज नहीं हूँ। बे शक मैं इस हाल में रात गुजारता हूँ कि मेरा रब मुझे खिलाता और पिलाता है।

(बुखारी जिल्द 2 सफा 1084)

नोट—हुजुर सैइदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को अपनी तरह बशर नहीं कहना चाहिए इसलिए कि नबी को उन के जमाने के काफिर अपनी तरह बशर कहा करते थे जैसा कि पारा 12 रुकू 3 में है कि हजरते नूह अलैहिस्सलाम की कौम के काफिरों

ने कहा कि हम तुम्हें अपनी ही तरह बशर समझते हैं—और पारा 13 रुकू 14 में है कि काफिरों ने हजरते मूसा अलैहिस्सलाम से कहा कि तुम हमारी ही तरह बशर हो और पारा 19 रुकू 14 में है कि काफिरों ने हजरते शुऐब अलैहिस्सलाम से कहा कि तुम हमारी ही तरह बशर हो। कुर्आन मजीद की आयतों से मालूम हुआ कि नबियों को तौहीन के तौर पर अपनी ही तरह बशर कहना काफिरों का तरीका है।

मेराज का बयान

(1) हजरते अनस इब्ने मालिक रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया कि मेरे पास एक बुराक लाया गया। यह एक सफेद रंग का जानवर था जिस का डील गधे से ऊँचा और खच्चर से नीचा था उस का कदम उस जगह पर पड़ता था जहाँ तक निगाह पहुँचती है। हुजूर ने फरमाया तो मैं उस पर सवार हुआ यहाँ तक कि बैतुल-मुकद्दस में आया हुजूर ने फरमाया तो मैं ने बूराक को उस कुंडा से बाँध दिया जिस से नबी अपनी सवारियों को बाँधा करते थे। हुजूर ने फरमाया फिर मैं मस्जिद में गया और दो रकअत नमाज पढ़ी फिर बाहर निकला तो जिबरील मेरे पास एक प्याला शराब का और एक प्याला दूध का लाये। मैंने दूध का प्याला ले लिया। जिबरील ने कहा कि आप ने फितरते (इस्लाम) को इख्तियार कर लिया। फिर जिबरील मुझको आसमान की तरफ ले चले। जिबरील ने (आसमान का दरवाजा) खोलने के लिए कहा तो पूछा गया आप कौन हैं? फरमाया मैं जिबरील हूं। फिर पूछा गया आपके साथ कौन है? उन्हों ने कहा सरकारे मुस्तफा (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) हैं। फिर पूछा गया उनको बुलाया गया है। फरमाया (हां) बुलाया गया है। फिर आसमान का दरवाजा हमारे लिए खोल दिया गया तो मैं ने आदम अलैहिस्सलाम को देखा उन्हों ने मुझे मरहबा कहा और मेरे लिए भलाई की दुआ फरमाई। फिर जिबरील मुझे दूसरे आसमान की तरफ ले चले। उन्हों ने (आसमान

का दरवाजा) खोलने के लिए कहा तो पूछा गया आप कौन हैं ? फरमाया मैं जिबरील हूं। फिर पूछा गया और आपके साथ कौन है ? फरमाय सरकारे मुस्तफा (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) हैं फिर पूछा गया उन को बुलाया गया है। फरमाया (हाँ) बुलाया गया है। हुजूर ने फरमाया फिर आसमान का दरवाजा हमारे लिए खोल दिया गया तो मैं ने दो खालाजाद भाईयों यानी इब्ने मरयम और यहया इब्ने जकरीया अलैहिमस्सलातु वस्सलाम को देखा तो उन्हों ने मुझे मरहबा कहा और मेरे लिए भलाई की दुआ फरमाई। फिर जिबरील मुझे तीसरे आसमान की तरफ ले चले। उन्हों ने (आसमान का दरवाजा) खोलने के लिए कहा तो पूछा गया आप कौन हैं। फरमाया मैं जिबरील हूँ। फिर पूछा गया और आप के साथ कौन है कहा सरकारे मुस्तफा (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फिर पूछा गया उन को बुलाया गया है ? फरमाया (हाँ) बुलाया गया है फिर आसमान का दरवाजा हमारे लिए खोल दिया गया वहाँ मुझ को युसुफ अलैहिस्सलाम दिखाई दिए जिन्हें सारी दुनिया की आधी खूबसूरती दी गई है उन्हों ने मुझे मरहबा कहा और मेरे लिए भलाई की दुआ फरमाई। फिर जिबरील मुझे चौथे आसमान की तरफ ले चले तो जिबरील अलैहिस्सलाम ने (आसमान का दरवाजा) खोलने के लिए कहा। पूछा गया यह कौन है ? फरमाया मैं जिबरील हूँ कहा गया और आप के साथ कौन है ? फरमाया सरकारे मुस्तफा (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) हैं। फिर पूछा गया उनको बुलाया गया है ? फरमाया (हाँ) बुलाया गया है तो आसमान का दरवाजा हमारे लिए खोल दिया गया तो मैं ने इदरीस अलैहिस्सलाम को देखा तो उन्हों ने मरहबा कहा और मेरे लिए भलाई की दुआ फरमाई जिनके बारे में खुदाय तआला ने फरमाया कि और हमने उसे ऊँची जगह पर उठा लिया। फिर जिबरील मुझे पाँचवें आसमान की तरफ ले चले तो उन्हों ने (आसमान का दरवाजा) खोलने के लिए फरमाया तो पूछा गया कौन है ? फरमाया मैं जिबरील हूँ। फिर पूछा गया और आप के साथ कौन है ? फरमाया सरकारे मुस्तफा (सल्लल्लाहु

तआला अलैहि वसल्लम) हैं। फिर कहा गया उन को बुलाया गया है ? फरमाया (हाँ) बुलाया गया है। तो हमारे लिए आसमान का दरवाजा खोल दिया गया तो अचानक मुझ को हारून अलैहिस्सलातु वस्सलाम दिखाइ दिए उन्हों ने मरहबा कहा और मेरे लिए भलाई की दुआ फरमाई। फिर जिबरील हम को छठे आसमान की तरफ ले चले उन्हों ने आसमान का दरवाजा खोलने के लिए कहा पूछा गया यह कौन है ? फरमाया मैं जिबरील हूँ फिर पूछा गया और आप के साथ कौन है ? फरमाया सरकारे मुस्तफा (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हैं। फिर कहा गया और उनको बुलाया गया है ? फरमाया (हाँ) बुलाया गया है तो आसमान का दरवाजा हमारे लिए खोल दिया गया तो मैं ने मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम को देखा उन्हों ने मरहबा फरमाया और मेरे लिए भलाई की दुआ की। फिर जिबरील हमें सातवें आसमान की तरफ ले चले तो उन्हों ने (आसमान का दरवाजा) खोलने के लिए कहा तो पूछा गया यह कौन है ? फरमाया मैं जिबरील हूँ फिर पूछा गया और आपके साथ कौन है ? फरमाया सरकारे मुस्तफा (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) हैं। फिर पूछा गया और उन को बुलाया गया है ? फरमाया (हाँ) बुलाया गया है तो हमारे लिए आसमान का दरवाजा खोल दिया गया तो हमने हजरते इबराहीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम को देखा जो बैतुल—मामूर से अपनी पीठ की टेक लगाये हुए थे और बैतुल—मामूर में हर दिन सत्तर हजार ऐसे फरिश्ते दाखिल होते हैं जो दोबारा नहीं आते (यानी रोज नये-नये फरिश्ते आते हैं) फिर मुझ को सिदरतुल मुनतहा पर ले गये उस के पत्ते हाथी के कानों की तरह हैं और उस के फल बड़े मटकों की तरह हैं तो जब सिदरतुल मुनतहा को खुदाय तआला के हुक्म से एक चीज ने ढाँप ली तो उस का रंग बदल गया खुदाय तआला की पैदा की हुई चीजों में से कोई उस की खूबसूरती बयान करने की ताकत नहीं रखता फिर खुदाय तआला ने मेरी जानिब वही फरमाई जो कुछ वही फरमाई फिर उसने रात दिन में पचास नमाजें मेरे ऊपर फर्ज फरमाईं। मैं वापसी में मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम के पास आया

उन्हों ने पूछा आप के परवरदिगार ने आप की उम्मत पर क्या फर्ज फरमाया है ? मैं ने कहा रात दिन में पचास नमाजें— मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा अपने परवरदिगार के पास जाकर कमी की दरख्वास्त पेश करें इसलिए की आप की उम्मत इतनी ताकत नहीं रखती। मैं ने बनी इसराईल की आजमाइश की है और उस का इम्तिहान लिया है। हुजूर ने फरमाया तो मैं ने वापस जाकर कहा ऐ मेरे परवरदिगार मेरी उम्मत पर आसानी फरमा तो खुदाय तआला ने मेरी उम्मत से पाँच नमाजें कम कर दीं। मैं फिर मूसा अलैहिस्सलाम के पास आया और कहा कि मुझ से पाँच नमाजें कम कर दी गईं। उन्हों ने कहा की आप की उम्मत इसकी भी ताकत नहीं रखती आप फिर अपने परवरदिगार के पास जाकर कमी चाहें हुजूर ने फरमाया कि मैं अपने परवरदिगार और मूसा अलैहिस्सलाम के दरमियान आता जाता रहा और नमाज की कमी का सिलसिला जारी रहा। यहाँ तक कि खुदाय तआला ने फरमाया ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) यह रात और दिन की कुल पाँच नमाजें हैं। हर नमाज के लिए दस नमाजों का सवाब है तो वह पाँच नमाजें सवाब में पचास नमाजों के बराबर हैं। जिस आदमी ने नेकी का इरादा किया और उसको न किया तो सिर्फ इरादा ही से उस के लिए एक नेकी लिख दी जाती है और अगर कर लिया तो उस के लिए दस नेकियाँ लिखी जाती हैं और जो आदमी बुरे काम का इरादा करे और उस को न करे तो कुछ नहीं लिखा जाता और कर लिया तो उस के लिए एक बुराई लिखी जाती है। हुजूर ने फरमाया उसके बाद में उतर कर मूसा अलैहिस्सलाम के पास पहुँचा तो उन को हकीकते हाल से खबरदार किया उन्हों ने कहा कि अपने रब के पास जाकर और कमी चाहें तो रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि मैं ने मूसा अलैहिस्सलाम से कहा कि मैं अपने रब के पास (नमाज की कमी के लिए) इतनी बार हाजिर हुआ हूँ कि अब मुझ को वहाँ जाते हुए शर्म आती है। (मुस्लिम)

(2) हजरते जाबिर रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है

उन्हों ने रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम को फरमाते हुए सुना है कि जब कुरैश ने (मेराज के वाकिआ में) मुझ को झुटलाया तो मैं (उन के सुवालों का जवाब देने के लिए) मकामे हिज्र में खड़ा हुआ तो खुदाय तआला ने बैतुलमुकद्दस को मेरी निगाहों के सामने कर दिया मैं बैतुलमुकद्दस की तरफ देख रहा था और उस की निशानियों के बारे में कुरैश के सुवालात के जवाबात दे रहा था।

(बुखारी—मुस्लिम—मिशकात)

कुछ ज़ुरूरी मसले

(1) हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को जागते में बदन के साथ मेराज हुई थी इसलिए कि अगर मेराज नींद या रुह वाली होती तो कुरैश के काफिर हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को हरगिज न झुटलाते और न कुछ कमजोर ईमान वाले मुसलमान मुरतद होते। (शरह अकाइद नसफी सफा 105)

(2) हुजूर सैइदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को जागते में जिस्म वाली मेराज होना बरहक है। मक्का से बैतुल मुकद्दस तक की सैर का न मानने वाला काफिर है और आसमानों की सैर का न मानने वाला गुमराह बद दीन है। अशिअ्अतुल्लम्आत जिल्द 4 सफा 526 में है कि मस्जिदे हराम से मस्जिदे अकसा तक इसरा है और मस्जिदे अकसा से आसमान तक मेराज है। इसरा नस्से कुर्आनी से साबित है उस का इनकार करने वाला काफिर है और मेराज मशहूर हदीसों से साबित है उस का न मानने वाला गुमराह और बददीन है। और शरह अकाइद नसफी सफा 100 में है कि जागने की हालत में बदन के साथ आसमान और उस के ऊपर जहाँ तक खुदाय तआला ने चाहा सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का जाना मशहूर हदीसों से साबित है उस का न मानने वाला बद दीन है। और इसी किताब के सफा 101 पर है कि मस्जिदे हराम से बैतुलमुकद्दस तक रात में सैर फरमाना कतई है कुर्आन मजीद से साबित है। और ज़मीन से आसमान तक सैर

फरमाना हदीसों से साबित है। और सैइदुल फुकहा हजरत मुल्ला जीवन रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फरमाते हैं कि मस्जिदे अकसा तक मेराज कतई है। कुर्आन से साबित है और आसमाने दुनिया तक मशहूर हदीस से साबित है। और आसमानों से ऊपर तक आहाद से साबित है तो पहले का न मानने वाला कतई काफिर है और दूसरे का बद दीन और तीसरे का न मानने वाला फासिक है।

(तफसीराते अहमदिया सफा 328)

हुजूर सैइदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को जागने की हालत में जिस्म के साथ एक बार और सपना में कई बार मेराज हुई। अशिअतुल्लम्आत जिल्द 4 सफा 527 में है कि मेराज सपना में हुई थी या जागने में और एक बार हुई थी या बार-बार ? इस के बारे में आलिमों की बातें कई तरह की हैं। सहीह और ज्यादा आलिमों का मुख्तार यह है कि मेराज कई बार हुई थी एक बार जागने में और कई बार सपनों में। फिर दो लाइन के बाद फरमाया तहकीक यह है कि मेराज एक बार जागने की हालत में बदन के साथ हुई। मस्जिदे हराम से मस्जिदे अकसा तक और वहाँ से आसमान तक और आसमान से जहाँ तक कि खुदाय तआला ने चाहा। अगर मेराज का वाकिआ सपना में होता तो इस कदर फितना व फसाद व शोर गोगा का सबब न होता और काफिरों के झगड़ने और कुछ मुसलमानों के मुरतद होने का सबब न बनता (अशिअतुल्लम्आत जिल्द 4 सफा 527)

और हजरत मुल्ला जीवन रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फरमाते हैं सहीह यह है कि मेराज जागते में बदन के साथ मए रुह के हुई। अहले सुन्नत व जमाअत का यही मसलक है। तो जिस ने कहा कि मेराज सिर्फ रुह के साथ हुई या सिर्फ सपना में हुई तो वह बद दीन 'गुमराह' गुमराह बनाने वाला फासिक है।

(तफसीराते अहमदिया सफा 330)

मोजिजों का बयान

(1) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है उन्हों ने फरमाया कि मक्का वालों ने हुजूर सैइदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से कहा कि आप कोई मोजिजा दिखायें तो सरकारे अकदस ने चाँद के दो टुकड़े फरमा कर उन्हें दिखा दिया यहाँ तक कि मक्का वालों ने हिरा पहाड़ को चाँद के दो टुकड़ों के बीच में देखा। (बुखारी—मुस्लिम—मिशकात सफा 524)

(2) हजरते इब्ने मसऊद रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है उन्हों ने फरमाया कि रसूले करीम अलैहिस्लातु वत्तस्लीम के जमाना में चाँद दो टुकड़े हो गया एक टुकड़ा पहाड़ से ऊपर था और दूसरा टुकड़ा उस के नीचे।

(बुखारी, मुस्लिम, मिशकात सफा 524)

हजरते शैख अब्दुलहक्क मुहद्दिस देहलवी बुखारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने फरमाया कि हुजूर सैइदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के लिए चाँद का टुकड़े होना यकीनन हुआ जिसको सहाबा व ताबिईन रिजवानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन के बहुत से लोगों ने बयान किया है। और फिर उन से हदीस बयान करने वाली एक बहुत बड़ी जमाअत ने रिवायत किया है। और कुर्आन की तफसीर लिखने वालों का इत्तिफाक है कि सूर ए कमर की पहली आयत में यही चाँद का दो टुकड़े होना मुराद है जो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का मोजिजा हुआ वह इनशिकाक मुराद नहीं जो कियामत के करीब में होगा और उसकी दूसरी आयत इसी मजमून को बताती है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने चाँद को दो टुकड़े किया है।

(अशिअतुल्लम्आत जिल्द 4 सफा 518)

(3) हजरते असमा बिन्ते उमैस रजियल्लाहु तआला अनहा से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर इस हाल में वही उतर रही थी कि आप का मुबारक सर हजरते अली

रजियल्लाहु तआला अनहु की गोद में था तो हजरते अली रजियल्लाहु तआला अनहु (अस्र की) नमाज नहीं पढ़ सके यहाँ तक कि सूर्य डूब गया उस के बाद हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि ऐ अली ! क्या तुम ने नमाज पढ़ी ? उन्हों ने कहा नहीं तो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अल्लाह से दुआ की—या इलाहलआलमीन अली तेरे और तेरे रसूल की फरमाँबरदारी में थे (इसलिए उन की नमाजे अस्र कजा हो गई) लिहाजा तू उन के लिए सूर्य को लौटा दे। हजरते असमा बिन्ते उमैस फरमाती हैं कि मैं ने देखा कि सूर्य डूब गया था फिर (नबी की दुआ के बाद) मैं ने देखा कि वह निकल आया और उस की किरने पहाड़ों और जमीनों पर फैल गईं यह वाकिया सहबा में हुआ जो खैबर से करीब है (शिफामए नसीमुर्रियाज जिल्द 3 सफा 10)

(4) हजरते जाबिर रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने सूर्य को हुक्म दिया कि कुछ देर के लिए चलने से रुक जाये वह फौरन रुक गया। (तिबरानी शरह शिफा मुल्ला अली कारी मए नसीमुर्रियाज जिल्द 3 सफा 13)

(5) हजरते जाबिर रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि नबी ए करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम जब मस्जिद में खुत्वा पढ़ते तो खजूर के तना पर जो खंबा के तौर पर मस्जिद में खड़ा था कमर लगा लेते फिर जब मिंबर तैयार हो गया और हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम उस पर खुत्बा पढ़ने के लिए बैठे तो वह खंबा जिस से टेक लगा कर आप खुत्बा फरमाया करते थे नवी की जुदाई में चीख उठा और करीब था कि वह फट जाये तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मिंबर से उतरे यहाँ तक कि उस खंबा को पकड़ कर अपने सीने से लगा लिया फिर उस खंबा ने बच्चा की तरह रोना और बिलबिलाना शुरु किया जिस को तसल्ली देकर चुप किया जाता है। यहाँ तक कि उस खंबा को करार हासिल हुआ। (बुखारी शरीफ—मिशकात सफा 536)

(6) हजरते इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अनहुमा ने फरमाया कि हम रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम के साथ सफर कर रहे

थे कि एक दिहाती आया। जब वह हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के करीब पहुँचा तो आप ने उस से फरमाया क्या तू इस बात की गवाही देता है कि एक खुदा के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं और मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) खुदाय तआला के बंदे और उस के रसूल हैं। दिहाती ने कहा आप की बातों पर मेरे सिवा और कौन गवाही देगा हुजूर ने फरमाया यह बबूल का पेड़ गवाही देगा। यह फरमाकर आप ने उस पेड़ को बुलाया। आप वादी के कनारे थे। वह पेड़ जमीन को फाड़ता हुआ चला यहाँ तक कि आप के सामने खड़ा हो गया। हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने उस से तीन बार गवाही तलब फरमाई उस पेड़ ने तीनों बार गवाही दी कि हकीकत में ऐसा ही है जैसा कि आप ने फरमाया उस के बाद वह पेड़ अपनी जगह वापस चला गया।

(दारमी—मिशकात सफा 541)

(7) हजरते इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि एक दिहाती हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के पास आया और कहा कि कैसे यकीन करूँ कि आप सच्चे नबी हैं। हुजूर ने फरमाया कि खजूर के उस गुच्छा को अगर मैं बुलाऊँ और वह मेरे पास आकर इस बात की गवाही दे कि मैं खुदाय तआला का रसूल हूँ जब तुझे यकीन आ जाएगा। फिर हुजूर ने उस गुच्छा को बुलाया तो वह खजूर के पेड़ से उतरने लगा यहाँ तक कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्स-लाम के करीब जमीन पर आकर गिरा फिर आप ने फरमाया कि वापस चला जा तो वह गुच्छा वापस चला गया यह देखकर वह दिहाती मुसलमान हो गया (तिरमिजी—मिशकात सफा 541)

(8) हजरते अब्दुल्लाह रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि हम तो मोजिजों को बरकत का सबब समझते थे और तुम उन को डराने का सबब समझते हो हम एक सफर में रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम के साथ थे, पानी कम हो गया तो हुजूर ने फरमाया कि थोड़ा सा बचा हुआ पानी खोज कर लाओ। तो लोग एक बरतन लाए जिस में थोड़ा सा पानी था। हुजूर ने अपना हाथ बरतन में डाल दिया और उस के बाद फरमाया बरकत वाले पानी

के पास आओ और बरकत खुदाय तआला की तरफ से है पस मैं ने कतई तौर पर देखा कि हुजूर की मुकद्दस उंगलियों की घाईयों से पानी उबल रहा था।

(बुखारी जिल्द 1 सफा 505 मिशकात सफा 538)

(9) हजरते जाबिर इब्ने अब्दुल्लाह रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि सुलहे हुदैबिया के दिन लोग प्यासे थे और हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सामने एक प्याला था जिससे आप ने वुजू फरमाया। तो लोग आप की तरफ दौड़े हुजूर ने फरमाया क्या बात है? लोगों ने कहा हमारे पास वुजू करने और पीने के लिए पानी नहीं है मगर सिर्फ यही जो आप के सामने है तो हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने अपना मुबारक हाथ उसी प्याला में रख दिया तो आप की उंगलियों के दरमियान से सोतों की तरह पानी उबलने लगा। हजरते जाबिर रजियल्लाहु तआला अनहु का बयान है कि हम सब लोगों ने पानी पिया और वुजू किया हजरते सालिम फरमाते हैं कि मैं ने हजरते जाबिर से पूछा आप लोग कितनी तादाद में थे? उन्हों ने फरमाया कि अगर हम एक लाख भी होते तब भी वह पानी काफी होता। उस वक्त तो हमारी तादाद पंद्रह सौ थी।

(बुखारी जिल्द 1 सफा 505 मिशकात सफा 532)

(10) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि उन्हों ने फरमाया कि नबीए करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम के पास पानी का एक बर्तन लाया गया हुजूर उस वक्त मकामे जौरा में थे। आप ने अपना मुकद्दस हाथ उस बर्तन में रख दिया तो पानी हुजूर की उंगलियों के दरमियान से उबलने लगा जिस से सब लोगों ने वुजू कर लिया हजरते कतादा फरमाते हैं कि मैं ने हजरते अनस से पूछा कि उस वक्त आप कितने थे? उन्हों ने फरमाया तीन सौ या तीन सौ के करीब।

(बुखारी जिल्द 1 सफा 504 मिशकात सफा 537)

(11) हजरते अली इब्ने अबी तालिब करमल्लाहु तआला वजहहू ने फरमाया कि मैं नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि

वसल्लम के साथ मक्का में था। फिर सरकारे अकदस और हम मक्का शरीफ के इलाका में गये तो जिस पहाड़ और पेड़ का भी सामना होता तो वह कहता—अस्सलामु अलैक या रसूलल्लाह

(तिरमिजी—दारमी—मिशकात सफा 540)

(12) हजरते जाबिर रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि हम हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के साथ जा रहे थे कि एक चटयल मैदान में उतरे। हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम बड़े इस्तिनजा के लिए गये लेकिन पर्दा की कोई जगह आप को न मिली। यकायक आप की नजर उस मैदान के कनारे दो पेड़ों पर पड़ी हुजूर उन में से एक के पास गये और उस की एक डाली को पकड़ कर पेड़ से फरमाया कि खुदा के हुक्म से मेरे साथ चल तो पेड़ उस ऊँट की तरह चल पड़ा जिस की नाक में नकेल बंधी रहती है और ऊँट-वान की फरमाँबरदारी करता है यहाँ तक कि हुजूर उस दूसरे पेड़ के पास गये और उस की एक डाली पकड़ कर फरमाया कि ऐ पेड़ तू भी अल्लाह के हुक्म से मेरे साथ चल। तो वह भी पहले पेड़ की तरह हुजूर के साथ चल पड़ा यहाँ तक कि हुजूर जब उन पेड़ों के बीच की जगह में पहुँचे तो फरमाया कि (ऐ पेड़ो) तुम दोनों अल्लाह के हुक्म से आपस में मिल कर मेरे लिए पर्दा बन जाओ तो दोनों एक दूसरे से मिल गये (और हुजूर ने उन पेड़ों की आड़ में बड़ा इस्ति-नजा फरमाया) हजरते जाबिर का बयान है कि इस अजीब वाकिआ को देख कर मैं बैठा सोच रहा था कि मेरी निगाह उठी तो यकायक मैं ने देखा कि हुजूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम आ रहे हैं और देखा कि वह दोनों पेड़ अलग हो कर चले और अपने तने पर खड़े हो गये (मुस्लिम—मिशकात सफा 532)

कुछ जरूरी बातें

(1) अम्बियाए किराम से नुबूवत के दावा की ताईद में जो बात आदत के खिलाफ जाहिर हो उसे मोजिजा कहते हैं।

(अत्तारीफात सफा 195)

(2) नबी के मोजिजा को बिल्कुल न मानने वाला काफिर, मुलहिद और जिन्दीक है।

(3) जो मोजिजा दलीले कतई से साबित हो जैसे मेराज की रात में हुजूर सैइदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का मस्जिदे हराम से मस्जिदे अकसा तक की सैर फरमाना, उस पर ईमान लाना फर्ज है। और उस का न मानने वाला काफिर है।

(अशिअतुल्लम्आत जिल्द 4 सफा 527)

(4) जो मोजिजा मशहूर हदीसों से साबित हो जैसे सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का मेराज की रात में आसमानों की सैर फरमाना, इस का मानना लाजिम व जुरुरी है। और इस का न मानने वाला गुमराह बद मजहब है।

(तफसीराते अहमदिया सफा 328)

(5) जो मोजिजा खबरे वाहिद से साबित हो चाहे जईफ तौर पर फजाइल में वह भी मोतबर है।

(6) नबी की नुबूवत जाहिर होने से पहले जो बात खर्के आदत के तौर पर सादिर हो उसे इरहास कहते हैं।

(अशिअतुल्लम्आत जिल्द 4 सफा 541)

करामत का बयान

(1) हजरते इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अनहुमा से रिवायत है कि हजरते फारुके आजम रजियल्लाहु तआला अनहु ने एक लशकर (नहावन्द की तरफ भेजा) नहावन्द ईरान सूबा आजर बाईजान में एक पहाड़ी शहर है जहाँ मदीना शरीफ से एक महीना में नहीं पहुँच सकते (हाशिया अशिअतुल्लम्आत जिल्द 4 सफा 601) और उस लशकर पर एक मर्द को सिपह सालार मुकर्रर फरमाया जिन को सारिया कहा जाता था तो (एक रोज) जब कि हजरते उमर रजियल्लाहु तआला अनहु (मदीना शरीफ में) खुत्बा पढ़ रहे थे यकायक आप ऊँची आवाज से फरमाने लगे ऐ सारिया! पहाड़ (की पनाह लो कुछ दिनों के बाद) लशकर से एक ऐलची आया तो उस ने कहा ऐ अमीरुलमूमिनीन! हमारे दुशमन ने हम पर हम्ला किया तो हम को हरा दिया फिर अचानक हम ने एक पुकारने वाले की

आवाज सुनी कि ऐ सारिया ! पहाड़ की पनाह लो तो हम ने पहाड़ की तरफ अपनी पीठ कर ली (और दुशमनों से लड़े) फिर खुदाय तआला ने दुशमनों को हरा दिया (बैहकी—मिशकात सफा 546)

(2) हजरते इब्ने मुनकदिर रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि हजरते सफीना रजियल्लाहु तआला अनहु जो रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम के गुलाम थे (एक बार मुल्के रूम इटली) में इस्लामी लशकर (तक पहुँचने) का रास्ता भूल गए। या कैद कर दिए गए थे तो इस्लामी लशकर की खोज में निकल भागे। अचानक एक शेर से उन का सामना हो गया तो आप ने शेर से फरमाया ऐ अबूहारिस ! मैं सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का गुलाम हूँ मेरे साथ ऐसा-ऐसा वाकिआ पेश आया है तो शेर (कुत्ते की तरह) पूँछ हिलाता हुआ करीब आकर हजरते सफीना की बगल में खड़ा हो गया (और साथ-साथ चलता रहा) जब शेर किसी चीज की आवाज सुनता तो उस की तरफ दौड़ पड़ता फिर वापस आकर उन की बगल में चलने लगता यहाँ तक कि हजरते सफीना इस्लामी लशकर तक पहुँच गये फिर शेर वापस हो गया (मिशकात सफा 545)

(3) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि उसैद इब्ने हुजैर और अब्बाद इब्ने बिश्र रजियल्लाहु तआला अनहुमा नबीए करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम से अपने किसी मुआमला में एक पहर रात गुजरने तक बात करते रहे वह रात बहुत तारीक (अंधेरी) थी। फिर वह लोग अपने घरों को वापस होने के लिए रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाह से निकले और दोनों हजरात के हाथ में छोटी-छोटी लाठियाँ थीं फिर उन में से एक साहब की लाठी दोनों के लिए रौशन हो गई उस के बाद वह दोनों हजरात लाठियों की रौशनी में चलते रहे यहाँ तक कि जब दोनों का रास्ता अलग-अलग हुआ तो दूसरे की लाठी भी रौशन हो गई फिर हर एक अपनी-अपनी लाठी की रौशनी में अपने घर वालों तक पहुँच गया। (बुखारी—मिशकात सफा 544)

कुछ ज़रूरी मसले

(1) वली से जो बात आदत के खिलाफ़ ज़ाहिर हो उसे करामत कहते हैं। और आम मूमिनीन से ऐसी बात सादिर हो तो उसे मऊनत कहते हैं। और बेबाक फ़ासिक़ व फ़ाजिर या काफ़िर से जो उन के मुवाफ़िक़ ज़ाहिर हो तो उस को हम तिदराज कहते हैं। और उन के खिलाफ़ ज़ाहिर हो तो इहानत कहते हैं।

(बहारे शरीअत हिस्सा 1)

(2) करामत हक्क है उस का न मानने वाला गुमराह बद-मजहब है। शरह फिकहे अकबर सफा 95 में है कि औलिया अल्लाह से करामातों का सादिर होना हक्क है। यानी कुर्आन व हदीस से साबित है। और हजरते शैख अब्दुलहक्क मुहद्दिस देहलवी बुखारी रहमतुल्लाहि अलैहि फरमाते हैं कि हक्क वाले इस बात पर इत्तिफाक रखते हैं कि औलिया अल्लाह से करामात जाहिर हो सकती है और अल्लाह वालों से करामातों का सादिर होना कुर्आन व हदीस से साबित है और सहाबा व ताबिईन की मुसलसल खबरों से भी जाहिर है। (अशिअतुल्लम्आत जिल्द 4 सफा 595)

(3) वली वह मुसलमान है जो अल्लाह की जात और उस की खूबियों की पहचानता हो। शरीअत का पाबंद हो और लज्जतों व शहवतों में बहुत ज्यादा न लगा रहता हो। (शरहे अकाइदे नसफी)

(4) वली वही आदमी हो सकता है जिस का अकीदा मजहबे अहले सुन्नत व जमाअत के मुताबिक हो कोई मुर्तद या बदमजहब जैसे देवबंदी, वहाबी, कादियानी, राफिजी, और नैचरी वगैरा हरगिज वली नहीं हो सकता।

(5) औलिया अल्लाह और दूसरे नेक मुसलमानों का फैज़ इन्तिकाल के बाद भी जारी रहता है। (तफसीरे अजीजी पारएअम्म सफा 50)

इल्मे गैब का बयान

(1) हज़रते फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु फरमाते हैं कि एक बार हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम हम लोगों (के मजमा) में खड़े हुए तो हुज़ूर ने शुरु पैदाइश से जन्नतियों के जन्नत में और जहन्नमियों के जहन्नम में जाने तक के सारे हालात की हमें खबर दे दी। (हुज़ूर से सुनने वालों में) जिस ने इस बयान को याद रखा और जो भूल गया वह भूल गया। (बुखारी जिल्द 1 सफा 453— मिशकात सफा 516)

मालूम हुआ कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि-वसल्लम को मखलूकात की पैदाइश से लेकर जन्नतियों के जन्नत में और जहन्नमियों के जहन्नम में जाने तक के सारे हालात का इल्म है।

(2) हजरते अबू जैद यानी अम्र इब्ने अखतब अंसारी रजियल्लाहु तआला अनहु फरमाते हैं कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने हमें फज्र की नमाज पढ़ाई और मिंबर पर बैठ कर हमारे सामने तकरीर फरमाई यहाँ तक कि जुहर की नमाज का वक्त आगया फिर मिंबर से उतर कर नमाज पढ़ाई उस के बाद मिंबर पर बैठे फिर हमारे सामने तकरीर फरमाई यहाँ तक कि अस्र की नमाज का वक्त आ गया फिर मिंबर से उतर कर नमाज पढ़ाई उसके बाद मिंबर पर बैठे यहाँ तक कि सूर्य डूब गया तो उस तकरीर में जो कुछ हुआ और जो कुछ होने वाला है सब बातों की हुज़ूर ने हमें खवर दे दी। तो हम लोगों में सब से बड़ा आलिम वह आदमी है जिसे हुज़ूर की बताई हुई खबरें ज्यादा याद हैं। (मुस्लिम जिल्द 2 सफा 390)

मालूम हुआ कि हुज़ूर सैइदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को मा का न मा य कू न का इल्म है। यानी आप गुजरी हुई और बाद में होने वाली सारी बातें जानते हैं।

(3) हजरते सौबान रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि अल्लाह तआला ने

मेरे लिए जमीन समेट दी तो मैं ने पूर्व से पच्छिम तक जमीन का सारा हिस्सा देख लिया। (मुस्लिम—मिशकात सफा 512)

इस हदीस शरीफ से मालूम हुआ कि पूर्व से पच्छिम तक जमीन का हर हिस्सा हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की निगाह के सामने है।

(4) हजरते हुजैफा रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि खुदाय तआला की कसम मैं नहीं कह सकता कि मेरे साथी भूल गये हैं या भूल जाने को जाहिर करते हैं। (आज से) दुनिया के खत्म होने तक जितने फितने उठाने वाले लोग पैदा होंगे जिन के साथियों की तादाद तीन सौ से ज्यादा होगी खुदाय तआला की कसम हुजूर ने हमें उन का नाम, उन के बाप का नाम और उन के खानदान का नाम (सब कुछ) बता दिया। (अबू दाऊद—मिशकात सफा 463)

मालूम हुआ कि हुजूर का इल्म तमाम कुल्लियात और जुजईआत को घेरे हुए है। कि आप ने बाद में पैदा होने वाले फितना अंगेजों के नाम, उन के बाप का नाम और उन के कबीला का नाम लोगों से बयान फरमाया।

(5) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हजरते जैद, हजते जाफर और हजरते इब्ने रवाहा रजियल्लाहु तआला अनहुम की शहादत की खबर आने से पहले उन लोगों के शहीद हो जाने की इत्तिला देते हुए फरमाया कि जैद ने झंडा हाथ में ले लिया और शहीद किये गये फिर झंडे को जाफर ने संभाला और वह भी शहीद हुए फिर इब्ने रवाहा ने झंडे को लिया और वह भी शहीद किये गये। आप यह वाकिआ बयान फरमा रहे थे और आंखों से आंसू जारी थे। फिर आप ने फरमाया कि इस के बाद झंडे को उस आदमी ने लिया जो खुदाय तआला की तलवारों में से एक तलवार है यानी हजरते खालिद इब्ने वलिद (ने झंडा लिया और खूब घमसान की लड़ाई लड़ते रहे) यहां तक कि अल्लाह तआला ने मुसलमानों को फतह अता फरमाई।

(बुखारी—मिशकात सफा 533)

मालूम हुआ कि सारी दुनिया की हालतें हुजूर की निगाह के सामने हैं कि जंगे मूता जो मुल्के शाम में हो रही थी हुजूर उस की हालतें मदीना मुनव्वरा में बैठे हुए मुलाहज़ा फरमा रहे थे ।

(6) हजरते इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुमा से रिवायत है कि नबीए करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम मदीना या मक्का के बागों में से किसी बाग में तशरीफ ले गये तो दो आदमियों की आवाज सुनी जिन पर उन की कब्रों में अजाब हो रहा था। आप ने फरमाया उन दोनों पर अजाब हो रहा है। मगर किसी बड़ी बात पर नहीं। फिर फरमाया हां (खुदाय तआला के नजदीक बड़ी बात है।) उन में से एक तो अपने पेशाब से नहीं बचता था और दूसरा चुगली खाया करता था। फिर आप ने खजूर की एक हरी डाल मंगवाई और उस के दो टुकड़े किए और हर एक की कब्र पर एक-एक टुकड़ा रख दिया। हुजूर से पूछा गया या रसूलल्लाह ! यह आप ने क्यों किया ? फरमाया उम्मीद है कि जब तक यह डालियां सूख न जायें इन दोनों पर अजाब कम रहेगा।

(बुखारी जिल्द 1 सफा 35)

इस हदीस शरीफ से निम्नलिखित बातें मालूम हुईं—

(1) हुजूर की निगाह के लिए कोई चीज आड़ नहीं बन सकती यहां तक कि जमीन के अंदर जो अजाब होता है उसे आप देखते रहते हैं।

(2) हुजूर मखलूकात के हर खुले और छुपे काम को देख रहे हैं कि इस वक्त कौन क्या कर रहा है और पहले क्या करता था इसीलिए आप ने फरमा दिया कि एक चुगली करता था और दूसरा पेशाब से नहीं बचता था।

(3) हुजूर हर गुनाह का इलाज भी जानते हैं कि कब्र पर डालें रख दीं ताकि अजाब हल्का हो।

(4) कब्रों पर हरी पत्तियां और फूल वगैरा डालना सुन्नत से साबित है कि उस की तस्बीह से मुर्दा को आराम मिलता है।

(5) कब्र पर कुर्आन पाक की तिलावत के लिए हाफिज बिठाना

बेहतर है कि जब हरी डालियों के जिक्र से अजाब हल्का होता है तो इनसान के जिक्र से जुरुर हल्का होगा।

(6) अगरचे हर सूखी और गीली चीज तस्बीह पढ़ती है मगर हरी डालियों की तस्बीह से मुर्दा को आराम मिलता है ऐसे ही बेदीन के कुर्आन पढ़ने का कोई फाइदा नहीं कि उसमें कुफ्र का सूखापन है। और मूमिन का पढ़ना फाइदा मन्द है कि उस में ईमान की तरी है।

(7) हरी डालियाँ गुनहगारों की कब्र पर अजाब हल्का करेंगी और बुजुरगों की कब्रों पर सवाब व दर्जा बढ़ायेंगी।

(7) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया क्या तुम यह समझते हो कि मेरा किबला यह है। खुदा की कसम मुझ पर न तुम्हारे दिल की हालत छुपी है और न रुकू। मैं तुम्हें अपनी पीठ के पीछे से भी देखता हूँ। (बुखारी जिल्द 1 सफा 102)

मालूम हुआ कि हुजूर की आँखें आम आँखों की तरह न थीं बल्कि हुजूर आगे पीछे, ऊपर नीचे और अंधेरे उजाले में एक ही तरह देखते थे यहाँ तक कि खुशू जो दिल की एक कैफियत का नाम है हुजूर उसे भी मुलाहजा फरमाते थे।

(8) हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि एक भेड़िया बकरियों के चरवाहे की जानिब आया फिर उस के रेवड़ में से एक बकरी उठा ले गया। चरवाहे ने उस का पीछा किया। यहाँ तक कि बकरी को उस से छीन लिया। हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु फरमाते हैं कि फिर वह भेड़िया एक टीला पर चढ़ कर अपनी पूँछ पर बैठा और बोला मैं ने अपनी रोजी का इरादा किया था जो मुझ को खुदाय तआला ने दिया। मैं ने उस पर कब्जा किया था लेकिन ऐ चरवाहे तू ने उस को मुझ से छीन लिया। चरवाहे ने कहा खुदा की कसम! (ऐसी अजीब बात) मैं ने आज की तरह कभी न देखी कि भेड़िया बोलता है। भेड़िये ने कहा इस से ज्यादा अजीब उन साहब (यानी हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) का हाल है जो दो पहाड़ों के

दरमियानी नखलिस्तान (मदीना) में तशरीफ फरमा होकर तुम लोगों से उन सब (गैबी) बातों को बयान कर रहे हैं जो गुजर चुके और जो बातें तुम्हारे बाद होने वाली हैं। उन को भी बताते हैं। हजरते अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अनहु का बयान है कि वह चरवाहा यहूदी था। भेड़िये से यह सुन कर हुजूर की खिदमत में हाजिर हुआ। वाकिआ बयान किया और मुसलमान हो गया।

(मिशकात सफा 541)

मालूम हुआ कि जानवर का भी अकीदा है कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को : मा का न व मा य कू न का इल्म है।

(9) हजरते अनस रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा कि हजरते उमर रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने जंगे बद्र से एक रोज पहले हम लोगों को वह सब जगहें दिखा दिए थे जहाँ बद्र की लड़ाई में शरीक होने वाले मुशरिक कत्ल हुए। आप ने फरमाया देखो कल इन्शा अल्लाहु तआला यहाँ फुलाँ मुशरिक गिर कर मरेगा और कल इन्शा अल्लाहु तआला यहाँ फुलाँ आदमी कत्ल होकर गिरेगा। हजरते उमर रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कसम है उस जात की जिस ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को हक्क के साथ भेजा है कि जो जगहें हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने बता दी थीं उन से जरा भी तजाउज नहीं हुआ यानी वह काफिर उसी जगह मारे गये जो जगह हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने बता दी थी। फिर उन काफिरों को कूएं के अन्दर तले ऊपर डाल दिया गया।

(मिशकात सफा 543)

मालूम हुआ कि कौन कहाँ मरेगा हुजूर को इस बात का भी इल्म है कि मैदाने बद्र में आप ने फरमा दिया कि इन्शा अल्लाह कल यहाँ फुलाँ आदमी कत्ल होगा और यहाँ फुलाँ आदमी मरेगा। फिर दूसरे दिन हुजूर के फरमाने के मुताबिक हुआ यानी जो जगहें आप ने बता दी थीं उन से जरा भी फर्क नहीं हुआ।

कुछ जरूरी मसले

(1) इल्मे गैब उन बातों के जानने को कहते हैं जिन को बंदे आदी तौर पर अपनी अक्ल और अपने हवास यानी देखने, सुनने, सूंघने, चखने और छूने से मालूम न कर सकें।

(तफसीर कबीर जिल्द 1 सफा 174)

(2) कुर्आन मजीद पारा 29 रुकू 12 में है कि गैब का जानने वाला (अल्लाह तआला) तो वह सिर्फ अपने पसंदीदा रसूलों को ही गैब पर काबू देता है। मालूम हुआ कि अल्लाह तआला अपने रसूलों को गैब पर काबू देता है और जिसे गैब पर काबू होना है वह गैब जुरुर जानता है तो साबित हुआ कि रसूल गैब जुरुर जानते हैं।

(3) इमामे गिजाली रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फरमाते हैं कि नबी के लिए एक ऐसी खूबी होती है कि जिस से वह अन करीब होने वाली गैब की बातें जान लिया करते हैं।

(जरकानी जिल्द 1 सफा 20)

बारगाहे रब्बुल आलमीन जल्ल जलालुहू में दुआ है कि ऐ मौलाए करीम ! हदीसों और मसलों के इस मजमुआ को प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सदका में अपनी खुशी के लिए कबूल फरमा, हमें और हमारे सब अहले सुन्नत भाईयों और बहनों को सुन्नत की पैरवी की तौफीक अता फरमा और इस मजमुआ से बदमजहबों और बे अमलों को तौबा की तौफीक अता फरमाकर ईमान व अमल की नेमत नसीब फरमा आमीन या रब्बल आल मीन।

अल्ला हुम्म बदी अस्समावाति वल अरजि जल जलालि वल इकरामि खालिकल लैलि वन्न हारि अस्अलुक अनतुसल्लिय वतुसल्लिम अला अव्वलि खल्किल्लाहि सैइदिना मुहम्मदि निल मुस्तफा व अला आलिही व सहबिही व उसूलिही व फुरु इही व वनि हिल

गौसिल आज़मिल जीलानी अजमईन व आखिरु दावा_ना अनिल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन।

जलालुद्दीन अहमद अमजदी

दारुलउलूम फैज़ुर्रसूल बराँव शरीफ जि० बस्ती
21 जुमादल उखरा 1391 हिजरी—16 अगस्त सन् 1971 ईसवी

लेखक के हालात

अपने कलम से

1352 हिजरी मुताबिक सन् 1933 ई० में यू० पी० जिला बस्ती की मशहूर आबादी ओझागंज में हम पैदा हुए जो शहर बस्ती से बीस किलोमीटर पच्छिम फैजाबाद रोड से 3 किलोमीटर दक्षिण है।

नाम व नसब

जलालुद्दीन अहमद इब्ने जान मुहम्मद इब्ने अब्दुर्रहीम इब्ने गुलाम रसूल इब्ने जियाउद्दीन इब्ने मुहम्मद सालिक इब्ने मुहम्मद सादिक इब्ने अब्दुल कादिर इब्ने मुराद अली। अल्लाह तआला उन लोगों की और सब की बख्शिश फरमाये : आमीन।

खानदानी हालात

मेरे दादा अब्दुर्ररीम बहुत सादे व पारसा और इबादत गुजार थे जो बिल्कुल जवानी में इन्तिकाल कर गये। उन के एक भाई अब्दुल करीम हाजी थे जो जिन्दगी भर बिला तनख्वाह मस्जिद की इमामत करते रहे और दूसरे भाई अब्दुल मुकीम थे जो बहुत मुत्तकी परहेजगार थे और रुधौली के करीब अपने ससुराल में रहते थे। इन्तिकाल के छे महीना बाद पानी के बहाव से उन की कब्र खुल गई तो लाश ताजा थी और कफ्न भी मैला न हुआ था।

मेरे वालिद जान मुहम्मद मरहूम कई वर्ष तक अपने घर बिला मुआवजा बच्चों को मजहबी तालीम देते रहे और बाबा अब्बुल करीम ने अपनी जिन्दगी में उन्हें जामे मस्जिद का इमाम बना दिया तो वह सिर्फ खुदा की रजा के लिए बिला तनख्वाह जिन्दगी

भर पाबंदी के साथ पाँचों वक्त और जुमा व इदैन की इमामत करते रहे। बड़े मुत्तकी व परहेजगार थे आज भी आबादी के लोग उन के तकवा व परहेजगारी को याद करते हैं और उन का तजकिरा बड़ी इज्जत से करते हैं।

मेरी वालिदा मरहूमा बीबी रहम तुन्निसा एक दीनदार घराने की लड़की थीं। बहुत नमाजी और सुबह कुर्आन मजीद पढ़ने की बेहद पाबंद थीं। दुआये गंजुल अर्श और दुरुद लक्खी उन को जुबानी याद थी जिन को रोजाना बिलानागा पढ़ा करतीं। 14 जुमादल ऊला सन 1399 हिजरी मुताबिक 12 अप्रैल सन 79 ईसवी को मैं उन के जाहिरी साया से महरुम हो गया। खुदाय तआला उन की कब्र पर रहमत के फूल बरसाये। उन्हों ने मेरी तालीम के बारे में जो काम किया है उस की मिसाल इस जमाना में मिलना मुश्किल है कि मैं उन के बुढ़ापे का अकलौता बेटा था और पहली बार जब मैं नागपुर गया तो ढाई साल के बाद आया इस बीच में उन्हों ने मेरे पास आने के बारे में खत तक न लिखा ताकि पढ़ाई का नुकसान न हो। अल्लाह तआला उन को बेहतरीन जजा अता फरमाए।

पढ़ाई की शुरुआत

उम्र के पाँचवें साल में अपने बाप के शागिद मौलवी मुहम्मद जकरीया साहब मरहूम जो औझा गंज ही में बिला तनख्वाह अपने घर एक मकतब चलाते थे। उन से काइदा बगदादी शुरु किया सन 1359 हिज्री मुताबिक सन 1940 ई० में सात साल की उम्र में कुर्आन मजीद नाजिरा खत्म किया तो मौलवी मुहम्मद जकरीया साहब मरहूम जो हाफिजे कुर्आन तो न थे मगर हाफिजों की तरह उन को कुर्आन मजीद याद था उन्हीं से मैं ने हिफ्ज पढ़ना शुरु कर दिया।

पढ़ने का शौक

सात आठ साल की उम्र में भी मुझे पढ़ने का इस कदर शौक था कि सुबह सवेरे सूर्य निकलने से पहले सख्त जाड़े के जमाना में भी सब से पहले मकतब पहुँच जाता था। एक बार जल जाने के सबब बायें घुटने में ऐसी तकलीफ हुई कि मैं पाँव से चल कर मकतब नहीं जा सकता था तो एक पाँव और दोनों हाथों की टेक से चल कर बराबर मकतब जाता रहा एक दिन भी नागा न किया। अल्लाह की मेहर-बानी से सन 1363 हिजरी मुताबिक सन 1944 ईसवी में सिर्फ साढ़े तीन बर्ष के अंदर साढ़े दस साल की छोटी सी उम्र में हिफ्ज पूरा हो गया। बहुत से लोग मुझे नाबालिग हाफिज कहते थे और मेरी कम उम्री के सबब दूसरी आबादी के लोग मुझे पूरा हाफिज मानने के लिए सोच में पड़ जाते थे।

पढ़ने के लिए पहला सफर

हिफ्ज पूरा करने के बाद दौर सुनाने और फारसी व अरबी पढ़ने के लिए मैं ने जिला फैजाबाद के कस्बा इल्तिफातगंज का पहला सफर किया। खाने का बोझ पहले हमारे एक रिश्तेदार जनाब नबी बख्श मरहूम ने बरदाश्त किया। फिर सत्तरा रोज महल्ला बगीचा के अहले खैर हजरात के यहाँ जागीर खाने के बाद एक आदमी ने मुझे भाई बना लिया (अफसोस कि हदीस शरीफ लातुजालिसूहुम पर अमल न करने के सबब वह बाद में गुमराह हो गया) में उस का कुछ काम भी कर दिया करता था और सुबह व शाम पाबंदी के साथ पढ़ने भी जाया करता था। चूँकि हिफ्ज पढ़ने के जमाना में उर्दू लिखना पढ़ना हम ने खुद ही सीख लिया था इसलिए इल्तिफातगंज में कुर्आने मजीद का दौर सुनाने के साथ मैं ने फ़ारसी आमद नामा शुरु कर दिया जिसे मौलाना अब्दुर्रऊफ साहब ने पढ़ाया। और बानिए फैजुर्रसूल शुऐबुल औलिया हजरत मुहम्मद यार अली साहब किबला रहमतुल्लाहि तआला अलैहि के पीर जादा हजरत मौलाना अब्दुलबारी साहब मरहूम से फारसी

की छोटी बड़ी बारा किताबें पढ़ीं और कुछ अरबी की तालीम भी उन्हीं से हासिल की।

पढ़ाई में रुकावटें

सन् 1363 हिजरी और सन् 1364 हिजरी में लगातार हमारे घर कई सदमे पेश आये जब मेरा हिफ्ज खत्म के करीब था तो मेरे नौजवान भाई मुहम्मद निजामुद्दीन जो घर का बोझ संभाले हुए थे अचानक 4 रमजानुल मुबारक सन् 1363 हिजरी को इन्तिकाल कर गये इस सदमा से घर के सब लोग बे जान हो गये। फिर घर में दो बार ऐसी चोरी हुई कि चोरों ने पानी पीने के लिए गिलास तक न छोड़ा फिर 30 रमजानुलमुबारक सन् 1364 हिजरी मुताबिक सन् 1945 ई० को मूसलाधार बरसात के साथ हमारे वालिद की छतरी पर ऐसी बिजली गिरी कि साथ के तीन आदमी फौरन मर गये और वालिद साहब मरहूम अगरचे बच गये मगर इतने कमजोर हो गये कि ज्यादा काम के काबिल न रह गये। घर के सारे खर्च का बोझ वालिद साहब ही पर था कि मेरे इलावा उन का और कोई बेटा न था। गरीबी ने हर तरफ से घेर लिया मगर उस के बावजूद मेरी पढ़ाई को उन्हों ने बंद न किया। आखिर मुझ से घर की परेशानी देखी न गई तो सन् 1365 हिजरी मुताबिक 1946 ईसवी में इल्तिफातगंज महल्ला बागीचा के पुराने रईस हाजी मुहम्मद शफी साहब मरहूम मुनीर हसन शहीद मनीजर मुहीयुद्दीन के बाप जो निहायत मुत्तकी, परहेजगार, सुबह कुर्आन मजीद पढ़ने के पाबंद, नेक तबीअत और मदरसा के खजानची थे। मैं ने उन के यहाँ दस रुपये महीना और खाने पर इस शर्त के साथ मुलाजमत करली कि सुबह व शाम दो-दो घंटे मैं पढ़ने भी जाया करूँगा इस तरह लगभग एक साल गुजरा और हमने इल्तिफातगंज के मदरसा का मौजूदा कोर्स पूरा कर लिया।

अब घर के लोग और दूसरे रिश्तेदार वगैरा मेरी पढ़ाई बंद करने और पूरे तौर पर किसी काम में लगा देने की बातें करने लगे यहाँ तक कि हमारे बाप और मां ने यह बात मेरे सामने रखी

तो उन लोगों को मैंने अपनी पढ़ाई के जारी रखने पर राजी कर लिया इस लिए कि मेरे बड़े भाई मुहम्मद निजामुद्दीन मरहूम ने इन्तिकाल से पहले कहा था कि मेरी तमन्ना थी कि मैं तुम्हें पढ़ने के लिए बरेली शरीफ भेजता और तुम्हें आलिमे दीन बनाता मगर अफसोस कि मैं अब जिन्दा न रहूँगा। मुझे उनकी तमन्ना पूरी करने की लगन थी और फिर मैं यह सोचता कि लोग मुझे हाफिज कहते हैं। मगर मैं तो जाहिल हूँ कि जाहिलों की तरह मैं भी मसला मसाइल कुछ नहीं जानता फर्क सिर्फ इतना है कि वह कुर्आन मजीद देख कर पढ़ते हैं और मैं जुबानी पढ़ता हूँ इसलिए मैं आलिम जुरूर बनूँगा।

पढ़ने के लिए दूसरा सफ़र

अब मुझे ऐसे मदर्सा की खोज हुई कि जहाँ रात में पढ़ाई होती हो और वह शहर में होता कि मैं रात को पढ़ूँ और शहर में कोई काम करके अपने माँ बाप की खिदमत (सेवा) भी करता रहूँ। मालूम हुआ कि शहर नागपुर (सी० पी०) में रात को पढ़ाई होती है तो सन् 1947 ई० के झगड़े के फौरन बाद जब कि ट्रेन में मुस्लिम डिब्बे खास होते थे मैं नागपुर पहुँच गया। हजरत अल्लामा अरशदुल्कादिरी साहब किबला मद्दा जिल्लु हुलअली फातिहे जमशेदपुर उस जमाना में मदरसा इस्लामिया शम्सुलउलूम के हेड मुदर्रिस थे। सुबह 8 बजे से 12 बजे और रात 8 बजे से 10 बजे तक उनके पढ़ाने का वक्त मुकर्रर था। मगर हजरते अल्लामा मगरिब के बाद ही आ जाते और 12 बजे रात तक पढ़ाने का सिलसिला जारी रखते। बीस पच्चीस लड़के उन से रात में पढ़ते थे। मैं भी मगरिब के बाद खाने से फारिग हो कर पढ़ने के लिए हाजिर हो जाता और ग्यारह बारह बजे रात तक पढ़ता फिर अपने रहने की जगह पर आकर सो जाता और सुबह से शाम तक काम करता जिस से पच्चीस तीस रुपये महीना अपने माँ बाप की खिदमत करता और अपने खाने पीने और दूसरी जिन्दगी की जुरूरतों का इन्तिजाम

करता तो इस तरह नागपुर में मेरी पढ़ाई का सिलसिला आखिर तक जारी रहा।

मुरीद होना

मुझे मसला मसाइल के जानने का बड़ा शौक था। इसलिए मैं बचपन ही से 'बहारे शरीअत' का नाम सुनता था और हनफी फिक्ह की इस अजीम किताब को देख कर उसके लेखक सदरुश्शरीआ हज़रत अल्लामा मौलाना हकीम अबुलउला मुहम्मद अमजद अली साहब आजमी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि से अकीदत रखता था। हजरत अल्लामा से मालूम हुआ कि हजरत सदरुश्शरीआ आला हजरत इमाम अहमद रजा बरेलवी अलैहिर्रहमतु वर्रिजवान के खलीफा हैं तो 29 जुमादलऊला सन् 1367 हिजरी मुताबिक सन् 1948 ई० को अपने साथियों के हमराह मैं भी हजरत से मुरीद हो कर सिसिलए रजविया में दाखिल हो गया।

वालिद का इन्तिकाल और दीनी खिदमत की शुरुआत

अभी मेरी पढ़ाई का सिलसिला जारी ही था कि जिलहिज्जा सन् 1370 हिजरी की इब्तिदाई तारीखों में वालिद साहब ज्यादा बीमार हो गये घर वालों ने उन से कहा कि आप की तबीयत खराब है। और आप का एक ही लड़का है। उसे खत भेज कर बुला लीजिए। फरमाया कि नहीं पढ़ाई का नुकसान होगा। मगर बकर-ईद के बाद जब वह बहुत ज्यादा बीमार हो गये तो घर वालों ने उन की इजाजत के बगैर मुझे टेलीग्राम दे दिया। अगरचे मैं घर के हालात से बे खबर था लेकिन दिल को दिल से राह होती है। मेरी तबीअत बहुत उचाट हुई तो टेलीग्राम मिलने से पहले ही मैं 17 जिलहिज्जा को घर आ गया और 20 जिलहिज्जा सन् 1370 हिजरी मुताबिक सन् 1951 ई० को वालिद माजिद साहब इन्तिकाल कर गये।

में घर वालों की तसल्ली की खातिर कुछ दिनों के लिए मकान पर ठहर गया इसी दरमियान में दुबौलिया बाजार जो ओझा गंज से पाँच किलोमीटर दक्षिण है। वहाँ के मुसलमानों ने मुझे तकरीर के लिए बुलाया तो मैं ने वहाँ एक मदरसा काइम कर दिया। लोगों ने मुझी को पढ़ाने के लिए मजबूर किया तो कुछ दिनों के लिए मैं ने मनजूर कर लिया और जब मदरसा चल पड़ा तो मैं फिर नागपुर जाकर पढ़ने में लग गया। और 18 साल की उम्र में 24 शाबान 1371 हिजरी मुताबिक 19 मई सन् 1952 ई० को हजरत अल्लामा अरशदुल्कादिरी दामत बरकातुहुमुल आली ने दस साथियों के हम-राह मुझे भी आलिम होने की डिगरी अता फरमाई। इस तरह ओझा गंज की तारीख में हम सब से पहले फारिगुत्तहसील आलिम हुए।

दस्तार बंदी के बाद में फिर दुबौलिया बाजार के मदरसा में पढ़ाने लगा और उसकी पढ़ाई को ऊँची करने की कोशिश की मगर उस के मेम्बर हौसिला वाले न थे उन्हों ने मेरा साथ न दिया। मुझे अपनी तरक्की की राह नजर न आई तो मैं ने इस्तीफा दे दिया।

जमशेदपुर में

हजरते अल्लामा ने हम लोगों की दस्तार बंदी के बाद नागपुर से जमशेदपुर जाकर मदरसा फैजुलउलूम काइम किया। दुबौलिया के मदरसा से जीकादा सन् 1373 हिजरी मुताबिक सन् 1954 ई० में इस्तीफा दे कर हजरत के बुलाने पर मैं भी जमशेदपुर पहुँच गया। उसी जमाना में जमशेदपुर का तारीखी मुनाजरा हुआ जिस में अहले सुन्नत व जमाअत को फतह हासिल हुई और अहले सुन्नत के मुनाजिर हजरत अल्लामा अरशदुल कादिरी साहिब किबला को बड़े-बड़े आलिमों ने फातेहे शमशेदपुर का खिताब अता फरमाया। चूँ कि मदरसा फैजुलउलूम में बर वक्त किसी मुदर्रिस की जुरुरत न थी इसलिए मुझे एक मकतब में पढ़ाने के लिए मुकर्रर किया गया तो मैं दिल बरदाश्ता होकर तकरीबन पाँच महीना के बाद हजरत अल्लाम की इजाजत से घर चला आया।

भावपुर जिला बस्ती में

उस जमाना में बानी ए फैजुर्रसूल शुऐबुल औलिया हजरत शाह मुहम्मद यार अली साहिब किबला रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ग्यारहवीं शरीफ की तकरीब मौजा सम्दा जिला फैजाबाद में किया करते थे और उस वक्त शेर बेशए अहले सुन्नत हजरत अल्लामा हशमत अली खाँ साहिब कुद्दिस सिर्रहू अक्सर शुऐबुल औलिया के साथ रहा करते थे। मैं ने शुऐबुल औलिला से ग्यारहवीं शरीफ के मौका पर सम्दा में भेंट की तो हजरत ने बड़ी इज्जत की और शेर बेशए अहले सुन्नत से मेरा तआरुफ (पहचान) कराया तो वह भी बहुत इज्जत से पेश आये। फिर दोनों बुजुर्गों की राय से मैं भावपुर जिला बस्ती के मदरसा कादिरिया रजविया में पढ़ाने के लिए मुकर्रर कर दिया गया इस तरह मैं जुमादल ऊला सन् 1374 हिजरी मुताबिक जनवरी सन् 1955 ई० में भावपुर आ गया। वहाँ कई साल पहले से हजरत शेर बेशए अहले सुन्नत की सर परस्ती में मदरसा चल रहा था लेकिन चूँ कि वहाँ की खमीर में फितना व फसाद है इसलिए मुझ से पहले बहुत से आलिम आए। और फितने से आजिज आकर चले गये। मैं ने वहाँ पहुँच कर मदरसा को तरक्की देने की भरपूर कोशिश की और रात दिन की दौड़ धूप से मदरसा को इस दर्जा पर पहुँचा दिया कि उससे पहले कभी इतनी तरक्की नहीं हुई थी लेकिन मेरी मौजूदगी में भी फितना खड़ा हो गया तो आजिज आकर जीकादा सन् 1375 हिजरी मुताबिक सन् 1956 ई० को मैं ने इस्तीफा दे दिया।

फैजुर्रसूल में

मजहबे अहले सुन्नत की तबलीग मस्लके आला हजरत की इशाअत और जिला बस्ती व गोंडा की बढ़ती हुई बदमज़हबी की रोक थाम के लिए हजरत शाह साहिब अलैहिर्रहमा ने हजरत शेर बेशए अहले सुन्नत कुद्दिस सिर्रहू जैसे जबर-दस्त मुकर्रिर और मुनाजिर को साथ लेकर बहुत से दिहातों का दौरा फरमाया जिन की तकरीर व मुनाजिरे ने पूरे

इलाका में धूम मचा दी और सुन्नियत में नई जान डाल दी लेकिन चूँकि पढ़ाई के मुकाबला में तकरीर व मुनाजरा का असर ज्यादा देर तक नहीं रहता इसलिए हजरत शुऐबुल औलिया की खास तमन्ना थी कि इस इलाका के मदरसों के तालीमी मियार को ज्यादा ऊँचा किया जाये ताकि तालीम खूब आम हो जाये इसी लिए आप अपने तमाम मुरीदान मोतकिदीन को मदरसा अनवारुलउलूम तुलसीपुर, अनजुमन मुईनुल इस्लाम पुरानी बस्ती और मदरसा कादिरिया रजविया भावपुर की इमदाद की ताकीद फरमाते थे। लेकिन भावपुर की फितना अंगेजी के सबब वहाँ मदरसा चलने की उम्मीद न रही। अनजुमन मुईनुल इस्लाम पुरानी बस्ती के मेम्बरों ने हजरत मौलाना बदरुद्दीन अहमद साहब रजवी जैसे दीन-दार और मेहनती आलिम को काम न करने दिया और मदरसा अनवारुलउलूम तुलसीपुर जो बहुत तरक्की पर था मगर झगड़े के सबब वह भी निहायत तेजी के साथ नीचे जा रहा था तो हजरत शुऐबुल औलिया ने फिर मकतबे फैजुर्रसूल को दारुलउलूम फैजुर्रसूल बनाना चाहा कि सन् 1354 हिजरी मुताबिक सन् 1935 ई० से सन् 1358 हिजरी मुताबिक 1939 ई० तक एक बार दारुलउलूम फैजुर्रसूल चल कर फिर मकतब फैजुर्रसूल हो गया था।

जिलहिज्जा सन् 1374 हिजरी मुताबिक जुलाई सन् 1955 ई० में जब कि भावपुर में नये फितने का जन्म हो चुका था हजरत ने आदमी भेज कर मुझे बराँव शरीफ बुलाया। मैं हाजिर हुआ तो फरमाया कि मैं ने इस इलाका के मदरसों के चलने से ना उम्मीद होकर अपने यहाँ खुद दारुल उलूम चलाने का इरादा कर लिया है। सुना है कि आप भावपुर में न रहेंगे। मैं यह नहीं चाहता कि आप भावपुर छोड़ दें लेकिन अगर छोड़ दें तो कहीं दूसरी जगह न जायें बल्कि हमारे यहाँ आयें कि बरवक्त मुझे एक अच्छे आलिम की खोज है। मैं ने गौर कर के जवाब देने का वादा किया और भावपुर पहुँचने के बाद इसलिए कि कभी अल्लाह वालों से बहुत ज्यादा करीब रहना जहमत का सबब हो जाता है। मैं ने हजरत को माजिरत नामा लिख दिया लेकिन जब फितना की वजह से

भावपुर में रहना मुश्किल हो गया तो इस्तीफा देकर में बरांव शरीफ आ गया और पहली जिलहिज्जा सन् 1375—हिजरी मुताबिक 10 जुलाई सन् 1956 ई० से बा काइदा दारुलउलूम फैजुर्रसूल का मुदर्रिस हो गया और तकरीबन 31 साल से लगातार इसी दारुल-उलूम में अपने फर्ज को अनजाम दे रहा हूँ।

फैजुर्रसूल की बुनियाद चूँकि खुलूस पर है और हजरत शाह साहब किबला रहमतुल्लाहि तआला अलैहि आलिमों और तालि-बेइलमों की बड़ी इज्जत करते थे और उन के लड़के भी इज्जत करते हैं। इसीलिए यह इदारा दिन प्रतिदिन तरक्की कर रहा है। और जब तक हजरत की औलाद उन के तरीके पर अमल करती रहेगी और उन के कदम ब कदम चलेगी यकीनन यह इदारा तरक्की ही करता रहेगा।

बानिए फैजुर्रसूल शुऐबुल औलिया हजरत शाह मुहम्मद यार अली साहब किबला रहमतुल्लाहि तआला अलैहि का 22 मुहर्रम सन् 1387 हिजरी को विसाल हुआ इस तरह अल्लाह के फज्ल से ग्यारह साल से ज्यादा उन की खिदमत में रहने का मौका मिला जिस से हमारे दीन में और ज्यादा निखार पैदा हो गया।

तरक्की

तालिबेइल्मी जमाना में दिन भर काम करने और सिर्फ रात में पढ़ने के सबब कोई खास काबिलियत पैदा न हो सकी थी और फिर आलिम होने के बाद कोई ऐसी जगह न मिल सकी थी कि जहाँ मैं तरक्की करता लेकिन फैजुर्रसूल के पुरसुकून माहौल में पहुँचने के बाद हजरत इमामे आजम रजियल्लाहु अनहु के कौल : अदरक तुल इल्म बिल जहदि वश्शुकरि और माबखल्तु बिलइफादति व मस्तन-कफतु अनिल इस्तिफादति को रास्ते का चिराग बनाया कि अपनी मेहनत को इन्तिहा तक पहुँचाया बताने में कनजूसी न की और न पूछने में शर्म की वक्त की कद्र की, उसे बरबाद न किया। सबक की किताबों को शरहों और हाशियों से गहरा मुतालआ करने के बाद

पढ़ाया उस्तादों को और वालिदा को खुश रखा, उन की खिदमतें कीं उन से दुआयें लीं और यकीन किया कि हकीकत में इल्म हासिल करने का वक्त फरागत के बाद है और तालिबे इल्मी जमाना में सिर्फ इल्म हासिल करने की कूवत पैदा की जाती है तो खुदाय तआला ने मुझे उस दर्जा पर पहुंचा दिया जिस को कभी सोच नहीं सकता था। फलिल्लाहिलहम्दु।

फतवा लिखना

दारुल उलूम फैजुर्रसूल के दोबारा जारी होने के साथ इस्तिफता आना शुरू हो गया पहले हजरत मौलाना बदरुद्दीन अहमद साहब रजवी ने चंद फतावे लिखे। फिर मैं ने 24 सफर सन् 1377 हिजरी मुताबिक सन् 1957 को 24 साल की उम्र में पहला फतवा लिखा। हजरत मौलाना ने फतवा लिखने से मेरी दिलचस्पी को देखकर पूरे तौर पर यह काम मेरे सिपुर्द कर दिया। पहले यह काम मैं पढ़ाई के वक्त के बाद ही किया करता था लेकिन जब काम बढ़ गया तो पढ़ाई के वक्तों में भी करने लगा। इस तरह लगातार 25 वर्ष तक फतवा लिखने के बाद रबीउल अव्वल 1403 हिजरी मुताबिक सन् 1983 ई० में दिमागी बीमारी के सबब इस काम से अलग होकर सिर्फ पढ़ाता हूँ।

मुरीद को अगर पीर से हकीकत में खुलूस हो तो पीर की खास खूबी की झलक मुरीद में पाया जाना जुरुरी है। इसी लिए पीर की खास खूबी की झलक अगर मुरीद में न पाई जाये तो हम उसे सच्चा मुरीद नहीं समझते। शुऐबुल औलिया हजरत शाह मुहम्मद यार अली साहिब किबला रहमतुल्लाहि तआला अलैहि नमाज व जमाअत का बहुत इहतिमाम फरमाते थे कि नमाज तो नमाज, जमाअत तो जमाअत, अड़तालीस साल तक पहली तकबीर भी न छूटी तो उन का जो मुरीद नमाज व जमाअत का इहतिमाम न करे हम उसे रस्मी मुरीद कहते हैं।

हमारे एक चाहने वाले मिर्जा जमाल बेग मरहूम ने कहा कि मेरी वालिदा हजरत शाह साहिब से मुरी हैं लेकिन मैं ने कोई फैज

नहीं देखा। हम ने कहा आप के इलाका में औरत तो औरत कोई मर्द भी उन के जैसा नमाजी नहीं है। यही शाह साहब रहमतुल्लाहि तआला अलैहि का फैज है और सैइदी मुर्शिदी सदरुश्शरीआ हजरत अल्लामा मौलाना हकीम अबुल उला मुहम्मद अमजद अली साहब रहमतुल्लाहि अलैहि फलसफा और मनतिक वगैरा बहुत से इल्म में पूरी महारत रखते थे मगर मसला मसाइल जानने की खूबी उन की सब खूबियों से बढ़ी हुई थी, तो यह हजरते सदरुश्शरीआ रहम-तुल्लाहि तआला अलैहि ही का फैज है कि पढ़ाने, किताब लिखने और दारुलउलूम के दूसरे कामों के साथ पचीस साल में हजारों फतवे लिखे जो 15 रजिस्ट्रों के सफहात पर फैले हुए हैं। जिन की तरतीब का काम जारी है। इन्शा अल्लाह जल्द ही फतावा फैजुर्रसूल के नाम से छप कर लोगों के सामने आने वाले हैं।

वाज व तकरीर

पढ़ाने और किताब व फतवा लिखने के साथ हम ने वाज व तकरीर की भी कोशिश की इसलिए कि अवाम की तबलीग के लिए यही एक जरिआ है। इस सिलसिला में सूबए यु० पी० के कई जिलों और दूसरे सूबाजात बिहार, उड़ीसा, मध्य प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात और राज नेपाल के जलसों में कई बार शरीक होने का इत्तिफाक हुआ और लोगों ने हमारे वाज को दिलचस्पी से सुना।

यह बात निहायत अफसोस वाली है कि आज कल वाज व तकरीर के बारे में हमारी जमाअत का मिजाज बहुत बिगड़ गया है कि सीरतुन्नबी के मुबारक स्टेज पर फासिक व फाजिर हर किस्म के शाइर बहुत से बुलाये जाते हैं और ग्यारह बारह बजे रात तक फ़िल्मी और ठुमरी वगैरा हर किस्म की तर्ज के शेर पढ़े जाते हैं। फिर थोड़ी देर आलिम की तकरीर होती है। और आखिर में फिर शेर पढ़े जाते हैं। इस तरह तकरीर का जो कुछ असर होता है वह धुल जाता है। और सुनने वाले सिर्फ नगमा व तरन्नुम का असर लेकर अपने-अपने घर जाते हैं।

कुछ जलसों में तो इतने बड़े शाइर बुलाये जाते हैं जो बड़े-बड़े शैखुल हदीस से भी बड़े होते हैं कि उन से ज्यादा शाइर की खातिर मदारात होती है। लोग उसे घेरे रहते है। और निहायत ही इज्जत के साथ उसे रुखसत करते हैं।

मैं ऐसे जलसों में कि जहां गाने वाले शाइर हासिले जलसा हों शिरकत करने से परहेज करता हूँ। कि मजहबी जलसों में मजहबी पेशवा का सिकन्ड दर्जा होना मजहब और मजहबी पेशवा दोनों की मौत हैं।

तसनीफ

फैजुर्रसूल में आते ही हम ने फतवा लिखने और पढ़ाने के साथ किताबों के लिखने का सिलसिला भी शुरु कर दिया पचीस साल में छोटी बड़ी जितनी किताबें लिखीं वह यह हैं। मौलाना रुम अलै-हिर्रहमा की मसनवी शरीफ का इन्तिखाब मए तरजमा व थोड़ी तशरीह, गुलदस्तए मसनवी, आयात कुर्आनी से एक आम फहम और मुख्तसर रिसाला, मआरिफुल कुर्आन, सज्दए ताजीम, अवाम के लिए अकाइद और रोजाना पेश आने वाले नमाज, जकात और रोजा वगैरा के मसाइल में, अनवारे शरीअत उर्फ अच्छी नमाज उर्दू, हिन्दी, हज्ज व जियारत के मसाइल में निहायत आसान किताब हज्ज व जियारत, आठ मुख्तलफीह मसाइल का मुहक्कि-काना फैसला उर्दू-हिन्दी, बच्चों और बच्चियों की दीनी तालीम का सुन्नियत अफरोज सिलसिला नूनारी तालीम चार हिस्से, अनवारुल हदीस और फिकही पहेलियाँ।

अल्लाह की मेहरबानी से यह सब किताबें बहुत पसंद की गईं। जो कई बार छप चुकी हैं। इन सब किताबों में सब से अहम अनवारुल हदीस और फिकही पहेलियाँ हैं।

हमारी जमाअत में किताब लिखने की बहुत कमी है। दूसरे लोग कुर्आन व हदीस के तरज में, उनकी तफसीर व तशरीह, कोर्स की किताबों की शरहें हाशिये और उनके तरजमे, तारीख व सियर और अख्लाक व तसौउफ वगैरा हर इल्म व फन की किताबें लिखने

में बहुत आगे हैं। और हम बिल्कुल न लिखने के बराबर हैं। इस लिए कि हमारी जमाअत के ज्यादा तर बड़े-बड़े आलिम जो किताब लिखने की भरपूर सलाहियत रखते हैं अपना पूरा वक्त वाज व तकरीर, पीरी मुरीदी में खर्च करके अपनी इस जिम्मेदारी से लापरवाई बरतते हैं। हम यह नहीं कहते कि पीरी मुरीदी और वाज व तकरीर न करें लेकिन उन से इतना जुरुर कहें गे कि वक्त की इस अहम जुरुरत पर तवज्जुह दें और वक्त निकाल कर किताबों के लिखने का काम जुरुर करें वर्ना सुन्नियत का आने वाला जमाना तारीक से तारीक तर होता जाएगा।

सफरे हरमैन तैइबैन

19 शव्वाल सन् 1396 हिजरी मुताबिक 14 अक्टूबर सन् 1976 ई० जुमेरात को इस मुबारक सफर के लिए मैं अपने वतन से रवाना हुआ। ओझागंज और कुर्ब व जवार के बहुत से मुसलमानों ने निहायत ही शानदार जुलूस के साथ रुखसत किया। शाम तक मैं बराँव शरीफ पहुँचा। 21 शव्वाल को शुऐबुल औलिया हजरत शाह मोहम्मद यार अली साहब किबला अलैहिर्रहमतु वर्रिजवान के मजारे मुबारक पर हाजिरी देने के बाद मैं बराँव शरीफ से रवाना हुआ हजरत के साहेब जादगान और फैजुर्रसूल के आलिमों और तालिवेइल्मों ने वहुत इज्जत के साथ मुझे रुखसत किया। दोस्तों और बुजुर्गों की दुआओं का तोशा जमा करते हुए 24 शव्वाल को बम्बई पहुँचा। हाजी सेठ हयात मुहम्मद साहिब मरहूम और जनाब सेठ अबू बकर खाँ साहिब "जीदतमहासिनुहू" के यहाँ मुहल्ला घाट कोपर में डेढ़ हफ्ता ठहरा रहा। फिर 6 जिलकादा 30 अकटूबर को एम० वी० अकबर बहरी जहाज से रवाना हो कर 13 जिलकादा को अस्र के वक्त जद्दह के साहिल पर उतर गया। दूसरे दिन 14 जिलकादा को रात के वक्त मक्का शरीफ हाजिर हुआ और तकरीबन दो बजे काबए मुअज्जमा के तवाफ से पहली बार मुशर्रफ हुआ।

मक्का शरीफ में एक हफ्ता ठहरने के बाद 22 जिलकादा

सोमवार को अस्र की नमाज पढ़ कर मदीना तैइबा के लिए रवाना हुए। मगरिब की नमाज शहर से बाहर निकल कर चन्द मील के फासिला पर पढ़ी और इशा की नमाज मंजिलेबद्र में अदा हुई। इस तरह रात को एक बजे उस मुकद्दस शहर में दाखिल हो गये जो आशिकों के ईमान का किबला है। और 23 जिलकादा फज्र की नमाज के वक्त सरकारे आजम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाह में रोते हुए हाजिर हुए।

तीसरे दिन अजीजे गिरामी मौलाना मुहम्मद इब्राहीम हिन्दी जो फैजुर्रसूल बराँव शरीफ में पढ़ चुके हैं और उस वक्त मदीना तैइबा में मुकीम थे उन से मुलाकात हुई। उन को साथ ले कर जन्नतुल बकी में हाजिर हुआ। खलीफए सोम हजरते उस्मान गनी, बीबी हलीमा, बीबी फातिमा, हजरते इमामे हसन, हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अजवाजे मुतहहरात और दूसरे बड़े-बड़े सहाबा और सहाबियात रिजवानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन के मजारों की बरबादी देख कर बड़ा दुख हुआ कि पहले उन मजारों पर कैसे शानदार गुम्बद बने हुए थे जिन्हें नजदी वहाबी हुकूमत ने खोद कर फेंक दिया।

जन्नतुलबकी की हाजिरी के बाद जंगे उहुद की जगह, हजरते उस्मानगनी रजियल्लाहु तआला अनहु का कुआँ, मस्जिदे किब्लतैन, जंगे खन्दक की जगह, मस्जिदे कुबा, और दूसरी मुबारक जगहों की जियारत करते हुए बागे सलमान फारसी रजियल्लाहु तआला अनहु में हाजिर हुए ताकि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के मुबारक हाथ के लगाये हुए खुजूर के दो दरख्त जो अब तक मौजूद हैं उन की जियारत करें। मगर बाग में उन दरख्तो की जियारत न हो सकी। बड़ा अफसोस हुआ। बाग वाले से पूछा गया उसने बताया कि दो रोज पहले यानी 22 जिलकाद सन् 1396 हिजरी को पुलिस ने खड़े हो कर उन्हें कटवा दिया।

हर कौम अपने पेशवा की यादगारों की हिफाजत का इहतिमाम करती है मगर वहाबी मुसलमान होने के झूटे मुद्दई सरकारे अबद करार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की यादगारों को मिटाने

के दर पे हैं। यहाँ तक कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का गुम्बदे खजरा जिस की जियारत दुनिया के मुसलमानों का सुकून और आशिकाने रसूल के दिलों का करार है। यह कौम उस के ढाने का भी प्रोग्राम बना रही है।

दसवें रोज 2 जिलहिज्जा सन् 1396 हिजरी जुमेरात को उस मुकद्दस शहर से रोते हुए रंज व गम से निढाल रुख्सत हुए। बद्र की मंजिल में जुहर की नमाज अदा की और चाहा कि जंगे बद्र की जगह पर हाजिर हों जो बद्र की मंजिल से थोड़ी दूर है मगर कोशिश के बावजूद भी डराईवर ने मौका न दिया जिस का गम जिन्दगी भर रहेगा।

मक्का मुअज्जमा पहुँचने के बाद हज्ज की तैयारी शुरु हो गई। आठ जिलहिज्जा से बारह जिलहिज्जा तक हज्ज के अरकान अदा करने के बाद जिइर्राना और तनईम से उमरे किये। जन्नतुल-मुअल्ला कबरस्तान में हाजिर हुए। बीच कबरस्तान में नया रोड देखकर बड़ा अफसोस हुआ कि नजदी हुकूमत को सहाब ए किराम और दूसरे बुजुर्गों की कब्रों पर सड़क बनाते हुए रहम न आया। उम्मुल मूमिनीन हजरते खदीजा रजियल्लाहु तआला अनहा के रौज ए मुबारक को वीरान कर दिया। सुलतानुलहिंद ख्वाजए अजमेरी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि के पीर व मुर्शिद हजरत ख्वाजा उस्मान हारुनी अलैहिर्रहमतु वर्रिजवान का मजारे मुबारक जो मस्जिदे जिन्न के करीब था उस पर पक्की सड़क बना दी।

मस्जिदे शजरा जहां हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे नबी होने की पेड़ ने गवाही दी थी उस के बारे में एक बूढ़े अरब से पूछा कि मस्जिदे शजरा कहाँ है। उसने एक जगह की तरफ इशारा करते हुए कहा कि उस जगह पर थी तो ढा दी गई। हम ने कहा क्या यह हुकूमत मस्जिद ढाती है ? तो वह मुझे नीचे से ऊपर तक देखता हुआ चला गया और कोई जवाब न दिया।

फिर गारे सौर और गारे हिरा की जियारत के लिए हाजिर हुआ तो उन मुबारक पहाड़ों की मस्जिदें भी ढाई हुई नजर आईं

तो और ज्यादा यकीन हो गया कि बेशक वहाबी सिर्फ नाम के मुसलमान हैं कि मस्जिदें अल्लाह तआला की हैं। जैसा कि सूरए जिन्न पारा 29 में है। तो मस्जिद ढाना काफिरों का ही तरीका है। न कि मुसलमानों का।

हजरत सैइद अहमद इब्ने जैनी दहलान मक्की शाफिई रहमतुल्लाहि तआला अलैहि (मुतवफ्फा सन 1304 हि०) लिखते हैं कि वहाबियों ने मस्जिदों को ढा दिया। बुजुर्गों की यादगारों को मिटा दिया। जन्नतुलमुअल्ला के गुम्बदों को खोद कर फेंक दिया। नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम और हजरते अबू बकर व हजरते अली रजियल्लाहु तआला अनहुमा के पैदा होने की जगहों पर जो गुम्बद बने हुए थे उन को भी तोड़ कर गिरा दिया। मस्जिदों और कब्रों को ढाते हुए वहाबी डीगें मारते थे. यहाँ तक कि कुछ लोगों ने हजरते महजूब की कब्र पर पेशाब भी किया

(खुलासतुल कलाम जिल्द 2 सफा 378)

इसी तरह मुर्तद अबू ताहिर करमती को जब सन 320 हिजरी अब्बासी खलीफा मुकतदिर बिल्लाह के जमाना में मक्का मुअज्जमा पर कब्जा हुआ तो उस ने बड़े जुल्म ढाये यहाँ तक कि मुकद्दस पत्थर हजरे अस्वद पर गुर्ज मार कर उस को तोड़ डाला और उखाड़ कर अपने दारुस्सलतनत "हजर" में ले गया जो बीस वर्ष के बाद वापस आया और मस्जिदे हराम के मिंबर पर खड़े हो कर अबू ताहिर करमती ने कहा मैं खुदा की कसम और खुदा की कसम मैं लोगों को पैदा भी करता हूँ और उन को मौत भी देता हूँ।

(हुज्जतुल्लाहि अलल्आलमीन जिल्द 2 सफा 829)

मगर जब वक्त आ गया तो अपने जमाना का फिरऔन अबू ताहिर करमती जलील व रुसवा हुआ। ऐसे ही यह लोग भी जलील व रुसवा होंगे।

जब अरब में ठहरने का जमाना खत्म हो गया तो 16 मुहर्रम 1397 हि० मुताबिक 7 जनवरी 1977 ई० जुमा को मक्का शरीफ से चल कर जद्दह पहुँचे फिर 17 मुहर्रम को जद्दह से चल कर 24

मुहर्रम को बम्बई आ गये । और पहली सफर सन् 1397 हि० को खैरियत के साथ अपने घर पहुँच गये ।

दुआ है कि हज्जे बैतुल्लाह और सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के रौजए पाक की हाजिरी कबूल हो और बार-बार इन मुबारक जगहों की जियारत नसीब हो, दीन की खिदमत में खुलूस हो और ईमान पर खातिमा हो ।

आमीन बिहुरमति सैइदिल मुरसलीन सलावातुल्लाहि तआला अलैहि व अलैहिम अजमईन

जलालुद्दीन अहमद अमजदी
13 शाबान 1407 हि०
13 अपरैल 1987 ई०

किताब मिलने के पते

- कुतुब खाना अमजदिया बराऊँ शरीफ (272153) जि० बस्ती
- मदरसा अमजदिया अरशदुल ऊलूम ओझा गंज (272131) जि० बस्ती
- मकतबा जामे नूर 2241/41 कूचा चीलाँ दरया गंज दिल्ली-2
- रजवी किताब घर गैबी नगर भिवन्डी जि० थाना
- कादिरी बुक डिपो नौ महला मस्जिद बरेली
- इमाम साहब मोती मस्जिद भाईखला बम्बई-27
- कादिरी अकेडमी शुतुर खाना रामपुर (यु० पी०)
- मकतबतुल हबीब 140 अतर सोइया इलाहाबाद
- हक अकेडमी मुबारकपुर जि० आजम गढ़
- अलमजमउल इस्लामी मुबारकपुर जि० आजम गढ़
- कुतुब खाना कादिरया इटवा बाजार जि० बस्ती
- इदारा इस्तिकामत 488/24 रेल बाजार कानपुर
- खुरशीद बुक डिपो मुत्तसिल पोस्ट आफिस अमीनुद्दौला पार्क लखनऊ
- अब्दुर्रहीम अहमद जमाल बुक सेलर उर्दू बाजार गोरखपुर
- मुहम्मद समीउल्ला ताज बुक डिपो उर्दू बाजार गोरखपुर
- मकतबा नई मियां दीपा सराय सम्भल जि० मुरादाबाद
- मदरसा आलिया कादिरया मुहल्ला मौलवी बदायूँ
- दारुलऊलूम अमजदीया मुहल्ला किसान टोला सनडीला जि० हरदोई (यू० पी०)
- मकतबा मशरिक 116 काँकर टोला पुराना शहर बरेली (यू० पी०)
- एजाज बुक डिपो नाखुदा मस्जिद जकरया स्ट्रीट कलकत्ता
- लतीफिया बुक डिपो मोमिन पूरा नागपुर 18
- मकतबा गरीब नवाज 262 अटाला इलाहाबाद
- नूरी बुक डिपो नाल बन्द मुहल्ला जबलपुर

मदरसा अमजदीया अरशदुल ऊलूम

ओझा गंज—जिला बस्ती (यू० पी०)

बयादगार—फकीहे आजम सदरुश्शरीअह हजरत अल्लामा **मुहम्मद अमजद अली** अलैहिर्रहमतु वर्रिजवान मुसन्निफ 'बहारे शरीअत'

बानी—फकीहे मिल्लत हजरत अल्लामा मुफ्ती **जलालुद्दीन अहमद अमजदी** मद्दा जिल्लहुल आली

जिस में कुरआन मजीद नाजिरह 'हिफ्ज' अरबी, फारसी और उर्दू, हिन्दी और तलबा की तरबियत का माकूल इन्तिजाम है इस इदारा की इम्दाद फरमा कर अजरे अजीम हासिल करें।

तरसीले जर और खत व किताबत का पता :

मदरसा अमजदीया अरशदुल ऊलूम, ओझा गंज
जिला बस्ती (यू० पी०) (272131)